राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक–पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ७२

मुंहता नैणसीरी ख्यात

[भूतपूर्व मारवाड राज्य के महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के दीवान मुहता नैणसी द्वारा राजस्थानी भाषा में लिखित राजस्थान और उससे संबंधित एवं संलग्न गुजरात, सौराष्ट्र और मध्य भारत आदि स्थित भू०पू० राज्यों का मध्यकालीन मूल इतिहास]

भाग ३

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर;
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी,
निवृत्त सम्मान्य नियामक (ऑनरेरि डायरेक्टर),
भारतीय विद्याभवन, बम्बई, प्रधान सम्पादक,
सिंघी जैन ग्रन्थमाला, इत्यादि

ग्रन्थाङ्क ७२

मुंहता नैणसीरी ख्यात

भाग ३

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

मुंहता नैणसीरी ख्यात

[भूतपूर्व मारवाड राज्य के महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के दीवान मुहता
नैणसी द्वारा राजस्थानी भाषा में लिखित राजस्थान और उससे
संबंधित एवं संलग्न गुजरात, सौराष्ट्र और मध्यभारत
आदि स्थित भू० पू० राज्यो का मध्यकालीन
मूल इतिहास]

भाग ३

सम्पादक

आ० श्री बदरीप्रसाद साकरिया

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०२०	भारतराष्ट्रिय शकाब्द १८८५	ख्रिस्ताब्द १९६४
प्रथमावृत्ति ७५०		मूल्य– ८.००

मुद्रक– श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर।

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Saṁskrit, Prakrit, Apabhraṁsa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthani in particular

GENERAL EDITOR

PADMASHREE JINAVIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA
Honorary Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur,
Honorary Member of the German Oriental Society, Germany,
Retired Honorary Director, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay;
General Editor, Singhi Jain Series etc. etc.

NO. 72

MUNHATA NAINSI RI KHYAT

[A medieaval history of Rajasthan and adjoining erstwhile states as Gujarat, Saurashtra and Malva etc in Rajasthani language, written by Munhata Nainsi, Diwan (Prime Minister) of Maharaja Jaswantsingh I of Marwar State]

Part III

Edited with Hindi annotation
by

A Badriprasad Sacariya

Published
Under the Orders of the Government of Rajasthan
By
The Hon Director, Rajasthan Prachya Vidya Pratisthana
(Rajasthan Oriental Research Institute)
JODHPUR (RAJASTHAN)

V. S. 2020] *All Rights Reserved* [*1964 A.D.*

संचालकीय वक्तव्य

मुहता नैणसी री ख्यात के भाग–१ सन् १९६० ई० मे व भाग–२ सन् १९६२ ई० में राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला के क्रमशः ग्रन्थांक ४८ और ६२ के रूप मे प्रकाशित हो चुके हैं। अब इस ग्रन्थ का तीसरा भाग ग्रन्थांक ७२ के रूप में प्रकाश में आ रहा है। इस ख्यात मे बातो के रूप मे अनेक ऐसे ऐतिहासिक आख्यान सकलित है जो ऐतिहासिक तथ्यों को प्रकट करने के साथ-साथ अत्यन्त रोचक भी है। इन कथानकों मे प्रयुक्त राजस्थानी गद्य का आदर्श भी द्रष्टव्य और अध्ययनीय है।

जैसा कि दूसरे भाग के संचालकीय वक्तव्य मे सूचित किया गया था कि तीसरे भाग में ग्रन्थगत-नामानुक्रमणिका और सपादकीय प्रस्तावना भी प्रकाशित की जावेगी, वह प्रस्तुत ग्रन्थ के कलेवर-विस्तार के भय से इसमें नही दी जा रही है। विद्वान् सम्पादक की विस्तृत तथ्य-गर्भित एवं अध्ययनात्मक प्रस्तावना, ग्रन्थगत विशिष्ट ऐतिहासिक व्यक्तियों एवं स्थलों की नामानुक्रमणिका तथा शब्द-कोष आदि का समावेश चतुर्थ भाग मे किया जा रहा है, जिसको यथाशक्य शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित करने का प्रयत्न जारी है। यह सामग्री इतिहास और राजस्थानी भाषा के अनुसंधान-कर्त्ताओ के लिए विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होगी।

मुहता नैणसी री ख्यात के इस तृतीय भाग के प्रकाशन मे भारत सरकार के शिक्षा मत्रालय से 'आधुनिक भारतीय भाषा-विकास-योजना' के अन्तर्गत राजस्थानी भाषा के विकासार्थ सहायता-अनुदान प्राप्त हुआ है, तदर्थ हम भारत सरकार, केन्द्रीय शिक्षा-मत्रालय के प्रति आभार प्रकट करते है।

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सचालक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

दि० १६ सितम्बर, १९६४

॥ ॐ शिव ॥

मूंहता नैणसीरी ख्यात

भाग ३री

विषयानुक्रमणिका

१.	वात राव रणमलजी अर महमदरै आपस में लड़ाई हुई तै समैरी	१
२.	रावळ जगमालरी वात	३
३	वात राव जोधाजीरी (पिछोलै घोडा पाया नै मेवाड़री धरती लीवी तिणरी)	५
४	वात राव बीकाजीरी (नरसिंघ जाटू मारियो नै अरडकमल कांधळोत भटनेर फतै कियो तैरी)	१३
५.	भटनेररी वात	१६
६	वात राव बीकैजीरी । बीकानेर वसायो तै समैरी	१९
७.	वात कांधळजीरी । कांधळजी काम आयो तै समैरी	२१
८	वात राव तीडैरी अर रावळ सावतसी सोनगरै इया दोनांरै भीनमाळ वेढ हुई तै समैरी	२३
९	वात पताई रावळ साको कियो तैरी (पावागढरै घेरैरी)	२५
१०	वात रावळ सलखैजीरी	२६
११.	गढ सफिया तैरी ख्यात	२८
१२	वात राव सीहोजी (रै वंश)री	२९
१३.	जेसळमेररी वात	३३
१४.	पूगळ राव	३६
१५.	वीकूपुर राव	३६
१६	वैरसलपुर राव	३७
१७	मुगल-चकता-भाटी कहै छै	३७
१८.	खारबारैरा भाटी	३७
१९.	वात दूदं जोधावत मेघो नरसिंघदासोत सींधळ मारियो तै समैरी	३८
२०	वात खेतसीह रतनसीहोत सीसोदियै चूंडावतरी	४१

२१. गुजरात-देश राज्य-वर्णनम् ४९
२२. वात मकवाणा रजपूतांरी (झाला कहाणा तैरी) ५७
२३ वात पाबूजीरी ५८
२४ वात गांगै वीरमदेरी ८०
२५ वात हरदास ऊहड़रा ८७
२६. वात राठोड़ नरै सूजावत, खीमै पोकरणैरी १०३
२७. जैमल वीरमदेवोत नै राव मालदेरी वात ११५
२८. वात सीहै सींधळरी १२३
२९. वात रिणमलजीरी १२९
३०. नरवद सत्तावतरी वात सुपियारदे लायो तै समैरी १४१
३१. वात नरबद राणैजीनू आख दीवी तियै समैरी १४९
३२. वात राव लूणकर्णजीरी १५१
३३ वात मोहिलांरी (चहुवांणा वागड़ियां सूं द्रोणपुर लियो तिणरी) १५३
३४. मोहिलारै पीढियारी हकीकत (नै छापर द्रोणपुररी धरती राव जोधाजी लीवी तिणरी वात) १५८
३५. छद बे-अखरी नै दूहा (मोहिला री पीढियांरा नै राव जोधाजी छापर द्रोणपुर लियो तिण भावरा) राठोड़ रामदेव नै चांपै सामोररा कहिया १६७
३६. छत्तीस राजकुळी इतरै गढे राज करै १७३
३७. परमारांरी वसावळी १७५
३८ राठोड़ांरी वसावळी १७७
३९. टीकै बैठांरी विगत (बीकानेररी) १८१
४०. जोधपुररी पीढियां (टीकै बैठांरी विगत) १८२
४१. भिन्न-भिन्न वाकारा समत । गढ लियांरी विगत १८३
४२. दिली राजा बैठा तियारी विगत । राज कियो तिका विगत १८५
४३. वात सेतरांम वरदाई सेनोत राठोड़री १९३
४४. बीकानेररी हकीकत (बीकानेर राजाआंरै कवरांरा नांम) २०५
४५. सतियां हुई (बीकानेररा राजाआं लारै) २०९
४६. जोधपुररा राजाआंरी ख्यात (नांनांणांरी विगत) २१३
४७. किसनगढरी विगत (नानांणांरी) २१७
४८. राठोड़ांरी तेरहै साखाआंरी विगत २१८
४९. जेसळमेररी ख्यात (नानाणा, भाई तथा बेटा आदिरी विगत) २२०
५०. सिरगोतारी पीढी (२. किसनसिंघोतां ३. रूपावतां. ४ नारणोता ५ रतनदासोतां ६ रावतोता ७. बीदावतां--इणांरा ६३ गांवारी पीढियारी जुदी-जुदी विगत) २२३
५१. जोधपुर रा सिरदारा री पीढिया (१४ गांवांरी) २३५
५२. विगत (टीप) २३८

५३. वात चद्रावतांरी २३९
५४ पीढियांरी हकीकत । पाट वैठा त्यांरा माम (चंद्रावतांरा) २४७
५५. वात सिखरो वहलवै रहै तैरी २५०
५६ वात ऊदै ऊगमणावतरी २५६
५७ वूदीरी वारता (दूदा नै भोजरी वात)
५८. षयामखान्यां री उतपत नै फतैपुर जूंझणू वसायो तैरी वात २७३
५९. दोलतावादरा उमरावांरी वात २७६
६०. प्रादिदास्त (टीप) २७८
६१. प्रादिदास्त (टीप) २७९
६२. सांगमराव राठोड़री वात २८०

मुंहता नैणसीरी ख्यात

भाग ३

वात राव रिणमलजी अर महमंद[रै] आपसमें लड़ाई हुई तै समैरी

महमद मांडवरो पातस्याह ।

महिपो पमार पहीरा डूंगरसू नीसरियो सु माडवरै पातसाहरै पूठ आयो ।[1] ताहरां रांणो कुभो माडवरै पातसाह ऊपर आयो ।[2] तद रिणमलजी पण हुतो ।[3] सु पातसाह महिपैनू राख अर हद ऊपर सांम्हां आयो ।[4] लडाई हुई पातसाहसू । सु पातसाह तो हाथी असवार, ऊपरा लोहरै कोठैमें हुतो ।[5] सु साथ तो सारो ही काम आयो । नाहरा रिणमलजी जांणियो–बरछी सिलारैसू काढि मनमें आणी ज्यु हाथी ऊपरं जाऊ ।[6] सु पातसाह माहै बैठै रिणमलजीरो छोह जांणियो–'जु ईयैरी बरछी आगै कोठो वचणरो नही ।'[7] ओ संको राख पातसाह खवासरी ठोड बैठो नै खवासनू आगै बैसाणियो ।[8] तितरै तो रिणमलजी आय बरछीरी दीवी कोठैरै । कोठो फोड़ खवासनू मारियो ।[9] ताहरां खवास कह्यो–'हजरत ! मैं तो मरा ।' ताहरा उण वैण रिणमलजी सुणियो । ताहरां रिणमलजी जाणियो–'पातसाह वचियो ।'[10] रिणमलजी पूठा फिर देखै तो हाथीरी पाछली,

---

1 महिपा पँवार पहीके पहाडसे निकला सो माडवके बादशाहकी शरणमे आया । 2 तब राणा कुभा माडवके बादशाहके ऊपर चढ कर आया । 3 तब रिणमलजी भी साथमे थे । 4 बादशाहने महिपेको तो पीछे रख दिया और खुद सीमा ऊपर सामने आया । 5 सो बादशाह तो हाथी पर सवार, परन्तु उसके ऊपर एक लोहेका कोठा था, उसमे बैठा हुआ था । 6 एक बरछीको शस्त्रागारसे (?) निकाल कर सोचा कि हाथी पर आक्रमण कर दूं । 7 सो बादशाहने अदर बैठे हुए रिणमलजीके क्रोधावेशको भाप लिया कि इसकी बरछीके प्रहारसे कोठा बचनेका नही । 8 सो यह भय मान बादशाह तो खवासकी जगह बैठ गया और खवासको आगे बैठा दिया । 9 कोठा फोड कर खवासको मार दिया । 10 तब रिणमलजीने उसके शब्द सुने और जाना कि बादशाह बच गया ।

पीठ दिया पातसाह बैठो छै।[1] नै रिणमलजीरै आखडी हुती जो पूठ दियै ताहरा वार वाहै नही।[2] ताहरां घोड़ो डकाय हाथीरी बराबर आय फेटसू पातसाहनू उठाय लियो।[3] लेनै कनै सिला थी तै ऊपर पटकियो। सु पातसाहरो जीव नीसर गयो। सु पातसाह ईयै विध मारियो।[4]

पछै राणो कुभो, रिणमलजी मांडवगढ ऊपर आया। ताहरां भीतरला पण साको राखियो।[5] ताहरां महिपै पमारनू वा कह्यो–'हमै म्हासू राखियो न जावै।'[6] ताहरां महिपै कह्यो–'हमै मोनू पकड मता देवो।'[7] ताहरां इहा कह्यो राव रिणमलजीनू–'म्हे पकड न देवा।'[8] ताहरा रावजी कह्यो–'म्हानू देखाळ देवो।'[9] ताहरां कोटरै दरवाजै फोज आय ऊभी रही। अर महिपो घोडै चढि दरवाजेरै डावै कानी घोडै चढियो हीज कूदियो।[10] जिकै ठोड़सू कूदियो हुतो, तिकण ठोडरो नांम पाखड कहीजै छै।[11] पछै गयो। पछै महिपैनू सिकोतरीरो वर हुओ।[12]

इति वात महमद राव रिणमलजी मारियो तै समैरी वात सपूर्ण ॥

॥ श्रीरस्तु ॥

---

1 रिणमलजी पीछेकी ओर फिर कर देखते है तो हाथी पर पीछेकी ओर पीठ दिए हुए बादशाह बैठा हुआ है। 2 रिणमलजीकी यह प्रतिज्ञा थी कि जो पीठ दे दे तो उस पर वार नही करना। 3 तब उन्होंने घोडेको लँघवा कर और हाथीके बराबर आकर बरछीकी एक फेटसे बादशाहको उठा लिया। 4 लेकरके पासकी एक सिला पर दे पटका सो उसका तो प्राणान्त हो गया। इस प्रकार बादशाहको मार दिया। 5 तब अदर वालोको भी भय हुआ। 6 अब हमसे तुम नही रखे जा सकते। 7 अब मुझे पकड कर उनके सुपुर्द नही करना। 8 तब इन्होंने राव रिणमलजीको कहा—'हम महिपेको पकड कर आपको नहीं देंगे।' 9 तब रावजीने कहा 'हमको उसे दिखा दो।' 10 महिपा घोडे पर चढ कर दरवाजेकी बायीं ओरसे घोडे पर चढा हुआ ही कूद गया। 11 जिस जगहसे वह कूदा था उस जगहका नाम 'पाखड' कहा जाता है। 12 बादमे महिपेको सिकोतरीका वरदान मिला था।

अथ रावल् जगमालजीरी वात

रावळ जगमाल मालावत मेहवै राज करै। त्यांरै महळ चहुवाण बेटा ३[1]। वडो मंडळीक, दूसरो भारमल, तीजो[2] रिणमल। सु पछै जगमालजी वळै गेहलोतै परणिया। ताहरां चहुवांणी रीस कीवी। गांम छोडियो। बेटा ले तलवाड़ै जाय रही मेहवैरै नजीक[3]। तद रजपूतां रावळ जगमालजीनूं ले चहुवांणरै घरे गया। पण चहुवांण मानी नही[4]। तद तलवाडैथी चहुवांण पीहर गई बाहडमेर[5]। लोक साथै घणो हुतो, सु चहुवाणारै उजाड रोज घणो करै[6]। तद चहुवांण सूजो बाहडमेररो धणी तिके दीठो—'अै बुरा[7]।' तद कह्यो—'भाणेज! और ठोड़ा रहो। थे म्हारो देस छाडो[8]।' सु अै छाड़ै नही[9]।

तद चहुवाण मडळीकरी घोडियारा पूछ वाढिया, अर भैंसियारा मगर तेलसू बाळिया[10]। तरै ओ किसो मनमें राखि अर आपरै लोकामे समचो कर अर आपरा मामासू चूक कियो[11] सु भूजाई जीमता ऊपर मडळीक जाय पडियो। सु सब चहुवांण मारिया। बाहडमेर कोटडो लिया[12]। अर जगमालजीनू खबर पोहचाई—'जु म्हां ओ कांम

---

1 रावल जगमाल मालावत मेहवेमे राज्य करते है। उनकी स्त्री चौहान (रानी) जिससे जगमालजीके तीन पुत्र हुए। 2 तीसरा। 3 जगमालजीने गहलोतोके यहा दूसरा विवाह किया, जिससे चौहान (रानी) नाराज हो गई। उसने गाव छोड दिया। अपने बेटोको साथमे लेकर मेहवेके नजदीक तिलवाडामे जा रही। 4 तब जगमालजीको साथमे लेकर राजपूत लोग चौहान (रानी)के घर उसे मनानेको गये, परतु चौहानीने नही माना। 5 तब चौहानी तिलवाडासे अपनी पीहर बाहडमेर चली गई। 6 साथमे बहुत मनुष्य थे, वे चौहानोके नित्य बहुत नुकसान करते हैं। 7 बाहडमेरका स्वामी सूजा चौहान—उसने देखा ये लोग तो बुरे हैं। 8 तब उसने कहा—'भानजो! तुम लोग दूसरी जगह जा रहो, हमारा देश छोड दो। 9 परतु ये छोडते नही। 10 तब चौहानोने मडलीककी घोडियोके पूछ काट दिये और भैंसो (भैंसियो)की पीठें गरम तेलसे जला दी। 11 तब इन्होने (भानजोने) इस बातको अपने मनमे रखा और अपने आदमियोको सकेत करके मामाके ऊपर धोखेमे आक्रमण कर दिया। 12 भोजन करते हुए पर मडलीक जा पडा और उसके साथ सब चौहानोको मार दिया। बाहडमेर और कोटड़े पर अधिकार कर लिया।

कियो[1] । जगमालजी सुण राजी हुआ[2] । जगमालजी पछै मंडळीक मेहवै राज कियो[3] । भारमल बाहड़मेर राज कियो । रिणमल कोटड़ै राज कियो [4] ।

॥ इति रावळ जगमालजीरी वात सपूर्ण ॥

---

1 और इन्होने जगमालजीको सूचना दी कि हमने यह काम कर दिया है । 2 जगमालजी सुन कर प्रसन्न हुए । 3 जगमालजीके बाद मेहवेमे मडलीकने राज्य किया । 4 भारमलने बाहडमेरमे राज्य किया और रिणमलने कोटडेमे राज्य किया ।

॥ श्री रामजी ॥

अथ वात राव जोधाजीरी लिख्यते

राव जोधो काहूनी गाडै वास कियां विराजै[1] । तद नापो सांखलो ईयांरै थको चीतोड राणैजी गोढै हुतो, सु नापै कहाय म्हेलियो–'जु श्रीरावजी पछै ही कदै राव रिणमलजीरै वैर पधारसो तो आज पधारज्यो[2] ।' तद रावजी तयारी कर असवार हुआ ।

तद पूछियो–'जु मेहवै जावतानू वसती कठै-कठै आवसी[3] ?' लोकै वीनती कीवी–'जु, श्रीरावजी ! वसती ठिकांणै थोड़ै छै[4] । पण ठिकांणै आगै सै मोढी मूळवाणीरा गाडा छै[5] ।

तद उठारा चढिया मोढी मूळवाणीरै गाडां आया[6] । मोढीनूं खबर हुई । तद मोढी घणा वांना किया[7], आय उतरिया तद मोढी विचारयो–'परमेश्वर ! राव जोधै सरीखो प्रांहणों अठै कद-कद आवसी[8] ? भगत किसू कीजै[9] ?' सु किणहीक साहूकाररी मजीठ अर फळ खाड थांपणू थकी पडी हुती[10] । अर घी गायांरो घणो ही हुतो । तद विचारियो–'जु आ मजीठ अर खांड पछै कद कांम आसी[11] ?' अबै मजीठ खोटी अर मैदो करायो[12] । घी खांड घात

---

1 राव जोधा काहूनी गावके पास गाडोमे घर बना कर रह रहे है । 2 उन दिनोमे नापा साखला इनकी ओरसे चित्तौडमे राणाजीके पास रहता था । नापाने सदेश भेजा कि 'यदि रावजी (जोधाजी) राव रिणमलके वैरका वदला लेनेको कभी आनेका विचार हो तो आज आ जायँ ।' 3 मेहवे जानेके मार्गमे कौन-कौनसे गाव आयेंगे ? 4 लोगोने अर्ज किया कि रावजी ! 'मार्गमे वस्ती वहुत कम स्थानो पर है ।' 5 परतु आगे सव जगह (जहा-जहा वस्ती है) मोढी मूलवानीकी गाडा वस्ती है । 6 तव वहाके चढे हुए मोढी मूलवानीकी गाडा-वस्तीमे आये । 7 मोढीने वहुत खातिर की । 8 आकर ठहरे तव मोढीने विचार किया कि 'भला परमेश्वर ! राव जोधा जैसा अतिथि यहा कव-कव आयेगा ?' 9 किस भाति इनका आतिथ्य किया जाय ? 10 किसी साहूकारकी मजीठ, सूखा मेवा और खाड उसके यहा गिरवी रखे हुए थे । 11 यह मजीठ और खाड फिर कव काम आयेगी ? 12 अब (तव) मजीठको कूट करके उसका मैदा वनवाया ।

अर सीरो वणायो[1]। कैर-बाटो हुतो तिणरी तरकारियाँ वणाई[2]। भगतरी तैयारी हुई[3]। आंण वीनती कीवी–'श्रीरावजी ! आरोगण तैयार छै[4]।'

पछै आप सारा लोकासू आरोगण पधारिया[5]। त्या परीसारो हुओ[6]। सारै साथनू सीरो, तरकारिया, भाजी, इण भाति परीसारो हुओ। लोक जीमियो। आप ही आरोगिया।[7] रातरी भगत हुई[8]।

पाछली रात रावजीरो कूच हुओ[9]। परभात हुवो, त्या सारा ठाकुरां हाथ दीठा[10]। राता-लाल दीसण लागा[11]। तद सारा ठाकुरारा आप-आप माहै देखण लागा[12]। त्यु किणी हेक कह्यो[13]–'जु इण वातरी खवर मोढीनू पूछाया पडै।' तद रावजी असवार दोय मोढीनू पूछणनू म्हेलिया[14]। त्या मोढी असवार आवता देख सांम्ही आइ कह्यो–'जिकै वई आया सु जाणियो[15]।' कह्यो–'श्री रावजी रिणमलजीरै वैर पधारै छै सु परमेसरजी थॉनू रग चाढियो[16]। अर अठै खेती काई न होवै छै सु धान थोडो पाईजै[17]। सु मजीठ पड़ी हुती तियेरो सीरो कियो हुतो। सु परमेसरजी थानू रंग चाढियो। श्रीरावजीनू आसीस कहिज्यो। अर मालम करजो; भोजन थांनै अमृत हुसी[13]।'

---

1 घृत और खाड डाल कर हलुआ वनवाया। 2 कैर-वाटा था जिसके साग वनवाये। (कैर-वाटा = करीलके कच्चे और ताजे फल) 3 भोजनकी तैयारी हुई। 4 आ करके विनती की, 'श्री रावजी ! भोजन तैयार है।' 5 तव आप सव लोगोके साथ भोजन करनेको पधारे। 6 फिर परोसगारी हुई। 7 स्वय (राव जोधाजी) ने भी भोजन किया। 8 यह भोजनकी तैयारी सव रात्रीको हुई थी। 9 पिछली रातको रावजीने वहांसे कूच कर लिया। 10 ज्योही प्रभात हुआ तो सभी ठाकुरोने अपने हाथोको देखा। 11 एकदम लाल दिखने लगे। 12 तव सभी ठाकुर परस्पर एक दूसरेके हाथोको देखने लगे। 13 तव किसी एकने कहा। 14 तव रावजीने दो सवारोको पूछनेके लिये मोढीके पास भेजा। 15 जिसके लिये आये हो सो मैंने जान लिया। 16 उसने कहा–'श्री रावजी रिणमलजीके वैरका वदला लेनेके लिये जा रहे है सो परमेश्वरने तुम पर रग चढाया है।' 17 यहा पर खेती नहीं–जैसी होती है अतः धान्य थोडा प्राप्त होता है। 18 यह भोजन आपको अमृतके समान होगा।

यां[1] आय रावजीनू मालम करी। रावजी सुण बोहत राजी हुवा।

पछै उठारा चढिया सांखला हरभौरै गाव बैहगटी आया[2]। हरभौजी सौणी हुता[3]। सु हरभौरो भाणेज जेसो भाटी आपरै गोढै ऊभो हुतो[4], सु हुकम कर भेळो बेसाँणियो[5]। सो सलाम कर भेळो बैठो[6] त्यां हरभौ माथो धूणियो[7]। तद अरज कीवी–'जु रावळै रिजकरो सीरवी ओ हुसी। अर म्हे धरतीरा हीज सीरवी हूस्या[8] ?' रावजी आरोग अर सौण पूछिया[9]। त्या हरभौ अरज कीवी–'जु सौण इसडा छै जु आज जितरी धरतीमे श्रीरावजी घोडो फेरै इतरी धरती श्री रावजीरा पूत पोतरानू हुसी[10]। रावजीरो वडो इकबाल हुसी[11]।' तदी[12] रावजी बोहत राजी हुवा। असवार हुवा। असवार होताँ भुवर ढोल हरभौ कना माग लियो[13]।

अठारा असवार हुवा सेतरावै रावत लूणेरै पधारिया[14]। रावत लूणो भली भात मिळियो नही। तैसौ श्री रावजी मन मांहै क्यौहीक अतराज सा हुवा[15]। त्यां रावतरै महिळ सोनगरी। सो रावजीरै नांनांणै दिसासौ साख हुतो, सु रावजी जुहार कहायो[16]। त्यां श्री रावजीनै भीतर बोलाया। निछरावळां कीवी। अर कह्यो–'बाबा ! रिजक, विसायत दीसै छै सु थाहरी छै। भोजन करो। सर्व भलां

---

1 इन्होने। 2 पीछे वहासे चढे हुए साखला हरभूके गाव बैहगटीको आये। 3 हरभूजी शकुनी थे। 4 हरभूका भानजा भाटी जैसा आपके (राव जोधाजीके) पास खडा था। 5 सो आज्ञा देकर अपने साथ बैठाया। 6 सो सलाम करके भोजन करनेको साथ बैठ गया। 7 उस समय हरभूने सिर धुना। 8 आपकी सम्पत्तिका भागीदार यह होगा और हम धरतीके ही भागीदार होगे ? 9 रावजीने भोजन करके शकुनका फल पूछा। 10 ये शकुन ऐसे है कि आज जितनी धरतीमे रावजी अपना घोडा फिरा देंगे उतनी धरती रावजीके पुत्र-पोतोके अधिकारमे हो जायगी। 11 रावजीका वडा प्रताप वढेगा। 12 तव। 13 सवार होते समय हरभूके पास जो भँवर ढोल था वह उससे मांग ,कर ले लिया। 14 यहासे सवार हो कर सेतरावा गावमे रावत लूणाके यहा पधारे। 15 रावत लूणा रावजीसे अच्छी प्रकार नही मिला, इससे रावजीके मनमें कुछ नाराजी हुई। 16 रावतकी स्त्री सोनगरी, जिसके साथ रावजीका ननिहालकी ओरसे कुछ सम्बन्ध था सो रावजीने उसे जुहार कहलवाया।

हुसी[1]।' ताहरां श्री रावजी उतरिया। भगत हुई। आरोगिया। पण मन माहिलो गुस्सो मिटियो नही[2]।

त्यां रावत लूणो रावजीसू सीख कर जाय पोढियो[3]। पाछा सोनगरी जाय महल कुलफ कर लीन्हो[4]। रावजीनै खबर दराई।[5] श्री रावजी सर्व घोडा, विसाइत, माल-मता लूटी[6]। यां करतां और पण सर्व लोग भोमिया डरिया[7]। आय सलामी हुवा[8]। अठाहू असवार हुआ सो विचमे जिके भोमिया हुता सरब सलामी करी[9]। साथ लिया[10]।

पछै रूण साखलांरै पधारिया[11]। सांखला नाळेर ले रावजीरै साम्हां आया[12]। साखलो टीकायत रावत कहावतो तिणरी वेटी रावजीनू परणाई[13]। अर रावजी पण खरा मैंहरवान हुय व्याह कियो। या खबर राणोजीनू जाय पोहती[14]।

तद नापै सांखलैनै रांणोजी हजूर बुलायो। बुलायनै पूछियो[15]–'थांहरै काई रावजी दिसिलि खबर आई[16]?' आगै पूछता तद कहतो घणों सो–'आवण वाळो समान काई न छै[17]।' अर ईयै वेळा पूछियो तद कह्यो[18]–'जु दीवांण! वात साची छै। आ खबर म्हारै पण

---

1 उसने श्री रावजीको अदर बुलवाया, निछरावले की और कहा–'वावा! जो कुछ भी वन-माल और धरती आदि आप देखते हो, वह सब आपका है। भोजन करिये। सब ठीक होगा। 2 तव रावजी ठहर गये। भोजनकी तैयारी हुई, भोजन किया, परतु मनका क्रोध मिटा नही। 3 फिर रावत लूणा तो रावजीसे आज्ञा प्राप्त कर जा सोया। 4 बादमे उसकी पत्नी सोनगरीने जा कर महलके ताला लगा दिया। 5 रावजीको इसकी खबर करवा दी। 6 तव रावजीने सब घोडे और माल मता एव सामग्री लूट ली। 7 इस प्रकार करनेसे दूसरे सभी लोग और भोमिये भी डर गये। 8 आधीनता स्वीकार कर और सलामी बन हाजिर हुए। 9 यहासे चढकर चले तो बीचमे जो भोमिये थे उन सभीने सलामी बनना (आधीनता) स्वीकार किया। 10 (उन सबको अपने) साथ लेते गये। 11 फिर रूणमे साखलो के यहा आये (गये)। 12 (रावजीको अपने यहा आते हुये सुन) साखले नारियल लेकर रावजीके स्वागतार्थ सामने आये। 13 टीकायत साखला जो रावत कहलाता था, जिसकी बेटी रावजीको व्याही गई। 14 और रावजीने पूर्ण मेहरबान होकर विवाह किया। यह खबर राणाजीको जा पहुची। 15 बुलवाकर पूछा। 16 तुम्हारे पास रावजीकी ओरसे कोई खवर आई है क्या? 17 पहले कभी पूछा जाता तो प्राय यही कहता–'जो समाचार आने वाले थे (आये है) वे सामान्य है, कोई विशेष बात नही है। 18 और इस बार पूछा गया तो उसने कहा।

आई छै ।[1]' इतरो सुणतां दीवांण रै मुहडैरो रंग फुर गयो ।[2] सांखलै नापै नू कह्यो–'किणही भांत सुलह पण हुवै ?'[3] तद नापै अरज करी--'दीवाण सलामत, राठोडांरै वैररो मांमलो खरो जोरावर छै ।[4] अर वळै वैर ही राव रिणमलरो ।[5] त्यां-त्यां दीवांण खरा डरण लागा। तद नापै अरज कीवी--'जु दीवांण ! वैर जोरावर छै । किणही भांत धरती दीन्हा टळै तो दीवाण ! धरती दीजै ।[6]' आ वात दीवाणरै पण मनमें आई ।[7]

नापै दरबार सौ डेरै आय तुरत रावजी सांम्हां कासीद दोड़ाया। 'जु श्रीरावजी ! अठै बळ काई न छैं। वेगा पधारो सु विध करज्यो ।[8]

पछै श्री रावजीरी फोजां ठोड-ठोड मेवाडमें आय लूबी[9] । देसरो जळळ जादा दीवांणजीनू पहुतो ।[10] दीवांणजीनै फिकर सबळो[11] हुवो । सांखलै नापैनै कह्यो–'जो किणी भांत वात होवै तो भलो हुवै ।'[12]तद नापै अरज कीवी–'श्री दीवांण ! परधानो करावो ।[13] मोटो मांणस मेल्यां वात हुसी ।'[14] तद राणैजीरा परधांन श्री रावजी कनै[15] आया, अरज कीवी ।[16] 'श्री रावजी ! हूणी हुती सु हुई ।[17] अर ओ तो मुलक ही थाहरो वसायो छै । थे मारस्यो तो कुण राखसी ?[18] तद रावजी बोल्या–'जु आ वात तो खरी पण वैर ही करणा आसांण छै,

---

1 'जी, दीवान ! वात सत्य है। यह खवर मेरे पास भी आई है। 2 इतना सुनते ही दीवानके चेहरेका रग फिर गया। 3 किसी भी प्रकार सुलह भी हो सकती है 4 दीवान दीर्घायु हो ! राठौडोके वैर का मामला निश्चय ही दुष्कर है। 5 और जिसमे वैर भी राव रिणमल का ? 6 यदि धरती (देशका कोई भाग) देनेसे यह सकट किसी भाँति टल जाय तो (मेरी प्रार्थना है कि) धरती दे दीजिये। 7 यह वात दीवान को भी जँच गई। 8 यहा कुछ शक्ति (करामात) नही है। आप यहा जल्दी पहुँच जायें ऐसा उपाय करे। 9 आकर फैल गई। (आकर लूट पाट करने लगी) 10 देशकी इस दुर्दशाका दीवानजी (राणा)को अधिक दु ख हुआ। 11 बहुत ज्यादा। 12 यदि किसी भी प्रकार परस्पर सुलहकी वात हो तो ठीक हो। 13 प्रधान मनुष्योको भेज कर सुलह की वात करवाइये। 14 बडे आदमीको भेजने पर ही बात हो सकेगी। 15 पास। 16 अर्ज की। 17 जो वात होनी थी सो हो गई। 18 और यह देश तो आपका ही वसाया हुआ है। आप ही मारेंगे तो फिर रक्षा कौन करेगा ?

वैर छूटणा मुसकल छै।'[1] ताहरा[2] फेर[3] दीवांणरा परधांना अरज कीवी नै रावजीरा उमरावां-परधानानै कह्यो-'जु, धरती दीवी। अर सरतरी वेढ करो।[4] आ वात दीवांणरा परधाना कबूल कीवी'। पाछा दीवांण पासै आया।[5] दीवांण निपट राजी हुआ।[6] या करता फोजा आय निजीक लागी।[7] वीच खेत बुहारांणों।[8] खंभो रोपियो।[9] रावजीरी फोज लडाईनू खरी आगमनी, दीवांणरी फोज पाछमनी।[10] पण श्री रावजीरा परधानारै मनमे आई-'जु धरती लीजै तो भली छै'। तद परधाना रावजी सौ भांत-भांत अरज कीवी[11]-जु बोल-बधांणा कर धरती मडोवर वांसै घातीजै तो भलां छै।[12] लडाईमे तो श्री-रावजी आगै ग्रै टिग सकै नही।[13] 'धरती लेणरी वात रावजीरै पण मनमे आई।[14] परधाना अरज कीवी-'जु, रावजी हुकम करै तो लड़ाई परी थापां।[15] एक सावंत रावजीरो ही ऊतरै; अर एक सावत वांरो ऊतरै। जिकांरो सावत जीपै जिकैरी हीज जीत।'[16] अर परधांनै फेर अरज कीवी-'जु रावजी! थाहरो नक्षत्र इसड़ो दीसै छै; श्रीरावजी-रो सामत जीपसी।'[17] अरज रावजी मांनी।[18] अर दीवांणरा पर-

---

1 यह बात तो ठीक है; वैर करना तो आसान है परतु वैर मिटना कठिन है। 2 तब। 3 फिर। 4 (वैरके बदलेमे) धरती दी और (अथवा) शर्तकी लडाई करना स्वीकार। 5 फिर दीवान (राणा)के पास आये। 6 दीवान बहुत प्रसन्न हुए। 7 इतनेमें सेनाए परस्पर निकट आ लगी। 8 रणक्षेत्र साफ किया गया। 9 सीमा-स्तम्भ गाडा गया। 10 रावजीकी सेना ठीक पूर्वकी ओर और राणाजीकी सेना पश्चिमकी ओर। आगमनी-पाछमनी=(१) आगे-पीछे। (२) पूर्वाभिमुख और अपराभिमुख। (३) पूर्व-पश्चिम। (४) पूर्वमे और पश्चिममे। 11 तब प्रधान लोगोंने अनेक प्रकार रावजीसे अर्ज की। 12 वचन-बद्ध करवा कर धरती (मेवाड़ राज्यका भू-भाग) ले ली जाय और उसे मडोर (मारवाड राज्य) मे मिला दी जाय तो अच्छा है। 13 लडाईमें तो श्री रावजीके सम्मुख ये (मेवाड़के महाराणा) टिक नही सकते। 14 धरती लेनेकी बात रावजीको भी जॅच गई। 15 प्रधान लोगोने अरज की कि यदि श्री रावजी आज्ञा करे तो लडाई करनेकी बातका भी परस्पर निश्चय करलें 16 एक योद्धा रावजीका और एक उनका (मेवाडके राणाजीका) मैदानमें उतर जायं और (आप दोनोमे से) जिनका सामत जीत जाय उसीकी जीत समझी जाय। 17 और प्रधानोने फिर अर्ज की कि रावजी! आपका नक्षत्र ऐसा दिखता है कि श्री रावजीका सामत जीतेगा। 18 रावजीने उसकी अर्ज मान ली।

धांनां पण दीवाणसौ याही वात ठहराई छै ।[1] तदी दीवांणरै वडो सांमत विक्रमायत झालो हुतो, तिको आय ऊभो रह्यो ।[2] अर अठीसू विजै ऊदावतनू श्री रावजी हुकम कियो ।[3] ताहरां विजो सलांम कर विक्रमायत सांम्है हुवो । सु विजै गोढै ढाल हुती नही ।[4] तद रावजी कह्यो-'वारै सामंत कनै ढाल छै ।' विजैनूं पण कह्यो-'ढाल लै ।' सु विजौ पाछौ घिरियो ही नहीं ।[5] जावतै हीज मुह आगै रावजीरो अराबो खडो हुतो सु एकै रहकळैरो पहोड़ो चढियै हीज काढि अर हाथ कर लियो ।[6] जाइ भेळो हुवो ।[7] दीवाणरै सांमतनू कह्यो--'जु पैहला थे वाहो ।'[8] ईयै पण मरणासू डरतै पैहला घाव कियो ।[9] सु पहियो आडो दीन्हो सु पहियो आधोहेक वढियो ।[10] अर विजै तरवार काढी त्यां आंच झालै सौ झल सगी नही । सु अँवळै हीज पागड़ै उतरण लागो ।[11] इतरै पैहली ऊदावत विजै वाही सु दोय सूत हुवा ।[12] तिसड़ै सांखलो नापो दीवांण गोढै ऊभो हुतो सु अरज कीवी—'जु, दीवांण सलांमत ! खांडो एकै धारो हीज वाहै ।'[13] दीवांणरै सांमत माहै जिका हुई सु दीवांण मांहै पण होत । पण दीवाणरो भाग वडो । धरती दे लडाई टाळी । इतरै कहता वीच रावजीरै फोजांरी वागां ऊपड़ी ।[14] त्या दीवांणरी फोज पाछी मुड़ी । इतरै

---

1 और दीवानके प्रधानोने भी दीवानसे यही बात नक्की की है । 2 तव दीवानका वडा सामंत विक्रमायत (विक्रमादित्य) झाला था सो आकर खडा हुआ । 3 और इधरसे विजय ऊदावतको श्री रावजीने हुक्म किया । 4 विजयके पास ढाल नही थी । 5 सो विजय (ढाल लेनेको) वापिस लौटा नही । 6 जिधरको जा रहा था उधर सामने ही रावजीका अरावा खडा था, उसमेसे एक रहकलेका पहिया सवारी किये हुए ही निकाल लिया और हाथमे थाम लिया । 7 जा करके (विक्रमादित्यसे) मिला । 8 पहले तुम प्रहार करो । 9 इसने मर जानेके भयसे पहले प्रहार कर दिया । 10 विजयने ढालकी जगह पहिया आडा कर दिया, विक्रमादित्यके प्रहारसे पहिया आधाइक कट गया । 11 फिर जब विजयने तलवार निकाली तो उसके तेजको विक्रमादित्य झाला सहन नही कर सका, वह घोडे परसे पीठकी ओर मुड़ कर उलटा उतरने लगा । अँवळै पागडै उतरणो (मुहा०)-सामनेकी ओर नही उतर कर पीछेकी ओर उतरना । उलटा उतरना । 12 इसके पहले ही विजय ऊदावतने प्रहार किया सो विक्रमादित्य दो टुकड़े हो गया । 13 उस समय साखला नापा दीवान (राणाजी)के पास खड़ा था, उसने अर्ज की—दीवान चिरायु हो ! देखिये, खड्ग एक प्रवाहकी तरह ही चला रहा है ।' 14 इतना कहते ही रावजीकी सेनाकी वागें उठी ।

केइक वडेरा ठाकुर वीच पडिया, जु कयो–'ठाकुरां ! भागां पाछै कांई जावौ ?'[1] तद फोजां ग्रागी ही चलाई सु पीछोलै जाय घोडा पाया ।[2] देस दीवाणरो मार पैमाल कियो ।[3] फेर पाछा मंडोहर पधार ग्रर जोधपुर वसायो । राज कियो ।

॥ इति राव जोधाजीरी वात संपूर्ण ॥

---

1 इतनेमे कई एक वडे-वुड्ढे ठाकुर वीचमे पडे ग्रौर कहा ठाकुरो ! भागते हुग्रोके पीछे क्यां जा रहे हो ? 2 तव फौजोंको मोड कर ग्रागे चलाया ग्रौर पीछोला तालाव पर जा कर घोडोको पानी पिलाया। 3 दीवानका देश (मेंवाड) लूट कर उसे पैमाल कर दिया ।

अथ वात राव वीकाजीरी लिख्यते

जाट साहरण भाड़ग[1] मांहै रहै । अर गोदारो पाडो[2] लाधड़ियै[3] रहै, सु वडो दातार । अर साहरणरै बैर वैहणीवाळ मलकी ।[4] सु मलकी मांटीनू कह्यो[5]--'गोदारो धणी कहावै छै सु चोधरी इसो दे जिसो गोदारैसू ऊपनो[6] हुवै ।' सु जाट दारूरो छाकियो[7] हुतो सु चोधरणरै चाबखैरी[8] दीवी । कह्यो--'जाह पांडैके, जो रीझी छै ।'[9] ताहरा[10] जाटणी कह्यो--'घरबूडा[11] ! म्हे तो वात कही थी ।'[12] पछै जाटणी कह्यो--'जो थारै मांचै आवू तो भाईरै आवू ।'[13] जाटसूं अबोलणो घातियो ।[14] मास १ सू पांडै गोदारैनू कहाव मेल्हियो[15]—'जु तै वदळै म्हनै ताजणो वाह्यो ।'[16] पांडै कह्यो--'आवै तो हूं आय ले जाऊं ।' यूं रहतां मास ६ हुआ । तद साहरण सरब भेळा हुआ[17]—'जु चोधरी चोधरण अबोलणो छै सु भांजां ।[18] अठै साहरणां बाकरा मराया ।[19] दारू मगायो । भगत हुई छै ।[20] इतरै पांडो गोदारो ऊंठा साठेक ६० सौ आय, गांमरै गोरमै उतरियो ।[21] जाटणी साळ माहै गोलीनूं सुवांण भीतर कांहटो दरायो ।[22] अर कह्यो--'तनै मारै तो कहै पाडो ले गयो ।' यु कहि मलकी तो पांडैरै साथ हालती हुई ।[23] जाटां भगत

---

1 एक गावका नाम । 2 गोदारा शाखाका पाडा नामक व्यक्ति । 3 गावका नाम । 4 साहरणकी पत्नी मलकी वेनीवाल शाखाकी । 5 मलकीने अपने पतिसे कहा । 6 उत्पन्न । 7 शरावके नशेमे छका हुआ । 8 चावुककी । 9 यदि उस पर मुग्ध हो गई है तो चली जा पांडेके यहा । 10 तव । 11 घर-घालक, घरको डुवाने वाला । 12 मैंने तो यो ही वात कही थी । 13 तेरेसे हम-विस्तर होऊं तो भाईसे होऊ । 14 जाटसे नही वोलनेकी प्रतिज्ञा ले ली । 15 एक मासके वाद गोदारा पाडेको सदेश भेजा । 16 तेरी खातिर मुझे चावुकसे मारा है । 17 इकट्ठे हुए । 11 जाट जाटनीके परस्पर नाराजी (बोलना-चालना वद) है उसे तुडवा दे । 19 यहा साहरण जाटोने वकरे मरवाये । 20 भोजनकी तैयारी हुई है । 21 इतनेमें पाडा गोदारा भी ६० ऊटोंके साथ गावके किनारे आ कर ठहरा । 22 जाटनीने साल (कमरे)मे अपने स्थान पर एक गोलीको सुला कर भीतर साकल-कुंडी दिलवा दी । 23 यो कह करके मलकी तो पाडेके साथ चलती वनी ।

जीमी ।[1] अर मलकीनूं माणस म्हेलिया ।[2] कह्यो--'चोधरणनूं ले आवो ।' जाय घर माहै साद कियो ।[3] बोलै कोई नही । जाट आयर कह्यो--'चोधरण तो आडो जडके सुय रही ।[4] कह्यो--'जावो, किंवाड़ भाज जगाय ले आवो ।' वे जाट जाय किवाड भाजि माहि जाय देखै तो गोली बैठी छै । गोलीनूं मारी । तद गोली कह्यो--'म्हनै क्यु मारो ? पांडो ले गयो । ताहरां जाटां पग लिया ।[5] जठै[6] चढिया तठै[7] सूधा[8] देख आया । तद साहरणा कह्यो--'आंपां पहुंच सगां नही ।[9] गोदारा राव वीकैजी मगरै छै ।[10] ताहरा भाडगरा जाट सिवांणी गया । नरसिंघदास जाट सिवाणी रहै । तद नरसिंघदासनूं जाटां जायनै कह्यो--'मांहरो देस तोनूं दीन्हो[11] तू साहरणांरो ऊपर कर ।[12] तद नरसिंघदास आपरी[13] फोज ले अर चढियो । लाधड़ियो गाम मारियो ।[14] सात-वीस[15] गोदारा काम आया । मारनै पाछा वळिया[16], ताहरा नकोदर पाडैरो बेटो राव वीकैजी पासै गयो । आयनै रावजीनूं कह्यो--'थाहरो जाट नरसिंघदास जाटू मारियो जाय छै ।'[17] तद राव वीकोजी सिंघमुख[18] सौं[19] चढिया, सु सिंघमुखसी दोए कोसै ढाका छै, तेथ जाय पुहता ।[20] साथ सारो तळाव ऊपर उतरियो हुतो ।[21] अर नरसिंघदास जाटू आय गांम मांहै सासरै[22]

1 इधर जाटोने भोजन कर लिया । 2 और मलकीको बुलानेके लिये मनुष्य भेजे । 3 घरमे जा कर आवाज मारी । 4 चौधरन तो किंवाड बद करके सो गई है । 5 तब जाटोने (मलकीके पावोको देख कर) खोज की । 6 जहा । 7 तहा, वहा । 8 तक । 9 अपन (पांडेके पीछे) नही पहुच सकते (अपने वशकी बात नही है) । 10 राव वीकाजी गोदारोके पीछे (सहायक) हैं । 11 हमारा देश तेरेको दिया । 12 तू सहारणोकी सहायता कर । 13 अपनी । 14 लाधडिया गावको लूट लिया । 15 (१) सत्ताईस । (२) 'सातवीस'से तात्पर्य—सात बार बीस अर्थात् एकसौ चालीस भी हो सकता है । राजस्थानमे दशमास गिनतीके लिये 'विंशति-पद्धति' (बीसकी सख्या के प्रयोगकी पद्धति) रही है । गांवोंमें अब भी है । इसे 'बीसी' भी कहते हैं । बीस वस्तुओंके समूहको पाँच भागोमे विभाजित करके बीससे गुणा करनेसे जो गुणनफल आता है उसे 'पांच-बीस' या 'पाच-बीसी' कहते है । एक सौ दशको 'साढी पाच-बीसी' और तीन सौ को 'पन्द्रह-बीसी' कहते है । इसी प्रकार और भी । 16 मार-काट करके या लूट करके वापिस लौटे । 17 तुम्हारे जाटको नरसिंहदास जाटू मार कर जा रहा है । 18 गांवका नाम । 19 से । 20 वहा पर जा पहुचे । 21 था । 22 ससुरालमें ।

उतरियो हुंतो। आधी रातरी समै हुती; तद भाडंगरा आधा जाट रावजीसौ आय मिळिया। कह्यो–'म्हे नरसिंघनू मरावां।' तदी[1] जाट राव वीकैजीनू ले गया। जठै नरसिंघ सूतो हुतो, तठै ऊपर ले गया। नरसिंघ ऊठियो। घोड़ो भुवर काढण लागो।[2] कांधळजी आडा हुवा। जितरै मांहि नरसिंघनू मार लियो।[3] जाटुवांरी फोज भागी। धन वित हुतो सु खोस लियो।[4] राव वीकैजीरी फतै हुई। तद[5] जाटो डूम दूहो कहै—

वीको वाहर नावड़्यो, भुवर नकोदर हाथ।
हम्म तुम झगडो नीवड्यो, नरसिंघ जाटू साथ।।[6] १

पछै आंण[7] सिधमुख मांहै डेरो कियो। पाछा फतै कर वळिया। पाछा आवतांनै[8] दासू वैहणीवाळ आय मिळियो। दासू कह्यो–'राज म्हारो वैर छै। जो लरावो[9] तो धरती थांहरी[10] छै, सो लेवो।' तद राव वीकोजी हालिया[11] सु हाराणी-खेड़ै[12] सौंहर जाट रहतो हो[13] सु मारियो। दासूरै वैर मांहै दासू मारियो।[14] दासू छोकरियां पासै गुण गवाया।[15] पाछा हालिया।[16] अरंड़कमल कांधळोत भटनेरनूं दोड़ियो।[17] मार, माल-वित वीकानेर ले आयो।[18] फतै कर आयो। धरती सारी ही लीवी।

।। इति श्री राव वीकाजीरी वात संपूर्ण ।।

---

1 तब। 2 भुंवर घोडेको निकालने लगा। 3 इतनेमें नरसिंहको मार दिया। 4 पशु और धन-माल था सो खोस कर ले लिया। 5 उस समय। 6 भुवर घोड़ेको और पाडेके बेटे नकोदरको अपने अधिकार मे करके राव वीका नरसिंह जाटूके विरुद्ध वाहर चढ़ा। नरसिंहको मार करके सफलता प्राप्त की। नरसिंह जाटूके साथ जो तुम्हारा वैमनस्य था वह हमने निपटा दिया। 7 फिर आ करके। 8 आते हुएको। 9 ले लें। 10 तुम्हारी। 11 चले। 12 गांवका नाम। 13 था। 14 दासूने अपने वैरमें उसे मार दिया। 15 दासूने अपनी इस सफलतामे (सौंहरकी) दासियोंसे अपनी प्रशंसाके गीत गवाये। 16 वापिस लौटे। 17 अरड़कमल कांधलोतने भटनेर पर चढ़ाई की। 18 भटनेरको लूट कर पशु और धन वीकानेर ले आया।

अथ भटनेररी वात

भटनेर पातसाह हमाऊरो[1] थाणो रहै। तद खेतसी अरड़कमलोत काधळोत, सु तैनू[2] एक कानूगो आय मिळियो। कह्यो–'तनै कोट दरावा। जो तू म्हारौ वासो राखै तो।'[3] तद इयै कानूगानू वीजो कानूगो धकाय काढियो हुतो सु पछै खेतसी कनै आयो।[4] तद खेतसी कह्यो–'वाह, वाह! म्हनै इतरोई जोइजै छै।'[5] तद खेतसी, कानूगौ हेरै साथै चढि खडिया।[6] खेतसीरै साथै काको[7] नीवो अर पूरणमल काधळोत। और ही आपरै साथसू भटनेर गया। तद मारग मे जावतांनू सवण हुवा[8]–'जु नाहरी जिनावररो माथौ लियै जाय छै।' तद सवणी आय कह्यो–'कोट तो थे लेसो; पण थांसू ही जासी।'[9] तद खेतसी कह्यो–'हेकरसौ जाय वैसा।'[10] पछै जाय[11], कोटनू जाय लागा।[12] ऊपरसौ कानूगै वरत नाखी।[13] खेतसी सारै ही साथसौं ऊपर चढियो। कोट लियो। वरस १० भटनेर ईंयारै रह्यो।[14]

अर जती १ वडगच्छौ वीकानेर रहै।[15] तियै कनै[16] एक भली वस्तु हुती सु राव जैतसी जाय मांगी। जती दीवी नही। तद जतीनै मारनै वस्तु लीवी। पछै कुवरो पातसाह[17] सोवो पाणीपथ सौ हिन्दुस्तान ऊपर चढियो। तै समै वै जतीरो चेलो सांम्हां जाय मिळियो। कह्यो–'जु थे चालो, भटनेर लेवा।' तद कुवरै कह्यो–'पाणी नही।'[18] ताहरां

---

1 हुमायु वादशाहका। 2 उसको। 3 यदि तू मेरी सहायता करे तो। 4 उस समय इस कानूगोको एक दूसरे कानूगोने निकलवा दिया था, इसका वदला लेनेके लिये वह खेतसीके पास आया। 5 वाह, वाह! मुझे तो यही चाहिये। 6 तव खेतसी और कानूगो साथ ले कर चढ चले। 7 चचो। 8 तव मार्गमे जाते हुएको शकुन हुए। 9 तव शकुनीने आकर कहा कि कोट तो तुम ले लोगे परतु तुमसे भी चला जायेगा। 10 एक वार तो जा वैठें। 11 फिर जाये तो जाय। 12 कोटके पास जा पहुचे। 13 कानूगोने ऊपरसे रस्सा डाल दिया। 14 दश वर्ष तक भटनेर इनके पास रहा। 15 वडे गच्छका एक जती वीकानेरमे रहता है। वडगच्छ—जैन सम्प्रदायके चौरासी गच्छोमे से एक। 16 उसके पास। 17 कामरॉं वादशाह। 18 कामरॉंने तव कहा कि इधर पानी नही है।

जती कह्यो–'पांणीरी हूं जांणू।'[1] तद कुवरो जतीनू साथ लेनै भटनेरनू चालियो। मारग मांहै पांणी नही। कटक मरण लागो। तद जतीनूं कह्यो–'पांणी पैदा कर।' सु जतीनू खेतपाळरो वर हुंतो[2], सु रोही[3] मांहै जाइ खेत्रपाळजीरी आराधना करी। तद मेह हुवो। तद चालिया-चालिया भटनेर गया। तद खेतसी सांम्हां जाय मिळियो। खेतसी कनां आगू मांगियो सु आगू खेतसी दियो।[4] राह छोड रोही माहै चलाया सु आगै कुंवरो चालै, अर पाछै खेतसी चालै। तद साथरां लोकां कह्यो–'वासै गनीम आवै छै।'[5] तद पाछां फिर खेतसीनू मारियो। जुंहर हुवो।[6] लोक घणो कांम आयो। पछै कुवरै भटनेर थांणो राख, आप वीकानेर आयो।

आगै राव जैतसीजीसूं लडाई हुई। रातीवाहो हुवो।[7] कुंवरो भागो। तुरक बुरी तरै नाठा।[8] तद बांडीरो चढियो राव अहमद चाहिल भटनेर आयो।[9] कोट झालियो। थाणो हुतो सु नाठो।[10] पछै[11] भटनेरमे अहमंद राज कियो।

तद ठाकुरसीजीनू राव कल्यांणमलजी सात-वीस सीह वाग दिया। तद ठाकुरसी जैतसीजीरै नांवै[12] जैतपुरो वसायो।[13]

एक दिन, भटनेरमे भद्रकाळीरो देहरो[14] छै, तठै ठाकुरसीजी अहमंद मिळिया। गोठ कीवी।[15] उठै देवी आगै भैसो वकर करणनू तयार कियो छै[16] तद सांगै भाटीनूं ठाकुरसीजी कह्यो–'भैसैनू ठरको करो'[17] भाटी ठरको कियो। भैसैरो सिर लटक पडियो। तद ठाकुरसी

---

1 तव जतीने कहा कि पानीका मुझे पता है। 2 जतीको क्षेत्रपालका वरदान दिया हुआ था। 3 जगल। 4 खेतसीके पास अगुआ मागा सो उसने दे दिया। 5 पीछे दुश्मन आ रहा है। 6 जौहर हुआ। 7 रात्रि-आक्रमण किया। 8 कामरा भाग गया और उसके साथके मुसलमान भी बुरी हालतमे भाग गये। 9 इधर वाडी से रवाना हो कर राव अहमद चाहिल भटनेर पर चढ कर आ गया। 10 उसने कोट पर अधिकार कर लिया और वहा जो थाना कामराने रख छोडा था, उस थानेके आदमी भी भाग गये। 11 पीछे, फिर। 12 नामसे, नाम पर। 13 वसाया। 14 भद्रकाली देवीका मदिर। 15 दावत की। 16 वहा देवीके आगे वलि देनेके लिये एक भैंसा ला कर खडा किया गया है। 17 भैंसे पर प्रहार करो।

सौण वांदियो ।[1] कह्यो–'कोट लेईस ।'[2] पछै ठाकुरसी पाछौ जैतपुर आयो । जैतपुर भटनेररो तेली १ परणियो हुतौ ।[3] तद ठाकुरसीजी तेलीरा होडा कराया । राजी कियो ।[4]

एक दिन अहमद ईयैरो[5] वेटो परणावण[6] गयो । वासै[7] भाई पीरोजनू राख गयो हुतो । तदो[8] ठाकुरसी उठासू चढियो, भटनेर गयो। रात पडी । कोट नीचे जाय ऊभो रह्यो ।[9] तेलीसू सारत हुतो ।[10] तद तेली हेठै लाव नाखी ।[11] तद ठाकुरसी सारा साथसू ऊपर चढ़ियो । भीतर गयो। लडाई हुई । पीरोज कांम आयो । कोट लियो । राव श्री कल्याणमलजीरी आण फेरी ।[12] कूची गढरी राव कल्याणमलजीनूं मेल्हाई ।[13] तद कोट रावजी ठाकुरसीनू बगसियो ।[14] पछै कितरैहेक दिने ठाकुरसी देवलोक हुवो ।[15] वाघ टीकै बैठौ । वाघसौ जैतपुर उतार लियो ।[16] पछै वाघ भटनेर रह्यो । पातसाही चाकर हुवो । वाघ पण देवलोक हुवो । पछै वाघरा बेटां कनै[17] महाराज श्री राय-सिंघजी पधारिया । अर[18] कह्यो–'थे छांडो अठैसू, ज्यौ आ धरती वीकानेर वासै घातां ।'[19] तद ईया[20] छाड भाठवा[21] आय गूढो[22] वसाय रह्या । भटनेर, नोहर वीकानेर वासै घातिया ।[23]

भटनेर महाराजा श्री रायसिंघजीरै हुवो । महाराजा श्री सूर-सिंघजीरै हुवो । अर महाराजा श्री करणसिंघजीरै हुतौ ।[24] तद साह-जहां पातसाहरै अमलमे सवत १६९···खालसै हुवो ।[25] ताहरां लडाई हुई । जोगीदास काधळोत, कल्यांणदास भाटी काम आया । पछै भटनेर खालसै रह्यो ।[26]

॥ इति भटनेर री वात सपूर्ण ॥

---

1 तव ठाकुरसीने इसे शकुन समझ कर वदन किया अर्थात् इसे शुभ शकुनके रूपमें माना । 2 कोट लूगा । 3 जैतपुरमें भटनेरका एक तेली व्याहा हुआ था । 4 तव ठाकुरसीने तेलीकी वहुत खातिर की और उसे प्रसन्न किया । 5 इसका । 6 व्याहनेको । 7 पीछे। 8 उस समय । 9 कोट नीचे जा कर खडा रहा । 10 तेलीसे पहिले वातचीत हो ही चुकी थी । 11 तेलीने रस्सा नीचे डाल दिया । 12 ठाकुरसीने राव कल्याणमलजीकी आन-दुहाई फिरवा दी । 13 गढकी चावी राव कल्याणमलजीके पास भिजवा दी । 14 राव-जीने तव उस गढको ठाकुरसीको वक्ष दिया । 15 कितनेक दिनोके वाद ठाकुरसी मर गया । 16 वाघके पाससे जैतपुर जब्त कर लिया गया । 17 पास । 18 और । 19 तुम इस धरती परसे अपना अधिकार छोड दो सो इसे वीकानेरके अधिकारमे ले लें । 20 इन्होने । 21 एक स्थानका नाम । 22 गुप्त रक्षास्थान । 23 भटनेर और नोहर वीकानेरके अधिकारमे लिये । 24 भटनेर महाराजा रायसिंहजीके अधिकारमे रहा, महाराजा सूरसिंहजीके भी अधिकारमे रहा और जिसके बाद जब महाराजा करणसिंहजीके अधिकारमे था । 25 तब बादशाह शाहजहाके शासन कालमे संम्वत् १६९ ·वह खालसे हो गया । 26 फिर भटनेर खालसे ही रहा ।

वात राव वीकैजीरी, वीकानेर वसायो तै समैरी

पैहली तो गढ कोड़मदेसररी ठोड़ मांडणरो विचार कियो हतो, पण उठै तो टिग सगिया नही ।[1] तद राव सेखैनूं जाय पूछियो । कह्यो–'म्हांनै काई वसणनू जागा वतावो ।'[2] तद सेखै कह्यो–'परैरी सी मांडौ जागा ।'[3] तद इंयां कह्यो–'परा तो म्हे नही जावां ।[4] ईयै मगरै जागा देख वसस्या ।'[5] तद सेखै कह्यो–'तो थांहरी दाय आवै जठै रहो ।'[6] तद अै जायगा देखता फिरता हुता ।[7] तद सांखलै नापै आ[8] जागा दीठी[9] । अठै एक गाडर व्याई हती ।[10] तैनू नाहर लागो छै, पण ऊरणैनै गाडर ले रही ।[11] तद नापै सांखलै राव वीकैजीनू बोलाय कह्यो–'आ जायगा देखो ।' तद रावजी पधारिया । जायगा दीठी ।[12] आ जायगा खुस कीवी ।[13] तद अठै कोटरी नीव भराई । सवण[14] लैणनू नापो सांखलो अर कांन्हो गया । अठै[15] आया । जठै हणै कोट छै तठै आया ।[16] अठै खुडियैरो उनाव हंतौ सु अठै आय रातो-रात सूता ।[17] तद सवणो तो सरब भेळा हुवा ।[18] घडी ४ चारैहेक अै सूता ।[19] तठै सिरांणै इयांरै एक नाग आय, एक मुरटरो बूटो हुतो, तियैरै ओळो-दोळो हुई, अर पूछ हुती सु मुह में झाली अर इयै भांत बैठो छै ।[20] अै परभातै ऊठिया ।[21] तद नापै इयै[22] नागनू देख

---

1 राव वीकाजीने पहिलेतो कोडमदेसर गावकी जगह गढ वनवानेका विचार किया था, पर वहा तो यह टिक नही सके । 2 हमे वसनेके लिये कोई स्थान बतलाओ । 3 यहासे कुछ दूर जा कर वसनेका स्थान वनालो । 4 दूर तो हम नही जायेगे । 5 इसी समतल भूमिमे कोई ठौर देख कर वस जायेंगे । 6 तो जहा तुम्हारी इच्छा हो वहा जा कर रह जाओ । 7 ये स्थान देखते फिर रहे थे । 8 यह । 9 देखी । 10 यहा एक भेडने वच्चा दिया था । 11 एक नाहर उसके पीछे पड़ा हुआ है, परतु भेड़ वच्चे को वचा रही है । 12 स्थान देखा । 13 यह जगह पसद की । 14 शकुन । 15 यहा । 16 जिस जगह इस समय कोट वना हुआ है उस जगह आये । 17 यहां खुड्डोंका उनाव था यहा ही रातो-रात आ कर सो गये । 18 तब सर्व शकुनी भी यहा इकट्ठे हो गये । 19 चार घड़ी अनुमान ये सोये । 20 वहा इनके सिरहानेकी ओर मुरट नामक घासका एक क्षुप था जिसके चारो ओर गोलाकार रूपमे मुहमे पूछ पकडे हुए एक सर्प वैठा हुआ है । 21 ये प्रभातमे जग कर उठे । 22 इस ।

कान्हैनूं कह्यो–'छेड़ो मती। अर नागनू देखो। अै तो सारा उठैसू नीसरिया, पण सरप उवै ही जागां तै भांत बैठौ रह्यो।[1] इयांरी[2] निजर पडियो इतरै ताई[3] वै हीज भांत बैठौ दीठौ।[4] तद इया उठैसू लीक टोरो।[5] देखा, कठैसू आयो छै?[6] जिकै[7] लीक गया। सु नाग पुरांणै कोटसू आयो। तद नापै कह्यो–'आखर कोट उठै हुसी, जठै सरप कुडाळो कर बैठौ।'[8] तै इतरी कह्यो–[9]'कोट पुराणै कोटरी जायगा करावो।' पछै कोट करायो। सहर वसायो। वीकानेर नांम दियो। तद केल्हण भाटीनूं खबर हुई, जु उठै कोट करायो। तद केल्हण सेखैनूं कह्यो। तद सेखै कह्यो–'हू तो कोई हालू नही।[10] ताहरां भाटी कळकरण वीकैजी ऊपर साथ कर आयो।[11] तद नापै सांखलै रावजीनूं कह्यो–' म्है सवण जोयो छै।[12] आंपणो अठै थिर-चिक राज छै।[13] घणी पीढी ताई थाहरै पूतारै रहसी।[14] आंपा[15] भाटियांसू लडाई करस्यां। आंपणी फतै हुसी।'[16] तद साथ थोडो हीज हुतो, पण लडाई कीवी, घोडा नाखिया।[17] कलकरणनू मार लियो। सारो ही साथ भागो। राव वीकैजीरी फतै हुई। तठा पछै[18] भाटी कोई नही आयो।

॥ इति श्री राव वीकैजीरी वात, वीकानेर वसायो तै समैरी सपूर्ण ॥

---

1 ये तो वहासे निकले परतु सर्प उसी जगह उसी प्रकार बैठा रहा। 2 इनकी। 3 इतने समय तक। 4 उसी प्रकार बैठा देखा। 5 तव इन्होने इसकी लीककी तलाश की। 6 देखें, कहांसे आया है? 7 उस। 8 जहा सर्प कुडली वना कर बैठा है, (सव जगह तलाश करने पर) आखिर कोट वहां ही वनेगा। 9 तव उसने इतना कहा। 10 मैं तो कोई चलूं नही। 11 तव भाटी कलिकरण वीकाजीके ऊपर अपनी सेनाके साथ चढ कर आया। 12 मैंने शकुन देखा है। 13 अपना राज्य यहा स्थिर रहेगा। 14 वहुतसी पीढियो तक तुम्हारे वशजोका अधिकार रहेगा। 15 अपन। 16 अपनी फतह होगी। 17 उस समय साथमे मनुष्य थोड़े ही थे, परतु घोडो को झोक कर लड़ाई की। 18 जिसके वाद।

वात कांधलजीरी । कांधलजी कांम आयौ तै समैरी

कांधळजीरो साथ गाडां सूधो[1] गांम सेरड़ै जाय रह्यो । पछै हासाररै फोजदार सारंगखांनरो जोर आकरो[2] हुवो । ताहरां उठै ठहर सगिया नही ।[3] ताहरां उठैसू गाडा लेनै राजासर आय रह्या । पछै राजासरसू साथ करनै काधळजी दोड़िया[4] सु हांसाररो काठो[5] सरव मारियो ।[6] घणो उजाड़ कियो ।[7] उठारा चढिया पछै साहबैरै तळाव आय उतरिया । वासैसू[8] हांसाररो फोजदार सारगखान आप[9] फोज कर आयो । ताहरा इयांनू[10] खबर हुई । ताहरा काधळजी पण चढ साम्हां ऊभा रह्या ।[11] चलती लड़ाई कीवी । ताहरां साथ फोज-दाररो नजीक[12] आय लागो । ताहरा घोड़ैनू खुरी कराई । कांधळजी घोडो खुरी करावता ताहरां सदा तग, पुस्तंग,[13] दुमची,[14] आगबध[15] तूट जावता, सु तूट गया । ताहरां दीकरा[16] राजो, सूरो, नीबो, बीजो ही साथ हुतो तैनूं कह्यो कै–'थे फोजरो मुहडो झालो[17], जितरै हूं तंग सुवार ल्यां'[18] सु साथ ठैहराय न सक्यो । पासैसू कर वध गयौ ।[19] ताहरां कांधळजी कह्यो–'जावोरे कपूतां ! म्हे तो थानू वाघैरै भरोसै पछवाहीरो[20] कह्यो हुतो, कै वाघो सदा ही पछवाई करतो हुतो ।' पछै कांधळजी वांसै[21] ऊभा रहि सारंगखांनसू लडाई कर कांम आया । आ खबर राव वीकैजीनू हुई । ताहरां चढण लागा । तद सांखलै नापै कह्यो–'रावजी ! जोधैजीनू खबर करण देवो, पछै चढ़ो ।' तद नापो राव जोधै कनै गयो । तद जोधैजी कह्यो–'कांधळरो वैर हूं लेईस ।' तै ऊपर राव जोधो उठैसू वडी खेड कर

---

1 सहित । 2 तीव्र, बहुत अधिक । 3 तव वहा नही ठहर सके । 4 आक्रमण किया । 5 सीमा । 6 लूट-मार की । 7 बहुत नुकसान किया । 8 पीछेसे । 9 स्वय । 10 इनको । 11 तव काधलजी भी चढ कर के सामने आ कर खडे रहे । 12 निकट । 13 पीछेका तग । 14 घोडेके साजकी चमडेकी पट्टी जो उसकी दुमके नीचे दवी रहती है । 15 आगेका वध । 16 वेटे । 17 तुम फौजको आगेसे रोको । 18 जितनेमें मैं तंग दुरुस्त करलूं । 19 पासमे होकर आगे बढ़ गया । 20 फौजका पीछेका भाग । 21 पीछे ।

चढिया ।[1] हिसारसू सारंगखांन चढियो । गांव झासलरै[2] ताई हाके हापह पूछैणां जाह पांखां लारथा लडाई हुई ।[3] हरोळ राव वीकोजी हुता । वडी लड़ाई हुई । उठै सारंगखाननू मारियो और ही सारंग-खांनरो घणौ साथ मारियो ।

॥ इति कांधळजी काम आया तै समैरी वात सपूर्ण ॥

1 जिसके ऊपर राव जोधा वडी सेना लेकर चढा । 2 एक गांवका नाम । 3 यह वाक्य स्पष्ट नहीं है ।

वात राव तीडैरी अर रावल सांवतसी सोनगरै इयां दोनांरै भीलमाल वेढ हुई तै समैरी

सोनगरां अर राव तीडैजीरै वेढ[1] हुई। सोनगरारा पग छूटा।[2] तरै राठोडां वासो[3] कियो। सु सोनगरांरी सीसोदणी सुवळी नांम साथ हुती।[4] सु सीसोदणीरी वैहल[5] दोळा[6] तीडैजीरा असवार आय फिरिया। तीडोजी पण[7] आय फिरिया। कह्यो–'थे वैहल फेरो।' तद सीसोदणी सुवळी कह्यो–'कासू करसो ?'[8] तद कह्यो–'घरवासो'।[9] तद सीसोदणी कह्यो–'एक कोल द्यौ ज्यु हालू।'[10] तद तीडैजी कह्यो–'मांगो।' तद कह्यो–'म्हारो जायो पाटवी हुवै।'[11] तद तीडैजी कह्यो–'भलां, पाटवी थाहरो जायोडानूं करस्यां।'[12] तद सीसोदणी सुवळीनू घरे लाया। तठै ओखांणो दूहो कहै छै[13]–

'सुवळी तीडै भिळ गई, सो सवळ सो सत्थ।'

पछै सुख कियो, तरै बेटौ कान्हड़देव जायो।[14] म्होटो हुवो। कुवरपदो कान्हडदेजीनू दियो।[15] सलखो रुळियो फिरियो।[16] अर सीसोदणी तीडोजीरै राजरी धणियांणी[17] हुई। जिकू सीसोदणी कियो सो प्रमाण हुवो।[18] तरै कांन्हड़देजी बेटो टीकायत हुवो।[19]

इतरै करतां गुजरातरै पातसाहरी फोज आई।[20] तद मेहवो

---

1 लडाई। 2 सोनगरे हार कर भाग गये। 3 पीछा। 4 थी। 5 वहली। 6 इधर-उधर, चारो ओर। 7 भी। 8 क्या करोगे ? 9 पुनर्लग्न। 10 एक वात का वचन दो तो मैं चलू। 11 मेरा पुत्र पाटवी (राज्याधिकारी) हो। 12 तब तीडेजीने कहा–'अच्छी वात है। तुम्हारेसे उत्पन्न पुत्रको पाटवी वनायेंगे।' 13 ऐसे आख्यान पर यह कहावत रूप (आधा) दोहा कहा जाता है। ओखाणो=(१) आख्यान। (२) कहावत। इस ओखाणोका भावार्थ यह है कि–'सुवली तीडेके साथ हो गई और वहली और भोजन आदिकी जो सामग्री साथमे थी वह भी साथमे लेती गई।' 14 सुवलीके साथ सहवास किया जिससे उसके कान्हडदे नामका पुत्र उत्पन्न हुआ। 15 राज्याधिकारी कुंवर (पाटवी कुंवर)-का पद कान्हड़देको दिया गया। 16 सलखा रुलता फिरा। 17 स्वामिनी, मालकिन। 18 जो सीसोदनीने कर लिया या कह दिया सो सही हुआ। प्रमाण=सही, प्रामाणिक। 19 इसलिये (सलखेसे छोटा होते हुए भी) टीकायत पुत्र कान्हडदे हुआ। 20 इतनेमें गुजरातके वादशाहकी फौज चढ़ कर आई।

तीडैजीनू हुतो ।[1] झगड़ो हुवो पातसाहसू तद तीडोजी कांम आया । सलखोजी पकडीजिया । फोज परी गई ।[2] पछै राव कान्हडदेजी टीकै वैठा । वीजां राठोड़ा सलखैजीरो घणो ही कह्यो, पण इलाज कोई हुवो नही ।[3] ताहरां प्रोहित वाहड़, विजड़ अै दोनू भाईया विचार कियो ।'[4] और तो किही भांत जाय सगीजै नही ।[5] तद कोया हुय जोगी हुवा ।[6] मुद्रा घाती ।[7] गुजरात गया । अै प्रोहित दीदारू सखरा पण ।[8] अर वीण आछी वजावै ।[9] तद सहर माहै वखाण हुवो,—[10]'जु जोगी पण भला, वीण आछी वजावै ।' तद पातसाहजी तांई मालम हुई ।[11]पातसाहजी बोलाया । तद पातसाहरी हजूर गया । इंयां कनै विद्या हुती सु दिखाई ।[12] पातसाह रीझियो ।[13] तद पातसाह कह्यो—'मांगो ।' तद इंया हाथ जोड अरज कीवी—'जु म्हांरो भोमियो कैद मांहै छै सु पावा ।'[14] तद पातसाहजी कह्यो—'कोणसो है ?'[15] इयां कह्यो—'महेवैरो सलखै नामै छै ।'[16] तद पातसाहजी कह्यो—'छोड द्यौ ।' तद सलखैनू छुडायनै महेवै लाया । कान्हडदेजी पटो दियो ।[17] उमरा कियो ।[18] तै कान्हडदेजीरै त्रिभुवणसी हुवो । अर त्रिभुवणसीरै ऊदो हुवो । तैसौ (ऊदावत) राठोड हुवा ।[19]

॥ वात राव तीडैजीरी सपूर्ण ॥

शुभ भवतु

---

1 तव मेहवा तीडेजीके अधिकारमे था । 2 फौज चली गई । 3 दूसरे राठौड़ोने सलखाजीको टीका देनेके सवधमे वहुत कहा, परतु कोई उपाय काम नही आया । 4 तव पुरोहित वाहट और विजड, इन दोनो भाईयोने विचार किया । 5 और तो किसी भी प्रकार (सलखेको वापिस लानेके लिये) जाना नही हो सकता । 6 तव हैरान होकर ये दोनो भाई जोगी हो गये । 7 कानोमे मुद्रायें डाल दी । 8 ये पुरोहित दोनो भाई रग-रूपमे दीदार वाले थे । 9 और वीणा अच्छी वजाते है । 10 तव शहरमे प्रशसा हुई । 11 तव वादशाहको भी खवर लगी । 12 इनके पास जो कला थी सो वहा दिखलाई । 13 वादशाह प्रसन्न हुआ । 14 हमारा भोमिया-सरदार आपकी कैदमे है । सो हमे मिल जाय । 15 कौनसा है ? 16 उन्होने कहा—'मेहवेका निवासी और सलखा उसका नाम है ।' 17 कान्हडदेजीने जागीर दी । 18 अपने दरवारका उमराव वनाया । 19 जिससे ऊदावत राठौडोंकी शाखा चली ।

वात पताई रावल साको कियो तैरी

वेगड़ो महमद गुजरात पातसाही करै ।[1] सु पताई रावळ ऊपर मुहीम कीवी ।[2] सु पावैगढनूं वरस १२ तांई घेरियो ।[3] पछै पताई रावळरै साळो सइयो वांकलियो तिकेरो वडो मांमलो, वडो इतबार; गढीरी कूंची तै वसू ।[4] तद पातस्याहसूं स्याजस कीवी ।[5] कह्यो जु–'म्हनै सगळां ऊपर करो तो हूं गढरी कूंची देऊ ।[6] तद पातस्याह कोल दियो । गढरी कूच्यां पातस्याहनूं दीवी । तद पताई रावळनूं खबर हुई जु–'गढ पालटियो ।'[7] तद पताई रावळ भीतर रांणियांनूं अर बीजाही[8] जनांनै सारैनूं कह्यो–'थे ज्युहर करो ।'[9] तद राणिया कह्यो–'म्हे ही रजपूतांणियां छां,[10] म्हे ऊंची चढस्यां; अर नीचे लकड़ियारो झूपो करो ।[11] ज्यु-ज्यु थे कांम आस्यो, त्युं-त्युं म्हे कूद पड़स्यां ।' पछै गढ भिळियो,[12] अर काम आवण लागा; तद अै रजपूतांणियां आग मांहै कूद-कूद पड़वा लागी । तद सइयो वांकलियो पातस्याह कनै ऊभो पातस्याहनूं दिखावै छै–[13] 'ओ फलांणो रजपूत कांम आयो अर आ रजपूतांणी कूद पड़ी ।'[14] तद पातस्याह देख अर कह्यो जु–'साबास अै रजपूत, रजपूतांण्यां कूं ।' पछै सरब कांम आय चुका । सर्व रजपूतांण्यां आग मांहै पड़ी, तद पातस्याह सइये वांकलियेनूं साबास दीवी । अर

---

1 गुजरातकी बादशाहत महमूद वेगडा कर रहा है। 2 वह पताई रावल के ऊपर सेना लेकर चढ आया। पताई रावल का नाम यशवतंसिह था, पर इसका प्रसिद्ध नाम यही था। यशवतंसिह बडा प्रतापी वीर पुरुष हुआ है। 3 पावागढको १२ वर्ष तक घेरे रहा। पावागढ, बडोदाके निकट बडोदा-रतलाम रेलवे लाइन पर चापानेरसे पावागढको जाने वाली एक शाखा लाइन पर स्थित है। 4 रावल पताईका एक सइयो वांकलियो नामका साला, जिसका वडा रौब, वडा एतबार वाला, गढकी चावियां उसके अधिकारमें। 5 उसने बादशाहसे मिल करके साज़िश कर ली। 6 मुझको सबसे ऊपरी (ओहदेदार) करो तो मैं गढकी चाबी दे दूं। 7 गढ(का अधिकारी) बदल गया। 8 दूसरेभी। 9 तुम जौहर करो। 10 हम भी राजपूतानियां है। 11 नीचे सुलगती हुई लकड़ियोंका गज लगा दो। 12 फिर गढ पर अधिकार हो गया। 13 तब सइयो वाकलियो बादशाह के पास खडा रह कर बादशाहको दिखा रहा है। 14 यह अमुक राजपूत मरा और यह उसकी (पत्नी) राजपूतानीने ऊपरसे अग्नि मे कूद कर जौहर किया।

गढ माहै आप आयो तद कह्यो–'अबै माल-मता बताय ? 'पछै बताई ।'[1] पछै काम आया था, जितरारा[2] माथा काटनै भेळा किया ।[3] पछै सइयै वांकलियेरो माथो काट सगळां माथा ऊपर मेलियो ।[4] कह्यो–'हमारा कोल था वह पूरा किया । इसने जिसका बहुत खाया, तिसका ही हुवा नही,[5] सु हमारा क्या होयगा ?' पातस्याह गढ लियो । पताई रावळ कांम आयो । अर सइयो वाकलियो ही मारियो । गढ घालटियो ।

वात पताई रावळरी सपूर्ण

अथ वात राव सलखैजीरी

राव सलखैजीरै पुत्र नही सु एक दिन सिकार पधारिया तद दूर पधारिया अर असवारी हुती सु सर्व वासै रह गई ।[6] अर आप सिकाररै वास्तै एकल असवार कोस ४ तथा ५ आगै पधारिया । सु तृखा[7] लागी । तद जळरी ठोड जोवण लागा ।[8] तद आगै दरखतारो झाडो दीठौ, तठै पधारिया ।[9] तद वळै देखै तो एकै ठोड धुवो नीसरै छै ।[10] तठै पधारिया ।[11] उठै देखै तो तपस्वी १ जोगी रावळ बैठो छै । उठै जाय ऊभा रह्या, नै जोगीरै पगै लागा ।[12] तद जोगी कह्यो–'बावा ! थारी किसी ठोड़ ?'[13] तद कह्यो–'बाबाजी ! हूं सिकार आयो थो सु म्हारो साथ वासै[14] रहि गयो । अर हूं सिकाररै वासै लागो थको आगै आय नीसरियो ।[15] सु म्हनै[16] तृखा लागी छै सु पाणी

---

1 अब माल-मता बता दे ? तब बता दी । 2 उन सबके । 3 इकट्ठे किये । 4 सभी कटे हुए मस्तकोके ढेरके ऊपर रखा । 5 उसका भी नही हुआ । 6 और जो वाहन और उनके सवार थे सो पीछे रह गये । 7 तृषा । 8 तब पानीका स्थान देखने लगे । 9 आगे वृक्ष-समूह दिखाई दिया वहां गये । 10 पुन' उस ओर देखते है तो देखा कि एक जगहसे धूआं निकल रहा है । 11 वहा गये । 12 वहा जा कर खडेरहे और योगीका चरण स्पर्श किया । 13 तुम्हारा कौन स्थान ? (कहा रहते हो ?) 14 पीछे । 15 और मैं शिकारके पीछे लगा हुआ आगे आ निकला । 16 मुझे ।

पावो ।' तद जोगी कह्यो–'इयै कमंडळ मांहि पांणी छै, थे पीवो, अर घोड़ो तिसियो हुवै तो घोडानूं ही पावो ।'[1] पछै सलखैजी आप ही पीयो, अर घोड़ैनू ही पायो । पण कमंडळ खाली नही हुवो तद सलखैजी दीठो[2] जु 'ओ अतीत सिद्ध ।'[3] तद आप अरज कीवी । 'और तो सर्व थोक छै, पण म्हारै पुत्र नही छै ।[4] तद सिद्ध मेखळी माहै हाथ घातनै गोटो १ बभूतरो, सोपारी ४ काढ दीवी ।[5] 'ओ बभूतरो गोटो राणीनू देई, तैरै वडो पुत्र हुसी । तैरो नांम मलीनाथ काढे ।[6] और च्यार पुत्र बीजा हुसी ।[7] वडै बेटेनू टीको देई ।'[8] तद पाछा घरे पधारनै जे भात[9] जोगी कह्यो हतो ते भांत रांणियांनू बभूतरो गोटो, सोपारिया विहच दीवी ।[10] पछै कितरैकै दिने पुत्र हुवो । फेर ४ पुत्र बीजा हुवा । पछै कितरैके[11] दिने वडै बेटैनू टीको दियो । जोगीनू बोलाय, जोगीरा आभरण पैहराय रावळ मलीनाथ नांम दियो ।[12] पछै सुख सौ राज कियो । तपो बळी हुवो ।

॥ वात राव सलखैजीरी संपूर्ण ॥

---

1 इस कमंडलमे पानी है सो तुम पी लो और यदि घोडा प्यासा हो तो उसको भी पिला दो। 2 देखा, जाना। 3 यह साधु सिद्ध है। 4 और तो सब वातें हैं, परंतु मेरे पुत्र नही है। 5 तब सिद्धने झोलीमे हाथ डाल कर उसमेंसे विभूति (भस्मी) का एक गोला और चार सुपारियां निकाल कर दी। 6 भस्मी का यह गोला वडी रानी को देना, उसके वडा पुत्र होगा और उसका नाम मल्लिनाथ दिलवाना। 7 और चार पुत्र दूसरे और होगे। 8 वडे वेटे (मल्लिनाथ) को टीका देना। 9 जिस प्रकार। 10 वांट दी। 11 कितने एक। 12 योगीको उस समय वुला कर (वडे वेटेको) योगीके वस्त्र पहिना कर उसका नाम रावल मल्लिनाथ रखा गया।

अथ गढ सझिया* तैरी ख्यात लिख्यते[1]

समत ११०० नाहडराव पड़िहार मंडोवर वसायो ।

समत १३०० जाळोर मंडायो[2] ।

समत १३७ · · · अलावदीन पातस्याह आयो । कान्हडदेजी अलोप हुवा । वीरमदे काम आयो ।[3]

समत १६१८ मालदेवजी लियो । बीजै फेरै समत १६७४ कुवर गजसिंघजी लियो ।[4]

समत १५१५ ज्येष्ट सुदि ११ दोपहर सनिवार राव श्री जोधैजी जोधपुर वसायो ।

संमत · · चित्रागद मोरी चीतोड वसायो ।

समत १३१० फागण वदी १३ महमद पातस्याह महमदावाद वसायो ।

समत १०७७ भोज पंवार रै वेटै वीरनारायण सिवांणो वसायो ।

समत १५१५ वरसिंघ जोधावत मेड़तो वसायो ।

संमत १६११ राव मालदेवजो लियो ।[5]

समत १५२५ वीको कुवर जोधपुरसू आय जांगळू वसियो ।

समत १६४५ फळोधीरो कोट राव हमीर करायो ।

समत · · · राव वीदै मेहवो वसायो । पैहला भिरड़ रहता ।[6]

समत १६१२ अकबर पातसाह आगरो वसायो ।

---

* अनूप सस्कृत लाइब्रेरीकी प्रतिमे 'सझिया' के स्थान पर 'मडिया' लिखा है ।

---

1 गढ वनाये गये अथवा विजय किये गये उनका वृत्तान्त । 2 सम्वत् १३००मे जालोरका किला वनवाया गया । 3 सम्वत् १३७ ···मे वादशाह अलाउद्दीन जालोरमें आया, उस समय कान्हडदे तो अलोप हो गया और वीरमदे लडाईमे काम आ गया । 4 सम्वत् १६१८मे मालदेवजीने जालोर ले लिया । दूसरी वार सम्वत् १६७४ कुंवर गजसिंहजीने ले लिया । (एक प्रतिमे सवत् १६७४के स्थान पर सवत् १६४४ लिखा है ।) 5 राव मालदेवजीने सम्वत् १६११मे मेडता पर अपना अधिकार कर लिया । 6 राव वीदेने मेहवा नगर वसाया, पहले भिरडकोटमे रहते थे । मेहवा नगर और भिरडकोट मारवाड़ देशके मालानी प्रान्तमें वसे हुए थे । दोनो सदियो पूर्व उजड गये । मेहवा नगर पहाडोसे घिरा हुआ था । इस समय वहां एक विष्णु मदिर और एक शिव मदिर तथा तीन बडे-बडे जैन मदिर स्थित हैं ।

संमत १२१२ श्रावण सुदि १२ मूळ नक्षत्र भाटी जेसळ जेसळमेर वसायो
संमत ८०२ वैसाख सुदि ३ वनराज चावड़ै पाटण वसायो ।[1]
संमत ११११ कँमास दाहिमै नागोर वसायो ।[2]
समत १५७६ रावळ जांम नवोनगर[3] वसायो ।
संमत १४५२ वैसाख वदि ७ देवड़ै सहसमल सिरोही वसाई ।

अथ वात राव सीहोजी (रै वंश)री

सीहेजीरो अंतेवर[4] सोळंकणी, सिद्धराव जैसिघदेरी बेटी । तैंरो बेटो आसथांन—१ ।

दूजो वीमाह चावड़ी सोभागदे मूळराज वाघनाथोतरी बेटी ।[5] जिणरै[6] बेटो—अज—१, सोनग—२ ।

आसथांनजीरै रांणी उछरंगदे ईदी, वूढ मेघराजोतरी बेटी । तिणरा[7] बेटा—१. धूहड़—१, १ धांधळ—२, १ चाचग—३ ।

धूहडजीरी रांणी द्रोपदा चहवांण, लखमसेन प्रेमसेनोत्तरी बेटी । तैरै[8] बेटा—१. रायपाळजी १, १ पीथड—२, १ वाघमार—३, १. कीरतपाळ—४, १ जगहथ—५ ।

रायपाळजीरै अंतेवर रांणी रतनादे भटियांणी रावळ जेसळ दुसाझोतरी बेटी । तैरा बेटा—१ कान्ह १ । १ साडो २ । १ लखमणसेन ३ । १ सहणपाळ ४ ।

कान्हरो अंतेवर किल्याणदे देवड़ी । सलखा लूंभावतरी बेटी । तैरा बेटा—१ राव जालणसी १ । वीजैपाळ २ ।

---

1 वनराज चावडाने वि० सवत् ८०२ वैशाख शुदि ३को 'अणहिलपुर-पट्टन' वसाया। यह नगर सरस्वती नदीके किनारे पर उत्तर गुजरातमें वसा हुआ है। यह कभी 'पीरान-पाटण' भी कहा जाता था। अब तो केवल 'पाटण' नामसे ही प्रसिद्ध है। 2 सम्वत् १११५में कँमास दाहिमाने नागोर वसाया। [एक प्रतिमे १२१५ सम्वत्मे वसाया जाना लिखा है।] 3 आधुनिक जामनगर। 4 पत्नी, अन्त:पुर। 5 दूसरा विवाह मूलराज वाघनाथोतकी पुत्री सौभाग्यदेवी चावडीसे हुआ। 6 जिसके। 7 उसके। 8 उसके।

राव जालणसीरो अतेवर रांणी सरूपदे गोहिलांणी, गोदा गजसिघोतरी बेटी। तैरो बेटो छाडो १।

राव छाडैरो अतेवर रांणी वीरां हुलणी। तैरो बेटो तीडो १

राव तीडैरो अतेवर चहुवांण राणी तारादे, राण वरजांगोतरी बेटी। तैरो बेटो सळखो १।[1]

राव सळखैजीरो अतेवर राणी जांणदे, चहुवांण मजुपाळ हेमराजोतरी बेटी। तैरा बेटा—१ रावळ मलीनाथ—१।१ जैतमाल—२।

बीजो वीमाह जोईयांणी, राव वीरमजीरी मा। जोईया धारदे मदोतरी बेटी।[2]

तीजो वीमाह[3] गोरज्या गोहिलाणी, गैंमल गजसिघोतरी बेटी। तिकैरो[4] बेटो सोभत—१।

राव वीरमजीरो अतेवर भटियाणी जसहड़ रांणादे। तैरो बेटो राव चूडोजी—१।

दूजी[5] रांणी मागळियाणी लाला, कान्ह केल्हणोतरी बेटी। तैरो[6] बेटो जैसिघ—१।

तीजो विमाह चांदण आसराव रिणमलोतरी वेटी। तैरो[7] बेटो गोगादेजी—१।

चोथो वीमाह ईंदी लाछां, उगमणसीह सिखरावतरी बेटी। जिकणरो[8] बेटो १. देवराज—१, विजैराव—२।

रावजी चवडैरै अतेवर साखली सूरमदे, वीसळरी बेटी। तिकणरो[9] बेटो रिणमलजी—१।

दूजी राणी तारादे गेहलोतणी, सोहड साह्ळ सूरावतरी बेटी। तैरो बेटो सतो—२।

तीजी[10] राणी भटियाणी लाडा, कुंतळ केल्हणोतरी वेटी। तैरो बेटो अरडकमल—३।

---

1 राव तीडेके अन्त:पुरमे चहुवान राणा वरजांगोतकी पुत्री तारादेवी रानी जिसका पुत्र सलखा। 2 दूसरा विवाह जोईया धारदेव मदोतकी पुत्री जोईयानी जो राव वीरमजीकी माता थी। 3 तीसरा विवाह। 4 जिसका। 5 दूसरी। 6 जिसका। 7 जिसका। 8 जिसका, उनका। 9 उनका। 10 तीसरी।

चोथो महळ[1] सोनां, मोहिल ईसरदासरी बेटी । तैरो बेटो कांन्हो—४ ।

पांचमो महळ ईंदो केसर, गोगादे उगमणोतरी बेटी । तैरा बेटा—१ भीम । २ सहसमल । ३ वरजाग । ४ रुदो । ५ चादो । ६ अजो ।

राव रिणमलजीरो अंतेवर रांणी भटियाणी । तिकैरो बेटो जोधोजी ।

राव जोधैजीरो अंतेवर रांणी सांखली नवरंगदे, रांणै मांडण रुणावतरी बेटी । तैरो बेटो राव श्री वीकोजी—१ वीदोजी—२ ।

बीजो महळ हाडी जसमादेजी । तैरा बेटा—१ राव सातळ—१ । १ राव सूजो—२ । १ नीबो—३ ।

तीजो महळ जाणादे हुलणी । बेटी भारमल जोगावतरी ।

राव वीकैजीरो अंतेवर भटियांणी रगादे, राव सेखैरी बेटी पूगळरै धणीरी[2] । तैरो बेटो रावजी श्री लूणकरणजी ।

राव लूणकरणजीरै अंतेउर देवडी रांणी लाला । देवडै सहसमलरी बेटी । तैरो बेटो रावजी श्री जैतसीजी ।

जैतसीजीरै राव श्री कल्यांणमलजी । सोढै जैतमालरा दोहीता । रांणी श्री कसमीरदेजीरा बेटा ।

महाराजा श्री रायसिघजी सोनगरै अखैराजरा दोहीता । राणी श्री भगतादेजीरै पेटरा ।[3]

महाराजा श्री सूरसिंघजी भाटी रावळ हरराजरा दोहीता । रांणी श्री गगाजीरो बेटो । सासरैरो नांम सोभागदेजी ।[4]

महाराजा श्री दलपतसिघजी सीसोदियै राणै श्री उदैसिघजीरा दोहीता । मा रो नांम रांणी श्री जसवंतदेजी ।[5]

महाराजा श्री करणसिघजी कछवाहै हिमतसिंघजीरा दोहितरा ।[6] मा रो नांम रांणी सरूपदेजी ।

---

1 पत्नी । 2 पूगलके स्वामी राव सेखाकी पुत्री भटियानी रगादेवी राव वीकाजीके अन्त.पुरकी रानी । 3 महाराजा रायसिंहजी सोनगरा अखैराजके दोहिते । भक्तादेवीजी रानीकी कोखसे उत्पन्न । 4 रानी श्री गगाजीका पुत्र । जिसका ससुरालमे दिया गया नाम सौभाग्य देवीजी । 5 माताका नाम रानी श्री जसवतदेवीजी । 6 दोहिता ।

महाराजा श्री अनूपसिघजी चंद्रावत रुखमांगदजीरा दोहितरा। मा रो नांम रांणी श्री कसतूरदेजी। पीहररो नांम इंद्रकुवर।[1]

महाराजा श्री सुजांणसिघजी, राजावत श्री अमरसिंघजीरा दोहीता। मा रो नांम रांणी श्री चंद्रकुंवरजी।

महाराजा श्री जोरावरसिघजी, रांणावत इद्रसिघजीरा दोहीतरा। माजी रो नाम रांणीजी श्री रतनकुवरजी।

महाराजा श्री गजसिघजी, सेखावत सांवतसिघजीरा दोहितरा। माजी रो नांम राणी श्री अतभागदेजी। पीहररो नाम व्रजवरजी।[2]

महाराजा श्री सूरतसिघजी, कछवाहे रायसिघजीरा दोहितरा। माजी रो नांम राणीजी श्री गाहिड़देजी।

---

1 महाराजा श्री अनूपसिहजी रुक्मागदजी चन्द्रावतके दोहिते। माताका नाम रानी श्री कस्तूरदेवीजी और पीहरका नाम इन्द्रकुंवरि। 2 माताजीका नाम रानी श्री अति भाग्यदेवीजी। पीहरका नाम व्रजवरजी।

अथ जेसलमेररी वात

संमत १२१२ श्रावण सुदि १२ मूळ नक्षत्रे रावळ जेसळ जेसळमेर स्थापितं ॥

१. रावळ जेसळ वरस ५ राज कियो ।

२. रावळ सालिवाहन जेसळरो । जेसळमेर वरस १२ राज कियो ।

३. रावळ वैजल सालिवाहनरो । मास २ दिन १५ राज कियो ।

४. रावळ काल्हण जेसळरो बेटो । वैजलनू काढिनै राज लियो ।[1] वरस १८ राज कियो ।

५. रावळ चाचगदे काल्हणरो बेटो । वरस ३२ दिन २० वीस राज कियो ।

६. रावळ कर्ण चाचगदेरो । वरस २६ मास ५ दिन २० राज कियो ।

७ रावळ लखणसेन कर्णरो । वरस १८ राज कियो ।

८. रावळ पुनपाळ लखणसेनरो । मात्रे हीसूं चूको ।[2] पछै भाटिए मिळनै पुनपाळनू कोटसू उतारियो ।[3] मास ६ राज कियो । पछै भाटिया जैतसीनू टीको दियो । जैतसी तेजरावरो । तेजराव चाचगदेरो, तिण गढ लियो ।[4] पछै पुनपाळ पूगळ गयो ।

९. रावळ जैतसी तेजरावरो वर्ष १८ मास ६ दिन ६ राज कियो । पछै जैतसी वृद्ध हुवो तद काष्ट भक्षण कियो ।[5]

१०. रावळ मूळराज जैतसीहरो टीकै बैठो । वरस ११ मास ८ राज कियो । पछै तुरक[6] आया । जेसळमेर विग्रह[7] हुवो । वरस १२ कमालदीन रह्यो । पछै सामान तूटो ।[8] ताहरां

---

1 वैजलको निकाल करके राज्य हस्तगत किया । 2 किसी विमातृसे अनुचित संबध हो गया । 3 भाटियोने मिल करके पुण्यपालको गढसे नीचे उतरवा दिया । 4 जिसने गढ पर अधिकार कर लिया । 5 जैतसी वृद्ध हुआ तब कालाकृष्ट हो गया (काष्ठने जलाकर भक्षण कर लिया) । 6 मुसलमान, तुर्क । 7 युद्ध । 8 फिर सामान समाप्त हो गया ।

रावळ जैतसी, भाई रांणो रतनसी जुंहर[1] कर बे[2] भाई कांम आया ।

११. रावळ दूदो जसहड़रो । जसहड़ पाल्हणरो । पाल्हण काल्हणरो पोतरो ।[3] तिण आयनै जेसळमेर सूनो पडियो हुतो सु लेनै टीकै बैठो ।[4] वरस १० दिन ७ राज कियो । पछै पातसाही फोजां आई तद बेऊं भाई ज्युंहर कर कांम आया ।[5]

१२. रावळ घड़सी । रावळ जैतसीहरो बेटो घड़सी टीकै बैठो । वरस ३ मास ६ दिन १२ राज कियो । तिण रावळनूं जसहड़े मारियो ।[6]

१३. रावळ केहर देवरो । देवराज मूळराजरो । मूळराज जैतसीरो । केहर वरस ३४ मास १० दिन ६ राज कियो । रावळ केहररै बेटा ४—१ लखमण । १ केल्हण । १ सोम । १ कलिकर्ण । सु लखमण टीकै बैठो । केल्हण पूगळ, मरोठ, वोकूपुर लिया ।[7] सोम देरावर लियो ।[8]

जेसा जोधपुररी धरती माहै वडा ठाकुर जेसा-भाटी कहीजै ।[9]

१४. रावळ लखमण केहररो । वरस ३१ दिन २३ राज कियो ।

१५. रावळ वैरसी लखमणरो । वरस १९ मास ९ दिन १७ राज कियो ।

१६. रावळ चाचो वैरसी रो । वरस १८ मास १ राज कियो । पछै अमरकोट ऊपर गयो हुतो, तठै सोढै माडण कूड कर परणावणरो, नै परणायो । पछै राते सूतैनू मारियो ।[10]

---

1 जोहर । 2 दोनों । 3 पौत्र । 4 जैसलमेर सूना पडा था सो उसने आ कर अधिकार कर लिया और राज्य-तिलक कढवा लिया । 5 फिर जब बादशाही फौजोने आक्रमण किया तब दोनो भाई जौंहर करके काम आ गये । 6 इस रावल (घड़सी)को जसहड़-भाटियोने मार दिया । 7 केल्हणने पूगल, मारोठ और विकूपुर पर अधिकार किया । 8 सोमने देरावर पर अधिकार किया । 9 जैसा भाटीके वंशज भाटी-राजपूत जोधपुरकी धरतीमे बडे ठाकुर है और वे जैसा-भाटी कहलाते है । 10 फिर वह अमरकोट पर चढ कर गया था, किन्तु वहा सोढे माडणने विवाह कर देनेका कपट कर उसका विवाह कर दिया और रातको सोते हुएको मार दिया ।

१७. रावळ देवीदास चाचैरो बेटो। तियै बापरै वैर उमरकोट पाड़ियो। सोढै मांडणनू मारियो।[1] पछै टीकै बैठो। वरस २५ मास ४ राज कियो।

१८ रावळ तेजसी देवीदासरो। वरस ३५ मास ४ दिन १० राज कियो।

१९. रावळ लूणकर्ण जैतसीरो। वरस २२ मास १० दिन ३ राज कियो।

२०. रावळ मालदे लूणकर्णरो। वरस १० मास ७ दिन २० राज कियो।

२१. रावळ हरराज मालदेरो। वरस १६ दिन १८ राज कियो।

२२. रावळ भीम हरराजोत। वरस ३५ मास ११ दिन १२ राज कियो।

२३. रावळ कल्याणदास हरराजरो। वरस १४ मास ६ दिन १५ राज कियो।

२४. रावळ मनोहरदास कल्यांणदासोत। वरस २२ राज कियो। निसंतत।[2]

२५. रावळ रामचद सिंघरो। सिंघ भांनीदासरो। भांनीदास हरराजरो टीकै बैठो। मास १० दिन २० राज कियो। पछै राज फिरियो।[3]

२६. रावळसबळसिंघ दयाळदासरो। दयाळदास खेतसीहरो। खेतसीह मालदेरो। रावळ सबळसिंघ रामचंदनू काढिनै टीकै बैठो।[4] वरस ... मास ... दिन ... राज कियो।

२७. रावळ असरसिंघ सबळसिंघरो बेटो। वरस ... मास ... दिन . राज कियो।

---

1 उसने (देवीदासने) अपने बापको मार देनेकी शत्रुताके बदलेमें अमरकोटका विध्वस किया और सोढे मांडणको मार दिया। 2 नि.सतति रहा। 3 बादमे (रावल रामचन्दके जीते-जी ही) राज्य-गद्दी बदल गई। 4 रावल सबलसिंह, रामचदको निकाल करके राज्य-गद्दी पर बैठा था।

२८. रावळ जसवंतसिंघरै वडो कुमर जगतसिंघ हुतौ । कुवरपदै ही कटारी मार मुंवो ।[1] तैरो[2] बेटो बुधसिंघ टीकै बैठो । पछै बुधसिंघनै दादी विष दे मारियो । राज तेजसिंघ जसवतसिंघोतनै दियो । पछै तेजसिंघसू हरिसिंघ अमरसिंघोत तळाव घड़सीसर ऊपर चूक कर राज रावळ अखैसिघनू दियो ।[3]

पूगल राव

१. राव केल्हण ।
२. राव चाचो ।
३. राव वैरसल ।
४. राव सेखो ।
५. राव हरो ।
६. राव हरसिंघ । (राव वरसिंघ)[4]
७. राव जेसो ।
८. राव कान्ह ।
९. राव आसकरण ।
१०. राव जगदेव ।
११. राव सुदरसण ।
१२. राव गणेसदास ।
१३. राव विजैसिंघ ।
१४. राव दलकरण ।
१५. राव अमरसिंघ ।

वीकूंपुर राव

राव वरसिंघ कुवरपदै राव गोपै कान्हां वीकूपुर लियो । राव हरै जीवतां । जाहरा राव वरसिघ पूगळ टीकै बैठो, जाहरा वेटै दुरजणसलनू वीकूपुर दियो ।[5]

१. राव दुरजणसल ।
२. राव डूगरसीह ।
३. राव उदैसिंघ ।
४. राव सूरसिघ ।
५. राव मोहणदास ।
६. राव जैसिंघ । पाछै जैसिघनू विहारी सूरसिघोत सबळसिघ रावळसूं मिळनै

1 वह कुमारपदमे ही अपने हाथो पेटमे कटारी मार कर मर गया । 2 उसका । 3 फिर हरिसिह अमरसिहोतने घडसीसर तालावके ऊपर तेजसिहको धोखेसे मार डाला और राज्य रावल अखैसिहको दे दिया । 4 किसी प्रतिमे हरिसिह और किसीमे वरसिह है । 'वरसिह' ठीक जान पडता है । 5 पूगलके राव हराके वेटे वरसिहने अपने वाप हरेके जीते-जी ही कुमारपदमे राव गोपाके पाससे विकूपुर ले लिया । लेकिन हरेके मरनेके वाद जब वरसिह पूगलमें टीके वैठा तो विकूपुर अपने पुत्र दुर्जनसलको दे दिया ।

जैसिघनू काढियो। पछै विहारीदास टीकै बैठो। पछै विहारीदासनू किसनै मारियो।[1]

७. राव विहारी।

८. राव जैतसी।

९. राव सुदरदास।

१०. राव लाडखांन।

११. राव हरनाथ।

वैरसलपुर राव

राव वैरसल वैरसलपुर वसायो।[2]

१. राव खीवो। राव सेखैरो बेटो।

२. राव तेजसीह।

३. राव मालदे।

४. राव मंडळीक।

५. राव नेतसीह।

६. राव प्रिथीराज।

७. राव दयाळदास

८. राव करणसिंघ।

९. राव भांनीदास। (राव भवानीदास)[3]

१० राव केसरीसिंघ।

११. राव लखधीर।

१२. राव अमरसिघ।

१३. राव मानसिंघ।

मुगल-चकता-भाटी कहै छै[4]

१ चकतो भोपतरो बेटो।

१ भोपत बाळबधरो।

१ बाळबंध सालवाहनरो। (बाळवध)[5]

१ राजा रिसाळू सालवाहनरो।

१ भाटी सालवाहनरो।

१ सालवाहन अरधबिंबरो।

खारबारैरा भाटी

१ वाघो राव सेखैरो बेटो।

२ किसनो वाघावत।

३ तेजमाल किसनावत।

४ खगार तेजमालोत।

५ नाथो खगारोत

६ कुंभकरण नाथावत।

७ विहारी कुभैरो।

८ जोध विहारीरो।

९ जैतो जोधैरो।

---

1 विहारीदास सूरसिंहोतने रावल सवलसिंहसे मिल कर राव जयसिंहको निकाल दिया और विहारीदास गद्दी पर बैठ गया, लेकिन विहारी दासको किशनने मार दिया। 2 राव वैरसलने वैरसलपुरको बसाया। 3 भानीदास और भवानीदास दोनो नाम प्रतियोमे लिखे मिलते है। 4 ये मुगल-चकता भाटी कहे जाते हैं। 5 इन दो नामोके सिवा 'वाळावधव', 'वाळंद' और 'वाळव' पाठान्तर भी लिखे मिलते है।

।। श्री रांमजी ।।

अथ वात दूदै जोधावत मेघो नरसिंघदासोत सींधल मारियौ तै समैरी

राव जोधो पोढ़ियो हुतो ।[1] वातपोस वात करता हुता ।[2] राजवियांरी वातां करता हुता । ताहरां एक कह्यो–'एकण भाटियांरो वैर न रह्यो ।'[3] एक बोलियो–'राठोडारो वैर है ।' ताहरां एक बोलियो–'राठोड़ांरै वैर एक रह्यो'–कह्यो 'किसो ?'[4] कह्यो–'आसकरण सतावतरो वैर रह्यो । नरबदजी सुपियारदे ल्याया तदरो वैर रह्यो ।'[5] ताहरां राव जोधाजी वात सुणी । ताहरां वांनू पूछियो[6]–'थे कासू कहो छौ ?'[7] कह्यो 'जी–क्यूंही नही ।'[8] ताहरा बोलिया–'ना ! ना ! कहो ।'[9] ताहरां कह्यो 'जी–आसकरणरै ही छोरू नही नै नरबदजीरै पण छोरू नही, तै वैर युंही रह्यो ।'[10] आ वात सुणनै राव जोधैजी मनमे राखी ।

प्रभातै दरबार वैठा छै, तितरै कुवर दूदै मुजरो कियो आयनै ।[11] सु दूदैसू रावजी कुमया करता ।[12] ताहरां रावजी कह्यो–'दूदा ! मेघो सीधळ मारियो जोइजै ।'[13] ताहरां दूदै सलांम कीवी । ताहरां रावजी बोलिया–'दूदा ! आसकरण सतावतनू नरसिंघदास सीधळ मारियो हुतो;[14] नरबदजी सुपियारदे ल्याया, तियै वदळै,[15] सु नरसिंघदासरो बेटो मेघो, तियैनू जाह मार ।[16] ताहरा दूदो सलाम करनै

---

1 राव जोधा सोया हुआ था। 2 वातपोश लोग वातें (चर्चा) कह रहे थे। 3 एक भाटियोका वैर अब नही रहा। 4 कौनसा ? 5 नरबदजी सुपियारदेको लाये उस समयका वैर रह गया। 6 तब उनको पूछा। 7 तुम क्या कहते हो ? 8 कुछ भी नही। 9 तब कहा – नही – नहीं ! कहो। 10 आसकरणके भी कोई पुत्र नहीं, और न नरबदजीके भी कोई पुत्र, वह वैर यो ही रह गया। 11 इतनेमे कुमार दूदाने आ कर मुजरा किया। 12 रावजी दूदासे नाराजगी रखते थे। 13 तब रावजीने कहा–दूदा ! मेघा सीधल मारा जाना चाहिये। 14-15 दूदा ! नरबदजी सुपियारदेको ले आये थे उसके वदलेमे आसकरण सतावतको नरसिंहदास सीधलने मार दिया था। 16 सो उस नरसिंहदासका बेटा मेघा है उसको तू जा कर मारदे।

चालियो। ताहरां रावजी कह्यो–'दूदा ! युं जा नांह, सराजांम कर थू। आगै मेघो सींधळ छै।[1] तै मेघो कांनै नहीं सुणियो छै। ताहरां दूदो कहै–'का तो दूदो मेघै; का मेघो दूदै।'[2]

ताहरां दूदो डेरै आयनै आपरो[3] साथ लेनै चढियो। जायनै जैतारणहूं[4] कोस ३ उतरियो। आदमी मेलियो।[5] जायनै मेघैनू कह्यो–'दूदो जोधावत आयो छै। आसकरण सतावतनू मांगै छै।'[6] आदमियै जाय मेघैनू कह्यो। ताहरां मेघै कह्यो–'मोड़ा क्युं आया ?'[7] ताहरां कह्यो–'समझ पडी पछै तो दूदै पांणी आगै आय पीयो छै।[8]

ताहरां मेघो माळिये[9] चढियो। कह्यो–'रे घोड़्यां ईयै तरफ मता उछेरो ![10] दूदो जोधावत आयो छै, घोड्यां ले जासी,'[11] ताहरां दूदो बोलियो। कह्यो–'ओ कुण बोलै ?'[12] कह्यो 'जी, मेघो बोलै छै। ताहरा कह्यो–'रे ! इतरी भुंय सुणीजै छै ?'[13] ताहरां कह्यो–'जी, मेघो सीधळ कांनै सुणियो छै किना नही ?'[14] ताहरा मेघैनू कहाड़ियो–'म्हारै घोड़ियांसूं कांम नही।[15] मालसू कांम नही। म्हारै थारै माथैसू कांम छै।[16] परतरी वेढ करस्यां।'[17]

ताहरां बीजै दिन मेघो साथ करनै आयो। इयै तरफसू दूदो आयो। ताहरां मेघो कहै–'दूदाजी ! थां अवसर लाधो, रजपूत तो म्हारा सरब म्हारै बेटैरी जांन गया। अठै तो हूं छूं।'[18] ताहरा दूदो

---

1 तब रावजीने कहा–दूदा ! इस प्रकार मत जा; तू सरजाम कर, आगे मेघा सीधल है। 2 या तो दूदा मेघाके हाथ, या मेघा दूदाके हाथ। 3 अपना। 4 जैतारणसे। 5 आदमीको भेजा। 6 आसकरण सत्तावतको मारनेके वैरका बदला मागता है। 7 देरीसे क्यो आये ? 8 मालूम हो जानेके बाद तो दूदाने पानी भी (अपने घर पर नही पी कर, मार्गमे) आगे आकर पिया है। 9 महल पर। म्हाळियो मा'ळियो, माळियो=छत पर बना हुआ शयन-गृह। 10 अरे घोडियोको इस ओर चरनेको मत ले जाओ। उछेरणो=गाय, भैंस आदि चौपायोंके समूहको जगलमें चरनेको ले जाना। 11 घोडियोको ले जायगा। 12 यह कौन बोल रहा है ? 13 अरे ! इतनी दूरी पर सुना जाता है ? 14 अजी यह मेघा सीधल है, कानोंसे कभी सुना है कि नही ? 15 तब मेघेको कहलवाया–मेरेको घोडियोसे कोई सरोकार नही है। 16 मेरेको तो तेरे सिरसे प्रयोजन है। 17 अपन अकेले ही परस्पर दावकी लडाई करेंगे। 18 दूदाजी ! आपको यह मौका मिला है, मेरे राजपूत तो सभी मेरे बेटेकी बारातमे गये हुए हैं, यहां तो केवल मैं ही हूं।

कहै–'मेघाजी ! आपां परतरी वेढ करस्यां, रजपूतांनूं क्युं मारां ? का दूदो मेघैं, का मेघौ दूदैं। आंपांहीज सांफळ हुसी।'[1] ताहरां साथ दोनां सिरदारांरो अळगो ऊभो रह्यो।[2] एकी तरफ मेघो आयो, एकी तरफ-सू दूदो आयो। ताहरां दूदै कह्यो–'मेघा ! कर घाव।'[3] ताहरां मेघो कहै–'दूदा ! थे करो घाव।'[4] ताहरां दूदै फेर[5] कह्यो–'मेघा ! थे घाव करो।' ताहरां मेघै घाव कियो, सु दूदै ढालसूं टाळ दियो। दूदै पावूजीनूं समरनै मेघैनूं घाव कियो सु माथो धडसूं अळगो जाय पडियो। मेघो कांम आयो। ताहरा मेघैरो माथो दूदो ले हालियो।[6]

ताहरां आपरा रजपूतां कह्यो–'मेघैरो माथो धड़ ऊपरा मेलो। वडो रजपूत छै।'[7] ताहरां माथो दूदै धड़ ऊपर मेलियो।[8] पछै दूदैजी कह्यो–'कोई गांमरो उजाड़ मतां करो।[9] आंपणै मेघैसूं कांम हुतो।'[10] मेघैनूं मार दूदोजी अपूठा फिरिया।[11] आयनै रावजी श्री जोधैजीनूं तसलीम कीधी।[12] रावजी बोहत राजी हुवा। रावजी दूदानै घोडो सिरपाव दियौ।[13]

॥ इति श्री दूदै जोधावतरी वात संपूर्ण ॥

---

1 अपनी परस्परमे ही झडप होगी। 2 तव दोनोका साथ (राजपूत सैनिक समूह) दूर खडा रहा। 3 मेघा ! तू प्रहार कर। 4 दूदा ! तुम प्रहार करो। 5 फिर। 6 तव मेघेका सिर दूदा लेकर चला। 7 तव अपने (उनके) राजपूतोंने कहा—मेघेका सिर धड ऊपर रख दो, वडा राजपूत है। 8 तव दूदाने सिरको धडके ऊपर रख दिया। 9 कोई भी गांवका कुछ भी नुकसान नहीं करना। 10 अपना काम मेघेसे था। 11 मेघेको मार कर दूदाजी वापिस लौटे। 12 आ करके रावजी श्री जोधाजीको प्रणाम किया। 13 रावजी (जोधाजी)ने दूदाको घोडा और सिरोपाव दिये।

अथ वात खेतसीह रतनसीहोत सीसोदियै चूंडावतरी लिख्यते

रतनसी नाढावत सीधळ, सीधळावटीरो गांम जाखोरो, तिण मांहे रहै।[1] तैरै बेटी मोटी हुई।[2] ताहरां कह्यो–'राज ! नाळेर मेलो।'[3] तो कह्यो–'रावळ रतनसीहरो बेटो खेतसीह छै, तैनू नाळेर मेलो।'[4] अर भांनो सोनगरो वीदणीरै[5] मामो हुवै तिकैनू[6] कह्यो–'भाना ! जाओ, नाळेर रावत रतनसीहरै बेटै खेतसीहनै देराडिज्यो।'[7] ताहरां भांनै कह्यो–'वाह-वाह ! रावत साहिबीरो धणी छै। आज तो भूखो छै; पण साहिबी छै।' नाळेर खेतसीहनू झलायो।[8] पनरै दिनांरो साहो थापियो।[9] ब्राह्मणानू सीख दीवी।[10]

रावत तो बेटैसू बुरो हुतो, अर खेतसीहरै घरमें क्यु देणनै हुतो नही।[11] सु ब्राह्मणांनू दियो क्युही नही। ताहरा ब्राह्मणां कह्यो–'बाबा ! घरमे उरमे ऊंदरा थिड़ी करै छै।[12] भूखा मरै छै।[13] 'तो कहियो–'म्हारी दीकरी भूखमे दईस ?[14] हूं कूवै पड़ू पण देवू नही।[15]

ताहरां सगरो बालीसो सूरजमल बालीसैरो बेटो, उवैनू पनरै दिनांरो साहो थापि नाळेर मेलियो।[16] ताहरा बालीसां जानरी तैयारी कीवी।[17] अठै भांनै सोनगरै कह्यो–'रावनजी ! साहो नैड़ो आयो,

---

1 सीधल रतनसी नाढावत, सीधलावाटीके गाव जाखोरोमे रहता है। 2 उसके एक बेटी है जो वयस्क हो गई। 3 तब कहा–श्रीमान् ! इसके विवाह-सम्बन्धके लिये कही नारियल भेजिये। 4 रावल रतनसिहका बेटा खेतसिह है उसको नारियल भेजिये। 5 दुलहिनके। 6 जिसको। 7 भाना ! जाओ और यह नारियल रावत रतनसिहके बेटे खेतसिहको दिलवा देना। 8 ग्रहण करवाया, दिया। 9 पन्द्रह दिनो (के बाद)का लग्न निश्चित किया। 10 ब्राह्मणोको रवाना किया। 11 रावत तो बेटेसे नाराज था और खेतसिहके घरमे देनेको कुछ था नही। 12 घरमे-वरमें तो चूहे थिडी करते है। 13 भूखो मरते है। गरीबी भुगतते है। 14 मेरी लडकी क्या मैं ऐसे दरिद्रावस्था वालेको दूंगा ? 15 मैं कुएंमे पड जाऊ परतु ऐसेको नही दूं। 16 तब सूरजमल बालीसेके लडके सगरा बालीसेको पन्द्रह दिनोका लग्न निश्चित कर नारियल भेजा। 17 तब बालीसोने बारातकी तैयारी की।

खेतसीहनू परणावस्या ।'[1] त'हरा रावतजी कह्यो–'ओ खेतसीह छै, ले जाय परणावो ।'[2]

ताहरा कह्यो–'वोदरै चढणनू घोडो नही छै, सु आपरो असवारीरो घोडो देरावो ।'[3] ताहरां रावतजी कह्यो–'भांना ! ओ घोडो द्यु नही ।[4] पण तोईज कनै राखीजै जाहरां तोरण वादै ताहरा चढणनू देई ।'[5] ताहरां भानै कह्यो–'भलां, राज ! मो कनै हीज राखीस ।'[6] जणा ४० साथै दिया । कई ऊंठै चढिया, कई घोड़ै चढिया । भानो साथै हुवो । हालिया ।[7] आगै घाटो[8] उतर घाणोरा गाव छै तठै[9] डेरो कियो । उठै गोठरी तैयारी हुई छै ।[10] बाकरा[11] मारिया छै । तठै तळाव ऊपर वावडी[12] छै । तिण ऊपरा वड छै ।[13] तठै गांमरो पणघट[14] लागै छै । भानो अर खेतसीह जगळ चालिया ।[15] जगळ जायनै खेतसीह वै वड़री साख झाल ऊभो छै ।[16]

जितरै वै वावडी माहै एकै वैर एक वैरसू कहै छै[17]–'ओ वीद परणीजण हालियो छै[18], तिकै ऊपर एक वळै ही आवै छै ।[19] पछै ओ परणीजसी, कना ऊ परणीजसी ?'[20] आ वात खेतसीह साभळी ।[21] इतरैमे[22] भांनो आयो । ताहरां खेतसीह बोलियो–'भांनाजी ! आवो, वधाई देवां ।' ताहरां कह्यो—'सखरी वधाई देई ।'[23] कहियो—'जिकी आपां वीदणी परणीजण हालिया छां, तिकैनू और पण वीद परणीजण

---

1 इधर भाना सोनगरेने कहा—'रावतजी ! लग्न नजदीक आ गया है, खेतसिहकी शादी करेंगे । 2 यह खेतसिह है, लेजा कर व्याह दो । 3 अपनी सवारीका घोडा दिलवाइये । 4 भाना ! यह घोडा इसे नही दू । 5 लेकिन तेरे पास ही रखना, जव तोरण-वदन करे, तव इसे चढनेको दे देना । 6 अच्छा श्रीमान् ! मेरे पास ही रखूगा । 7 रवाना हुए, चले । 8 पहाडका तग मार्ग, दर्रा । 9 वहा । 10 वहा पर भोजनकी तैयारी हुई है । 11 वकरे । 12 वावली, वापी । 13 जिसके ऊपर एक वट-वृक्ष है । 14 पनघट । 15 भाना और खेतसिह शौच निवृत्तिको चले । 16 शौच-निवृत्तिसे आ कर खेतसिह उस वरगदकी एक वरोहको पकड कर खडा है । वडरी साख=वट-वृक्षकी जटा, वरोह । 17 उस समय उस वावलीमे एक स्त्री एक अन्य स्त्रीसे कहती है । 18 यह दूल्हा विवाह करनेको चला है । 19 इसके ऊपर एक और (दूल्हा) भी आ रहा है । 20 तव फिर यह व्याहेगा किंवा वह व्याहेगा ? 21 यह वात खेतसिहने सुनी । 22 इतनेमे । 23 अच्छी वधाई देना ।

आवै छै ।'[1] कह्यो—'जी, थांनू किण कह्यो?'[2] —'जी, यां बैरां कह्यो ।'[3] ताहरां भांनो रीस कर कहण लागो–'क्यु जी रांडां ! थे काहू कहो छो ?'[4] ताहरा बैरां कह्यो–'जी, इयै गाम माहै कूभार नही छै, वेह म्हां घडी छै ।[5] म्हांनू चोकस समचार छै ।'[6] ताहरा भांन कह्यो—'थानू[7] चोकस खबर छै ?' ताहरा पिणहारिया कह्यो–'सगरो सूजावत आवसी ।'

ताहरा भांनै कह्यो—'हू जाईस, म्हारै बैहनेई छै। तियांनू पूछिस। ओ कासू ?'[8]

ताहरा भांनै चढि खड़िया ।[9] गांम आयो । आगै ढोल वाजै छै । न्यौतिहार आवै छै।[10] भांनाजी तोरण जाय खड़ा रह्या। कहियो–'भानोजी ही आया ।' ताहरां कोई न कहै 'आवो न जावो ।'

ताहरा भांनो भीतर बैहन, बैहनेई कनै आयो, कह्यो—'जान चूडावतारी आई छै ।' ताहरां कहियो–'भाना ! चवंडावत नू दीकरी परणावा नही ।'[11] ताहरां भांनै कह्यो–'ठाकुरां ! थे बुरी करो छो;[12] अर म्है मांहि हुयनै सगाई कीवी छै ।[13] हू थाहरै आगै पेट मारनै मरस्यू ।'[14] ताहरां बोलियो–'भाना ! थारी कटारी मैली छै, आ ले म्हारी कटारी ।[15] म्हैं काले ही वाढ दरायो छै ।'[16] ताहरा भानै कह्यो–'समधा जी !'[17]

भानै तो चढ खडिया । पाछौ खेतसीह कनै आयो । रोटा हुवा

---

1 जिस दुल्हिनको अपन व्याहनेको चले है, उसको और भी कोई दूल्हा व्याहनेको आ रहा है । 2 तुमको किसने कहा ? 3 इन स्त्रियोने कहा । 4 क्यो हे रडाओ ! तुम क्या कह रही हो ? 5 इस गावमे कोई कुम्हार नही है अत. वेह हमने वनाई है । वेह—विवाह-मडपके चारो कोनोमे रखे जाने वाले (वडे घडेके ऊपर क्रमसे छोटा इस प्रकार) समायुत सात-सात मिट्टीके घडोका एक मगल-कलश-समूह । 6 हमको सही पता है । 7 तुमको । 8 मैं जाऊंगा, वह मेरा वहनोई है, उनसे पूछूंगा, यह क्या (कवाडा) ? 9 तव भाना चढ करके रवाना हुआ । 10 निमन्त्रित लोग आ रहे हैं । 11 चूडावतको वेटी नही व्याहेगे । 12 ठाकुरो ! तुम बुरा कर रहे हो । 13 मैंने अदर रह कर सगाई की है (मेरी मौजूदगीमें सगाई हुई है ।) 14 मैं तुमारे सामने पेटमे कटारी मार कर मरूंगा । 15 तेरी कटारी मैली (कुद) है, यह ले मेरी कटारी । 16 मैंने कल ही इसके धार लगवाई है । 17 समझ गये जी ।

हुता, रोटा जीमिया।[1] जीम'र कह्यो–'चालो पाछा जावां।' ताहरां खेतसीह कह्यो–'वाह, वाह। भावें थे परणाय ले जावो, भावै थे कवारो ले जावो।'[2] चढि खडिया। पाछली थापी।[3]

ताहरा कह्यो–'भानाजी! ओ अैराकी तो द्यो, कोस २ चढां।[4] रावतजी कह्यो–'था तोरणरी वेळा चढण देज्यौ, सु तोरण ही रह्यो।'[5] ताहरा भांनो घोडो देण मे न हुतौ, पण साथ सारो ही कहै–'घोडो द्यो।'[6] ताहरा भानै घोडो दियो। खेतसीह घोड़ै चढियो। ताहरां भांनै दोय जलेबदारानै कह्यो–'घोडैरी वाग झालो।'[7] ताहरां वै गावरी वावडी कनै आया।[8] ताहरा खेतसीह बोलियो–'हो भांना! अै लैरां कहै छै, जु ओ वीद रोवतो जावै छै; सु थे म्हानू काय भांडौ।'[9]

इतरै माहै जलेबदारा वाग छोड़ी।[10] ताहरां दोय तीन गज्यदा नखाय[11] घोड़ैनू, मूछा हाथ फेरनै कह्यो–'इसडो कुण छै मा-जायो, सु म्हारी माग परणीजसी?'[12] यु कहै आपडां पाछा खडिया।[13] ताहरा भांनै कह्यो सगळै ही साथनू[14] –'ज्यो थे पाछा पधारौ, हू खेतसीहनूं मनाय ले आवू छू।' ताहरां भांनै आपडियो वासांसू खेतसीहनू।[15] वतळायो, खेतसीह बोलै नहीं। ताहरां खेतसीहनू कह्यो–'तूं तो पाछौ नी घिरै, पण मोनूं मुवैही सरत।'[16] तो कहियो–'ह्वै!'[17] ताहरां कह्यो–'आवा मिळा।' ताहरा मिळिया।

---

1 रोटा (एक भोजन) हो गये थे अतः रोटे खा लिये। 2 चाहे विवाह करके ले जाओ चाहे कँवारा ही ले जाओ। 3 लौटनेका निश्चय किया। 4 यह ऐराकी घोडा तो दे दें, दो कोस तो इस पर चढ लू। 5 रावतजीने कहा था कि तुम इसे तोरन-वदनके समय चढनेको देना, सो तोरन-वदनकी वात तो अव नही रही। 6 तव भानाकी मर्जी घोडा देनेकी नही थी, लेकिन सभी साथ वाले कहते है कि घोडा दे दो। 7 घोडे की वाग पकडे रहो। 8 तव उस गावकी वावलीके पास आये। 9 ये औरतें कहती है कि यह दूल्हा तो रोता हुआ जा रहा है सो तुम मुझे क्यो वदनाम करवा रहे हो। 10 इतनेमे जलेवदारोने लगाम छोड दी। 11 कुदवा कर। छलागें भरवा कर। 12 ऐसा कौन अपनी माताका वीर पुत्र है सो मेरी मगेतरको व्याह लेगा? 13 यो कह कर तेज दौड़ा कर लौट चले (आपडा=घोडे ऊट आदिकी तेज दौड) 14 तव भानाने सभी साथ वालोको कहा। 15 तव पीछेमे तेज चल कर भाना खेतसिहको पहुंच गया। 16 परतु मुझेतो मरना ही पडेगा। 17 हा।

ताहरां खेतसीह कह्यो–'भांनाजी ! थे आगै खड़ौ, भूमिया छौ।'[1] पछै बेहू भेळा हुयनै खड़िया।[2] तितरै दीह आथम्यौ। ताहरां कह्यो–'जी, इयै धरतीमें जाळा हुवै छै,[3] कोई आगू लीजै तो भलौ। ताहरा उवै[4] धरती मांहै आगू सरगरा हुवै छै। ताहरा सरगरैनू कहियो। ताहरा सरगरै कहियो—'च्यार फदिया लेइस।'[5] ताहरा कहियो—'अै च्यार फदिया, एक दुपटो।' तितरै एक ऊठि आयो,[6] इंयांरो पटेल। पटेल कहियो—'अठै जानरो ऊठ भागो छै,[7] सु वसत गाडै घालनै आंणता हुता।'[8] ताहरा ईयां पूछियो[9]–'जान कैरी ?'[10] ताहरा कहियो—'जांन बालीसांरी छै।'[11] कहियो—'अैही जाय मुह आगै हाथी असवार हुवा।'[12]

पछै अै ठाकुर आय भेळा हुवा।[13] खड़िया पांच सै असवारांरी गाठ चाली जावै छै।[14] अर अठै उतर हाथी सौ अर जीणपोस नाखनै प्याला ३ दारूरा पिया।

इतरै सांमेळो सांमो आयो।[15] जानी, मांढी भेळा हुवा।[16] पछै खडिया पाच सौ असवारारी गांठ चाली जावै छै। ताहरा भानै कह्यो–'खेतसीह ! खाथो मतां हुवै।'[17] कहियो—'नां, जी, खाथो कोई हुवुं नही।'

अठै तोरण हेठै आय ऊभा रह्या छै पागड़ा छाड़ि नै।[18] कई

---

1 तुम जानकार हो आगे चलाओ। 2 तव दोनो सामिल होकर चले। 3 इस धरतीमे जालोके वृक्ष वहुत होते हैं। 4 उस। 5 चार फदिये लूगा (फदिया=एक छोटा सिक्का) 6 इतनेमे एक ऊंट-सवार आया। 7 यहा वारातका ऊट टूट गया है। 8 सो उस परकी चीज-वस्तु गाडेमे डाल करके ला रहे थे। 9 तव इन्होने पूछा। 10 वरात किसकी है ? 11 वारात वालीसा राजपूतोकी है। 12 ये मुहके आगे (थोड़ीही दूरी पर) ही हाथी पर सवार होकर जा रहे है। 13 पीछे ये ठाकुर आ कर सामिल हो गये। 14 पाचसौ सवारोका समूह अपने वाहनोको चलाते हुए चला जा रहा है। 15 इतनेमे सामेला सामने आया। (सामेळो=कन्या पक्षकी ओरसे किया जाने वाला वरातका एक स्वागत-आयोजन) 16 वराती और कन्या पक्ष वाले इकट्ठे हुए। 17 उतावला मत हो। 18 वाहनोसे उतर करके यहां तोरनके नीचे आ कर खडे हुए है।

चढिया खडा छै। वरहेडौ सांमो आवै छै।[1] वीद तोरण हेठै ऊभौ छै।[2] वरहेडौ आयो। इतरै माहै खेतसीह वाहीज।[3] ताहरां वीदनू 'खमा' कहियौ।[4] ताहरा खेतसीह कहियौ-'खमा मो खेतसीहनू।'[5] केही न वाहता दीठो न म्यान करता दीठो।[6] इम हीज घोडो डकायो।[7] कहियो-'भाना! आवौ। हमै ज्यो उतरिया सु उतरिया। अर चढिया ऊभा हुता तिकै उवारै वासै हालिया। कह्यो-'हा, जावण न पावै, आपड़िया!'[8] खेतसीह तो मोहरै छै।[9] अर भानैनू लोहडा हुवा।[10] भानो मारियो।

मार अर पाछा आया। आय अर कह्यो-'हो ठाकुरे! मांहरै कोई वैर नही। ओ खेतसीह कुण?'[11] ताहरा कह्यो-'जी, ओ खेतसोह चूडावत। आ सगाई इयै भांत कीवी हुती।'[12] ताहरां कहियो-'फिटो, आ वात म्हानू पैहली कही हुवत, जु वीदणी आंट भरी छै, ज्यु म्हे जतन करत।[13] पण हिवै म्हा खेतसीह मारियो छै।[14] आवो जोवां।'[15] जाय अर जोयो। ताहरां कह्यो-'जी, ओ भानौ सोनगरो छै। ओ खेतसीह न हुवै।'[16]

---

1 साम्हनेसे वरहेडा आ रहा है। (वरहेडो=वरके लिये स्वागत-पूजा आदिकी सामग्री। इसे वरवेडो या वरवेहडो भी कहते है। कही कही तोरन पर आये हुए वरको पुखनेके लिये आरती आदि मागलिक उपकरणोके साथ वरवेहडो भी होता है। वरके साथ बारातका स्वागत करनेके समय तो इसका उपयोग सर्वत्र होता है। वरवेहडो प्राय सुराही जितना मिट्टीका छोटा घडा होता है जिसके ऊपर एक इससे भी छोटी मिट्टीकी लुटिया रखी रहती है। वरवेहडो अनेक रगोसे चित्रित होता है और उसमे दूव अक्षत आदि मागलिक वस्तुएँ रखी रहती है। यह एक मगल कलश है, जिसे विवाहादि अवसरो पर गीत गाती हुई अनेक स्त्रियोके साथ एक सधवा स्त्री इसे अपने सिर पर उठा कर मगल शकुनोके रूपमे वर और बारातका स्वागत करती है।) 2 दुल्हा तोरनके नीचे खडा है। 3 इतनेमे खेतसीहने प्रहार कर ही दिया। 4 उस समय पासके खडे लोगोने दुल्हेको 'खमा' कहा। ('खमा' शब्दका अर्थ—क्षमा होना है, परतु राजस्थानमे इसका 'आयुष्मान्' जैसा आशीर्वादात्मक अर्थ होता है। राजाओको अभिवादनके समय इसका प्रयोग किया जाता रहा है।) 5 तब खेतसिहने कहा— खमा तो मुझ खेतसिहको है। 6 किसीने न तो प्रहार करते देखा और न तलवारको म्यान करते ही किसीने देखा। 7 इसी प्रकार उसने घोडेको भी लँघवा (कुदवा) दिया। 8 कहा—हा, जाने न पावे, पकड लेना। 9 खेतसिह तो सब से आगे है। 10 और भानाको तलवारके प्रहार लगे। 11 यह खेतसिह कौन? 12 यह सगाई इस प्रकार इनके साथ की हुई थी। 13 अस्तु, जो होना था सो हो गया, यह बात हमे पहले कह दी होती कि यह दुल्हन टटेकी है तो हम प्रबन्ध करते। 14 परतु अब तो हमने खेतसिहको मार दिया है। 15 आओ देख लें। 16 यह खेतसिह नहीं है।

ताहरां कह्यो–'ठाकुरे ! म्हे खेतसीह पावां ।'[1] कहियो–'खेतसीह तो नहीं पावौ । पण खेतसीहरो भाई जगौ चूडावत, सात वोस[2] गामारो धणी,[3] म्रिगासर परणीजणनू आयो छै,[4] सु थे जावौ, जगौ थांहरै हाथ आवसी ।'[5] इयां दोय सै असवारां खड़िया।[6] पण खेतसीह तौ पैहली जगै कनै[7] आयो, आयनै कहियो–'मै सगरौ वालीसौ मारियौ; और बालीसा सारा ही अठै छै,[8] सो हालो[9] आपां कूभळमेर जावां ।' अै चढि अर घाटो उतरिया ।[10] अै असवार पाछै आया । आयनै ऊभा रहिया ।[11] मारै किणनू ?[12] कहियो–'ठाकुरे ! अठै जगो न आयो हुतौ ? म्हे न्यौतिहार आया छा ।'[13] कहियो–'जी, खेतसीह सगरौ बालीसौ मारियो, सु जगैनू ले अर कुभळमेररै घाटै उतरिया ।'

ताहरां अै असवार पाछा आया । आयनै देखै तो सगरौ तोरण नीचै पडियो छै । ताहरा कह्यो–'जो, सती हुवौ, सगरैनू लेनै ।[14] सतीनू कहौ जु बाहिर आवै, ज्यु सगरैनू दाग देवा ।'[15] ताहरां वीदणीनू भीतर जाय कहियो । ताहरां वीदणी कह्यो–'खेतसीह मारियो हवै तो हूं सती न हवू ।[16] सगरैनू घीसनै नाख देवौ ।'[17] पाछै आयनै कहियो–'जी, संभै नही ।'[18] ताहरां कहियो–'जी, म्हे एकलै ही सगरैनू बाळा ?'[19] तो कही–'म्हे अणसंभाही ही सती करा ?'[20] ताहरां कह्यो–'आवौ बारै ।'[21] ताहरां जांनी ही सिलह पहरै छै, मांढी ही सिलह पहरै छै । बेहुं हथियार बांधै छै, सिलह पैहरीजै छै ।[22]

---

1 हमे खेतसिह मिलना चाहिये । 2 सत्ताइस (१४०?) । 3 स्वामी । 4 मृगासर गावमे व्याहनेको आया है । 5 जगा तुम्हारे हाथ आ जायेगा । 6 ये दोय सौ सवारोके साथ चले । 7 पास । 8 और सभी वालीसे यहा है । 9 चलो । 10 ये चढ करके घाटी पार हो गये । 11 आ करके खडे रहे । 12 किसको मारे ? 13 हम निमन्त्रित होकर आये है । 14 तव कहा कि सगरेको ले करके सती हो । 15 तो सगरेको जला दें । 16 तव दुल्हिनने कहा—इसे खेतसिहने मारा है अत मै अव सती नही होऊगी । 17 सगरेको घसीट कर फेंक दो । 18 तैयार नही हो रही है । 19 तव कहा कि क्या हम अकेले ही सगरे को जलायें ? 20 तो उत्तर दिया कि क्या हम विना तैयार हुई (विना व्याही हुई) को भी सती कर दें ? 21 तव कहा—लड़नेके लिये वाहर आ जाओ । 22 तव वराती भी सिलह पहिन रहे हैं और माढी (कन्या पक्ष वाले) सिलह पहिन रहे है । दोनो ओर शस्त्र वाधे जा रहे है और सिलह पहिने जा रहे है ।

तत्पट्टे चंदगिर वर्ष १० राज्यं कृतं ।

तेहनै[1] पाट राजा कर्ण वर्ष ३० राज्यं कृत ।

[पृष्ठ ४९ की टिप्पणी चालू]

परतु 'वात अणहलवाडा-पाटणरी' (प्रथम भाग, पृ २५९)मे इन आठो शासकोके शासक-कालका योग १९८ वर्ष ६ मास ही होता है। वहा जो इन शासकोकी सूचीके नीचे जो कवित्त दिये गये है उनके हिसावसे भी इन आठोका शासन-काल १९८ वर्ष होता है, परतु प्रथम कवित्तकी अतिम भड—

चावडा राज अणहलनयर, कीव वरस सौ छीनवह ॥

और दूसरे कवित्तकी प्रथम और दूमरी भडमे भी—

आठ छत्र चावडा, कीध पाटण धर रज्जह ।
वरस एकसौ छिनु, गया भोगवी सकज्जह ॥

के अनुसार १९६ वर्ष ही होते है। इसी प्रकार चावडोके वाद सोलकियो और वाघेलोके शासको और उनके शासन-कालमे भी इन दोनो स्थानोमे परस्पर वहुत अधिक अतर है। वातमे सोलकियोके शासक १० है जिनका शासन-काल २९९ वर्ष है और यहा ९ शासकोके शासनके २५१ वर्ष ३ मास और २८ दिन है।

वाघेलोंके वातमे पाच शासक है और १०६ वर्ष उनके शासन-कालके वताये गये है। देवराजके समय माधव व्राह्मण अलाउद्दीनको ले आता है। इवर दो पीढियोके ७० वर्ष ७ मास और ४ दिनके वाद तीसरे शासक करण गेहलेके समयमे माधव अलाउद्दीनको ले आता है।

ख्यातो, विगतो तथा हकीकतो एव वशावलियोंमे शासकोके राज्य-काल और नगरो और गढ़ों आदिके निर्माण-कालका अनेक विध विवरण गद्य-पद्योमे मिलता है, परतु उनमे समानता वहुत कम पाई जाती है। हमारे सग्रहकी अनेक विगतकी प्रतियोमे से, एक प्रतिकी, जिसमें मास, दिनका विशेप विवरण होनेके कारण, उक्त दोनो विगतोकी तुलनाके लिये केवल अणहलपुर पाटणकी विगत यहा दे रहे है, जिससे सही वात जाननेका आधार मिल सके।

'सवत् ८०२ वर्षे वैशाख सुदि २ रवौ रोहिणी, तत्काल मृगशिर नक्षत्रे वृषस्थे चद्रे, साध्य योगे, गर करणे सिह लग्ने, मध्यान्ह समये अणहिल्लपुरस्य शिलानिवेशस्तस्यायुर्वर्द्ध वर्ष ५२०० मास ७ दिन ९ घटी ४४। तत्रपूर्व्वं वणराज स्यिति, वर्ष १८९ मास ६ दिन १९ चाउडा छत्र व्यक्तित । तत्रपूर्व्वं स्थिति—

१. वृद्ध वणराज राज्य वर्ष ९५ मास २ दिन १
२. जोगराज राज्य वर्ष १० मास १ दिन १
३ राणादित्य राज्य वर्ष ३ मास ३ दिन ४
४ वयरसीह राज्य वर्ष ११ मास × दिन २
५. खीमराज राज्य वर्ष ३८ मास ३ दिन १७
६ चामुडराय राज्य वर्ष ३४ मास ४ दिन १७

---

1 जिसके, उसके।

संमत ११५० वर्ष सिद्धराज जैसिघदे वर्ष ४९ राज्यं कृतं। पछै वर्ष ३ सिद्धराजरी पावडी राखिनैं सरब अमराव कांमेती दरबार करता।[1]

[पृष्ठ ४९ की टिप्पणी चालू]

७ आकडराय राज्य वर्ष २६ मास १० दिन २०

८. राय भूवड राज्य वर्ष २७ मास ६ दिन ५

ततो वर्ष २९९ मास १ दिन २० सोलकी राज्य १२ तेषा व्यक्ति—

१ वृद्ध मूलराज राज्य पूर्वं वर्ष ५९ मास १ दिन २४

२ वलभराज राज्य वर्ष ··मास ५ दिन २९

३ दुर्ल्लभराज राज्य वर्ष १२ मास··· दिन ५

४ वृद्ध भीमदेव राज्य वर्ष ४२ मास १० दिन ९

५ वृद्ध कर्णदेव राज्य वर्ष २९ मास ८ दिन १२

६ जयसिहदेव राज्य वर्ष ४८ मास ८ दिन १८

पाट शून्या ततो वर्ष ··मास २ दिन १२

७. कुमारपाल राज्य वर्ष ३० मास १ दिन २७

८ अजयपाल राज्य वर्ष ३ मास १ दिन २८

९ लघु मूलराज राज्य वर्ष २ मास · दिन ४

१० लघु भीमदेव राज्य वर्ष ६५ मास २ दिन २०

११ लघु जयसिंघदेव वर्ष ३ मास ६ दिन···

१२ तिहुणपालदेव वर्ष २ मास···दिन १२

एव द्वादस छत्राणि।

तदनुवर्ष ५८ मास ३ दिन ४ वाघेला छत्र ४ पूर्व्वं

१. वीसलदेव वर्ष १६ मास ७ दिन ११

२ अर्जनदेव वर्ष १३ मास ७ दिन २३

३. सारगदेव वर्ष १०

४ कर्णदेव वर्ष ८

एव २४ छत्र जातानि

अणहिलपुर शिलानिवेश तदनुगत वर्ष ५४७ मास १ दिन २५ यावत् तत· सवत् १३४९ वर्षे मास ८ दिन २९ छत्र २४ ततो वर्षे १ मास ४ दिन १० राज भय त्रस्त रह्यउ। एव सवत् १३५१ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे दशम्या तिथौ गुरुवारे मह० माधवेन म्लेछा आनीना।

वातमे कोटकी नीव भरनेका सम्वत् ९०१ वैशाख सुदि ३ है, तो यहा सम्वत् ८५२ सावन सुदि २को स्थापना होना लिखा है। अनूप सस्कृत लाइब्रेरी बीकानेरकी ख्यातकी प्रति

1 पीछे तीन वर्ष तक सिद्धराजकी खडाऊ सिंहासन पर रख कर सभी उमराव कामेती दरबार भरते।

ताहरा वीदणी दीठौ, अर मा अर बापनै कहियो–'हे ठाकुरां-रजपूता ! हू वैर खेतसीहरी छू; अर एकलीरै वास्तै घणा जीव मरै छै, तै हूं सगरै साथ बळीस ।'[1] वीदणी बाहिर आयनै सगरै साथै वळी ।[2] बाळ अर बालीसा हुता तिके नाडूल आया ।[3] सीधळ सीधळावटी आया ।

॥ इति खेतसीहरी वात सपूर्ण ॥

---

1 तब दुल्हिनने देखा और अपने माता-पितासे कहा (और राजपूतोंसे भी कहा) कि राजपूत ठाकुरो ! मैं खेतसिहकी पत्नी हूं, परतु मुझ एकके लिये कई प्राणी मरनेको तैयार हुए है अत मैं सगरेके सायमे जल जाऊगी । 2 सगरेके साथमे जल गई । 3 जला करके वालीसा राजपूत थे वो नाडोलको चले गये ।

।। श्री गणेशाय नमः ।।

अथ गुजरात देश राज्य वर्णनम्

संमत ८५२ वर्षे श्रावण सुदि २ गुरुवार चावड़ै वणराज अणहलपुर-पाटण वसायो । पाटणनी स्थापना कीधी ।[1]

वणराज वर्ष ६० राज कियो ।

तत्पट्टे वणराज पुत्र योगराजेन राज्यकृत वर्ष ९ ।[2]

संमत ८९१ वर्षे शलादित्य वर्ष ३ राज्यं कृतं ।

संमत ८९४ वर्षे राजा वैरसिघ राज बैठो । वर्ष ११ राज्यं कृत ।

तत्पट्टे[3] राजा खेमराज राज्यं कृत वर्ष ३९ ।

तत्पट्टे राजा चामंड वर्ष २७ राज्य कृत ।

तत्पट्टे राजा घाघड़दे* वर्ष ३५ राज्यं कृत ।

तत्पट्टे अड़राज+ वर्ष २९ राज्यं कृतं ।

समत १०१७ वर्षे एतले चावड़ा वंश राज्य पूरो हुवो ।[4]

वरस १९६ चावडा अणहलपुर-पाटण राज कियो । पछै दोहीतरै[5] मूळराज राज लियो ।[e]

समत १०१७ मूळदेव अणहलपुर-पाटण राज बैठो । दोहीतरैनू राज आयो ।[6] वर्ष ४५ राज कियो ।

---

[१] रत्नादित्य और राणादित्य पाठ भी कई प्रतियोमे लिखे है । दूगडजीने 'रत्नादित्य' नाम लिखा है । 'वात अणहलवाड़ा पाटणरी' (प्रथम भाग, पृ २५९मे) नैणसी ही ने 'राजादित' लिखा है ।

*कई प्रतियोमे घायडदे, गाहडदे और गाहडदेव नाम लिखे है । अणहलवाडा पाटण-की वातमे 'गूडराज' नाम है ।

+'वात अणहलवाडा पाटणरी'मे ८वाँ शासक 'भोवडराज' लिखा है । और छठा शासक चामडकी जगह 'चूडराव' लिखा है ।

[e]सम्वत् १०१७ तक चावडोके राज्यको १९६ वर्ष ही होते है, परतु जिन आठ चावडे शासकोका राज्य-काल लिखा है, उनका योग २१३ होता है । ४७ वर्षोका अतर है ।

---

1 पाटणकी स्थापना की । 2 जिसके पाट पर वणराजके पुत्र योगराजने ९ वर्ष राज्य किया । 3 जिसके पाट पर । उसके बाद उसके पाट पर । 4 सम्वत् १०१७में इतने चावडा वशके शासकोके बाद चावडोका राज्य समाप्त हुआ । 5 दोहिते । 6 सम्वत् १०१७मे मूलदेव अणहलपुर-पाटणके राज्य-सिहासन पर बैठा । दोहितेको राज्य प्राप्त हुआ ।

पछै वरस ३ राज्य चलायो ।

पछै जैसिंघदेरो भाई राणो तिहुयणपाळ, तैरो बेटो कुवरपाळ टीकै वैठो ।[1] संवत ११९९ काती सुदि ३ कुंवरपाळ टीकै बैठो । वर्ष ३० मास १ दिन ७ राज्यं कृतं ।[2]

तियैरै पाट छोटो भाई महिपाळदे वर्ष १३ मास २ दिन ७ राज कियो ।

तत्पुत्र[3] अजयपाळ वर्ष ३ मास ९ राज्य कृतं ।

तत्पट्टे लघु मूळदेव वर्ष ३२ मास ४ दिन ६ राज्यं कृतं ।

तत्पट्टे राजा भीम वर्ष ३४ मास ११ दिन ८ राज्य कृत ।

तठा पछै वाघेला पाटणनो राज लियो । सवत् १२५३ राज फुरियो ।[4]

[पृष्ठ ४९ की टिप्पणी चालू]

पत्र ६७मे पाटणकी कुडलीके साथ सम्वत् ९०२ वैशाख सुदि ३ लिखा है और विगतोमे सर्वत्र ८०२ सवत है । अनूप सस्कृत लाइब्रेरीकी कुडली और हमारे पास एक विगतकी कुडलीमे भी साधारण अतर है । लाइब्रेरीकी कुडलीमे शनि तीसरे घरमे और मगल छठे घरमे स्थित है और हमारे पासकी विगतमे शनि दसवें घरमे, शुक्र चद्रमाके साथमे और मगल ११वे घरमे राहुके साथ वैठा हुआ है । अनूप सस्कृत लाइब्रेरी, वीकानेरकी ख्यातमें लिखी हुई कुडली इस प्रकार है—

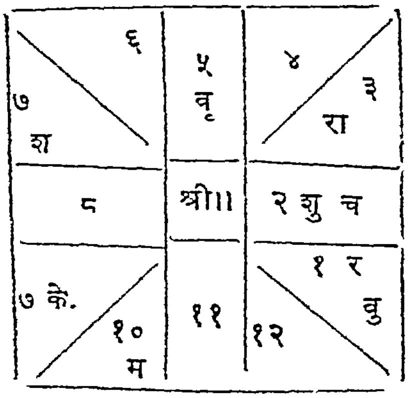

वि. स ९०२रा वैसाख सुद ३ रोहणी नक्षत्र मध्यान विजय मुहूर्त्त पाटणरा कोटरी राग भरी ।

ख्यातकी अन्य हस्तलिखित प्रतियोंमे कुडली नही लिखी हुई है । परंतु 'अणहलवाडा पाटणरी वात' मे यह लिखा हुआ सभी प्रतियोमे पाया जाता है कि—'अणहलवाडा पाटणरी जन्मपत्रिका लिख्यते ।' (दे० प्रथम भाग, पृ० २५८, अतिम पंक्ति)

---

1 जिसके वाद जयसिंहके भाई राणा तिहुणपालके वेटे कुवरपालको टीका हुआ । 2 तीस वर्ष १ मास और सात दिन राज्य किया । 3 उसका पुत्र, जिसका पुत्र । 4 जिसके वाद वाघेलोंने पाटणका राज्य लिया । सम्वत् १२५३मे राज्य-परिवर्तन हुआ ।

राजा धीरधवळ* पाटण लियो। वर्ष ४५ मास ३ दिन १ राज्य कियो।

तेहिनै[1] पाट वीसळदे हुवो। वर्ष २५ मास ४ दिन ३ राज कियो।

तेहनै पाट गेहलूं कर्ण।[2] राजा कर्ण माधव बांभण नागर तियैरी पुत्री घर माहै घाती।[3] तिको जायनै पातस्याह अलावदीन आगै पुकारियो।[4] पातसाही फोजां लायो।[5] पछै गुजरात तुरकै लियो। पछै तुरकाणी राज हुवो। हिंदवाणो मिटियो।[6]

पातस्याह अलावदीन अमराव ४ गुजरात मांहै राखिया।

१ मदफ्फरखांन, २ ततारखांन, ३ अहमदखांन, ४ महमदखांन।

अहमदखान अहमंदाबाद वसायो। पैहला आसै भीलरी आसल-वासी हुती, तठै अहमंदावाद वसायौ।[7]

पछै पातसाह अलावदीन बेटो कुतबदीन, तिकैनू[8] अहमंदावाद दियो। सतर खांन बोहतर उमराव साथै दिया।[9] सुरताण कुतबदीन भद्र मंडाया।[10] राज बैसी इयां मस्तक २१ छत्र धारिया।[11] तिहां मदन-भेर वजावी।[12] तिवारा पछै बीजा वाजा वजाया।[13] ढिलीसू लक्ष्मीनी मूरत आंणी।[14] ते भद्र माहि लाख टका खरचनै लक्ष्मी मूरत बैसारी।[15] ते आगळ पहलो नांणो कुतबस्याही करायो। इसो नाणो (कोई न) नीपजायो।[16] तिवारै पछै गुजरात बीजो नाणो प्रवर्तायो। पछै जलाला आद देनै नांणा प्रवर्तिया।[17]

---

*वीरधवल और धारधवल नाम भी लिखे मिलते है।

---

1 उसके, जिसके। 2 जिसके पाट गहला-कर्ण बैठा। 3 राजा कर्णने नागर ब्राह्मण माधवकी पुत्रीको घरमे डाल दिया। 4 उसने वादशाह अलाउद्दीनसे पुकार की। 5 वादशाही सेनाको चढा लाया। 6 पीछे गुजरात तुर्कोंने ले लिया। हिंदुआना राज्य मिट गया और तुर्कानी राज्य हो गया। 7 अहमदखानने, जहा पहले आसा भीलका आसलवासी गांव था, उस स्थान पर अहमदावाद वसाया। 8 जिसको। 9 सत्तर खान और वहत्तर उमराव भी साथमे दिये। 10 सुल्तान कुतवउद्दीनने दुर्गा देवीके मागलिक भद्रा कृतियोका निर्माण करवाया। 11 इस प्रकार सिंहासनासीन होने पर उसने २१ छत्रोको धारण किया। 12 फिर वहा उसने विख्यात कल्याणप्रद मदन-भेरी नामक वाद्य वजवाया। 13 उसके वाद दूसरे वाद्य वजवाये गये। 14/15 दिल्लीसे लक्ष्मीकी मूर्तिको लाया और लाख टके खर्च करके भद्रमे स्थापित की। 16 उसने सवसे पहले कुतुवशाही रुपया प्रवर्त किया। इसके पहले ऐसा सिक्का किसीने नही चलाया। 17 जिसके वाद जलालशाही आदि दूसरे सिक्के गुजरातमें प्रवर्त हुए।

सुरताण कुतबदीननै[1] पाट सुरताण महमंद बैठो। महमंद वारै लोकांनै १८ कर लागा।[2] ते कही[3]—

१ (प्रथम) दांण।	१० बळ।
२ (बीजौ) पूछी।	११ लांचो।
३ हळगत।	१२ घोडा-चारण।
४ मोभ।	१३ कवारनी सूखडी।
५ भेट।	१४ पाघड़ी-वरोड़।
६ तलार।	१५ ढोरनी चराई।
७ सूखडी।	१६ वाडीनी लाग।
८ वधामणो लाग।	१७ काटी वाळी लाग।
९ मळवो लाग।	१८ काजीनी लाग।

समत १५१६ कर इतरी रकम अधिकी व्है छै।[4] वर्ष ५२ महमंद राज कियो।

[(1) दाण=उपार्जित धन पर लिया जाने वाला राज्य-भाग। (2) पूछी=चौपायो पर लिया जाने वाला कर। (3) हळगत=खेत को जोतने पर हलोके हिसावसे लिया जाने वाला कर। (4) मोभ=मकान वनाने पर लिया जाने वाला कर। (प्रथम पुत्रसे भी तात्पर्य हो सकता है।) एक प्रतिमे इनके स्थान पर भोम लिखा है। (5) भेट=उत्सव आदि अवसरो पर अनिवार्य रूपसे लिया जाने वाला कर। (6) तलार=नगर रक्षक (कोटवाल)के खर्चेके रूपमे लिया जाने वाला कर। (7) सूखडी=अतिरिक्त कर (सर चार्ज), दस्तूरी। (8) वधामणो लाग=पुत्र जन्म और विवाहादि पर वधाईके रूपमे लिया जाने वाला कर। (9) मळवो लाग=गावकी सफाईके लिये लिया जाने वाला कर। (10) वळ=वलि या भोज पर लिया जाने वाला कर। (11) लाचो=खर्चमे कमीकी पूर्तिके लिये लिया जाने वाला कर। (12) घोडा-चारण=घोडेकी चराईका कर। (13) कवारनी सूखडी=राजाके पाटवी पुत्रको दिया जाने वाला नजराना। इसके कुवर सूखडी, कुवर नजराणो, कुंवर पछेवडो, कुवर पामरी, कुवर माणो आदि कई भेद होते थे। (14) पाघडी-वरोड=व्यक्ति कर। इसको मूडका-वेरो भी कहते है। (15) ढोरनी चराई=पशुओकी चराई का कर। (16) वाडीनी लाग=साग सब्जी आदिका कर। (17) काटी वाळी लाग=तोलनेकी छोटी काटी पर लिया जाने वाला कर (?) (18) काजीनी लाग=काजीके नाम पर लिया जाने वाला कर।]

1 कुतवुद्दीनके। 2 मुहम्मदने १२ (कृपक) जातियो पर १८ कर लगाये। 3 वे कौनसे ? 4 सम्वत् १५१६से इन करो में इतनी अधिक रकम प्राप्त होती है।

संमत १५६७ सुरतांण मुदाफर टीकै वैठौ। वडो पातस्याह हुवौ। बेटा तीन हुवा—

१ सिकंदर। २ महमंद। ३ बहादुर।

समत १५८१ सिकदरस्याह पाट बैठो। मास २ दिन १७ राज कियो।

पछै भाई महमद टीकै बैठो। मास ३ दिन ५ राज कियो।

समत १५८२ सुरतांण बहादुर पाट बैठो। बहादुर वडो पातस्याह हुवौ। खुरसाण लगै धाक हुई।[1] पछै बहादुर पातस्याह चीत्रोड़ ऊपर कटक कियो।[2] समत १५८९ फागण सुदे १ चीत्रोडगढ गळी।[3] लाखूटानी पोळ घोडा १८०००० अनै हाथी १४००० एतलो दळ लाखोटानी पोळै थौ।[4] चीत्रोड़ भंग हुवौ। तठै रांणै राणी करमेतीनू जुहर कियौ।[5] आदमी हजार ४००० जुहर हुवौ।[6] सरोवर, कुवा, वाव, एतलां मांहैसू बाळक ३००० जाळ नखावै काढिया।[7] अस्त्री ७००० पोताना लघु तीत साथै अफीम घोळ पीधौ।[8] अवर लोकानै बांद पड़ीनी संख्या नी।[9] इसौ उपद्रव रोमीखांन करायौ।[10] पछै बाहदरसाह गुजरात गयौ।

पछै चीत्रौड मांहै तुरक हुता सु सीसोदियां कूट काढिया।[11]

पछै मुगल आया। मुगले दिली लीधी।[12]

पछै समत १५९२ श्रावण सुदे ११ चापानेर मुगल आया, पछै चांपानेर पालटियौ।[13]

---

1 खुरासान (फारस) तक धाक जमाई। 2 पीछे वादशाह वहादुरने चित्तौड पर आक्रमण किया। 3 सम्वत् १५८९ फागुन सुदी १को चित्तौडगढका पतन हुआ। 4 घोडे १८०००० और हाथी १४०००—इतना दल लाखोटाकी पौलमे जमा था। 5 वहां राणाने राणी करमेतीको जौहर करवाया। 6 ४००० आदमी जौहर कर जल मरे। 7 सरोवर, कुएँ और वावडिये इनमेसे ३००० वालकोको जाल डाल कर निकलवाया गया। 8 सात हजार स्त्रियोने अपने छोटे वच्चोके साथ अफीम घोल कर पी लिया। 9 और वदी कितने लोग वनाये गये इसकी कोई सख्या ही नही। 10 यह इस प्रकारका उपद्रव रोमीखानने करवाया। 11 वादमे चित्तौडमे जो तुर्क थे उन्हे शिसोदियोने मार कर भगा दिया। 12 मुगलोंने दिल्ली पर अधिकार किया। 13 फिर सम्वत् १५९२ की सावन सुदी ११को मुगल चापानेर (गुजरात) पर चढ कर आये, चापानेरका राज्य पलटा।

पछै समत १५९३ जेष्ट मास माहै मुगल अहमदाबाद आया। आसोज वद १४ बाहदर पातस्याह नाठौ, दीव गयौ।[1] आगै बाहदर पातस्याह उमराव २ वसाया हुता—हिंदु खाट माडण वरसौ पाटणरा भूमिया छमीछाना धणी, तियानूं।[2] गांव १२ माडणनू दिया था। गाव १२ बारै वरसैनू दिया था।[3] तिका, बीजां भूमिया, हिंदु, तुरक भेळा होयनै मुगल मार काढिया।[4] नै पादस्याहनू दीव माहै फिरगीए मारै खाडी समुद्ररी माहै नाख दियौ।[5] संमत १५९३ फागण सुदे ५ बाहदर मारियौ।[6]

पछै अमरावा मिळ महमंद बेगडो पाट वैसारियौ, अहमदाबादमे पातस्याह कियौ।[7]

पातसाह महमद वडो धरमात्मा हुवौ। औ ओखदांरी हाट ४ मडावी, वैद्य राखिया।[8] वेमारानू दारू धरमरो दीजै।[9] रोगियानू खावानू दीजै, ओढण-विछावण दीजै।[10] वैद्य नाड जोवै, ओखद देवै गरीवनै। सिरदार दावैसू फकीरानू रजाया, बिहाल्या दीजै।[11] जिकू आप जीमतौ तिसड़ौ खाणौ फकीरानू दीजै।[12] इसो धर्मातमा पातस्याह हुवौ।[13]

समत् १६१० फागण वदे १३ वार गुरु रात पोहर १ गया पात-

---

1 आसोज वदी १४को वादशाह वहादुर भाग कर दीव वंदरको चला गया। 2 पहले वादशाह वहादुरने छमीछाके स्वामी पाटनके दो खाट जातिके हिंदू भोमिये माडण और वरसाको उमराव वना कर वसाया था। 3 वारह गाव माडणको और वारह गाव वरसाको दिये थे। 4 उन्होने दूसरे भोमिये, हिंदू और तुर्कोंने मिल कर मुगलोंको मार निकाल दिया। 5 फिरगियो (पुर्तगालियो)ने वादशाह वहादुरको मार करके दीव वंदरकी समुद्रकी खाडीमे डाल दिया। 6 सम्वत् १५९३ की फागुन सुदी ५को वादशाह वहादुरको मारा। 7 फिर उमरावोने मिल कर मुहम्मद वेगडेको सिंहासन पर विठाकर अहमदावादका वादशाह वनाया। 8 इसने औपधियोकी चार दुकानें खुलवा कर उनमे वैद्योको नियत किया। 9 वीमारोको औषधिया मुफ्तमे दी जाती हैं। 10 रोगियोको खाना और ओढना-विछोना दिये जाते है। 11 सरदारोकी भांति ही फकीरोको भी रजाई विछोने दिये जाते है। 12 जैसा स्वय भोजन करता वैसा ही फकीरोको दिया जाता है। 13 ऐसा धर्मात्मा वादशाह हुआ।

स्याह महमंदनै ब्रहांनखां मारियौ ।[1] उमराव ३५ भला भला छा सु ब्रहांनखां मारिया ।[2]

पछै ब्रहांननै भाटी सिरवान ब्रहांनदीननूं मारियौ ।[3] पातस्याह महमंदरौ वैर लियौ ।

पछै पातस्याह महमंदरो बेटो अहमद टीकै बैठौ ।

तठा पछैं संमत १६२९ मुगल पातस्याह अकबर गुजरात लीधी ।[4] हिवै मुगलारै गुजरात देस हुवौ ।[5] पातस्याह अहमदनूं मारियौ ।

॥ इति गुजरातरै देशरी ख्यात सपूर्ण ॥

अथ वात मकवांणा रजपूतांरी

ईयांरै मा हुती सु कोई देव अस हुती, सु धारेचो कियो हुतो ।[6] सु वा कहण लागी–'जाहरां हू प्रगट हुई ताहरा नही रहू ।[7]

तद कितरैके दिने ईयेरै बेटो जायो ।[8] खेलण सरीखौ हुवौ, तद खेलतो थो ।[9] आ ऊची झरोखै बैठी हती, तद नीचै बैठै बेटैनू हाथ लाबो पसारैनै झाल लियौ।[10] तद ईयै देव अस प्रगट करनै अतर्ध्यान हुई ।[11] तै दिनसू पछै झाला कहाया ।[12]

॥ इति झालांरी वात सपूर्ण ॥

---

1 सम्वत् १६१०की फाल्गुन वदी १३ गुरुवारको एक पहर रात गये वादशाह मुहम्मदको वुरहानखाने मार दिया । 2 अच्छे-अच्छे ३५ उमराव थे जिनको भी वुरहानखाने मार दिया । 3 फिर भाटी सिरवानने वुरहानखाको मार दिया । 4 जिसके वाद सम्वत् १६२९मे मुगल वादशाह अकवरने गुजरातके ऊपर अधिकार किया । 5 अव मुगलोके अधिकारमे गुजरात देश हो गया । 6 इनकी (मकवाणा-राजपूतोकी) मा कोई देवाशी थी, जिसने धारेचा कर लिया था । (धारेचो=१ विधवा होने पर किसी अन्यके यहा पत्नी वन कर रहना । २ अपने पतिको छोड कर दूसरेके घरमे रहना) 7 जिस समय मैं प्रगट हो गई तव नही रहूगी । 8 तव कितने एक दिनोके वाद इसके एक पुत्र हुआ । 9 खेलने जैसा हुआ तव वह एक दिन खेल रहा था । 10 यह ऊची झरोखेमें वैठी हुई थी, तव उसने नीचे वैठे हुए अपने वेटेको अपना हाथ लवा वढा करके पकड लिया । 11 तव अपने इस देवाशको प्रगट करनेके कारण अतर्द्धान हो गई । 12 इसके वाद ये (मकवाणे-राजपूत) 'झाला' कहाये । (वच्चेकी माँने वच्चेको हाथसे 'झाल' लिया, इसलिये वह वच्चा और उसकी सतान झाला कहाई । मारवाडी भाषामे 'झालणो' शव्दका अर्थ—पकडना, थामना, सभालना इत्यादि होता है ।)

अथ वात पाबूजीरी लिख्यते

धाधळजी महेवै रहै। सु उठैसू छोड़ अर अठै पाटणरै तळाव आय उतरिया ।[1] सु अठै तळाव ऊपर अपछरा उतरै । ताहरा धाधळजीरा डेरां थकां अपछरा उतरी ।[2] ताहरां धाधळजी अपछरावा देखनै एकै अपछरानू आपड राखी ।[3] ताहरां अपछरा बोली–'वडा रजपूत ! तै बुरो कियो । मो अपछरानै आपडणी न हुती ।'[4] ताहरा धाधळजी कही–'तू म्हारै घरवास रहि ।'[5] तद अपछरा बोली । कही–'जे थै म्हारो पोछो सभाळियो तो जाईस ।'[6] ताहरा धाधळजी कही–'थारो पोछो कोई सभाळां नही ।' ए बोल करनै रही ।[7] नै उठै पाटणसू चालिया सु अठै कोळू आया ।

अठै पमो घोरधार राज करै । ताहरा धांधळजी पमै पासै तो न गया । अर कोळू आया, गाडा छोडिया, तठै रहै ।[8] यू करता अपछरारै पेटरा दोय टावर हुआ–एक बेटी, एक बेटो ।[9] बेटीरो नाम तो सोनां-बाई, बेटारो नाम पाबूजी । तद अपछरारो महल एकात कियो ।[10] उठै अपछरा रहै । धाधळजी अपछरा घरै नित जावै ।

तद एक दिन धांधळजी विचारियो–'देखां, अपछरा कह्यो हुंतो, म्हारो पीछो मती सभाळजै, सु आज तो जायनै देखीस, देखा, कासू करै छै ?'[11] ताहरां पाछलै पोहर धाधळजी अपछरारै महल गया । तठै आगै अपछरा तो सीहणीरै[12] रूप हुई छै, अर पावू सीहरै रूप

---

1 सो वहां (महेवै)से रवाना होकर पाटनके तालाव पर आकर ठहरे । 2 जव धांधलजीके डेरे तालाव पर लगे हुए थे उस समय वहां अप्सराएँ उतरी 3 एक अप्सराको पकड कर रख लिया । 4 मुझ अप्सराको पकडना नही था । 5 तू मेरे घर वास (पत्नी रूपमे) रह । 6 जो तुमने मेरा पीछा किया (भेद जानना चाहा) तो मैं चली जाऊगी । 7 ये कौल करके धांधलजीके साथ रह गई । 8 जिस जगह कोलूमे गाडे छोडे थे, वही रह रहे । 9 इस प्रकार अप्सराकी कोखसे दो वच्चे उत्पन्न हुए—एक लडकी और एक लडका । 10 तव अप्सराका महल एकान्तमे वनवाया । 11 तव एक दिन धाधलजीने विचार किया कि अप्सराने कहा था कि मेरा भेद जाननेकी कोशिश नही करना, परतु आज तो जाकर देखूगा कि वह क्या कर रही है ? 12 सिहिनी ।

सीहणीनू चूघै छै।[1] तद धांधळजी दीठी;[2] ताहरां अपछरा आपरो रूप कियो। पाबू टाबर हुवो।[3] ताहरा धांधळजी महल भीतर गया। ताहरा अपछरा कह्यो–'राज ! म्हां थां सू कवल कियो हुतो जु 'जेही दिन था पीछो सभाळियौ जेही दिन हूं जाईस, सो हू जाऊं छूं।'[4] इतरो कहिनै अपछरा तो उड़ती हुई, सु आकास चढ गई। धाधळजी देखता ही रह्या।

तठा पछै धांधळजी पाबूनै उठै हीज राखियो। धाय पास रही। और छोकरी हुती सु राखी।[5] पछै धांधळजी तो कितरेक दिने देवलोक हुवा।

अर पाबू अर बूडो दोय बेटा। तद बूड़ोजी टीकै बैठा। लोक चाकर सरब बूड़ैजीरा हुवा।[6] पाबूजी पासै कोई न रह्यौ। तदै धाधळजीरै बेटी दोय हुती, सु पेमाबाई तो जीदराव खीचीनूं परणाई। अर सोनांबाई देवड़ै सीरोहीरै धणीनू परणाई।[7] तद बूडोजी तो राज करै। अर पाबूजी वरस पांचेकमै, पण करामातीक।[8] एकै सिकार चढियो एकै सांढ चढियो सिकार लावै। ईयै भात रहै।[9]

ताहरां सात थोरी भाई, मा-जाया, चांदियो १, देवियो २, खापू ३, पेमलो ४, खलमल ५, खघारो ६. चासळ ७। अै सात भाई सु अै आना वाघेलैरैं चाकर।[10] सु आनैरै देस माहै काळ पड़ै, तद थोरीए एक १ जिनावर वणासियो।[11] ताहरां आंनैरै कुवरनू खबर गई जु थोरिये जिनावर मारियो छै। ताहरां कुवर आयो। थोरियानू

---

1 और पाबू सिंहका रूप बन कर सिंहिनीको चूघ रहा है। 2 तब धाधलजीने देखा। 3 पाबू बच्चेके रूपमे हो गया। 4 तब अप्सराने कहा–'राजन्! हमने तुमसे कौल करवाया था कि जिस दिन तुमने मेरा भेद जाननेकी कोशिश की उस दिन मैं चली जाऊगी, सो मैं जा रही हू। 5 और एक दासी थी जिसको पासमे रखा। 6 प्रजा और सेवकादि सब बूड़ेजीके अधीन हुए। 7 धाधलजीके दो कन्याएँ थी; एक पेमाबाई जिसको जीदराव खीचीको व्याही और दूसरी सोनाबाई जिसे सिरोहीके स्वामी देवडेको व्याही। 8 करामाती। 9 अकेला और अपनी एक ही ऊंटनी पर चढ कर शिकार लाता है, इस प्रकार वीरताके काम करता है। 10 ये सातो भाई आना वाघेलाके यहा चाकर। 11 सो आनाके देशमे दुकाल पड जाता है, उस दुकालमे थोरियोने एक दिन एक जानवरको मार दिया।

हटकिया ।[1] थोरियां अर कुवर खानाजगी हुई ।[2] ताहरां कुवर कांम आयो । तद औ थोरी कुवरनू मार, अर गाडा जोडनै, टावर ले नाठा ।[3] ताहरा आनैनू खबर गई, जु 'थोरी कुवरनू मार नाठा जावै छै ।' ताहरा आनो चढियो, आय पहुतो ।[4] ताहरां औ लडिया । ताहरा ईंया थोरियारो बाप हतो सु काम आयो ।[5] आनो ईंयारो बाप मारनै पाछो वळियो ।[6]

पछै थोरी औ जेहीरै वास जावै सो राखे नही । कहै–'आंनै वाघेलैसूं पोहचां नही ।[7] तद औ थोरी चालिया चालिया पमै घोरधाररै आया; तद पमै थोरियानू राखिया । ताहरां कांमदारा परधाना कही–'राज ! औ थोरी आनैर बेटैनू मार अर आया छै । जो था राखिया तो आंनैसू वैर पड़सी ।[8] आपा आनैनै पोहच सगां नही ।[9] तदी पमै पण आंनैसू डरतो थोरियानूं विदा दीवी ।[10] कही–'धाधळांरै जावौ; थानै राखसी ।'

ताहरां औ थोरो गाडा लेनै बूडेजी पासै आया । आय बूड़ैजीसू मुजरो कियो[11] नै कही–'राज ! म्हांनै राखो तो रहा ।' ताहरा बूड़ैजी तो नीछो दियो ।[12] कह्यो–'म्हारै तो दरकार नही, अर पाबू भाईरै चाकर नी रहै छै सु थानै राखसी ।[13]

तद औ थोरो गाडा छोड़नै पाबूजीरै आया ।[14] तद पूछियो–'पाबूजी कठै ?'[15] तद धाय कह्यो जु–'पाबूजी सिकार गया छै ।' तद औ थोरी पण वांसै सिकार गया ।[16] आगै पाबूजी हिरणनू तीर साधियो छै । साढ बैठी छै ।[17] इतरै थोरिया पूछियो–'रे छोकरा ! पाबूजी कठै

1 थोरियोको डाटा । 2 थोरियो और कुवरके आपसमे लडाई हो गई । 3 तब ये थोरी कुवरको मार, अपने गाडे जोड कर और अपने वाल-बच्चोको लेकर भाग गये । 4 तव आना इनके पीछे चढा और इन्हे जा पहुचा । 5 थोरियोका बाप था सो इस लडाईमे काम आ गया । 6 आना इनके बापको मार करके वापिस लौटा । 7 आना वाघेलेसे पहुच (जीत) नही सकते । 8 जो तुमने इनको रख लिया तो आनासे शत्रुता हो जायेगी । 9 अपन आनाको नही जीत सकते । 10 तब पमेने भी आनाके डरके मारे थोरियोको छुट्टी दी । 11 आकरके वूडोजीको प्रणाम किया । 12 तब वूड़ोजीने मना कर दिया । 13 मेरे तो जरूरत नही है, परतु पावू भाईके पास कोई चाकर रहता नही है सो तुमको रख लेगा । 14 तब ये थोरी अपने गाडोको छोड कर पावूजीके पास आये । 15 पावूजी कहा ? 16 तब ये थोरी भी इनके पीछे शिकारको गये । 17 ऊंटिनी वैठी हुई है ।

छै ?'[1] तद पाबूजी बोलिया–'पाबूजी तो आघा[2] सिकार खेलणनू पधारिया छै ।'[3]

ताहरां थोरिया आ समस्या[4] कीवी जु–'ओ छोकरो ऊभो छै,[5] आपां[6] आ सांढ ले जावां, तो आपां आजरी वळ करां ।'[7] इतरी[8] थोरिया विचारी । ताहरा पाबूजी तो कारणीक मरद ।[9] तद पाबूजी ईंयारै जीवरी लखी ।[10] ताहरा पाबूजी बोलिया । कही–'रे थोरिया ! थे आ सांढ ले जावो, आज री वळ करो । पाबूजी आवसी[11] ताहरा हूं कहि लेइस ।'[12] ताहरा थोरी साढ लेनै डेरै आया । उठै ईहा[13] सांढ मारनै डेरै वळ कीवी ।

अर पाबूजी हिरण लेनै पाछलै पोहर डेरै आया । ताहरां पाछलै पोहररा थोरी पण पाबूजीरै मुजरै आया । आगै पाबूजी बैठा छै। तठै थोरियां विचारियो । कही, रे ! ओ[14] तो ऊही,[15] जे आंपांनू साढ दीवी हती ।[16] तद थोरियां धायनू पूछियो– जी ! पाबूजी कठै ?' ताहरां धाय कह्यो–'रे वीरा ! ओ बैठौ, तू ओळखै नही ?[17] तद ईंयां पाबूजीसू सलामी कीवी ।[18] तद पाबूजी चादैनू कही–'रे चादा ! म्है म्हारी सांढ थांनै भलाई हती सु कठै ?'[19] ताहरां चादै कही–'राज ! थां म्हांनै वळ माहै दीवी हुती, सू म्हां खाधी छै ।'[20] ताहरां पाबूजी कही–'का रे ! आ काई हुई छै जु साढ खाधी ? वळनू सीधो दरावस्यां । पण साढ किसी तरै खावो ?'[21] ताहरां पाबूजी कही–'साढ थां खाधी नही ।'[22] ताहरां थोरिया कह्यो–'साढ तो म्हां खाधी, हमै कठा लावां ?'[23]

---

1 इतनेमे थोरियोने जाकर पूछा कि रे छोकरे ! पाबूजी कहा है ? 2 दूर । 3 गये हुए है । 4 परामर्श, सलाह । 5 खडा है । 6 अपन । 7 आजके भोजनकी तैयारी करें । 8 इतनी । 9 सिद्ध पुरुष । 10 पाबूजीने इनके मनकी बात जानी । 11 आयेंगे । 12 कह दूंगा । 13 इन्होने । 14 यह । 15 वही । 16 जिसने अपनेको ऊटिनी दी थी । 17 अरे भाई ! यह बैठा है, तू पहचानता नही ? 18 तब इन्होने पाबूजीको प्रणाम किया । 19 अरे चादा ! मैंने मेरी ऊटिनी तुमको सुपुर्द की थी वह कहा ? 20 आपने हमको बलिके लिये दी थी, सो हमतो उसे खा गये है । 21 क्यो रे ! यह कभी हुआ है जो ऊटिनीको ही खा गये ? भोजनके लिये सीधा दिलवायेंगे, लेकिन साढ किस तरह खा जाओ ? 22 ऊँटिनी को तुमने खाया नही । 23 अब कहासे लायें ?

ताहरा पावूजी साथै मांणस[1] देनै कही–'ईयांरै[2] डेरै जाय खबर तो करो।' ताहरा थोरी मांणसरै साथै डेरै जाय देखै तो कासूं ?'[3] जठै हाड पडिया हुता तठै सागे साढ कसाणो किया ओगाळै छै।[4] तद अै[5] जाय देखै तो कासूं ? साढ वैठी छै। तद थोरियां आपरी वैरानू[6] पूछियो। कह्यो–'आ साढ अठै के विध ?'[7] ताहरा वैरा पण कही–'राज ! आगै नो नही हती, माहरैही निजर हणां आई।'[8] ताहरा थोरिया विचारी जु–'ओ वडो करामाती रजपूत छे। आपानै ओ राखसी।[9] तद अै सांढ लियां-लिया[10] पावूजी पासै आया। ताहरां पावूजी कह्यो–'रे ! थे कहता साढ खाधी।' ताहरा थोरियां कह्यो–'राज ! समधा।[11] म्हांनू राज परचो दिखायो।'[12] ताहरा पावूजी कह्यो–'तो थे रहस्यो ?'[13] ताहरा थोरिया कह्यो–'राज ! म्हे रहस्या।' ताहरां थोरी पावूजी पासै चाकर रह्या। इयै भात रहतां हता।

तद गोगैजीनूं बूडैजीरी वेटी परणाई। ताहरां बाईरै[14] दायजैरी[15] वखत किहि[16] गायां सकळपी,[17] किही क्युही संकळपियो।[18] ताहरां पावूजी कह्यो–'बाई ! हू तोनू दोदै सूमरैरी साढारा वरग आंण देईस।'[19] ताहरा गोगोजी हसिया। कही–'आजै दोदो सूमरो वोढो-रावण कहीजै।[20] तैरो साढा किसी भात ले आवसी ?' ताहरां पावूजी वोल्लिया–'साढां ले आईस।'[21] पछै गोगाजी तो हलांणो लेनै आपरै ठिकाणै गया।[22] वांसै[23] पावूजी हरियै थोरीनूं कही–'रे हरिया ! दोदैरी सांढिया हेर आव, ज्यु बाईनूं सांढियां आंण देवा।[24] बाईरा

---

1 मनुष्य। 2 इनके। 3 यह क्या ? 4 जहा हड्डिया पडी थी वहा वही ऊटनी कनी हुई वैठी है और घास खा कर जुगाली कर रही है। 5 ये। 6 अपनी स्त्रियोको। 7 यह साडनी यहा किम प्रकार ? 8 हमारे भी नजरमे अव आई है। 9 अपनेको यह रखेगा। 10 लिये-लिये। 11 समझ गये। 12 हमको आपने चमत्कार दिखाया। 13 तो तुम हमारे यहा नौकर रहोगे ? 14 कन्याके। 15 दहेजकी। 16 किसीने। 17 सकल्प की। 18 किसीने कुछ और वस्तु सकल्प की। 19 तव पावूजीने कहा—'वाई ! मैं तेरेको दोदे सूमरेकी साढनियोका वर्ग लाकर दूगा। 20 आज दोदा सूमरा एक दूसरा रावण कहा जाता है। 21 साढनिया ले आऊगा। 22 फिर गोगोजी तो वधू और दहेज लेकर अपने स्थान गये। 23 पीछे, वादमे। 24 हरिया ! तू जाकर दोदेकी साढनियोको घेर कर ले आ सो वाईको साढनिये लेजा कर देदें।

सासरिया हससी; कहसी–काको साढियां कद आण देसी ?[1] ताहरां हरियो तो साढ़ियारै हेरै गयो।

अर अठै चादियो नित पाबूजीनू कहै–'आनै वाघेलै माथै म्हारो वैर छै, सु राज म्हारो वैर घेरावौ।[2] ताहरा कह्यो–'रे घेरावस्या।'[3]

यु करता पाबूजीरी बैहन सोनाबाई अर[4] सोनाबाईरै एक सोक[5] वाघेली तिके चोपड़ रमती ही,[6] सु वाघेलीरै बाप गहणो घणो दियो हुंतो,[7] सु वाघेली आपरै गैहणैरो वडाई करै, गहणैरो वखाण घणो करै।[8] ताहरा अै आपसमें बोल उठी।[9] ताहरां वाघेली सोनांनू मेहणो दियो।[10] कह्यो–'थारो भाई थोरियासू भेळो जीमै।[11] ताहरा सोनां रीस कीवी। ताहरा राव कही जु–'राठोड़ ! रीस क्यु करो, साच कहै छै, जु पाबू थोरियांरै भेळो तो बैसै छै।'[12] ताहरा सोना कही–'थे कहो सो खरी, पण जिसा[13] म्हारै भाईरै थोरी छै जिसा[14] थाहरै[15] उमराव कोयनी।' इतरो कह्यो सोनां, तैसू राव पण रीस कर ऊठियो।[16] ताहरा ताजणो रावरै हाथ हुतो, सु राव तीन ताजणा वाह्या।[17]

ताहरां सोनांबाई कागद लिखनै पाबूजीनू मेलियो।[18] ईयै भांत लिखियो–'वाघेलीरै कहै रावजी म्हारै चोट वाही।'[19] सु ऊ कागद ले जायनै आदमी पाबूजीरै हाथ दियो।[20] पाबूजी कागद वाचनै चादैनू

---

1 बाईकी ससुराल वाले हँसेंगे और कहेंगे कि इसका काका साढनिया कब लाकर देगा ? 2 आना वाघेलाके सिर मेरे बापको मारनेका वैर चढा हुआ है सो आप उस वैरका बदला लिवावें। 3 अरे ! घेर लेंगे। 4 और। 5 सौत। 6 खेलती थी। 7 सो वाघेलीके बापने दहेजमे गहने बहुत दिये थे। 8 गहनेकी प्रशसा बहुत करे। 9 तब आपसमे बोला-चाली (विवाद) हो गई। 10 तब वाघेलीने सोनाको ताना मारा। 11 तेरा भाई थोरियोंके सामिल खाना खाता है। 12 राठोड ! रीस क्यो कर रही हो, यह सच कह रही है, पाबू थोरियोके सामिल बैठते तो है। (क्षत्रियोमे रानिया, ठकुरानिया आदि सम्मानित स्त्रियोको उनकी पितृ-जातिके नामसे सबोधित किया जाता है, जिनमे कुछ वश या जातियोके नाम तो ऐसे है जिनमे कोई परिवर्तन नही होता, स्त्रीलिंग बनानेकी आवश्यकता नही रहती जैसे–शेखावतजी, चहुआणजी, राठोडजी इत्यादि।) 13 जैसे। 14 वैसे। 15 तुम्हारे। 16 सोनांने इतना कहा तो राव रीस करके उठा। 17 उस समय रावके हाथमे ताजना था सो तीन ताजने सोनाको मार दिये। 18 तब सोनाबाईने पत्र लिख कर पाबूजीको भेजा। 19 उसमे इस प्रकार लिखा कि वाघेलीके कहनेसे रावजीने मुझे चोट प्रहार की। 20 सो वह पत्र एक आदमीने लेजा कर पाबूजीके हाथमे दिया।

बुलायौ; अर कह्यो–'तयारी करो। आपा सीरोही राव ऊपर जास्यां। वाईरो कागद आयौ छै।' ताहरा सात असवार थोरी, एक पाबूजीरै चढण काळवी घोड़ी।

सु काछेला चारण समुद्र खेप भरण गया हुता,[1] सु ईया एक घोडी लीवी। लेनै समुद्ररै काठै[2] आय उतरिया। ताहरां तेजल घोड़ो नीसरनै घोडीनू लागो।[3] तैरी काळवी वछेरी नीपनी।[4] सु आ घोड़ी जीदराव काछेलां कना[5] मागी, तद चारणां न दीवी। अर बूडेजी मागी तद पण न दीवी। ताहरा पाबूजी मांगी। ताहरां चारणा पाबूजीनू घोडी दोवी। तद कही 'राज ! घोडी थानूं[6] दीवी छै, जो म्हारै काम पड़ै तद म्हारी वाहर करज्यो।'[7] ताहरां पाबूजी कही–'थाहरै काम पडिये जूती पैंहरा नही।'[8] ओ बोल कर घोड़ी लीवी छी। तद जीदराव खीची नै बूडैजी रीस कीवी चारणासू।

पछै पाबूजी असवार हुवै नै बूडैजीरै आया।[9] बूड़ैजी सौं[10] मुजरो कियो। पछै पाबूजी भीतर भाभीजीनू मुजरो कहियो। ताहरां छोकरी[11] भीतर जायनै डोड-गेहलीनू[12] कह्यो–'बाईजी ! थांनू पाबूजी जुहार कहायो छै।' ताहरा छोकरीनू डोड-गेहली कह्यो जु–'तू देवरनूं जायनै कहि, बाईजी भीतर बोलावै छै।' ताहरा छोकरी जाय अर कह्यो।[13] तद पाबूजी भीतर गया। तद डोड-गेहली कह्यो–'पाबूजी ! थानै चारण पासे घोड़ी न लेणी हती।[14] घोडी थारै भाई मांगी हती, तैसू था न लेणो।[15] ताहरां पाबूजी कही 'जो भाईजीरै घोड़ी लेणी छै तो आ[16] हाजर छै।' ताहरा भोजाई कही, हमै काहिणनू लै ?[17]

1 काछेले-चारणोका कारवां समुद्र (के किनारे किसी बदर) पर माल भरनेके लिये गया हुआ था। 2 किनारे पर। 3 तब तेजल घोडा उस घोडीसे लग गया। 4 जिससे यह काळवी वछेरी उत्पन्न हुई। 5 से, पास। 6 तुमको। 7 यदि हमारे काम पड जाय (कोई संकट उत्पन्न हो जाय) तो हमारी सहायताके लिये चढ कर आना। 8 तुमारे काम पड़ने पर पांवोमे जूती नही पहनूंगा। 9 पीछे पाबूजी उस घोडी पर सवार होकर बूडेजीके पास आये। 10 से, को। 11 दासी। 12 डोड-गेहली, बूडेजीकी स्त्रीका नाम। 13 तब दासीने जाकर कहा। 14 पाबूजी ! चारणके पाससे तुम्हे यह घोडी नहीं लेनी चाहिये था। 15 इस घोडीको तुमारे भाईने मागा था, इसलिये तुमको इसे नही लेनी चाहिये थी। 16 यह। 17 अब किसलिये लें ?

पण तू घोडीनू कासू करीस ?,[1] खेती वाहो, बैठा खावो ।[2] पण दीसै छै, घोडी लीवी छै तो धाड़ा करसी ।[3] ताहरां पाबूजी कह्यो–'बूडेजीरै घोडी लेणी हुवै तो लो । अर थे मेहणो बोलो छो तो म्हे ई रजपूत छां, घोड़ी म्हानू ई चाहीजै छै ।[4] अर धाडैरी कहो छो तो डीडवांणैरी होज घोड़िया ले आईस ।'[5] इतरी पाबूजी कही, तद डोड-गहेली कह्यो–'जी, इसा भाई तो म्हारा ई न छै सु थानै धाड़ो ले आवण दियै, का तो पहुच अर मारग मे ही राखै, अर जाणै बेहनेईरो भाई छै, मारै नही तो अँवळै......आसवै रोवावै ।'[6] ताहरा पाबूजी कह्यो–'म्हे राठोड छा, डोड कदै कोई राठोड़ मारियो सुणियौ हुतौ ?'[7] डीडवांणै डोड राज करता तठै बूड़ोजी परणिया हुता ।[8] तद पावूजी भोजाईसू वाद करनै ऊठ डेरै आया ।

ताहरां चादैनू बुलायो, कह्यो–'चांदा ! आपां देवडांरै पछै जास्यां; पैहली डीडवांणैरो धाड़ो लास्यां ।'[9] ताहरां पाबूजी असवार हुवा । थोरी सातै[10] भाई असवार हुवा । ताहरां चालिया चालिया डीडवाणैरै निजीक[11] आया । ताहरां पाबूजी तो एक थळ माथै तरकस नाखनै बैठा ।[12] घोड़ी कनै छोडी ।[13] अर थोरिया साढियांरो वरग लियो ।[14] तठै थोरियां सांढियानू चलाई । ताहरां रवारी डोडा आगै जाय पुकारियो । कह्यो–'राज ! सांढियां लीवी, वाहर चढो ।'[15] ताहरा

---

1 परतु तू घोडीको करेगा क्या ? 2 खेती खडो और बैठे-बैठे खाओ । 3 परतु दिखता है कि घोडी ली है तो अब धाडे मारेगा । 4 और जो तुम ताना मारती हो तो हम भी राजपूत है, घोडी हमको भी चाहिये । 5 और जो धाडे मारनेकी कह रही हो तो अब पहले डीडवानेकी ही घोडियां ले आऊगा । 6 ऐसे तो मेरे भाई भी नही है सो तुम्हे धाडा करके घोडिया ले आने दे, या तो पीछे पहुच कर मार्गमे ही तुम्हें रख दें या यह जानकर कि बहनोईका भाई है, इसलिये मारे नही तो (औंधी मुश्कोसे बाँधकर) खूब रुलावे । 7 तब पावूजी ने कहा—'हम राठौड़ है, डोडोने कभी किसी राठौडको मार दिया हो; ऐसा कभी सुना था तुमने ? 8 डीडवानामे डोड राज्य करते थे वहा बूडोजी व्याहे थे । 9 चादा ! अपन देवडोके यहा पीछे जायेंगे, पहले डीडवानेका धाडा लायेगे । 10 साती ही । 11 नजदीक । 12 तब पावूजी तो एक धोरे पर तरकश डालकर बैठ गये । 13 घोडीको पासमे छोड दिया । 14 और थोरियोने साढनियोका वर्ग छीन लिया । 15 साढनिया लेली है, पीछा करो ।

डोडा पूछियो, कह्यो–'रे ! कितराइक[1] असवार छै ? ताहरा ईयै कही–'राज ! सात प्यादा थोरी चोरटा लिया जाय छै।'[2] ताहरा वाहर चढिया, सु थोरी तो साढिया लेनै आघा नीसरिया।[3] अर वासैसू[4] वाहररा असवार जे थळ पाबूजी बैठा हता[5], ते[6] थळरी बरावर आया। ताहरा पाबूजी तीरकारी करी।[7] तिकणसू डोडांरा मांणस १० काम आया। ताहरां पाबूजी चांदैनू, बीजा ही[8] थोरियानू साद कियो।[9] कह्यो–'पाछा आवो।'[10] ताहरा थोरी पाछा घिरिया।[11] तठै घोडा लेनै थोरी चढिया। इतरै वांसासू डोडारो सिरदार आय पुहतो[12]। ताहरां ईहां[13] पाबूजीरै साथरा थोरिया डोड सिरदारनू आपडियो।[14] ताहरा बाकीरो साथ डोडांरो पाछो फिरियो। ताहरां पाबूजी कह्यो–'रे ! सांढिया छोड दियो। आंपणै इहा डोडासू काम हुतो सु ले हालो।'[15]

ताहरां औ[16] डोडांनू लेनै रातो-रात चालिया सु कोळू आया। ताहरा डोडानू तो कोटडी माहै राखिया। अर[17] आप महल माहै जाय पोढिया।[18] तद प्रभात हुवो, ताहरां पाबूजी जागिया। ताहरा धायनू कही– 'धायजी ! थे डोडगेहलीनै जाय अठै बुलाय लावो।[19] कहो, जु पाबूजी कह्यो छै जु थे भाभीजी आयनै मांहरो माळियो[20] देखो। म्हे नवौ करायो छै।'[21] ताहरां धाय बूडैजी री वहू नै बुलावणनै गई। अर थोरियानूं पाबूजी कही–'चादा ! थे डोडानू पाघासू मुसक्यां बांधिनै चुहटियासू तोड रोवायनै झरोखै नीचै आंण ऊभा राखौ।'[22] ताहरां चांदौ डोडांनू लेनै पाबूजीरै झरोखै नीचै आण

---

1 कितनेक। 2 सात पैदल थोरी चोर लेकर जा रहे है। 3 सो थोरी तो साढनिया लेकर आगे निकल गये। 4 और पीछेसे। 5 थे। 6 उस। 7 तब पाबूजीने तीर चलाने शुरू किये। 8 दूसरे भी। 9 आवाज दी। 10 पीछे लौट आओ। 11 पीछे लौट आये। 12 आ पहुचे। 13 इन। 14 पकड लिया। 15 अपनेको इन डोडोसे काम था सो इन्हें ले चलो। 16 ये। 17 और। 18 सो गये। 19 धायजी ! तुम डोड-गहलीको जा-कर यहा बुला लाओ। 20 महल। 21 हमने नया बनवाया है। 22 तुम डोडोको उनकी पघडियोसे मुश्कें बाध कर, चुटकियोसे तोड-तोड कर, रुला कर और झरोखेके नीचे ला कर खडा रखो।

ऊभौ छै ।[1] इतरै धायजी डोड-गेहलीनूं जाय कही–'राज थांनै पाबूजी बोलावै । कहै छै जु–'म्हांरै नवो माळियौ करायौ छै सु थां पधारनै देखो ।

ताहरां डोड-गेहली वैहल बैसनै पाबूजीरो मोहल देखणनूं आई ।[2] आगै पाबूजी बैठा हुता सु ऊठ मुजरो कियो । कह्यो–'भाभीजी ! राज ! झरोखै नीचै तमासौ छै सु देखीजै ।'[3] ताहरां आ झरोखै मांहे देखण लागी, ताहरा थोरियां डोडानै चुहटिया तोडिया; ताहरां रोवण लागा ।[4] ताहरां डोड-गेहली देखै तो कासू ?[5] भाई नीचै बाधौ छै अर रोवै छै ।[6] ताहरां डोड-गेहली कह्यौ–'पाबूजी ! ओ कासू सूल छै ?[7] म्हे तो थांनूं हसती वात कही हती ।'[8] ताहरां पाबूजी कह्यो–'भाभीजी ! हूं पण हसतो ले आयो छू ।[9] पण रजपूतांनू वैण बोलीजै नही ।[10] मैहणा कपूतांनूं कहीजै ।[11] ताहरां डोड-गेहली कह्यौ–'भली कीवी ।[12] हमै तो छोडो ।[13] ताहरां पाबूजी डोड भोजाईरै कहै छोड़िया ।

पछै डोड-गेहली आपरा[14] भायांनू ले जाय दिन ४ राखनै घरांनू सीख दीवी ।[15]

तठा पछै हरियै सांढियारी हेरप जोयनै आय पाबूजीनै कही[16]–'राज ! दोदैरी साढिया आंपारै हाथ आवणरी नही ।[17] दोदो जोरावर छै । दोदैरो राज वडो । अर वीचमें पंच नद वहै छै ।[18] ओ ओढो-

---

1 तब चादा डोडोको ऐसी दशामे लाकर पावूजीके झरोखेके नीचे खडा है । 2 तब डोड-गेहली वहलीमे बैठ करके पावूजीका महल देखनेको आई । 3 झरोखेके नीचे तमाशा है सो देखिये । 4 तब थोरियो ने डोडो को चिहुटियोसे तोडा, तब वे रोने लगे । 5 यह क्या ? 6 भाई नीचे बँधा हुआ है और रो रहा है । 7 पावूजी ! यह क्या कोई ढग की वात है ? 8 मैने तो तुमको हँसीमे बात कही थी । 9 मैं भी इन्हे हँसता-हँसता ही ले आया हूँ । 10 परन्तु राजपूतोको व्यग्य वचन नही बोलना चाहिये । 11 ताने कुपूतोको मारे जाते है । 12 अच्छा किया ? 13 अब तो छोड दो । 14 अपने । 15 विदा किया । 16 जिसके बाद हरियेने साढनियोकी खोज-भाल करके पावूजीको कहा । 17 दोदेकी साढनिया अपने हाथ आनेकी नही । 18 और बीच मे पचनद बहती है ।

रावण वाजै छै ।[1] आंपा उठै पोंहच सगां नही ।'[2] इतरी हरियै आयनै कही ।[3] ताहरा पाबूजी कह्यो–'तो भला ! फिरता समझ लेस्या ।[4] हमार तो देवडा ऊपर हालो ।[5] ताहरा ग्रै आठ असवार, नवमौ हरियो प्यादो, ग्रै सारा सीरोही ऊपर चढिया ।[6]

तठै वीच आंनो वाघेलो रहतो । आंनैरी वडी साहबी हुती । पण ग्रै सारा ही करामातीक ।[7] ताहरां चांदै कही–'राज ! आंनौ अठै रहै छै ।[8] अर मांहरौ वैर छै ।'[9] ताहरां ग्रै चलायनै आंनैरै गाव आनैरै वागमे आय उतरिया । ताहरां आंनैनू माळी जाय पुकारियौ जु–'राज ! केई असवार आय उतरिया छै, सु वाग सर्व खोसी खाधौ ।'[10] ताहरां आनै इतरी[11] सुणनै असवारी कर चढियो । ताहरा पावूजी नै आनै वाघेलै आपसमे लडाई हुई । ताहरा आनैरो सर्व साथ माराणो ।[12] आनो पण कांम आयो । तद पावूजी आनैनू मारनै आनैरै कुवरनू कही—'तनै पण मारीस ।'[13] ताहरा आनैरै वेटै आपरी मारो गहणौ पाबूजीरी नजर कियौ ।[14] ताहरा पाबूजी आनैरै बेटैनू टीकै वैसांणियो ।[15]

आनैरैं बेटैनू टीकै वैसांणनै[16] आप सीरोहीनू चढिया, सु रातो-रात सीरोही गया । रावनू कह्यो जु–'थे जाणसो पाबूजो म्हैसू मिलणनै आया छै सो मिलणनू हू नही आयो छूं ।[17] तै बाईनू चाबखा वाया तिकै कारण आयो छूं ।'[18] ताहरा राव पण आपरो[19] साथ एकठो करनै चढियो । ताहरां लडाई हुई । ताहरां पावूजी चांदैनू कही–'चादा ! रावनू आपां मारो मती, नै आपड लिया ।'[20] ताहरां लडाई

---

1 यह ओढा-रावण कहलाता है । 2 अपन उधर पहुँच सकते नही । 3 इतनी बात हरियेने आकर कही । 4 अच्छा, लौटते हुए समझ लेंगे । 5 अभी तो देवडोके ऊपर चलो । 6 ये सभी सिरोही ऊपर चढे । 7 करामाती । 8 आना यहाँ रहता है । 9 और मेरा वैर उससे लेना है । 10 और सारा बाग तोड करके खा गये हैं । (उजाड दिया है) 11 इतनी । 12 मारा गया । 13 तेरेको भी मारूंगा । 14 तब आनेके वेटेने अपनी माँका गहना लाकर पावूजीकी नजर किया । 15 तब पावूजीने आनेके वेटेको टीका करके गद्दी पर विठाया । 16 विठा कर । 17 तुम जानोगे कि पावूजी मेरेसे मिलनेके लिए आये है, परन्तु मैं मिलनेको नही आया हूँ । 18 तुमने मेरी बाईके चाबुक मारे इसलिये आया हूँ । 19 अपना । 20 चादा ! रावको अपन मारे नहीं परन्तु पकड लेना ।

हुई सु देवडारो साथ घणो माराणो, अर रावनू हाथ पडिया, पकड लियो।[1] नै पाबूजी कह्यो–'मारो मतां। देवीजीरो जायो छै।[2] ताहरा पाबूजीरी वैहन वैहल बैसनै पाबूजी पासै आई, कह्यो, 'भाई ! तू म्हनै अमर कांचळी दे, रावजीनू छोड।'[3] ताहरा पाबूजी बैहनरै कहै[4] रावनू छोडियो। अर आनै वाघेलैरी लुगाईरो गहणो पाबूजी बैहननै दियो, नै कह्यो—'बाई ! ओ गहणो तनै दायजारो छै।'[5] ताहरां साळै बैहनेई आपसमे रस हुओ।[6] राव पाबूजीनू लेनै सीरोहीरा गढ मांही आयो।

ताहरो बाईनै साथै लेनै पाबूजी वाघेलीनू बापरो सुणावणनू गया।[7] ताहरा सोनां वाघेलीनू कही जु–'बाईजी ! थे लोकाचार करो।[8] थारै आनै वाघेलै बापनू म्हारो भाई मार आयो छै, थोरिया-रै वैर माहै।'[9] ताहरां वाघेली गोडो वाळियो।[10]

अर पाबूजी अठै बैहनरै जीम अर चढिया[11], तद चांदैनू कही–'चांदा ! थारै वापरो वैर लियो छै, अर बाईरो पण वैण वाळियो छै।[12] हमै चालो, दोदैरी साढियां ले अर भातीजीनू देवां।[13] उठै पण सगा हससी, मैहणा देसी।[14]

सु हमै अठैसू चढिया सु दोदैरै चालिया। हरियैनै आगै कियो। आगै मारग वीच मिरजै खानरो राज, तठै अै आय नीसरिया।[15]

---

1 तब लडाई हुई उसमें देवडोके आदमी बहुत मारे गये, रावको भी कुछ हाथ (घाव) लगे और पकड लिया। 2 मारो मत, देवीजीका (समधिनका) पुत्र है। 3 उस समय पावूजीकी बहिन वहलीमे बैठ करके पावूजीके पास आई और कहा कि भाई ! तू मुझे अमर-कञ्चुकी (सौभाग्य) दे, रावजीको मारना मत, छोड दे। 4 कहनेसे। 5 यह गहना तुझे दहेजमे दे रहा हूँ। 6 फिर साला-वहनोईके आपसमे प्रेम हो गया। 7 तब वहिनको साथ मे लेकर पावूजी वाघेलीको उसके वापके मारे जानेका मृत्यु-सन्देश सुनानेको गये। 8 बाईजी ! तुम लोकाचार करो। 9 तुमारे वाप आना वाघेलेको मेरा भाई थोरियोके वैरका वदला लेनेके लिए मार करके आया है। 10 तब वाघेली रोने बैठी। 11 और पावूजी वहिनके यहा भोजन करके रवाना हुए। 12 चादा ! तेरे वापको मारा जिसके वैरका वदला लिया और बहिनको जो वचन दिया था सो भी पूरा किया। 13 अब चले सो दोदेकी साढनिया लेकर भतीजीको देदें। 14 वहां भी समधी हँसेंगे और ताने मारेंगे। 15 ये वहा आये।

सु एक मिरजैरो वाग, तैमे कोई उतर सगै नही।[1] जो उतरै सो मारियो जाय। अणरो पण वडो राज।[2] ताहरां पाबूजी मिरजैखानरै वागमे डेरो कियो, सो वाग सोह तोड़ खुवार कियो।[3] ताहरां माळी जाय खाननू पुकारियो–'राज! कोई रजपूत वागमें उतरियो छै, सो वाग सर्व विधूंसियो।[4]' तद खांन पूछियो–'कैसाक रजपूत है?' ताहरां माळी कही–'राज! हिन्दु छै। डावी पाघ वाधियां छै।'[5] ताहरां खान कह्यो'–जी, येसूं आंपां पौहचा नही।[6] तियै आंनो वाघेलो मारियो।'[7] सो खान साम्हां रसाळ ले हालियो।[8] ताहरा मीयै घोडा, कपडो, मेवो सांम्हां लेनै वाग आयो। आयनै पाबूजीसू मिळियो। ताहरां पावूजी इयैसू राजी हुवा। तद बीजो तो सर्व पाछो दियो नै एक घोडो राखियो, सु घोड़ो पावूजी हरियैनू वगसियो।[9]

अठै खांनसू मिळनै पावूजो चढिया सु अठै पचनद ऊपर आया।[10] ताहरा पाबूजी चादैनू कह्यो–'चांदा! देखा, पांणीरो थाग लै।[11] कितरोहेक ऊंडो छै?'[12] ताहरां चांदै थाग लियो सु पांणी वासां-डोब।[13] ताहरां चादै कह्यो–'राज! पार हुय सगां नही[14] अर अठै डेरो कर दां।[15] कदै ऊलै पार सांढियां आसी तद आपा लेस्यां।[16]

---

1 उसमे कोई नहीं उतर (ठहर) सके। 2 इसका राज्य भी वडा। 3 सो सव वाग तोड कर नाश कर दिया। 4 सो तमाम वाग विध्वस कर दिया। 5 वामी पगडीके पेच वाला है। (राठौड वॉयें हाथसे पगडी वाँधते है इसलिये राठौड़ 'वामीवध' कहलाते हैं) 6 इससे अपन नही पहुच सकते। 7 उसने आना वाघेलाको मार दिया है। 8 सो वह खान रसाल लेकर साम्हने गया। (राजस्थानमे सभी प्रकारके ताजे फलोको रसाल कहते है।) 9 तव दूसरी सव सामग्री तो पावूजीने वापिस कर दी, केवल एक घोडा रखा जो उन्होने हरियेको वख्श दिया। 10 यहा खानसे मिल करके पावूजी रवाना हुए और यहाँ पचनद पर आये। ('पचनद' से तात्पर्य यहाँ सिन्धु नदी ही समझना चाहिए, जिसमे १ सतलज (शतद्रू) २ व्यास (विपासा) ३ रावी (इरावती) ४ चिनाव (चन्द्रभागा) और ५ झेलम (वितस्था) ये पाँच नदिया मिली हैं) 11 देखें, पानीका थाह तो लें। 12 कितनाक गहरा है? 13 तव चादाने पानीका थाह देखा तो वासो-डूव गहरा। 14 पार नही हो सकते। 15 और यहाँ ही डेरा लगादें। 16 कभी इस पार साढिया आ जायेंगी तव ले लेंगे।

ईयै भांत वात करता वीच पाबूजी माया फेरी सु पैलै पार जाय ऊभा।[1] ताहरां चांदै फेर परचो पायो।[2] ताहरा चांदैनू कह्यो-'चांदा! साढियारो वरग घेरो।' तद थोरियां जायनै वरग सर्व घेरियो।[3] रबारी ढीलनू बांध लियो।[4] अ साढिया लेनै पाबूजी पासै आया। ताहरां ढील रबारीनू पाबूजी छोडनै बांडै ऊंठ चाढनै कही-'रे! तू दोदैरै वाहर घात।[5] कहे, सांढियारा टोळा लियां जावै छै।[6] जे घेर सगै तो वेगो आवै।[7]

ताहरां रबारी जाय पुकारियो, कही-'मेहरबान सलामत! साढियांरा वरग सर्व हकाळिया, वाहर करो।'[8] ताहरां दोदै कही-'अरे! भांग खाधी छै नही ?[9] असो आज कुण छै जो दोदै सूमररी सांढां लियै ?'[10] ताहरां रबारी कही-'राज! राठोड़ै साढियां लीवी छै नै कह्यो छै-आय सकै तो वेगो आया।'[11] इतरो सुणत समां[12] दोदो सूमरो साथ भेळो करनै चढियो। अर पाबूजी तो सांढियानू दाकळी[13] सु पाणीरै माहैसू तिरनै[14] पैलै पार हुई नै आपरो[15] साथ पार करनै चलाया आघा।[16]

वांसैसू दोदो वाहर चढियो[17], सु मिरजै खांनरै गांम आयनै मिरजैनू कह्यो जु-'राठोड़ा सांढिया लीवी, तू पण वाहर आव।' मिरजो दोदैरो चाकर हुतो[18], सु मिरजो पण चढ दोदैरै सांमल हुवो। ताहरा मिरजै कही जु-'आघा मती जावो। सांढियां पाबू राठोड़

---

1 इस प्रकार बातें करनेके बीचहीमें पाबूजीने ऐसी माया फिराई सो उस पार जाकर खडे हो गये। 2 तब चादेने फिर पाबूजीके चमत्कारका परिचय प्राप्त किया। 3 तब थोरियोने जाकर साढनियोका सब वर्ग घेर लिया। 4 और रबारी ढीलको बाँध दिया। 5 तब ढील रबारीको पाबूजीने छोड दिया और उसे एक बाडे (पूछ-कटा) ऊट पर चढा कर कहा कि तू दोदेको वाहर करनेकी सूचना दे दे। 6 कहना कि साढनियोके वर्गको लिये जा रहे है। 7 जो घेर कर ले जा सके तो जल्दी आ जाये।' 8 साढनियोके सभी वर्ग हाक करके लिये जा रहे हैं, पीछा करो। 9 अरे कही भाग तो नही खाई है ? 10 ऐसा आज कौन है जो दोदे सूमरेकी साढनियो-को ले जाये ? 11 यदि आ सके तो जल्दी आना। 12 सुनते ही। 13 तेजीसे हाक दी। 14 तैर करके। 15 अपना। 16 दूर। 17 पीछेसे दोदाने पीछा कया। 18 था।

लीवी । आपा घोडा मारिया ही पोहचां नही ।[1] पाछा फिरो ।[2] जे[3] आनो वाघेलो मारियो छे सु थांसू[4] मरै नही । सु राज ! थे पछै सर्व साथ भेळो करनै[5] जावज्यौ । ताहरां मिरजै इतरी[6] कही, ताहरा दोदो तो पाछो फिरियौ सु आपरै[7] ठिकांणै आयो ।

अर पावूजी साढिया लेनै सोढांरै उमरकोट माहै कर नीसरिया[8] ताहरां कोटरै हेठै कर वूआ, ताहरां सोढी झरोखा माहै वैठी हुती, सु पावूजीनू दीठा[9] । तद सोढी मानू कहाई–'जु पछै ही म्हनै परणावस्यो, पावूजी राठोड जावै, परणावो ।[10] ताहरा ईयै सोढै सिरदारनू कहियो ।[11] ताहरां सोढै वासै[12] आदमी मेलियो[13], नै पावूजीनै कहियो–'राज ! म्हारै परणीजनै पधारो ।'[14] ताहरा पावूजी कही–'राज ! आज तो साढिया लिया जावां छा ।[15] पाछै आय परणीजस्या ।' ताहरा सोढां आदमियां साथै नारेळ मेलियो छै । ताहरा आदमियां पावूजीरै टीको कर नारेळ पावूजीरै हाथ देनै[16] सगाई कर पाछा फिरिया ।

पावूजी आघा पधारिया सो ददरैरै आया ।[17] आगै गोगाजी विराजिया[18], ताहरा सदा वाईसू केलण हसतो–'जु काको दोदैरी साढिया कद आण देसी ?'[19] इतरै हरियो आयो । आयनै कही–'भीतर वाईसू मालम करावो, जु पावूजी पधारिया छै ।[20] दोदैरी साढियां रा वरग तनै सकळपाया हुता सु लायो छै ।[21] संभाळ लेवो । ताहरां गोगाजी वाहिर आयनै पावूजीसू मिळिया । ताहरा साढिया सरव सभाळ भतीजीनू दीवी छै । अर कह्यो–'एकै बाडै ऊठ विना सरव वरग

---

1 अपन घोडोको पीछे देकर भी पहुच नही सकेंगे । 2 वापिस लौट जाओ । 3 जिसने । 4 तुमारेसे । 5 इकट्ठा करके । 6 इतनी । 7 अपने । 8 और पावूजी साढनियोको लेकरके सोढोके उमरकोट नगरके अदर होकर निकले । 9 जब कोटके नीचे होकर चले तब सोढी झरोखेमे वैठी हुई थी, सो उसने पावूजीको देखा । 10 तब सोढीने अपनी माको कहलवाया कि पीछे भी मेरा विवाह करोगे, पावूजी राठौड जा रहे है, अभी व्याह दो । 11 तब इसने सोढे सरदारको कहा । 12 पीछे । 13 भेजा । 14 मेरे यहाँ व्याह करके पधारें । 15 आज तो साढनिया लिये जा रहे है । 16 देकरके । 17 पावूजी आगे पधार कर ददरेरे (ददरेवे) आये । 18 वैठे हैं । 19 काका दोदेकी साढनिया कब ला देगा ? 20 कि पावूजी आये है । 21 दोदेकी साढनियोंके वर्ग कन्यादानके समय तुम्हें लाकर देनेके लिए संकल्प किया था सो ले आये है ।

छै ।[1] ताहरां सारी सांढियां गोगाजी संभाही ।[2] पण गोगाजीरै मनमें विसवास रह्यो नहीं–'जु दोदो आज जोर बळ छै । तैरी सांढिया कैसू लीवी जावै ?[3] पण कठै बीजी जायगासू ले आयो छै ।'[4]

ताहरां गोगोजी पाबूजीनूं भगत[5] करी नै[6] विचारी–'जु पाबूरी करामात पण देखीस ।'[7] ताहरां गोगोजी पाबूजी आरोगिया ।[8]

आरोगनै बैठा, ताहरां गोगोजी पाबूजीनू कही–'पाबूजी ! म्हांरै केईरो नांमलियो वैर छै ।[9] सो थे अठै रहो तो वैर लिया[10] ताहरा पावूजी कही–'बोहत भलां, रहिस्यां ।'[11]

पछै रात पड़ी । ताहरां गोगैजी पाबूजीनू कही–'आंपै परभाते सौण लेस्यां ।[12] जो सौण आछा हुआ तो चढस्यां ।'[13] ताहरां पाबूजी कह्यो–'सवण किसा लेस्यां ?[14] आप जठी चढस्यो तठी फतै कर आवस्यां ।[15] ताहरां गोगोजी कही–'राज ! आंपणी धरती मांहै स तो सवण मांनीजै छै ।'[16] ताहरां रात तो अै पोढि रह्या ।[17]

अर परभात हुवौ ताहरां गोगोजी पाबूजी दोनू घोडां चढि सवण लेणनू हालिया ।[18] तठै[19] सवण तो कोई हुवौ नही । ताहरां एकै रूंख हेठै ही जाजम विछायनै दोनूं सिरदार सूता ।[20] घोडा दोनू चरणनू ढाळिया ।[21] इतरै ठंडो वगत हुवौ ।[22] ताहरां अै जागिया ।[23]

ताहरां गोगैजी कह्यो–'घोड़ा हू ले आऊं छूं, ज्यु आंपा घरै हालां ।'[24] ताहरां पाबूजी कह्यो–'राज ! आप विराजो ।[25] हू ले

---

1 एक वाडे (कटी हुई पूछके) ऊटके विना तमाम वर्ग मौजूद है । 2 सभाल ली । 3 उसकी साढनिया किससे ली जायें ? 4 कही दूसरी जगहसे ले आया हैं । 5 भोजन आदिकी तैयारी की । 6 और । 7 देखूगा । 8 भोजन किया । 9 मेरे किसीके साथ साधारण-सा वैर है । 10 सो तुम यहां रहो तो वैरका वदला लू । 11 रहेगे । 12 अपन प्रभातमे शकुन लेंगे । 13 चढेंगे, चलेंगे । 14 शकुन क्या लेंगे ? 15 आप जिधर चलेंगे उधर ही फतह कर आयेंगे । 16 अपने देशमे तो शकुन देख कर ही काम करना अच्छा माना जाता है । 17 तवरात तो ये सो रहे । 18 चले । 19 वहा । 20 तव एक वृक्षके नीचे जाजम विछा करके दोनो सरदार सो गये । 21 दोनो घोडे चरनेको छोड दिये । 22 इतनेमे ठडा वक्त हो गया । 23 तव ये जगे । 24 घोडे मैं ले आता हू, फिर अपन घरको चले । 25 आप वैठिये ।

आईस ।'[1] ताहरां गोगैजी कही– 'थे वडेरा छो[2], छोटा तोई सुसरा छो, पग वडा छो, थे बैसो,[3] हू ले आईस ।' ताहरा पावूजी कही–'आ तो साची, पण थे बूढा छो, अर म्हे मोटियार छा ।'[4] ताहरां पाबूजी घोडारी खबर करण गया । आगै जाय देखै तो कासू ? नाग २ छै, तिके तो सेखड़ हुआ घोड़ा चारै छै ।[5] अर दोय नागांरा घोडांरै पगे दावणा छै ।[6] ताहरां पाबूजी देखनै विचारी जु–'आ म्हनै गोगोजी-करामात देखाळी छै ।[7] ताहरा पाबूजी पाछा आया । आयनै गोगेजी नू कही–'राज ! घोडा तो दीसै नही ।[8] कठीनै नीसर गया[9] । म्हनै तो मिळिया नही ।[10]

ताहरां पावूजी तो जाय जाजम बैठा नै गोगोजी हाथमें बरछी लेनै घोडांरी खबर करण गया । आगे देखै तो कासू ? पाणीरो वडो हवद भरियो छै ।[11] तैरै मांहै[12] एक नाव छै, तै[13] नावमें घोड़ा दोनू तिरै छै । हवद ऊंडो बोहत ।[14] गोगोजी विचारी जु–आ म्हनै पाबू करामात दिखाळी छै । आ जाणनै[15] गोगोजी पाछा पावूजी पासै आया । ताहरा पावूजी कही–'राज ! घोडा लाधा ?'[16] ताहरां गोगोजी कह्यो–'राज ! म्हारै मनमे सदेह हुतो, सु हमै मिटियो ।[17] म्हे लाधा थानै ।'[18]

ताहरा पाबूजी गोगोजी भेळा हुयनै घोडांनू गया । आगै देखै तो कासू ? ऊभा छूटा चरै छे ।[19] तद अै घोडा लेय लगामा देनै असवार हुयनै गोगोजीरी कोटडी आया । पछै पाबूजीनू भगत जीमायनै विदा दीवी ।[20]

---

1 मैं ले आऊगा । 2 तुम वडेरे हो । 3 छोटे हो तो भी ससुरे हो, पदमे वडे हो, तुम वैठो । 4 यह तो सच है, परतु तुम वृद्ध हो और मैं जवान हू । 5 वे तो साथ खडे हुए (फनोको उठाए हुए ?) घोडे चरा रहे हैं । 6 और दो सर्पोकी घोड़ोके पावोंपे रज्जु (दामर) वँधी है । 7 दिखाई है । 8 दिखाई नही देते । 9 कही निकल गये । 10 मुझे तो मिले नही । 11 पानीका वडा हौज भरा हुआ है । 12 जिसमे । 13 उस । 14 हौज वहुत गहरा । 15 यह जान कर । 16 घोडे मिल गये ? 17 सो अब मिटा । 18 मैंने आपको अब पहिचाना । 19 छूटे खडे हुए चर रहे है । 20 फिर पावूजीको भोजन करवा कर रवाना किया ।

पाबूजी अर हरियो थोरी असवार हुयनै सांढियां देनै कोळू आया । ताहरां वसेक हुवो ।[1]

ताहरां पाबूजो वरस १२रा हुवा । ताहरां सोढा साहो लिख मेलियो ।[2] कह्यो–'जांन कर वेगा आवज्यो ।[3] ताहरा पाबूजी जांनरी तैयारी कीवी ।[4] जीदराव खीची बोलायो । गोगैजीनू बोलाया । बूड़ैजीनूं बोलाया । जानरी तैयारी कीवी । अर सीरोही रै रावनू पण बोलायो, सो आयो नही । ताहरां जांन चढी ।

ताहरां चांदैरी बेटीरो पण वीमाह हुतो ।[5] चादो विखैमें नीसरियो तद सात गांवै बेटी दीवी हती ।[6] तैरी सातेई जाना आई । ताहरा चांदैनू पाबूजी कही–'चादा ! थारै पण वीमाह छै; तू अठै रहि ।' ताहरा चांदो तो अठै[7] रह्यो । अर डांवो साथै गयो ।

ताहरां जांननू मारगमे जावतां वडाकारो सवण हुवौ ।[8] ताहरा सवणियां[9] कही–'राज ! सवण भला न हुवा छै, पाछा फिरो ।[10] बीजै साहै परणीजस्यां ।'[11] ताहरा कही–'थे पाछा फिरो । हू तो कोई फिरूं नही । लोक कहै जु पाबूजीरी तेल चढी रही ।'[12] ताहरा पाबूजी तो आघा चढिया अर साथै एक डांबियो हुवो ।[13] अर बीजो[14] साथ सर्व पाछो फिरियो ।

ताहरा पाबूजी घडी २ रात गयां धाट जाय पुहता ।[15] उठै सोढा भली भातसू वीमाह कियो । ताहरां पाबूजी फेरा लेनै हालण लागा ।[16] ताहरां सोढां कही–'राज ! म्हांमें चूक किसी, सु न जीमो, न कोई भगत लिवो, सु किसै वासतै ?[17] दिन दोय चार रहो, ज्या

1 तब बडी विशेष बात मानी गई (हर्षोत्सव हुआ) 2 सोढोने तब विवाहका लग्न लिख कर भेज दिया । 3 बारात बना कर जल्दी आना । 4 पाबूजीने बारातकी तैयारी की । 5 चादेकी लडकीका भी विवाह था । 6 चादा सकटमे था तब उसने अपनी बेटी–का सबध सात गावोंमे कर दिया था । 7 यहा । 8 मार्गमे जाते हुए बरातको अपशकुन हुआ । 9 शकुनियोने । 10 पीछे लौट जाओ । 11 दूसरे साहे पर व्याह करना । 12 लोग कहेगे कि पाबूजीकी तेल चढी हुई ही रह गई । 13 और साथमे केवल एक डाविया थोरी चला । 14 दूसरा । 15 पाबूजी दो घड़ी रात गये धाट देश (उमरकोट) मे जा पहुचे । 16 पाबूजी भाँवर लेनेके बाद चलने लगे । 17 हमारेमे कौनसी भूल जिससे न तो आप भोजन करो और न आप भात (बडा भोज) लेओ, सो किस कारण से ?

दायजो देनै विदा करां।'[1] ताहरा पाबूजी कह्यो जु–'म्हांनू सुगन लाचा हुआ छै।[2] तैसू म्हे रातोरात घरा जावस्यां।[3] पाछा मासेकनू आवस्या।[4] भगत-दायजो जदो करज्यो।'[5] ताहरां सोढा कही 'मरजी रावळी, चढो।'[6] ताहरां पाबूजी चढिया। ताहरां सोढी कह्यो–'हूं पण न रहू, साथै हालीस।'[7] ताहरा सोढी पण वैहल बैसनै साथै हुवा, सु पाबूजी रातोरात हलाणो लेनै कोळू आया।[8] अठै हरख वधाई हुई। पाबूजी सोढी जाय मैहल माहै पोढिया छै।[9] डांवो आपरै[10] घरै गयो।

ताहरा जीदराव खीची आयो हुतो[11] सु पाबूजी बूडैजी जीदरावनू सीख दीवी।[12] ताहरां जीदराव मारगमे जावता काछेलां चारणांरो वित लियो।[13] ताहरा गोहरी[14] आय पुकारियो। कह्यो–'जी! खीची जीदराव धण[15] चरतो हुतो, तठैसू[16] सर्व लियां जावै छै।' ताहरां बिरवड़ी चारण आयनै बूडै आगै कूकी।[17] कह्यो–'बूडा! वाहर धाय[18], खीची गाया घेरियां जाय छै।' ताहरां बूड़ैजी कही–'बाई! म्हारी आख दूखै छै। आज तो चढियो ना जाय।'[19]

ताहरा चारण कूकती-कूकती पाबूजीरै महल आई। आयनै चादेनू कही–'चांदा! पाबूजी नही, अर खीची म्हारो धण सर्व लियो, सो तू चढ।'[20] ताहरा चांदे कही 'हे! कूक ना'[21] पाबूजी पधारिया छै।'[22] इतरै पाबूजी पण झरोखै कर दीठो।[23] कह्यो–'कासू छै?'[24]

---

1 सो दहेज देकरके विदा करें। 2 हमको शकुन अच्छे नही हुए है। 3 इसलिये हम रातो-रात घरको चले जायेंगे। 4 मास एकके लगभग फिर आयेंगे। 5 भगत (बडा भोज) और दहेज उस समय देना। 6 तब सोढोने कहा–मर्जी आपकी, पधारो। 7 मैं भी नही रहू, साथमे चलूगी। 8 सोढी भी वहलीमे बैठ कर साथमे हो गई, पाबूजी रातो-रात हलाणा (सोढी)को साथ लेकर कोलू आये। 9 सो गये है। 10 अपने। 11 आया था। 12 विदा किया। 13 तब जीदरावने मार्गमे जाते हुए काछेला चारणोंके गो-समूह-को घेर लिया। 14 गाये चराने वाला। 15 गो-समूह। 16 वहासे। 17 तब चारणी बिरवडीने आकर बूडेसे पुकार की। 18 वाहरको दौड (पीछा कर)। 19 आज तो वाहर नही चढा जाता। 20 सो तू उसके पीछे वाहरको चढ। 21 अरी! शोर मत मचा। 22 पाबूजी आ गये है। 23 इतनेमे पाबूजी ने भी झरोखेमे हो करके देखा। 24 क्या है?

ताहरां कही–'राज ! काछेली बिरवडीरो धण खीची जींदराव लियो। अर वूडोजी चढै नही।'

ताहरां पाबूजी कह्यो–'घोडां जीण करावो।'[1] ताहरां पाबूजी असवार हुवा। थोरी सर्व असवार हुवा। सात-वीस जानी नै सात चांदैरा भाई, साराई चढिया।[2] निकै खीचीनू पुहता।[3] तठै लडाई हुई। खीचीरो लोक घणो मारीजियो।[4] धण सर्व पाबूजी घेर लियो।

लेनै ग्रै तो कोळू ग्रावै।[5] गूजवो कोहर तो, तठै चारणरो वित पावण वेई, सु कोहर चाढियो, सु पांणी नीसरै नही।[6] ताहरां चारण बिरवडी कही–'वडा राठोड घेरी छै ज्यु पाय।'[7] ताहरां पाबूजी कोहर तेवण ग्राप लागा। ताहरा एक वारो काढियो।[8] तैसू कोठा, कूडचां, खेळियां सर्व भरी।[9] बिरवडी चारणरो धण सर्व पायो।[10]

ग्रर वासै[11] बिरवड़ीरी छोटी बैहन बूडेजीनू जाय पुकारी। कह्यो–'बूडा ! हमै तो कितराइक काळ जीवीस।[12] पाबूजी तो काम ग्राया।' इतरी इयै कही[13]। ताहरां वूड़ैजीनू रीस ग्राई। ताहरां बूडैजी चढिया सो खीचीनू जाय पुहता।[14] ताहरा बूड़ैजी कह्यो–'रे खीची ! पाबूनै मार कठै हालियो ?[15] पग माड !'[16] ताहरां खीची सकियो[17]। कह्यो–'राज ! पाबूजी तो धण लेनै पाछा फिरिया, थे लडो मती[18]

---

1 घोडो पर जीन कसवा दो। 2 एक सौ चालीस वराती ग्रौर सातो ही चादेके भाई, सभी चढे। 3 वे सभी खीची के पीछे पहुचे। 4 खीचीके बहुत मनुष्य मारे गये। 5 ले करके ये तो कोलूको ग्रा रहे है। 6 मार्गमे गूजवो नामका कुग्रा था, वहा चारणी-के गो-समूहको पानी पिलानेके लिये चरसको चढ़ाया, किन्तु पानी निकलता नही। 7 वडे राठौड ! जिस प्रकार ग्रपने हाथोसे इन्हे घेर कर लाये हो, उसी प्रकार ग्रपने हाथसे ही इन्हे पानी पिलाग्रो। 8 तव पावूजी स्वय चरस खीच कर निकालने लगे ग्रौर उन्हो-ने एक वारा निकाला। [कोहर=पशुग्रो ग्रादिके पीनेके लिये चरस द्वारा पानी निकाला जाने वाला कुँग्रां ! वारो=चरस (प्रायः विना सूड वाला)का कुँएंमेसे पानी भर करके एक वार निकाला जाना एक 'वारा' कहलाता है।] 9 उस एक वारासे पानीके कोठे, कूडिये ग्रौर खेलिया ग्रादि सव भर गये। 10 विरवडी चारणीके सभी गो-समूहको पिला दिया। 11 पीछे से। 12 वूडा ! ग्रव तू कितने काल तक जीयेगा। 13 इतनी वात इसने कही। 14 जा पहुचे। 15 पावूको मार करके कहा चल दिया ? 16 पांव रोप (ठहरजा)। 17 डर गया। 18 पावूजी तो गो-समूह लेकर लौट गये है, तुम लड़ाई मत करो।

तोई वूड़ोजी मांनै नही ।[1] ताहरा लड़ाई हुई । बूडो काम आयो ।

ताहरां खीची आपरा[2] साथसू कही–'जो आज आपा पाबूनै मारियो नही तो पाछै आपांनै नही छोडसी ।'[3] ताहरां खीचीरो साथ पाछो फिरियो । सो कूडळ पमै घोरंधाररै आयो ।[4] ताहरा पमैनू कही जु– 'अै[5], राठोड थारी[6] धरती दबावता-दबावता आसी[7], सो जे[8] तू आज म्हारै सांमल हुवै तो दाव छै, पावूजीनू मारां ।' ताहरां पमो पण चढ सामल हुवौ ।

अै चढनै पावूजी ऊपर आया । तठै[9] पाबूजी गायां पाइनै[10] छोडी छै । इतरै खेह दीठी ।[11] ताहरा पाबूजी कह्यो–'रे चांदा ! आ खेह कैरी ?'[12] ताहरां चांदै कह्यो–'राज ! खीची आयो ।' अर पैहलडी लड़ाई माहै चांदै खीचीनू तरवार वाही हुती[13], तद पाबूजी तरवार आपड़ लीवी ।[14] कही–'मारो मतां, बाई राड हुसी ।'[15] ताहरा चादै कही–'राज ! आप तरवार आपडी सु बुरी कीवी ।'[16] अै छोडै छै ?[17] मराया भलां[18] ताहरां चादै कही–'हरामखोर आयो ।' ताहरा पाबूजी खेत वुहारनै लडाई कीवी ।[19] वडो रोठ वाजियो ।[20] ताहरा पावूजी काम आया । सात भाई आहेडी[21] काम आया । जाना सात आई ही, जिणमे सात-वीस आहेड़ी छा सो सर्व काम आया ।[22] वडी लडाई हुई । खीचीरा पण माणस घणा

---

1 फिर भी वूडोजी मानते नही है । 2 अपने । 3 जो आज अपनने पावूको मारा नही, तो फिर वह अपनेको नही छोडेगा । 4 सो वह कुडलमें पमे घोरधारके पास आया । 5 ये । 6 तेरी । 7 आयेंगे । 8 यदि । 9 वहाँ । 10 पानी पिला करके । 11 इतनेमे गर्द उड़ती हुई देखी । 12 यह खेह किस वातकी ? 13 पहलेकी लडाईमे चादेने खीचीके ऊपर तलवारको प्रहार करनेके लिए उठाई थी । 14 तव पावूजीने तलवार पकडली थी । 15 कहा कि मारो मत, वाई विधवा हो जायगी । 16 आपने तलवार पकडली यह वुरा किया । 17 ये अव कही छोडने वाले हैं ? 18 मार देना ही अच्छा था । 19 तव पावूजीने मैदान तैयार करके लडाई की । 20 वडे जोरोंके प्रहारोंमे लडाई हुई । 21 शिकारी (थोरी) । 22 सात वरातें आई थी जिनमे १४० थोरी थे सो सभी काम आ गये । ['सात-वीसका प्रयोग प्राय 'सात-वीसीकी' भांति ही १४० के लिये ही होता है । केवल २७के लिए 'सात-वीस'का प्रयोग नही होता । वीसने ऊपर दस या वीस समाहार सख्याओंके योगके लिए उन समाहार सख्याओंकी इकाईमे गुणित कर अभिलषित संख्याको वतानेकी परम्परा आज भी अपठित समाजमे देखी जाती है । दशका समाहार वीसका आधा, पांचको चौथाई और १५ को पौना समझा जाता है । पचासको 'अढाई-वीसी', पचपनको 'पूणा तीन-वीसी' और साठको 'तीन-वीसी'कहा जाता है । इकसठको 'तीन-वीसी नै एक' कहा जाता है । इसी प्रकार सत्ताईसको 'सात-वीस' न कह कर 'एक वीसी नै सात' कहा जाता है ।

कांम आया ।[1] खीची तो लड़ाई करनै आपरै ठिकांणै गयो । पमो आपरै ठिकाणै गयो ।

पाबूजी लारै सोढी सती हुई ।[2] बूड़ैजी लारै डोड-गेहली सती हुवण लागी । तद[3] डोड-गेहलीरै सात मासरो गर्भ हुतो । तद लोकै कही–'आपरै पेट माहै गर्भ छै सु थे सती मता हुवो ।'[4] ताहरां डोड-गेहली छुरी लेनै पेट झरड़ैनै बेटो काढियो अर धायनै दियो ।[5] कह्यो–'इयैनू आछी तरैसूं पाळै ।[6] ओ वडो देवनीक मरद हुसी ।[7] ताहरां इणरो नाम झरड़ो दियो ।[8]

पछै झरड़ो वरस १२रो हुवो । ताहरां झरड़ै काकै बापरो वैर लियो ।[9] जीदराव खीचीनू मारियो । पछै राज कियो । तिको झरडो अजू तांई जोवै छै ।[10] गोरखनाथजी मिळिया । सिद्ध मरद हुवो ।[11]

॥ इति पाबूजी री वात सपूर्ण ॥

॥ शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥

---

1 खीचीके भी वहुत मनुष्य काम आये । 2 पावूजीके पीछे सोढी सती हुई । 3 उस समय । 4 आपके पेटमे गर्भ है सो तुम सती मत हो । 5 तव डोड-गहलीने छुरीसे पेटको चीर करके भ्रूणको बाहर निकाला और धायके सुपुर्द किया । 6 इसका पालन अच्छी तरहसे करना । 7 यह देवांशी और वीर होगा । 8 इसका नाम झरडा रखा । [छुरीसे झरड कर (एक झटकेसे चीर कर) पेटमेसे बाहर निकाला इसलिये 'झरडा' नाम रखा ।] 9 तब झरडेने अपने काके और वाप के मारने वाले जीदराव खीचीको मार करके बदला लिया । 10 वह झरडा अभी तक जीवित है । 11 सिद्ध और वीर पुरुष हुआ ।

॥ श्रीरांमजी सत छै ॥

अथ वात गांगै वीरमदेरी लिख्यते

च्यार ठाकुर मारू, सु अै जोधपुर आया।[1] इंयांमे[2] रायमल घरे छै, वीजा जोधपुररै दरोखानै छै।[3] इतरै मेह आयो।[4] ताहरां इंया[5] ठाकुरां वीरमदेरी मा सीसोदणी, तिणनू कहाडियो[6]–'जी, म्हांनू मेह रोकिया छै[7], मांहरी खबर लेज्यो।[8] ताहरां रांणी कहाडियो–'चकमा ओढनै ठाकुर डेरै पधारो।[9] अठै थांनू कुण जीमाडसी।[10]

ताहरा इंया ठाकुरां कह्यो–'आवो, गागैरी मानू कहावा।'[11] ताहरा गांगैरी मानू कहाड़ियो। ताहरा भीतरसू कहाड़ियो–'ठाकुर! दरीखानै विराजो।[12] घणा हीडा करस्यां।'[13] ताहरा गांगैरी मा ठाकुरां-रा घणा वाना किया।[14] ठाकुर सारा राजी हुवा। वळै आपरी धाय मेलनै खवर कराई[15], नै कह्यो[16]–'जी, क्युं ही न पहुतो हुवै सो पहुंचावा।'[17] ताहरा ठाकुरां कह्यो–'जी, सारा थोक आया।[18]

ताहरां इया ठाकुरां वहूजीनूं भीतर कहाड़ियो–'थारै वेटै गांगैनू जोधपुररी ममारखो छै।'[19] ताहरां धाय भीतर जायनै वहूजीनू कह्यो–'ठाकुर थांरै वेटैनू जोधपुररी ममारखी दीवी छै।'[20] ताहरां राणी आसीस कहाड़ो।[21] अर कह्यो–'जी, जोधपुर म्हां पायो।[22]

---

1 चार मारू ठाकुर थे सो ये जोधपुर रहनेके लिये आये। 2 इनमेसे। 3 दूसरे जोधपुरके दरीखानेमे है। 4 इतनेमे वरसात आ गया। 5 इन। 6 जिसको कहलवाया। 7 हमको वरसातने घर जानेसे रोक लिया है। 8 हमारी सम्हाल लेना जी। 9 चकमे ओढ कर अपने डेरोको चले जायें। 10 यहां तुमको कौन भोजन करायेगा। 11 गागेकी माको कहलायें। 12 दरीखानेमे वैठें। 13 यथाशक्ति सेवा करेंगे। 14 अनेक प्रकार सेवा की। 15 पुनः अपनी धायको भेज कर खवर करवाई। 16 और कहा। 17 कोई वस्तु नही पहुची हो वह पहुचा दें। 18 सब वस्तुएं मिल गई है। 19 तुमारे पुत्र गागेको जोधपुरकी मुबारिकवादी है। 20 ठाकुरोने तुमारे वेटेको जोधपुरकी मुबारिकवादी दी है। 21 तब रानीने आशिष कहलवाई। 22 (आपने कहा है तो) जोधपुर हमे मिल गया।

थांईज सारै छै[1], थे देवो जिकेनू हीज आवै ।'[2] अर कहाडियो–'भलां जी, म्हां पायो ।'[3]

यु करता राव सूजोजी कितरै हेकै दिने विसरामियो ।[4] ताहरा टीकैरी तयारी हुई । ताहरा इया ठाकुरां वीरमदेनू पकड बाह अर गढसू हेठो उतारियो[5], नै गांगैनू टोको दियो ।[6]

जाहरा[7] वीरमदे गढ हू[8] उतरतां विचै रायमल मुंहतो मिळियो, कह्यौ–'रे, ओ पाटवी कुंवर गढसू क्यु उतारो ?'[9] ताहरां रायमल वीरमदेनू अपूठो ले आयो ।[10] ताहरा सिगळा ही मिळनै कह्यो[11]–'जी सोझत वीरमनू द्यो ।'[12] सोझतरो राव वीरमदेनू कियो ।[13]

ताहरां वीरमदे गेहलो हुवो ।[14] मुहडैसू वकै–'रे, ओ जोधपुर हुवै ?'[15] ताहरां रायमल मुहतो सोझत रखवाळै ।[16] वीरमदे ढोलियै बैठी रहै ।[17] जो गांगो सोझतरो १ गाम मारै तो रायमल जोधपुर रा २ गांम मारै ।[18] यु रहतां थकां इयारो वेध चालियो जाइ ।[19]

जैतो जोधपुर चाकरी करै । कूपो सोझत चाकरी करै । सु जैतै री वसी वगडी मांहै ।[20] सु वगडी वीरमदेरै वाटैमे आई ।[21] वीस हजाररो गांम ।[22] सु जैतैनू वीरमदे काढै नही ।[23] सु किसे वासतै ?[24] कह्यौ–'जी जैतो फोज माहै सिरदार, सु जैतो वगड़ी

---

1 तुम्हारे ही अधिकारकी वात है । 2 तुम जिसको देदो उसको ही मिले । 3 और उन्हे कहलवाया कि अच्छी वात है, हमे प्राप्त हुआ । 4 इस प्रकार कितनेक दिनोके वाद सूजोजी देवलोक हुआ । 5 वीरमदेको वांह पकड कर गढसे नीचे उतार दिया । 6 और गागेको टीका कर दिया । 7 जव । 8 से । 9 अरे ! इस पाटवी कुवरको गढसे क्यो उतार रहे हो ? 10 तव रायमल वीरमदेको वापिस ले आया । 11 तव सभीने मिल कर कहा । 12 सोजत वीरमको देदो । 13 तव सोजतका राव वीरमदेको वनाया । 14 तव वीरमदे पागल हो गया । 15 मुहसे वकता है–अरे ! यह जोधपुर है क्या ? 16 उस समय मुहता रायमल सोजतका रखवाला बना । 17 वीरमदे पलग पर वैठा रहे । 18 यदि गागा सोजतका एक गाँव लूटता है तो रायमल जोधपुरके दो गाव लूट लेता है । 19 इस प्रकार इनका झगडा चलता रहता है । 20 जैतेकी वसी (जागीरी) वगडी मे । 21 वगडी वीरमदेके वटमे आई हुई थी । 22 वगडी वीस हजारकी आमदनीका गाव । 23 जैतेको वीरमदे निकालना नही चाहता । 24 सो किसलिये ?

भोगवै, सोभतरो भलो चाहै।'[1] ताहरां राव गांगै कह्यो–'जैताजी ! थाहरा गाडा बीलाड़ै आणो।[2] वगड़ी छाडो।'[3]

ताहरा जैतेजी कागळ मेलिया।[4] वगड़ी मांहै धायभाई रेड़ो हुतो।[5] तिकैनू कहाडियो[6]–'रेडाजी ! गाडा वीलाड़ै ले जावो।' ताहरा रेडै कहाडियो–'वगडी वीरमदे छोडावै नही, तो म्हे क्युं छोडा ?'[7] ताहरा रेडै वगडी छाडी नही।[8]

यु करता वळै[9] वीरमदेरो साथ नै गांगैरो साथ लडियो, गांगैजी-रो साथ भागो। ताहरां गागैजी कहै–'म्हारो साथ भागै, सु कासूं छै ?'[10] ताहरा कहणवाळां कह्यो–'जी, जैतो वगडी भोगवै जितरै थे जीपो नही।'[11] ताहरां राव गागैजी जैतैनू तेडनै ओळभो दियो।[12] ताहरा जैतै रेडैनू कहाडियो–'रे, मोनै थां रावजी कना ओळभो दरायो।[13] हिवै वगडी वेगी छाडज्यो।'[14]

ताहरा रेड़ै दीठो[15]–'रायमलनू मारू तो भलो छै।' ताहरा रेड़ै दीठो–सोभत जायनै रायमलनूं मारू। ताहरा रेडो सोभत गयो। जायनै रायमलसू मिळियो।[16] । रायमल वागो पहरनै मुजरै जावतो हुतो।[17] ताहरा कह्यो–'रेड़ाजी ! हालो, मुजरै हालां।'[18] ताहरा रेडैनू ले अर रांणीरै मुजरै गयो। जायनै रायमल मुजरो कियो। ताहरा कह्यो–'जी, वीरा ! ओ कुण छै ?'[19] कह्यो–'जी, जैतैजीरो धाय भाई छै। ताहरा पगे लगायो।[20] बाहुडता रायमलनू छांनै लेनै

---

1 जैता फौजका सरदार और सोजतका हितैषी है इसलिये वह वगडीको भोगता है। 2/3 राव गागाने कहा–'जैताजी ! तुमारे गाडे विलाडे ले आओ (वगडी छोडकर विलाडे चले आओ)। वगडी छोड दो। 4 तव जैतेजीने पत्र भेजा। 5 वगडीमे धायभाई रेडा था। 6 उसको कहलवाया। 7 तो हम क्यो छोडें ? 8 तव रेडेने वगडी छोडी नही। 9 फिर। 10 सो यह क्या वात है ? 11 जैता जव तक वगडी भोगता है तव तक तुम जीतनेके नही। 12 तव राव गागेजीने जैतेको वुला कर उपालभ दिया। 13 अरे ! मुझे तुमने रावजीसे उपालभ दिलवाया। 14 अव वगडी जल्दी छोड दो। 15 तव रेडेने देखा। 16 जाकरके रायमलसे मिला। 17 रायमल वागा पहन कर मुजरा करनेको जा रहा था। 18 चलो, मुजरे चलें। 19 भाई ! यह कौन है ? 20 तव उसे पांवो लगाया।

कह्यौ–'वीरा ! इयैरो वेसास मता करै ।[1] हू इयैरी निजर भूडी देखू छूं ।'[2] ताहरां रायमल कह्यो–'जी, अै तो आपणाहीज छै ।'[3] पिण सीसोदणी कह्यो–'वीरा ! इणरो वेसास मतां करे ।'

ताहरां रायमल दरीखांनैनू हालियो छै ।[4] ताहरां धाय भाई रेडै जांणियो ।[5] दरीखानै तो हजार आदमी छै । उठै तो रायमल मरसी नही ।[6] अठै अेकलो छै, मारूं ।'[7] ताहरां रेडै तो मारणरी घात कीनी, तरवार वाही । अर रायमल भाटो लेणनू नीचो हुओ, सवळी मेहलै वैठी हुती, तियैरै उडावणनू ।[8] ताहरां तरवार वाही, सो खाली पडी । थोड़ी-सी मोरै लागी ।[9] ताहरां रायमल पाछो फिर अर वाही सु रेडैनू भोठ परहो कियो ।[10] रेडो मारै रायमल ऊभो रह्यो ।[11] ताहरां वगड़ीरा लोक सारा नाठा सु उबरै गया ।[12]

हिवै राव गांगोजी कहै–'जैताजी ! कूपानू उरहो ल्यो ।'[13] ताहरा जैतैजी कह्यो–'राज ! हूं ही कागळ दईस, अर आपही कागळ द्यो ।'[14] ताहरा कागळ दे आदमी मूंकियो ।[15] कहाड़ियो–'रे भाई ! वीरमदेरै छोरू[16] नही छै; पछै ही जोधपुर आवणो छै । अर लाख रुपियांरो पटो कूपैनूं रावळै[17] देवै छै । सखरा-सखरा[18] गांम मारवाडरा कहै छै, ल्यो ।' ताहरां कूपैंही दीठो[19]–'भलां कहै छै ।'[20] जाहरां कूपै राव गांगैजीनू कहाड़ियो–'जो एक वरस ताई सोभत ऊपर कटकी न करो तो हू थाहरै आऊं ।'[21] ताहरां रावजीसौ कह्यो । ताहरा दीठो–

---

1 लौटते हुए रानीने रायमलको एकान्तमे लेकर कहा कि 'वीरा ! इसका विश्वास मत करना । 2 मैं इसकी नजर बुरी देख रही हू । 3 यह तो अपना ही है । 4 चला जा रहा है । 5 विचार किया । 6 वहाँ तो रायमल मारा नही जा सकेगा । 7 यहाँ अकेला है, मार दूं । 8 महल पर एक चील वैठी हुई थी उसको उडानेके लिये कंकर लेनेको नीचे झुका, उस समय तलवारसे प्रहार कर दिया, परतु वह खाली चली गई । 9 थोडी-सी पीठमे लग कर रह गई । 10 तब रायमलने पीछेकी ओर मुड कर प्रहार किया सो रेडेका सिर दूर जा पडा । 11 रेडेको मार करके रायमल खडा रहा । 12 वगडीके सभी लोग भयके मारे बचनेके लिये भाग गये । 13 कूपाको भी इधर ले लो । 14 मैं भी पत्र दूगा और आप भी पत्र दें । 15 तब पत्र देकर आदमी भेजा । 16 पुत्र, सतान । 17 रावजीकी ओरसे । 18 अच्छे-अच्छे । 19 देखा, विचारा । 20 बात तो ठीक कह रहे हैं । 21 जो एक वर्ष तक सोजत पर आक्रमण नही करो तो मैं तुम्हारे पास आ जाऊ ।

वरस उरहो आवतो जासी।[1] कूपो परहो नही जावै।[2] कह्यो–'कूपाजी पधारो।[3] वरस एक ताई सोझत ऊपर कटकी नही करां।' ताहरा[4] कूपै रायमल कनै जाय विदा मांगी। 'म्है जोधपुर जावां छा। वीरमदेरै छोरू नही, पछै ही जोधपुर जावणो हुमी।'[5] ताहरां रायमल कह्यो–'कूपाजी! वीरमदेरो ढोलियो खेतावतरै हीयै पग दै अर सोझतहू उतारसी, थे पधारो छो?'[6]

ताहरा कूपोजी तो जोधपुर गया। कूपै जावतां रिणमल सर्व गया।[7] वासै सात सै असवार सोझतमे रह्या।[8] ताहरा कूपैजी मसलत की। सोझतरा गांम वरसो-वरस[9] दो-दो चार-चार लेता जावो। ताहरा धौळहरै आण पायगा बाधी।[10] राव गांगैरा च्यार हजार चीधड थाणै राखिया।[11] इतरा अमराव साथै दिया।[12] १ मानो रूपावत, २ साडो सांखलो, ३ रायपाळ साहणी, ४ गांगो डूगरसीओत, औ इतरा ठाकुर घोड़ां पासै राखिया।

यु करता होळी आई। होळीरै दिहाड़ै, ताहरां मांडावो अरहट छै, एथ सारो दीह रायमल रह्यो, गोठ कीवी।[13] अर हेरा लगाया।[14] आज होळीरो दिन छै सु चोपड़ां गाव छै उठै गागैरी वसी छै।[15] सु रायमल कह्यो–'गांगो घरे जासी। सु ताहरा गांगो घरे जावै, ताहरां मोनू[16] खबर देज्यो। हेरा धौळहर गया।[17] ताहरा होळीनै मंगळावै नै पहोर १ रात गई, ताहरा गांगो साहणी कनै गयो।[18] कह्यो–'साहणीजी! कहो तो घरे जावां।' ताहरा साहणी बोलियो–'नही।' कह्यो–'जी, क्यु, ना बोलो?'[19] कह्यो–'जी, रायमल

---

1 एक वर्ष यो ही बीत जायगा। 2 कूपा कही हाथसे चला नही जाये। 3 कूपाजी चले आओ। 4 हम जोधपुर जा रहे है। 5 बादमे भी जोधपुर तो जाना ही पड़ेगा। 6 कूपाजी! वीरमदेके पलगको खेतावतोकी छाती पर पैर देकर सोजतसे उन्हें उतारनेकी बात थी और आप जा रहे है? 7 कूपेके जानेसे रिणमलोत सभी चले गये। 8 पीछे सिर्फ सात सौ सवार सोजतमे रहे। 9 प्रति वर्ष। 10 तब धोलहरे गावमें आकर घुड-सेनाकी पायगा बाँधी। 11 राव गागेके चार हजार चीधड-सैनिकोको इस थानामे रखा। 12 इस प्रकार उमराव साथमे दिये। 13 माडावा नामका एक रहँट है, होलीके दिन रायमल दिन भर यहा रहा और वहा गोठ की। 14 वहा उसने जासूस लगाये। 15 चोपडा गाव है इसमे गागेकी वसी है। 16 मुझको। 17 जासूस धोलहरेको गये। 18 होलीको मगलानेके बाद जब एक पहर रात बीती तो गागा साहनीके पास आया। 19 क्यो, मना क्यो कर रहे हो?

सातै कोसै बैठो छै, अर थे घरे जावो ?'[1] ताहरां गागो बोलियो–'साहणीजी ! वांणियो गेहर रमै छै, अै कठा आवै ?'[2] ताहरां साहणी कह्यो–'च्यार ४ हजार आदमियांनू थे सवारै आविनै दाग देस्यो ।'[3] ताहरां गांगो हँसनै चढियो, घरे गयो ।

ताहरां हेरा दोडिया, रायमलनू जाय कह्यो–'गांगो घरे गयो ।' ताहरा रायमल चढियो । आयनै चार ४ हजार माणस तरवार माहै काढिया ।[4] घोडा ले गयो । जायनै वीरमदेजीनूं कह्यो–'अै आपरै वाप-दादैरा घोडा लायो छूं ।[5] वाणियै इसौ ज्यांन कियो, सो वरस दो २ तांई तो राव गांगोजी सभ ही नही सकियो ।[6]

एथ हरदास ऊहड़ राव गागैजीरै सौ छाडि नै आयो ।[7] ताहरां हरदास कहै–'राव गांगाजीसू लडाई करो तो हूं थांहरै वास रहू ।' ताहरा इया कह्यो–'लड़ाई करस्यां ।' ताहरां हरदास रह्यो । ताहरां लड़ाई मांडी ।[8] ताहरां वीरमदेरी असवारीरो घोड़ो हरदासनू दियो । ताहरां लडाई हुई । हरदास घावे पड़ियो ।[9] घोड़ैरै पण घाव लागा । ताहरां हरदासनू डोहळी घाति सोझत ले आया ।[10] घाव वंधाया ।[11]

ताहरा वीरमदे बोलियो–'जाहरे, हरदास ! तै म्हारो घोड़ो गमायो ।' ताहरां कह्यो–'जी, हरदास ऊभा घोड़ो गयो हुवै तो ओळभो द्यो ।'[12]

ताहरां हरदास उण वगत[13] वीरमदेजीरो वास छाडियो ।[14] नागोरनू हालियो, सरखेलखांरै वास रहणनू ।[15]

---

1 रायमल सात कोस पर बैठा हुआ है और तुम घरको जा रहे हो ? 2 वनिया गेहर रम रहा है, ये कहाँ आने के ? 3 चार हजार आदमियोका कल आकरके दाह-सस्कार करोगे । 4 आकरके चार हजार आदमियोको तलवारके घाट उतार दिया । 5 ये आपके वाप-दादेके घोडे ले आया हूँ । 6 वनियेने इतनी जवरदस्त वरवादीकी कि फिर दो वर्ष तक राव गागोजी सम्हल नही सका । 7 इधर हरदास ऊहड राव गागाजीके यहांसे छोड कर इनके पास आ गया । 8 लड़ाई शुरू की । 9 हरदास घायल हुआ । 10 तव हरदासको डोहलीमे डाल कर सोजत ले आये । (डोहळी, डोळी=घायलोको उठा कर ले जानेकी एक टिकची ।) 11 घावो पर पट्टे वँधवाये । 12 हरदासके आहत हुए विना घोडा गया हो तो मुझे उपालभ दो । 13 उस समय । 14 छोड दिया । 15 नागौरमे सरखेलखाके पास रहनेको चल दिया ।

ताहरा सेखो सूजावत वीरमदेजीरै जो गोत-भाई हुतो, सु आयो[1] आयनै सीसोदणीसू मिळियो। कह्यो–'मोनू थे सांमल ल्यो, ज्यु थांहरो चेळो भारी हुवै।[2] राव गागो न पहुचै।[3] ताहरा सीसोदणी रायमलनू पूछियो। ताहरा रायमल कह्यो–'मता लेवो।'[4] ताहरा सीसोदणी रायमलरो कह्यो न कियो। सेखा सूजावतनू सांमल कियो। ताहरा रायमल जाणियो–'म्हारो धर्म नही हमै।[5]

ताहरां राव गागैजीनू रायमल कहायो[6]–'अबै थे आवो, हू लडीस।[7] वाघेरै घरै तो धरती रहै, सूजारै धरती न जावै।[8] हू काम आईस, धरती थानू देईस।[9] ताहरां राव गांगो, मालदे बेहु कटक कर आया।[10] ताहरां रायमल जाय वीरमदेरै ढोलियै प्रदक्षिणा दे, पगे लाग बाहिर आयो।[11] आपरो साथ एकठो कर सांम्हां जाय लडियो।[12] रायमल काम आयो। सोभन राव गागै लई।[13] वीरमदेनू काढियो।[14]

इति राव गांगै वीरमदेरी वात सपूर्ण

---

1 तव सेखा सूजावत जो वीरमदे का गोत्र-भाई (द्विमात-भाई) था सो आया। 2 मुझको तुम शामिल ले लो जिससे तुम्हारा पलडा भारी हो जाये। 3 फिर राव गागा तुम्हें नही पहुच सकेगा। 4 मत लेओ। 5 तव रायमलने देखा कि अव उसका यहा रहना धर्म नही। 6 कहलवाया। 7 अव तुम आ जाओ, मैं लडूगा। 8 मैं चाहता हू कि धरती वाघाके घरमे रहे, सूजाके घरमे न जाने पाये। 9 मैं काम आ जाऊगा और धरती तुमको दे दूगा। 10 तव राव गागा और मालदे दोनो कटक लेकर आये। 11 तव रायमलने जाकर वीरमदेके पलगकी प्रदक्षिणा दी और चरण स्पर्श कर बाहर आया। 12 अपना साथ इकट्ठा करके सामने गया और लडा। 13 राव गागाने सोजत पर अधिकार कर लिया। 14 वीरमदेको निकाल दिया।

अथ वात हरदास ऊहड़री लिख्यते

हरदास मोकळोतनू कोढणों सात-वीस गावांसू ।[1] तिको हरदास लाकड़ चाकरी न करै, दसराहै आइनै सलाम करै ।[2] सु मालदेव कुंवर खोट सांसहै नही, ताहरां भांणनू कोढणो दियो ।[3]

ताहरां हरदास इसडी वलाय नही जो कोई इयैंनू कहै ।[4] ताहरा चाकरी भाण करै, कोढणां हरदास भोगवै । यु करतां तीन वरस हुआ । ताहरां हुजदार लडिया, भाणरा नै हरदासरा ।[5] भांणरा हुजदारां कह्यो–'जी, थे ठकुराई करो । पण म्हानू कहो नांही ।[6] सावास, जु उतरियै पटै थानै गांम मांहै रैहण देवां छां ।'[7] ताहरा हरदास सुणियो । कह्यो–'रे, कासूं छै?[8] ताहरां कह्यो–'पटो थासू उतरियो ।'[9] ताहरां आ वात सुणनै हरदास कह्यो–'रे, म्है बुरी वसत खाधी, उतरियै पटै हूं गाम माहै रहू ?'[10] ताहरां हरदास छाडियो ।

ताहरां जायनै सोभत रायमल मुहतैसूं मिळियो । हरदास वीरमदेरै वास वसियो ।[11] ताहरां हरदास रायमलनू कहै–'जे थे राव गांगैसू वेढ करो तो हू थांरै रहीस, नही तो नही रहू ।'[12] ताहरां रायमल कह्यो–'जी, म्हांरै तो आठ पोहर लड़ाईज छै ।'[13]

---

1 हरदास मोकलोतको सात-बीस गावोके साथ कोढणा पट्टे मे दिया हुआ था । 2 हरदास इतना अक्खड कि चाकरीका काम नही करता, केवल दशहरेके दिन मुजरा करनेको ही आता है । 3 सो कुवर मालदेव ऐसी भूलको सहन नही करता, उसने कोढणो गावका पट्टा भाणको कर दिया । 4 परतु हरदास ऐसी वलाय कि यह वात उससे कहनेकी किसीकी हिम्मत नही होती । 5 तव भाण और हरदासके हुजदार परस्पर एक दिन लड पडे । 6 परतु हमको वात भी नही करो । 7 सावाश हमको है, जो पट्टा उतरने पर भी हम तुमको गावमे रहने देते है । 8 अरे ! क्या वात है ? 9 कोढणाका पट्टा तुमारेसे उतर गया है । 10 यह वात सुन करके हरदासने कहा कि यह तो मैंने अखज खाया, जो पट्टा उतरने पर भी गाव मे रह रहा हू । 11 तव हरदास जाकर वीरमदेके यहा रहा । 12 यदि तुम राव गांगासे लडाई करो तो मैं तुमारे यहा रहू, नही तो नही रहूगा । 13 हमारे तो आठो पहर उनसे लडाई चल ही रही है ।

ताहरा एक दिन लडाई हुई, सो वीरमजोरै असवारीरो घोडो हरदासनू चढणनू दियो हुतो, सु अठै हरदास नै घोड़ो बेऊ घावै पूर हुवा।[1] ताहरां हरदासनू भाण उपाडियो, सोझत पहुचतो कियो।[2] हरदास सोझत आयो। घाव बधाया।[3] ताहरां वीरमदे कह्यो–'जाह रे हरदास ! तैं म्हारो पांच हजाररो घोडो वढायो।[4] ताहरा हरदास कह्यो–'कुरजपूत ! म्है म्हारो पिंड ही वढायो !'[5] ताहरां हरदास विना घाव सारा हुवा रुसायनै हालियो।[6] वास छाडियो।[7] सरखेलखां दिसा हालियो।[8]

ताहरां सेखो सूजावत पीपाड रहै।[9] ताहरा सेखो हरदासरै आडो फिरियो, कहियो–'कहसी, मारवाड माहै कोई रजपूत छै ही नही, जु हरदासरा घाव बधाया नही ?'[10] ताहरां हरदास कहै–'सेखा ! समझि अर मोनू राखै ?[11] जो राव गागैसूं लडै तो मोनू राखै, नही तो मोनू मता राखै।'[12] ताहरां सेखै कह्यो–'परमेश्वर भलां करसी, थे रहो।'[13] ताहरां हरदास पीपाड़ सेखैरै वास रह्यो।

हिवै हरदासनै सेखो च्यार पोहर मैहलां मांहै आलोच करै।[14] सु सेखैरी वहुवां च्यार पोहर साड़ी ओढियां बैठी रहै।[15] आछै कपड़ेसूं सीयां मरै।[16] ताहरां एक दिन सेखैरी वहुवां कह्यो–'सासूजी ! म्हे तो सीयां मर गई।' ताहरां कह्यो–'वहू ! क्यु ?' कह्यो–सासूजी ! थाहरो[17] वेटो हरदासजीसू आलोच करै। म्हे चार पोहर

---

1 सो वहां हरदास और घोडा दोनो घायल हुए। 2 तब हरदासको भाणने उठाया और सोजत पहुचा दिया। 3 घावोंकी मरहम-पट्टी हुई। 4 जारे हरदास ! तूने मेरे पांच हजारका घोडा कटवा दिया। 5 अरे कुक्षत्री ! मैंने भी तो अपना शरीर कटवा दिया है ? 6 तब हरदास घाव ठीक नही होने पर भी रिसा करके चल दिया। 7 वहा रहना छोड दिया। 8 सरखेलखांकी ओर चला। 9 सेखा सूजावत पीपाडमे रहता है। 10 सेखा हरदासके आडा फिरा और कहा कि 'लोग कहेंगे कि मारवाड़मे कोई राजपूत ही नही, जो हरदासके घाव नहीं वधाये गये। 11 सेखा ! समझ करके मुझको रखना। 12 नहीं तो मुझे मत रखना। 13 परमेश्वर ठीक करेंगे, तुम रह जाओ। 14 तब हरदास और सेखा रातको चारों ही पहर महलमे परामर्श करते हैं। 15 सेखे की पत्नियां चारों पहर साडिया पहनी हुई बैठी रहें। 16 महीन कपडे पहिने रहनेसे ठंडमें मरती हैं। 17 तुमारा।

सोयां मरती बैठी रहां ।' ताहरां कह्यो–'वहू आज हरदास बाहुडै़ ताहरां मोनूं खबर दिया ।'[1]

ताहरां जियै वहूरो वारो हुतो, सु मारग रोकि ऊभी ।[2] ज्यु हरदास पाछली रातरो वाहुडियो, ताहरां कह्यो–'सासूजी ! हरदास बाहुडै छै ।'[3] सासू पण ऊभी हती ।[4] सु ऊपरासू हरदास उतरियो । सु राय-आंगण मांहै मारग ।[5] ताहरा राय-आगणमे हरदास आयो, ताहरा सेखैरी मा भीतर तेड़ायो ।[6] ताहरां जायनै सलांम कीवी । ताहरां कहियो–'बेटा हरदास ! देखै, सेखैरी मारो टापरो उपाडतो हवै नी ?'[7] ताहरां कहियो–'माजी ! पेहली हरदासरी मारो टापरो उपड़सो, ता पछै सेखैरी मारो टापरो उपडसी । टापरो उपडियां विना, माजी ! जोधपुर आवै नही । काय टापरो उपड़सी, काय जोधपुर आवसी ।'[8]

ताहरां राव गांगैरा परधांन सेखै कनै आया नै सेखैनूं कह्यो–'सेखा ! जितरी धरती मांहै करड़, इतरी धरती थांरी नै जितरी धरती माहै भुरट, उतरी म्हांरी ।'[9] ताहरा सेखै कह्यो–'भला ।'

ताहरां हरदास आयो । सेखै कह्यो–'हरदास ! धरती वाट भलो कहै छै ।'[10] ताहरा हरदास वात मानै नही ।

ताहरां भूटो आसियो दूहो कहै[11]—

ऊहड मन आणै नही, हेक वचन हरदास ।
सेखै सिगळो सामठो, (का) गागै सिगळो ग्रास ।।

---

1 आज हरदास जब आवे मुझे खबर देना । 2 तब जिस पत्नीकी उस दिन बारी थी वह मार्ग रोक कर खडी रही । 3 जैसे ही हरदास पिछली रातको लौटा, तब उसने कहा, 'सासूजी ! हरदास लौट रहा है ।' 4 सासू भी वही खडी थी । 5 राय आगनमे होकर मार्ग जाता है । 6 तब सेखेकी माने अदर बुलवाया । 7 बेटा ! हरदास ! देखना, कही सेखेकी माका टापरा उजाड नही हो जाय ? 8 या तो टापरे उजडेंगे या जोधपुर आयेगा । 9 सेखा ! जितनी धरतीमे करडी उगी हुई है उतनी धरती तुम्हारी और जितनी धरतीमे भुरट उगी हुई है उतनी धरती हमारी (इस प्रकार धरतीका वट करलें ।) 10 हरदास ! धरती बाट लेनेकी वात ठीक कर रहे है । 11 इस पर आसिया चारण भूटेने एक दोहा कहा है, इसका भावार्थ इस प्रकार है—

'हरदास ऊहड एक भी बात नही मानता । वह कहता है कि या तो समस्त धरती सेखा ही लेगा या फिर गांगा ही लेगा ।'

ताहरां हरदास कहै–'एकै जोधपुररा कासू दो वांट करा ? एक डूगरी छै जोधपुर प्रोय बरछीमें नै थारै पूठै आणीस ?'[1]

ताहरां परधान अपूठो गयो ।[2] कह्यो–'जी ! वात मांनै नही, लडाई करसी ।'

ताहरा राव गांगैजी साथ भेळो कियो । वीकानेरसू राव जैतसीहजीनू बोलाया । बीजो ही साथ घणो एकठो कियो ।[3] सेखो नै हरदास नागोर सरखेलखा कन्है[4] आया । सरखेलखानू कह्यो–'तोनू नै दोलतखाननै परणावस्यां ।[5] म्हांरी थे मदत आवौ ।' ताहरां सेखो वोलियो–'रे हरदास ! बेटिया किणरी देईस ?[6] म्हारै बेटी नही, थारै वेटी नही ।'[7] ताहरा हरदास बोलियो–'केरी बेटियां ?[8] तरवारारा माथै भोठ पडसी ।[9] जे जीपस्या तो घणाही रिणमल छै[10], तियांरी दोय डावडिया परणावस्या अर जो काम आया तो कुण परणीजसी ? कैरी वात ?'[11] यु करनै वैराईरा द्रह तठै आय सेखो दोलतखांन उतरिया ।

जाणाऊ आयो ।[12] ताहरा राव गांगै पूछियो–'दोलतियो कठै आयो ?'[13] कह्यो–'राज बैराई आय पडियो ।[14] राजरी जैतहथ ।'[15]

राव गागोजी घाघाणी आय उतरिया ।[16] कोस दोयरो बीच छै ।[17] तठा उपरंत राव गागैजी कहाडियो–'राज ! आप आय उतरिया, आहीज आंपां सीम । राज ! इतरी राजरी । राज वडा छो, काका छो ।'[18] इसौ परधांनगो कियो ।[19] परधांन फिरिया पण

---

1 एक जोवपुरके क्या दो भाग करे ? एक पहाडी है सो जोधपुरके पीछे वरछीमे पिरोकर तेरे पीछे लाऊगा क्या ? 2 वापिस लौट गया । 3 दूसरा भी वहुत साथ इकट्ठा किया । 4 पास । 5 तुझे और दौलतखानको व्याह देंगे । 6 अरे हरदास ! किसकी लडकिये व्याहोगे ? 7 मेरे कोई लडकी नही और तेरे भी कोई नही । 8 किसकी वेटिये देना है ? 9 तलवारोमे सिर उड़ेंगे । 10 यदि जीत गये तो रणमलोत वहुत है । 11 उनमेसे किसीकी दो लडकियें व्याह देंगे और जो काम आ गये तो कौन व्याह करेगा, किसकी वात ? 12 गुप्तचर आया । 13 दौलतखा कहा तक आ गया ? 14 वैराई गांवमे आकर पडे हैं । 15 आपकी विजय है । 16 राव गागाजी घाघाणी आकर ठहरे । 17 दो कोसका अतर है । 18 आप जहां आकरके ठहरे है, यही अपनी हद, यहां तक धरती आपकी, आप वडे हैं और काका है । 19 प्रधान द्वारा इस प्रकार कहलवाया ।

अै तो न मानै ।[1] कह्यो–'जी, भात्रीजो भुय भोगवै काकै बैठै ? यो तो मोनूं नीद नही आवै ।'[2] राव गांगैजीनू कहाडियो–'सेवकीरो खेत्र म्हे बुहारियो छै । आंपै वेढ करस्यां ।'[3] राव गांगै कह्यो–'ठीक छै । हू छूं जिसो हाजर छूं ।'[4] राजि कह्यो–'सवारै लड़ाई छै ।'[5]

ताहरां गागैनू जोसिये[6] कह्यो–'राज सवारै तो जोगणी आपांनू सांम्ही छै, उवानू पूठ छै ।'[7] ताहरां राव गागैजी राव जैतसीहजीनू पूछियो–'रावजी ! सवारै तो जोगणी आपानूं साम्हा छै । उवांनू पूठी छै ।' ताहरां राव जैतसीजी कह्यो–'राज ! लड़ाई तो आपां सारै नही छै, उवा सारै छै ।[8] वे सवारै हीज लडै छै ।' ताहरां चारण खेमो किनियो बोलियो–'राज ! जोगणी छै, पण योगणी असवार कांई छै ? ताहरां कह्यो–'जी, जोगणी सीह असवार छै ।' कह्यो–'जी, बांभण[9] बोलावो, पूछो, योगणी बीजैही[10] वाहण[11] असवारी करै छै ?' ताहरा कह्यो बाभण–'योगणी सवारै[12] काग[13] असवार छै । ताहरां कह्यो–'काग सरांसू भाजि जाय ।[14] लड़ाई मांहै सर छै सु सेखै गांगैरै बिहु सरे भाजसी ।'[15]

यु करतां दिन ऊगो ।[16] सरखेलखानरै एक हाथी छै, तिकणरो[17] दरियाजोईस नांम छै । तियैरै चाळीस हाथी एकै बगल[18] चाळीस हाथी बीजो[19] बगल । सु हाथी पाखरिया कर, लोह बांध, गरक किया छै ।[20] सु हाथी फोजरै मुहडै छै ।[21]

अठासू[22] राव गागौ आवै छै । राव गागौजी फोज वणाय सांम्हा आया ।

---

1 प्रधान आये-गये, परतु ये नही मानते । 2 काकाके बैठे भतीजा धरती भोगता है, इस प्रकार तो मुझे नीद नही आती । 3 सेवकीमे रणक्षेत्र तैयार करा दिया है, अपन लडाई करेंगे । 4 मैं जैसा हू वैसा हाजर हू । 5 कल लडाई निश्चित है । 6 ज्योतिषियोने । 7 योगिनी अपने सामने है और उनको पीठकी ओर है । 8 लडाई तो अपने हाथमे नही है, उनके हाथमे है । 9 ब्राह्मण । 10 दूसरे भी । 11 वाहन । 12 कल (आने वाला) 13 कौआ । 14 कौआ बाणोसे भग जाता है । 15 लडाई मे शर है सो सेखा और गागा दोनोके शरोसे भाग जायेंगे । 16 उदय हुआ । 17 जिसका । 18 बाजू । 19 दूसरी । 20 सो हाथियोके पाखर डाल कर लोहेसे गर्क कर दिये है । 21 वे हाथी फौजके आगे है । 22 यहांसे, इधरसे ।

सेखै दोलतखांननू कह्यो हुतो–'दीवांण भाज जास्यै ।'[1] सवारै लोह वजाय सारै साथ हाथ दिखाया,[2] त्यौ दोलतखान कह्यो–'सेखाजी ! तुम कहते थे, वे भाजि जांहिगे ।'[3] ताहरां सेखोजी बोलिया–'तो खांन साहिव ! जोधपुर छै, यु क्युकर भाजै ?'[4] ताहरां जाणियो–'चूक न छै ?'[5] मन माहै चमकियो दौलतखान ।

तितरै राव बोलियो–'कहो तो हाथीरै द्यु सररी, कहो तो महावतेरै द्यु[6] सररी ?' हाथी आवै छै । महावत पुकारै छै । ताहरां दै महावतरै सररी, महावत पड़ियो । अर दूसरी दै हाथीरै कूभाथळ[7] मे सररी, अर हाथी भागो, अर दौलतखान ही भागो । अर सेखो मडियो ।[8] सेखो भाज न जांणै ।[9] सात सै आदमियांसू सेखै पागडा छाडिया, अर वेढ हुई ।[10] सेखो बेटै सहित काम आयो । हरदास वेटै सूधो[11] कांम आयो । तुरक भागा । घणा मरिया । घणा पाछा वळिया ।[12]

सेखोजी खेतमे ससक छै ।[13] ताहरां राव गागै पूछियो–'सेखाजी ! धरती कैरी ?'[14] ताहरा राव जैतसीहजी सेखैजी ऊपर छाह कराई ।[15] अमल करायो ।[16] पाणी पायो । ताहरा सेखैजी पूछियो–'तू कुण छै ?'[17] ताहरा कह्यो–हू राव जैतसीह छूं ।[18] ताहरा सेखैं कह्यो–'रावजी ! म्है थाहरौ कासू उजाड़ियो हुतौ ?[19] म्हे तो काको भतीजो धरतीरै पगा विढता हुता ।'[20] ताहरां सेखै कह्यो–'जैतसीहजी ! मो गत हुई छै, सो तो गत हूसी ।'[21] यु करतां सेखैरो जीव नीसर गयो ।[22]

---

8 दीवान (राव) भाग जायगा । 2 दूसरे दिन तलवारें चला कर सभी साथने अच्छे हाथ दिखाये । 3 तुम कहते थे कि वे भाग जायेंगे । 4 खान साहिव ! आगे जोधपुर है, यो कैसे भाग जायेंगे ? 5 तब ख्याल किया—कही धोखा न हो ? 6 दू । 7 कुम्भस्थल । 8 और तब सेखेने पाँव रोपे । 9 सेखा भागना नही जानता । 10 सात सौ आदमियोंके साथ सेखा घोड़ोंसे उतरा और लडाई की । 11 सहित । 12 बहुतसे भाग दिये और बहुतने पीठ दिखा कर पीछे लौटे । 13 सेखोजी रणखेतमे सिसक रहे है । 14 धरती किसकी ? 15 राव जैतसिहजीने सेखोजीके ऊपर छाया करवाई । 16 अफीम दिया । 17 तू कौन है ? 18 मैं राव जैतसिह हू । 19 मैने तुम्हारा क्या बिगाड किया था । 20 हम तो काका भतीज अपनी जमीनके लिए लड रहे थे । 21 जैतसिहजी ! मेरी जो गति हुई है वही गति आपकी होगी । 22 ऐसा कहते ही सेखाका जी निकल गया ।

हाथी हुता सु सखरा-सखरा तो कुवर मालदे लिया ।[1] अर वडो हाथी खांनरी असवारीरो नाठो सो मेड़तै गयो ।[2] ताहरां मेड़तियां लियो । तियै[3] हाथी वेई[4] मेड़तियांसूं राव मालदे विरुद्ध हुवो ।

अथ घूमर

बीवी पूछै रे दोलतिया !, तैं हाथी केथा किया ।
रूड़ा रूड़ा रावै लिया, पाडा पाछा दिया ।। १
बीवी पूछै रै दोलतिया !, तैं मीया केथा किया ।
ऊचै मगरै घोर खणाई, बाथै बाथै दिया ।।* २

हिवै[5] हाथी मेडतियांरै गयो । ताहरा मेड़तियां हाथीरा घाव बाधा ।[6] हाथीनू माहै आंणै सु पोळमें हाथो मावै नही ।[7] ताहरां पोळ खणायनै हाथी मांहै लियो ।[8] ताहरां सवणियां[9] कह्यो–'जु, थां आ बुरी कीधी[10], पोळ खणी ।'[11] कहियो–'सु तो हुई । हमै कासू ?'[12]

यु करतां राव गांगोजी नै मालदे सुणियो–'जु हाथी मेड़तै वीरमदेरै गयो ।' ताहरां हाथी मालदेजी मगायो । कह्यो–'जी, हाथी मांहरो छै[13], म्हां लड़नै लियो छै ।'[14] ताहरां मेडतिया हाथी न दै । ताहरां वीरमदेजी कह्यो–'राव गांगैनू हाथी परहो द्यौ ।'[15] ताहरां मेडतिया कह्यो–'म्हे तो हाथी न देवां ।[16] जे म्हारै प्राहुणौ हुवै तो जीमायनै हाथी देवां ।'[17] ताहरां मालदे चढिनै आयो । ईंयांरै भगत हुई मालदे

---

1 अच्छे-अच्छे हाथी जो लडाईमे हाथ आए थे सो उन्हे कुवर मालदेवने ले लिये । 2 और जो खानकी सवारीका बडा हाथी था जो भाग कर मेडते चला गया । 3 उस । 4 के लिये । 5 अव । 6 तव मेडतियोने हाथीकी मरहम पट्टी की । 7 हाथीको अदर ले जाना परतु पौलिमे हाथी समाता नही । 8 तव पौलिको तुडवा कर हाथीको अदर लिया । 9 शकुनियोने । 10 तुमने यह बुरा काम किया । 11 पौलिको तुडवा दी । 12 जो होनी थी सो तो हो गई, अव क्या हो ? 13 हाथी हमारा है । 14 हमने लड़ करके लिया है । 15 राव गागाको हाथी दे दो । 16 हम तो हाथी नही दें । 17 जो हमारे यहाँ महमान हो जायँ तो उन्हे भोजन करवा कर हाथी दें ।

*घूमर का भावार्थ–'दौलतखान जब भाग कर घर गया तो उसकी बीवी पूछती है कि अरे दौलतिया ! तूने लड़ाईमे कितने हाथियोको जीत कर इकट्ठा किया है ? तो उत्तर देता है कि अच्छे-अच्छे हाथियोको तो रावने ले लिया है और पाडेके समान वापिस किए है । फिर बीवी दौलतियासे पूछती है कि तूने कितने मुसलमान वनाये है ? तो कहता है कि जो मेरे साथ थे उन्हें बाथें भर-भर कर रावको लडाईमें भेंट कर आया हू और उनके लिये ऊचे मगरे पर कबरें खुदवा दी हैं ।

सारू ।[1] ताहरां हाथी रेया हुतो ।[2] ताहरा भगत तयार हुई । ताहरा कह्यो–'कुवरजी ! थे पधारो, भगत आरोगो ।[3] तितरै हाथी रेयां छै सु हमार आवै छै ।'[4] ताहरां कह्यो–'जी, हाथी पैहला लेनै पछै भगत आरोगस्यां ।'[5] ताहरा रायसल दूदावत बोलियो–'जी, इसडा डावडा अडीला म्हारै ई छै, म्है हाथी नी द्यां ।[6] थे पधारो ।'[7]

ताहरां कुवर रीसायनै कहियो–'जु हाथी तो न द्यो छो, पण म्हारो नाम मालदे छै ।[8] मेड़तैरी ठोड़ मूळा वुहाऊं तो मालदे ।'[9] पछै मालदेजी पाछा जोधपुर आया ।

ताहरा राव गांगैजी कहाडियो वीरमदेजीनू–'जु थे ओ कासू कियो ?[10] जितरै हू जीवू तितरै तो थे म्हारै परमेश्वर छो,[11] पण हू पुहतो न ! ताहरां मालदे थांसूं भूडो छै, थानू दुख देसी ।[12] ओ हाथी इयैरै सिर देवो ।'[13] ताहरा वीरमदेजी कहायो–'भला, जो थांरै दाय आई तो हाथी परह्रो मेल देस्यां ।'[14] ताहरां घोड़ा राव गांगैजी सारू[15], हाथी मालदेजी सारू मेल दिया ।[16] ताहरां हाथी पीपाड़ आयो, ताहरा घाव फाटिनै हाथी मुवो ।[17] ताहरां आदमिया घोड़ा ले जाय निजर किया । अर कह्यो–'जी हाथी तो पीपाड़ माहै आवतो मुवो ।' ताहरा राव गांगैजी कह्यो–'हाथी म्हारी[18] धरती माहै आय मुवो, सो म्हारै आयो ।[19]

ताहरा कुवर मालदे बोलियो–'जी, हाथी थांहरै[20] आयो, पण म्हारै हाथी न आयो । जाहरां हाथी ले सकीस ताहरां लेईस ।'[21] तठा पछै वरस १ हीज राव गांगोजी जीवियो ।

---

1 मालदेवके लिये इन्होने भोजनकी तैयारी की । 2 हाथी रीया गावमे था । 3 कुवरजी ! पधारिये, भोजन अरोगिये । 4 इतनेमे हाथी रीयासे अभी आ जाता है । 5 हाथी पहले लेकर फिर भोजन करेंगे । 6 ऐसे अड़ियल कुवर हमारे भी है, हम हाथी नही देते । 7 आप जाये । 8 हाथी नही दे रहे हो, परतु मेरा नाम मालदेव है । 9 मेड़तेकी जगह मूले वुवाऊ तो मैं मालदेव । 10 तुमने यह क्या किया ? 11 जब तक मैं जिन्दा हू तब तक तो आप मेरे लिये परमेश्वरके समान है । 12 तुमको तकलीफ देगा । 13 यह हाथी इसके सिर दे दो । 14 अच्छा, यदि तुम्हारी यही इच्छा है तो हाथी भेज देंगे । 15 के लिए । 16 भेज दिये । 17 तब घावोंके फट जानेसे हाथी मर गया । 18 मेरी । 19 हमारे आ गया । 20 तुम्हारे । 21 जब भी हाथी ले सकूगा तब ही ले लूगा ।

जाहरां राव गांगोजी देवलोक हुवा, ताहरा मालदेजी टीकै बैठा। हमै मालदेजी वीरमदेनूं लागो सु इसो लागो सु इंयांनू सास न खावण दै।[1] कहै—'मेड़तो छाडो, अर अजमेर जाय वसो।' ताहरां वीरमदेजी मेड़तो छोडियो। अजमेर मांहै परमार रहता, तिकांनू[2] मार अजमेर वीरमदेजी लियो। ताहरां सहिसो नासनै[3] मालदे कनै आयो। मालदे पाचां गांवांसूं रेयां दीवी।[4]

जाहरां रायसल आनासागर ऊपर गोठ कीवी, ताहरा साथ सगळो ही बोलायो। ताहरां खीमै मुहतैनू कह्यो— 'जावा छा गोठ जीमण।[5] थे रावनूं वीटळी मतां चढण देज्यो। जाहरा वीटळी चढसी ताहरां रेयांरी डूगरी[6] देखसी, ताहरां सहसो चीता आवसी।[7] ताहरा कहसी—'सहसैनूं मारियां विगर पांणी नही पीऊ।' मुहतैनूं कहिनै रायसल गोठ जीमण गयो।

अर (राव) खीमै मुहतैनू कहियो—'आंपां वीटळी जाविनै मिठाई मंगाविस्या।'[8] वार १--२ मुंहतै खीमै वरजिया, पण रहै नही।[9] पछै वीटळी जाय चढिया। चढिनै मारवाड साम्हा जोयो।[10] जोयनै कह्यो—'आ रेयांरी भाखरी नही हुवै?[11] कहियो—'आ भाखरी तो नैड़ी।[12] इयै सहसैनूं न मारू तो म्हारो बाप छै।[13] पछै साथै रायसल ही आयो। परधांने तो घणो ही कहियो।

अर राव मालदेवजी हुतो[14] नागोर। ताहरा राव मालदेवजी कहै—'वीरमदे म्हारी छाती माथै छै।'[15] ताहरा दस हजार घोड़ो रडोद थाणै हुतो[16], नै[17] माहै जैतो, कूपो, अखैराज सोनगरो, वीदो भार-

---

1 अब मालदेव वीरमदेके पीछे लगा सो ऐसा लगा कि इन्हें स्वास न लेने दे। 2 उनको। 3 भाग कर। 4 मालदेवने पाच गावोके साथ रीयाका पट्टा कर दिया। 5 गोठ जीमनेको जा रहे हैं। 6 पहाडी। 7 याद आ जायेगा। 8 और रावने खीमे मुहतेको कहा कि अपन भी वीटली गढ पर जाकरके मिठाई मगायेंगे। ('वीटली' अजमेरके तारागढका नाम है।) 9 मुहते खीमे एक दो वार मना किया, परन्तु उसका कहना माना नहीं। 10 गढ पर चढ़ करके मारवाड़की ओर देखा। 11 यह रीयाकी पहाडी तो नही हो? 12 यह पहाड़ी तो नजदीक है। 13 इस सहसेको न मारू तो यह मेरा वाप है। 14 था। 15 वीरमदेमेरी छाती पर पड़ा है। 16 उस समय रडोदके थानेमे मालदेवके पास दस हजार घोडो का समूह था। 17 और।

मलोत अै[1] ठाकुर। अै आइनै रेयां उतरिया।[2] यांनू हुकम हुतो जु–'अजमेरसू वीरमदेनू परहो काढो।'[3]

तिको रातिरो खड़ियो वीरमदे रेयां आयो।[4] अर आगै अणजांणियो साथ तयार हुतो हीज।[5] पछै लड़ाई हुई। वीरमदेनू अळवी पडी।[6]

वीरमदेरो साथ घणो कांम आयो। तीन घोड़ा वीरमदे हेठै कटिया।[7] छुरो कार घोड़ै चढियो छै। दस वरछी आगलांरी खोस वाग भेळी झाली छै।[8] माथै माहै घावांरी चौकड़ी पडी छै।[9] लोहीरा प्रवाह डाढी माहै उतरिया छै।[10]

वेऊ फोजां जुद्धसौ धापिनै उवै उवै कांनी ऊभी छै।[11]

वीरमदे घायल आपरा सभाळै छै।[12]

पछै पचायण आयो। आयनै कहियो–'इसड़ौ वीरमदे कठै लहस्यो; ज आज थे नही मारो छो?'[13] ताहरां सिरदारां कहियो–'भाई! म्हे तो एकरसौ छाती ऊपरासौ गिजा नीठ परही कीवी छै।[14] भाई! म्हांरै कियै[15] तो वीरमदे मरै नही। अर[16] जो तू मारै तो ओ वीरमदे छै।'

ताहरां पचाइण तीसा असवारासूं वीरमदेजोरै ऊपर आयो। नं वीरमदेजीनू वतळायो।[17] ताहरां वीरमदेजी कह्यिो–'रे पंचायण! तू छै? भला, आव। पचायण! तो सरीखा छोकरा मारवाड़ माहै घणा छै, जो वीरैरी पूठ केहीसौ चापी जाय तो?[18] ताहरां पंचायण

---

1 ये। 2 इन्होंने आकर रीयामे मुकाम किया। 3 इनको हुकम हुआ था कि वीरमदेको अजमेरसे निकाल दो। 4 इधर वीरमदे भी रातको चल कर रीया आया। 5 और आगे अज्ञात सेना तैयार ही थी। 6 वीरमदेको यह लडाई दु सह हुई। 7 वीरमदेके नीचे (सवारीके) तीन घोडे कट गये। 8 शत्रुओकी दस वर्छिया खोस कर वागके साथ हाथमे पकड रखी हैं। 9 सिरमे घावोकी चौकडी पड गई है। 10 दाढीमे रक्त के प्रवाह बह कर उतर रहे हैं। 11 दोनो सेनाएँ युद्धसे तृप्त होकर अलग अलग खड़ी हैं। 12 वीरमदे अपने घायलोको सँभाल रहा है। 13 वीरमदेको ऐसी दशामे फिर कब पाओगे, जो आज तुम उसे नही मार रहे हो? 14 हमने तो एक वार वडी कठिनतासे छाती ऊपर आई आफतको दूर किया है। 15 हमारेसे तो। 16 और। 17 ललकारा। 18 पचायण! तेरे समान मारवाड़मे वहुत छोकरे हैं, परतु वीरमकी पीठ चापने वाला भी तो कोई हो? (लेकिन मुझे कोई दिखाई नही देता।)

उठै हीज वाग खांच ऊभो रह्यो ।[1] ताहरां वीरमदेजी कह्यो–'इसडो छै सु उठै ऊभैनू हीज मारूं, पण परहो जा ।'[2] ताहरां पंचायण पाछी हीज वाग फेरी ।[3]

ताहरां कूंपैजी कह्यो–'राज ! वीरमदे यु सहज सौं नही मरै ।[4] पछै वीरमदे आपरा[5] घायल उपाड़नै[6] अजमेर आयो । आ[7] फोज पण नागोर आई । वीरमदेनू घणी अळही[8] पडी । साथ सोह[9] कांम आयो ।

ताहरां रायसलरो रावनू घणो अत भौ[10], सदा धमक राखै[11] । को[12] कहै रायसल कांम आयो, को कहै काम नही आयो । ताहरां मूळै प्रोहितनू मेलियो ।[13] आयो, वीरमदेनू मिळियो । कहण लागो–'बळो, आ धरती ज, थांहीनू ज्यांन आयो ।[14] रायसल मराडियो ।[15]

ताहरां कह्यो–'ऊभा रहिज्यो ।[16] जु, रायसलरै तो आछा सा लोह छै, इसड़ो तो लोह को न छै भारी ।'[17] अर रायसलनू कहाड़ियो[18]–'थे तकियो देनै बैसज्यो ।[19] मूळो थां कनै मूकां छा ।[20] ताहरां प्रोहित मूळानू कह्यो–'रायसल कनै थेई पधारो ।'[21] ताहरां रायसल कछी पलाण मडायनै, आप हथियार बाधनै असवार हुय घोडो नखाड़तो-नखाड़तो ईयां कनै आयो ।[22] ताहरा अै चढनै राव मालदे कनै आया । आयनै कह्यो–'जी, रायसल तो घोडो नखाडतो फिरै छै ।'

---

1 तब पचायण वही अपने घोडेकी वाग खीच कर खडा रहा । 2 लगता तो ऐसा है कि वहाँ खडेको ही खत्म कर दू, परन्तु आँखोके सामनेसे दूर चला जा । 3 तब पचायणने वाग मोड दी । 4 वीरमदे इस प्रकार सहजमे मरने वाला नही है । 5 अपने । 6 उठा कर । 7 यह । 8 दुसह । 9 सब । 10 रायसलका रावको अत्यन्त भय । 11 सदा धाक जमाये रखता है । 12 कोई । 13 भेजा । 14 जलो, यह धरती ही तुम्हें बला बन करके आई है । 15 रायसलको मरवाया । 16 ठहर जाओ । 17 रायसलके साधारणसे घाव है, ऐसे घाव कोई बहुत भारी तो नही हैं । 18 कहलवाया । 19 बैठ जाना । 20 मूलाको तुम्हारे पास भेज रहे है । 21 रायसलके पास तुम ही चले जाओ । 22 तब रायसल कच्छी घोडेके ऊपर जीन कसवा कर स्वय हथियार बांध करके और घोडे पर सवार हो करके उसे कुदाना-कुदाता इनके पास आया ।

ताहरां रायसल अपूठो आयो ।[1] ताहरां घाव फाटा ।[2] रायसल मुवो । जाहरा रायसल मुवैरी[3] खबर गई, ताहरां फोजा वळै[4] आई । आयनै वीरमदेजीनू परहा काढिया ।[5]

ताहरा रायमल कछवाहो सेखावत, तिण आगै गया ।[6] ताहरां रायमल इणारा घणा हीडा किया ।[7] वरस १ ताई[8] रायमल रै रह्या । घणी जाब्ता कीवी ।[9] जिण विधरा इंयारा चाकर हुता, तिण तिण विधरा हीडा किया ।[10] ताहरा वीरमदेजी कह्यो–'रायमलजी ! थे म्हारै वडा सगा, थां माहरा वडा हीडा किया ।'[11] पछै वीरमदेजी उठासू सीख कीवी ।[12]

पछै वीरमदेजी बौळी लीवी, वणहटो लियो, वरवाड़ो लियो ।[13] लेनै अठै वैठा रह्या ।[14]

ताहरा मालदेजीनू खबर हुई । कह्यो–'वीरमदेजीरै अधिकी साहिबी हुई ।'[15] ताहरा वळै फोजां विदा कीवी वीरमदेजी ऊपर । ताहरा फोजा मौजाबाद आई । ताहरां वीरमदेजीनू खबर हुई, फोजां मौजाबाद आई । ताहरा वीरमदेजी कह्यो–'हमकै हू काम आइस ।[16] हमकै नीसरू नही, घणी ही वार नीसरियो ।[17] पण हमकै हू छाडै नही ।[18] घणी ही वार छांडू नही, हमकै कांम आइस ।

ताहरा मुहतै खीमै कहियो–'खेतरी ठोड़ तो देखो । जेथ लडाई करस्यां सु ठोड तो देखो ।'[19] ताहरां वीरमदेजी, मुहतो खीमो चढनै ठोड देखणनू आया । ताहरा खीमो मुहतो आघो ही हालियो ।[20]

---

1 तव रायसल वापिस लौटा । 2 तव घाव फट गये । 3 मर जाने की । 4 फिर । 5 आकरके वीरमदेजीको निकाल दिया । 6 उसके आगे गये । 7 तव रायमलने इनकी वहुत सेवा की । 8 तक । 9 वहुत यत्न किया । 10 जिस-जिस प्रकार (दर्जे)के इनके चाकर थे उनकी उस-उस प्रकारसे सेवा की । 11 तुम हमारे वडे सम्वन्धी हो, तुमने हमारी वडी सेवा की है । 12 फिर वीरमदेवजीने वहांसे विदा ली । 13 पीछे वीरमदेजीने वौळी, वणहटो और वरवाडो गावो पर अधिकार किया । 14 इनको अधिकारमे कर यहां ही वैठे रहे । 15 वीरमदेजीके राज्य-वैभव अधिक हो गया । 16 इस वार मैं काम आ जाऊगा । 17 इस वार निकलू (वचू) नही, वहुत वार वच गया । 18 इस वार मैं अपनेको छोडूगा नही । 19 जहां लडाई करेंगे वह स्थान तो देखलें । 20 तव मुहता खीमा उन्हें दूर ले चला ।

ताहरां खीमै कह्यो-'मरणो हुतो तो मेडतैरी वेढ मरंत, पारकी धरती मांहै क्यु मरो ?'[1] ताहरां खांचनै आघो ले वहीर हुवो ।[2]

ताहरा मलारणै थांणैदार हुतो कोई मुसलमान, तैसौ जाय मिळिया ।[3] ताहरा वे मुसलमांन कह्यो-'हू थांनू रिणथंभोररै किलेदारसू मिळाइस ।[4] ऊ थांनूं पातसाहसू मिळासी ।'[5] पछै रिणथभोररै किलेदारसू मिळिया । पछै वीरमदेजीनू ऊ[6] पातसाहरी हजूर ले गयो । पातसाहसू मिळायो । पछै वीरमदेजीसौ पातसाहजी महरबांन हुवा । पछै वीरमदेजी मालदेजी ऊपर सूर पातसाहनू ले आया । पछै असी हजार घोड़ासू मालदे सांम्हां अजमेर आयो ।

ताहरां वीरमदेजी एक बुध उपाई ।[7] वीस हजार रुपिया कूपैरै डेरै मेलिया । कह्यो-'म्हांनू कांवळा मेल देज्यो ।'[8] अर वीस हजार रुपिया जैतैरै डेरै मेलिया । कह्यो-'म्हानू सीरोहीरी तरवारचा मूक देज्यो ।'[9] इसडा सा चिन्ह किया ।[10] अर मालदेनू कहाडियो-'जैतो कूपो पातसाहसू मिळिया छै । थांनू पकड़नै पातसाहनू देसी ।[11] तैरो द्रष्टात-'जे सवाया रुपिया यांरै डेरै देखो तो जांणज्यौ ।'[12] ईंयारै खरची घाली छै ।[13]

इतरैमे[14] जलाल जळूको कहण लागो-'पातसाह सलांमत ! एक ऊवांरी तरफरो तेड़ावो[15], पातसाहरी तरफसू हू हुईस[16], अर उंवांरी[17] तरफरो सिपाही तेड़स्या[18], तै ऊपर हार-जीप थापो ।'[19]

---

1 मरना ही विचार लिया है तो मेडतेकी लडाईमे मर जाना था, दूसरोकी धरतीमे क्यो मरते हो ? 2 तब खीच करके दूर ले चला । 3 मलारणमें कोई मुसलमान थानेदार था उससे जा मिले । 4 मैं तुमको रणथभोरके किलेदारसे मिलाऊगा । 5 वह तुमको बादशाहसे मिलायेगा । 6 वह । 7 तब वीरमदेवजीने एक युक्ति विचारी । 8 हमको कवले भेज देना । 9 हमको सिरोहीकी तलवारें भेज देना । 10 इस प्रकार चालबाजी की । 11 तुमको पकड कर बादशाहके सुपुर्द कर देंगे । 12 जिसका प्रमाण यह है कि इनके डेरोमे यदि अतिरिक्त रुपये मिल जायँ तो हमारी बात सच जानना । 13 इनको (बादशाहने) खर्चेके लिए भेजे है । 14 इतनेमे । 15 एक उनकी ओरका आदमी बुलाया जाय । 16 बादशाहकी ओरका मैं हूगा । 17 उनकी । 18 बुलायेगे । 19 इसी बात पर हार-जीत तै कर लीजिये ।

ताहरां पातसाह वीरमदेनू कहियो–'जु, म्हारै एक पठांण कहै छै, आ वात थारै दाय आवै कै नही।'[1] ताहरां वीरमदेजी कह्यो–पातसाह सलांमत ! पठाणनू म्हैं एक वार दीठो छै।[2] एकर वळै[3] पठांणनू वुलायजै, ज्युं हूं देखू।' ताहरां पठांणनू वुलायो। पछै पठांण आयो। ताहरा वीरमदेजी देखनै कह्यो–'पातसाह सलांमत ! दोय पठांण इसडा वळै तेडो।[4] आपणी तरफरा अै तीन मेलो।[5] अर पराया वीदो भारमलोत मेलसी।[6] तिको ईयां तीनाहीनू मारनै, हथियार लेनै, साजो-सावतो परहो जासी।[7] आ तो पातसाह सलामत ! आप थापो ही मतां।'[8]

पछै वीरमदेजी समचार कहाड़िया मालदेवजीनू। ताहरा राव मालदेवजीरै मनमे हुई। खबर कराई, सु अमरावांरै डेरै सवाया[9] रुपिया हुआ। ताहरा मालदेवरै मनमे तो भय हीज ऊठियो।[10] वीरमदेजी के वातां ठहराई, तिकासू भय हुवो।[11]

पछै आथणरो पहोर छै,[12] ताहरा जैतो, कूपो, अखैराज सोनगरो कूपाजीरै डेरैमे बैठा छै। जैतो ऊदावत अर खीमो ऊदावत रावजीरै विचै फिरै छै। जिकू[13] रावजी कहै छै जिकू ईंयानू[14] आय कहै छै। अै कहै छै सु रावजीनू जाय कहै छै। 'जु म्हे थानू[15] जोधपुर पुहचता करस्या।'[16] उणारो[17] जबाब सुणनै रावजी सुखपाळ वैसिनै हालिया।[18] तरै रावजीरो हाथ खीमैरै हाथरै ऊपर छै, अर चालिया जावै छै। ताहरां जैतसी ऊदावत बोलियो–'सीख करो[19], लोग आपणी वाट जोवै छै।[20] ताहरां खीमोजी बोलिया नही। ताहरा

---

1 यह वात तुम्हारे जँचती है कि नहीं। 2 देखा है। 3 एक वार पुन.। 4 दो पठान ऐसे और वुला लिये जायें। 5 अपनी ओरके ऐसे तीन आदमियोको भेज दें। 6 और सामने वाले (शत्रु) वीदा भारमलोतको भेंज देंगे। 7 वह ऐसा है जो इन तीनो को ही मार कर के इनके हथियार लेकर सकुशल निकल जायेगा। 8 वादशाह सलामत ! यह पचायती तो आप मुकर्रर करें ही नहीं। 9 अधिक। 10 भय उत्पन्न हुआ। 11 वीरमदेवजीने कई वातें ऐसी वनाईं जिससे भय उत्पन्न हो गया। 12 सध्याका समय है। 13 जो वात। 14 इनको। 15 तुमको। 16 पहुँचा देंगे। 17 उनका। 18 रावजी सुखपालमे वैठ कर चले। 19 रवाना हो जाओ। 20 लोग अपनी प्रतीक्षा कर रहे है।

वळै[1] जैतसीजी बोलिया, कहियो–'खीमाजी ! इतरी भाँय नहीं लाभौ, जोधपुर नै समेळ विचै पावड़ी घणी छै ।'[2] ताहरां खेमोजी हाथ मुरड़नै[3] पाछा आया । ताहरां राव कहियो–'भला, जिकी हुसी सु दीससी ।'[4] ताहरां परभातै[5] लड़ाई हुई । लोक कांम आयो ।

ताहरा रावजी तो घूघरोटरा पहाड़ां मांहै जायनै रह्या । सूर पातसाह जोधपुर आयो । ताहरां जोधपुर तिलोकसीह वरजांगोत किलेदार हुतो ।[6] सु तिको ३०० रजपूतासू कांम आयो । सूर पातसाह च्यार मास जोधपुर रह्यो । मालदेजी मेडतारा बावळ वाढिया[7] ताहरां वीरमदेनूं कहियो । ताहरां वीरमदे कहै–'जोधपुररा आंबा वाढीस ।'[8] ताहरां लोके कह्यो–'आ आपनू हैसाब नही ।'[9] ताहरा छुरी लेनै कावडी वासतै आंबारी एक डाहळी वाढी ।[10] पछै सहु कोई आपो-आपरै ठिकाणै गया ।[11] अर पातसाह सूर दिली गयो ।

पछै थांणो हरवाड़ै राखियो । थांणो जिकैमे पठांण राखिया हुंता[12] और वीरमदे दूदावत, कल्यांणमल दूणपुररो धणी ।[13] ताहरा एक दिनै औ चढनै घूघरोटरा पाहाड़ा मांहै राव मालदेजीरी वसी हुती, तिकैनू बध कीवी ।[14] बंध करनै हरवाडे आयो । ताहरां कोई डोकरी हुंती, तिका कहण लागी–'ओ कुण छै ?[15] ताहरा कही–'कल्याणमल दूणपुररो धणी ।' ताहरां डोकरी कह्यो–'साबास, म्हारी दादिया-काकिया बंधाडनै भलो हालियो, माथा ऊपर ओढणो घातनै ।'[16] ताहरा ओ जाब कल्याणमल साभळियो ।[17] ताहरां धांनरो सूस घातियो ।[18]

---

1 फिर । 2 इतनी दूरी नही काट सकते, जोधपुर और समेळके वीच अतर वहुत है । 3 मरोड करके । 4 जो होगी सो देख लेगे । 5 दूसरे दिन प्रभातमे । 6 जोधपुरमे तिलोकसी वरजागका पुत्र किलेदार था । 7 मालदेजीने मेड़तेके बबूलोको कटवा दिया । 8 मैं जोधपुरके आमके वृक्षोको कटवा दूगा । 9 यह आपको उचित नही । 10 तव छुरी लेकर एक आमकी टहनी छडीके लिये काट ली । 11 पीछे सभी कोई अपने-अपने स्थानोको चले गये । 12 रखे थे । 13 द्रोणपुरका स्वामी । 14 तव एक दिन इन्होने घूघरोटके पहाडोमे जहाँ मालदेजीकी वसी थी उसे वद कर दिया । 15 एक वुढिया थी सो कहने लगी—यह कौन है ?' 16 शावाश है ! हमारी दादियो-काकियोको बँधवा कर और सिर पर ओढना डाल करके भला चला जा रहा है । 17 तव यह जवाव (उपालभ, व्यग्य) कल्याणमलने सुना । 18 तव अन्न ग्रहण न करनेकी शपथ ली ।

कहियो–'बध छुड़ायनै जमीस ।[1] ताहरा वीरमदे कहण लागो–'ग्रै तो ग्रापणा दुसमण हुता, ग्रर थे कहो तो भला !'[2] ताहरा सातमै दिन दूध ग्रारोगायो, ग्रर ऊठिया ।[3] जठै[4] वीरमदे कहण लागो–'ज, हू उठै[5] पठाणरै जाय ग्रर बध वेई[6] ग्ररज करू ।' ताहरां कल्याणमल सवणां माहै[7] समझतो हुतो; ताहरा कह्यो–'राज ! बंध वेई ग्ररज मता करो ।[8] परभातै राव मालदेरी फोज दोड़सी, बध सारा छूटसी । मरणो छै जिको मरस्यै ।[9] ग्रर पठाण भाजसी ।'[10] ताहरा वीरमदेजी कहियो–'तो राज ग्रारोगो काई नही ?[11] ताहरा कल्याणदास कह्यो–वीरमदेजी ! हू कांम ग्राईस ।[12]

यू करता दिन ऊगो । राव मालदेजीरी फोज थांणै ऊपर दोडी । ताहरां पठाण तो भागा । कल्यांण सांम्हां ग्रायो । ताहरा राव मालदेजी कह्यो–'कल्याणमलजी ! थे काई मरो ? म्हे तो थारै हीज वासतै ग्राया छा ।'[13] ताहरा कह्यो–'ना साहिब ! पातसाहरा थाणा भाजै, ताहरां कईक रूडा माणस मरै ।'[14] ताहरां उठै कल्यांणमल कांम ग्रायो । उदैकरण रायमलोत काम ग्रायो । पठांण भागा सु दिल्ली गया ।

राव मालदेजी बंध लेनै घूघरोटरा पाहाडा गया । वीरमदेजी मेडतै ग्राय रह्या । पछै राव मालदेजी जोधपुर ग्राया । कईक तुरक छा सु नास गया ।[15]

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

---

1 बंधन छुडा करके भोजन करूगा । 2 ये तो ग्रपने दुश्मन थे, ग्रौर तुम इन्हींके लिए शपथ लेते हो, यह ग्रच्छी रही ! 3 तब सातवें दिन दूध पिलाया ग्रौर उठे । 4 जहाँ । 5 वहाँ । 6 लिये, वास्ते । 7 शकुनोमे । 8 बंधनोके लिये ग्रर्ज मत करो । 9 जिसको मरना है वह मर जायगा । 10 ग्रौर पठान भाग जायेंगे । 11 तो फिर ग्राप भोजन क्यो नहीं करते ? 12 मैं काम ग्राऊगा । 13 कल्याणमलजी ग्राप क्यो मर रहे हो ? हम लोग तो ग्रापके लिए ही ग्राये है । 14 बादशाहके थानोको जहाँ तोडना होता है, वहाँ कई ग्रच्छे ग्रादमी काम ग्राते है । 15 कई तुर्क वहा थे सो भाग गये ।

अथ वात राठोड़ नरै सूजावत, खींमै पोकरणौरी

राठोड़ खींवो पोकरण राज करै। पोकरण बाळनाथ जोगीरो आसण छै।[1] अर अठै बैहगटी हरभौ मेहराजोत सांखलो राज करै।[2] कलिकरण केहरोत[3] जैसळमेररो भाटी हरभौ सांखलैरै परणियो हुतो।[4]

बाई अठै पीहर हीज रहती सांखलैरै।[5] सो बाईरै पेट आसा हुती।[6] कितरेक दिने बेटी जाई।[7] वडे नखत्रै जाई।[8] ताहरा जंगळमें नांखि आया।[9]

अठै हरभौ सांखलो फळोधी गयो हुतो। आवतां थळ माथै रोवतो टाबर दीठो।[10] ताहरा हरभौजी पूछियो–'रे, टाबर कठै रोवै छै?'[11] ताहरां कहियौ–'राज ! एक टाबर कहिकै नांखियो छै[12], सो रोवै छै।' ताहरां आप कहियो–'टाबर उठाइ लावो।' ताहरां एक सवण बोलियो।[13] आप सवंणी हुता।[14] यु कर आप डावडीनू[15] घरे ले आया, आंणनै मांहै मूक दी।[16] कहियो–'इयै छोकरीनू धाय राखो। नै भली जिनस राखज्यो।[17]

ज्यां मांहै डावड़ीनू ले गया त्यां तो कपडो ओळखियो;[18] कह्यो–'जी ! आ डावड़ी क्युं लाया ? भूडा नखत्रे जाई हुती[19] सु म्हा तो नांख दीनी।'[20] ताहरां हरभूजी कहियो–'आ भले नखत्रे जाई छै।

---

1 पोकरणमे वालनाथ योगीका आसन है। 2 और यहा वैहगटी गावमे मेहराजका वेटा हरभू साखला राज्य करता है। 3 केहरका वेटा कलिकर्ण। 4 व्याहा था। 5 वाई (हरभूजीकी वेटी) उस समय साखलेके यहाँ पीहरमे ही रहती थी। 6 वाईको गर्भ था। 7 कितनेक दिनोके वाद पुत्री उत्पन्न हुई। 8 वडे नक्षत्र (मूल नक्षत्र) मे उत्पन्न हुई। 9 तव उसे जगलमे डाल दी। 10 लौटते हुए मार्गमे एक वच्चेको एक टीवे पर रोते हुए देखा। 11 वच्चा कहां रो रहा है ? 12 एक वच्चा किसीने लाकर डाल दिया है। 13 उस समय एक शकुन हुआ। 14 स्वय शकुनी थे। 15 वच्चीको। 16 ला करके अदर भेज दी। 17 इस छोकरीके लिए एक धाय रखो और अच्छी तरह रखना। 18 जैसे ही वच्चीको अदर ले गये वैसे ही उसके कपडेको पहचान लिया। 19 इस लडकीको क्यो लाये ? यह तो बुरे नक्षत्रोमें उत्पन्न हुई थी। 20 सो महने तो डाल दी।

अर कडूवैंनू ओठभो होसो।[1] सासरै पीहर वडा दोनू कुळ ठांमसी।'[2] ताहरां बाईनू राखी। बाईरो नांम लिखमी दियो।

तिके हीज रात[3] १ बेटी हरभूजीरै जाई। दोनूं ही वायां मोटी हुई। मासी-भांणजी ज्यु मोटी हुई, त्युं सगाईरो अटकळ करीजण लागी।[4]

ताहरां तेड बांभणनूं नारेळ दियो।[5] हरभूजी कहियो–'बाई लिखमीरो नाळेर पोकरणरा राव खींवैनूं ले जाइनै द्यो।'[6] ताहरां बाभण नाळेर ले जायनै राव खींवैनू वंदायो।[7] ताहरां खींवै कहियो–'कैरो नाळेर?'[8] ताहरा बांभण कह्यो–'जी! कलिकर्ण भाटीरी बेटी, हरभू साखलेरी दोहितरी।'[9] ताहरां खींवै कहियो–'जी, आ सगाई म्हे नही करा।[10] सुणां छां, वींदणीरा दांत मोटा छै।'[11] ताहरां नाळेर अपूठो दियो।[12] अर राव खींवै कहियो–'जो हरभूजीरी बेटो परणावो तो परणीज्या।'[13]

इतरी[14] वात कही, ताहरां आदमी अपूठा आया। आयनै हकीकत हरभूजीनू कही। ताहरा हरभूजी कहै–'बेटी जाई जिणरो जनम हारियो।[15] कासू कीजै?'[16]

ताहरा हरभूजी आपरी[17] बेटीरो नारेळ खींवैनूं मेलियो।[18] खींवै नारेळ वाद लियो। भलै मुहूरत जान कर आयनै परणियो।[19]

हमै[20] लिखमी कुंवारी रहगई। ठोड़ २-३ नारेळ मेलिया, सु नारेळ अपूठा आया। ताहरा राव सातळ जोधपुर राज करै।

---

1 कुटुम्बको सहारा-रूप होगी। 2 ससुराल और पीहर दोनो कुलोका मान वढाने वाली होगी। 3 उसी रात। 4 मौसी और भानजी जैसे ही वयस्क हुई उनकी सगाई की अटकलें लगाई जाने लगीं। 5 तब ब्राह्मणको बुला करके नारियल दिया। 6 लक्ष्मीबाईकी सगाईके लिए पोकरणके राव खींवेको यह नारियल ले जाकर दे दो'। 7 तब ब्राह्मणने नारियल ले जाकर राव खींवेसे उसे वदन करवाया। 8 नारियल किससे सवंध किये जानेका है? 9 कलिकर्ण भाटीकी पुत्री और हरभू साखलेकी दोहितीका। 10 यह सगाई हम नहीं करते। 11 सुनते है कि वधू (मगेतर)के दात वडे हैं। 12 तव नारियल लौटा दिया। 13 हरभूजीकी वेटी व्याहें तो व्याह कर लेंगे। 14 इतनी। 15 जिसके पुत्री उत्पन्न हुई उसने जन्मको हारा। 16 क्या किया जाय? 17 अपनी। 18 भेजा। 19 अच्छे मुहूर्तमे वरात वना कर और आकर विवाह किया। 20 अव।

सूजो सिकार खेलतो फिरै। सो एक दिनरै समाजोग[1] सूजोजी सिकार खेलता बैंहगटी कनै आय नीसरिया। ताहरां हरभूजी सांखलै सूजै जोधावतनू लिखमी आपरी दोहितरी परणाई।[2]

लिखमीरै बेटा दोय हुआ-वाघो, नरो। वडा जोरावर हुआ। सातळरै छोरू न हुवो।[3] ताहरां टीको सूजैजीनू दियो। रांणीपदो लिखमीनू दियो।[4]

लिखमीरो भाई जैसो आय सूजैरै वास रह्यो। तैरा जैसा-भाटी कहीजै।[5]

ताहरां राव सूजै मारवाड़ सरब साभी।[6] बेटो वाघो वगड़ी राखियो।[7] नरो फळोधी राखियो। रांणी लिखमी फळोधी नरै कनै रहै। असवार ५०० नरैरै ताबीन रहै।[8]

एक दिनरो समाजोग छै। रात घडी ४-५ गई छै। वरसातरा दिन छै। नरो अरोगणनू मा कनै आयनै बैठो छै।[9] तिसड़ै[10] चाकर झरोखै आय अर दीठो[11], अर कहियो-'आ आजरी खिवण[12] पोकरण ऊपर छै।' ताहरां लिखमी निसासो मूकियो।[13] ताहरां नरो बोलियो-'मा ! निसासो क्यु मूकियो ? थाहरै वाघै नरै सरीखा बेटा, अर रावजी पण समादिया।[14] था रांणीपदो पायो।[15] ताहरां कह्यो-'बेटा ! पूछ मती-ना। ताहरां नरै कह्यो-'माजी ! मोनू तो कहो। ताहरां लिखमी कह्यो-'बेटा ! ईयै पोकरण वाळै मोनू कवारी थकीनू निंदी हुती। परणीज अर दुहाग देता आया छै; पण ईयै मोनू कवारी थकीनू निंदी।[16] ताहरां नरै कह्यो-'माजी ! हूं ईयैसू गुदरू छूं थाहरै

---

1 समयका योग, समयकी वात। 2 तव हरभूजी साखलेने जोधाके पुत्र सूजाको अपनी दोहिती लक्ष्मीको ब्याह दी। 3 सातलके कोई पुत्र नही हुआ। 4 लक्ष्मीको पट्टरानीका पद दिया। 5 जिसके वशज जैसा-भाटी प्रसिद्ध हैं। 6 सम्पादन की, प्राप्तकी, जीत ली। 7 अपने वेटे वाघेको वगडीमे रखा। 8 नरेकी तावेदारीमे ५०० सवार रहते है। 9 नरा भोजन करनेके लिए अपनी माके पास आकर वैठा हुआ है। 10 इतने मे। 11 आकर देखा। 12 विजली। 13 तव लक्ष्मीने निःस्वास छोडा। 14 चिरायु, विद्यमान। 15 आपने रानी पद प्राप्त किया। 16 विवाह करनेके वाद तो अमान्य करते आये है, परन्तु इसने मेरी क्वारेपनमे ही निंदा की थी।

वास्तै ।[1] जाणू छूं थांहरी मासी छै ईयैरै घरै ।[2] नही तर हूं ईयै कनै हमारू कोट खोस लू ।[3] ताहरां लिखमी कह्यो–'वेटा ! ढील न करो, वेगा हुवो ।'[4]

ताहरां नरै आपरै प्रोहितनू कह्यो–'तू जो एक वात करै तो आपां पोकरण ल्या ।'[5] ताहरां प्रोहित कहियो–'हू हेरो करीस ।'[6] ताहरा नरै प्रोहितनू कहियो–'हूं तोनू सवारै बुरो वोलीस ।[7] तू मोनू[8] बुरो बोले अर पछै कालै ऊंठ चढनै पोकरण जाए परो ।'[9]

ताहरा वीजै[10] दिन दरबार वेळा प्रोहित दरवार आयो । ताहरा नरो वोलियो–'ह्रामखोर ! मुहडो दिखाळो नां ।[11] राज मांहै थे दुभाता घालो ।[12] मांहरै थे न जोईजो ।[13] अठासूं परहा जावो ।'[14] ताहरा प्रोहित वोलियो–'हो नरा ! तू कियै भांत बोलै छै ?[15] अजू तो[16] रावजी जीवै छै, अर कुवर पण घणा छै । तूं किसै वागरी मूळी छै ?'[17] ताहरां प्रोहित चाकर कनां छागळ लेनै कह्यो–नरा ! तोनूं जुहार करै सो बैरनू करै ।'[18] ताहरा प्रोहित जायनै कोटडी माहै ऊठ ऊपर कूची माडैनै हालियो ।[19] ताहरां चाकरा नरैनू कह्यो–असवारो रै खासै ऊठ ऊपर प्रोहित कूची मांडी छै ।' ताहरां नरै कह्यो–'रे ! हरामखोरनू परहो जावण दो ।'[20] ऊंठ, घोडा ले अर परहो जावो । मुहडो अदीठ करो । ताहरां प्रोहित ऊंठ चढि पोकरण गयो ।

---

1 मैं आपके लिए ही इससे निभा रहा हू । 2 ख्याल करता हूँ कि आपकी मौसी इसके घर है । 3 नही तो मैं अभी इसके पाससे कोटको छीन कर ले लू । 4 विलव मत करो जल्दी करो । 5 तो अपन पोकरण ले लें । 6 मैं जाँच करूगा । 7 मैं तुमको कल बुरा वोलू गा (अपशब्द कहूगा) । 8 मुझको । 9 तू मुझको बुरा वोलना और फिर कल ऊँट पर चढ कर पोकरण चले जाना । 10 दूसरे । 11 हराम खोर ! मुह मत दिखा । 12 राज्यमे तुम विरोध डाल रहे हो । 13 हमको तुम्हारी जरूरत नही है । 14 यहासे चले जाओ । 15 तू किस प्रकार वोल रहा है ? 16 अभी तक तो । 17 तू किस वागकी मूली है ? 18 फिर पुरोहितने चाकरके पाससे छागल ले करके (हाथमे पानी ले करके) कहा कि नरा ! तेरेको अव जो जुहार करे सो अपनी स्त्रीको करे । (छागल=वकरीके वच्चेके चमडेका वना हुआ जल-पात्र, दीवडी) 19 तव पुरोहित कोटडीमे जाकर ऊट पर पलान कस करके रवाना हुआ । 20 अरे ! हरामखोरको जाने दो ।

पोकरण प्रोहित परणियो हुतो ।[1] सो सासरै रहै । घर माहैसूं निकळै नही, रात-दिन घर मांहै बैठो रहै । ताहरा सुसरो-साळा कहण लागा–'थे बाहिर निकळो नही, घर मांहै बैठा रहो, सो किसै वासतै ?'[2] ताहरां प्रोहित कह्यो–'हूं नरैसूं विढ अर आयो छू ।[3] ताहरां सासरियां राव खीवैसूं कह्यो–'म्हांरो जमाई[4] नरासौ विढ अर अठै आयो छै ।' ताहरां राव खीवै प्रोहितनू तेडायनै[5] कह्यो–'थे नरैसू रीसाणा तो कासू हुवो ?[6] थे अठै आवो ।[7] दरबार मांहै बैसो, कुवरसौ रमो ।[8] खरची ल्यो ।[9] खुशियावळ थका रहो ।[10] एको घर छै ।'[11] कह्यो–'राज ! खरची रावळी[12] हीज छै। अजू रावजी विराजै छै ।[13] बेटा घणा छै । रावजीरै अेकै नरै सारू कासू छै ?'[14]

जेठ मास मांहै प्रोहित पण हेरो करण आयो, इसै समइयै आंबली पण फळी हुती ।[15] जोगीरै आसण मांहै हुती सु कुवर आवली आइ चढै नै आंबली नित प्रत तोड़ै । ताहरां चेलां बाळनाथनू कह्यो–'कुंवर आंबली चढै, तोड़ै ।' ताहरां बाळनाथ आयो । बाळनाथरै आवणैसौ कुंवर उतर गया । ताहरां बाळनाथ आंबली सरापी–'निर्फळ होणा । तुमसौ गढ जायगा । हमारे चेलांसू मठ जायगा । चेला हमारा घरबारी होयगा ।'[16] यूं कहेनै बाळनाथ चालतो हुओ दिखणाधनू[17] । आडा आदमी घणा ही फिरिया, पण फिरै नहीं ।[18]

ईंदी जीमती ताहरां पेहली बाळनाथनू जीमण मेलती, पछै आप जीमती ।[19] सु नाथरो इसो भाव । युं करतां जीमण तयार हुओ,

---

1 पुरोहित पोकरणमे व्याहा था । 2 सो किस लिए ? 3 मैं नरासे लड कर आया हूँ । 4 दामाद । 5 बुलवा कर । 6 तुम नरासे नाराज हो गये तो क्या हुआ ? 7 तुम यहां आ जाओ । 8 दरवारमे वैठो, कुवरके साथ खेलो । 9 खर्चा हमारेसे लो । 10 बडे आनदसे रहो । 11 एक ही घर है । 12 आपकी । 13 अभी तक रावजी विद्यमान है । 14 रावजीके भी एक नरेके ऊपर ही थोडा ही है ? 15 जेठ मासमे पुरोहित जासूसी करनेको आया था, उन्ही दिनो इमली भी फलित हो गई थी । 16 तव वालनाथने इमलीको शाप दिया कि 'निष्फल हो जाना' । और उन कुवरोको शाप दिया कि तुमसे गढ जायगा और हमारे चेलोसे यह मठ जायगा और चेले घरवारी (गृहस्थी) हो जायेंगे । 17 दक्षिणकी ओर । 18 परन्तु वापिस नही लौटता । 19 ईंदी भोजन करनेके पहले वालनाथको भोजन भेजती, फिर आप भोजन करती ।

ताहरां नाथनू भांणो मेलियो ।[1] आदमी ले नाथरै आसण आयो । आयनै पूछियो । ताहरां कह्यो–'जी, नाथजी रमिया ।'[2] कहियो–'रे ! करां ?[3] कह्यो–'जी, आज रमिया ।' कह्यो–'रे ! किसै वासतै ?'[4] कह्यो–जी, कुंवरां दुख दियो । अर जावतां यु कहि गया छै ।

ताहरा ईंदी बिना जीमी ऊभरांणै पगे दोडी ।[5] पगो पग गई ।[6] आगे सात कोस लग[7] नाथ गयो । जायनै जाळ[8] हेठै[9] नाथ सूतो, सो नाथनूं तो नीद आ गई । इतरै ईंदी जाय पुहती ।[10] देखै तो नाथ पोढिया छै । ताहरा ईंदी जायनै पगे हाथ दियो ।[11] ताहरां नाथ जागियो । कह्यो–'माता ! तू क्यो आई ?' ताहरां कह्यो–'नाथजी ! थे मोनूं बोयनै हालिया ।'[12] नाहरा नाथ कह्यो–वेटी ! वचन फुरणेका नही ।'[13] ताहरां कह्यो–'नाथजी ! म्हे केथ रहां ?[14] म्हारी किसी गत हुसी ?'[15] ताहरां नाथ कह्यो–'बेटी ! तेरे आसा है[16] सो तेरै बेटा होयगा । बड़ा सामंत होयगा । उसका नाम लूको देई ।[17] जब बारह बरसोंका होयगा तब धरती आवेगी । पण इस जाळ से पैली आवेगी ।[18] अब मैं और तरफ जाऊगा ।'

ताहरा ईंदी अपूठी आई ।[19] ऊनाळो उतरियो[20], वरसाळो उतरियो,[21] सीयाळो[22] आयो । न्याळा[23] हुवै छै । रावनू न्याळारो बुलावो आयो । ताहरां राव न्याळै आवै । एक दिन ओगरास गांम तिकण माहै न्याळो हुवो । ताहरां बुलावो आयो रावनू । ताहरां राव तयार हुवो छै । असवार ८० सू चढि राव कोट माहैसू

---

1 नित्य इस प्रकार करते, जब उस दिन भोजन तैयार हुआ तब नाथके लिए भाणा (थाल) परोस कर भेजा । 2 नाथजी चले गये । 3 अरे ! कब ? 4 अरे ! किस लिये ? 5 तब ईंदी विना भोजन किए ही नगे पांव उसके पीछे दौडी । 6 पैरोके चिन्ह देखती-देखती गई । 7 तक । 8 पीलू वृक्ष । 9 नीचे । 10 इतनेमे ईंदी जा पहुँची । 11 तब ईंदीने जाकर चरण स्पर्श किये । 12 नाथजी ! आप तो हमको दुखा कर चल दिए । 13 वचन पलटनेका नही । 14 हम कहाँ रहे ? 15 हमारी क्या गति होगी ? 16 बेटी ! तेरे गर्भ है । 17 देना । 18 परन्तु इस जाल (वृक्ष)से उधर-उधर तक ही मिलेगी । 19 ईंदी लौट आयी । 20 ग्रीष्म ऋतु समाप्त हुई । 21 वर्षा ऋतु बीत गई । 22 शीत ऋतु । 23 मास-गोष्ठी का एक विशेष आयोजन ।

नीसरियो ।[1] ताहरां प्रोहित पण ऊभो हुतो ।[2] ताहरां राव कह्यो–'प्रोहित ! आवस्यो ?'[3] ताहरां प्रोहित कह्यो–'राज ! म्हा बांभणारो कासू कांम छै ?'[4] ताहरां राव तो चढि खड़िया ।[5]

तितरै प्रोळियो कटोरो लियै ऊभो हुतो ।[6] ताहरां प्रोहित कह्यो–'जी, कासू जोवो ?'[7] ताहरां प्रोळिये कह्यो–'प्रोहितजी ! कहीकैनू कटोरो सांपस्यां, ज्युं पुरसाय ल्यावै ।'[8] ताहरां कह्यो–'जी, उरहो द्यो, ज्युं म्हे परुसाय लाय देस्यां ।'[9] कहियो–'जी, प्रोहितजी ! आपनै कटोरो क्युकर दीजै ?'[10] ताहरां प्रोहित कह्यो–'भय कोई नही, चाकर उठाय लेसी ।[11] थांहरो तो कांम कियो जोईजै ।[12] थांसू लाख कांम छै ।'[13] ताहरा प्रोळियेरो कटोरो प्रोहित लियो ।

पछै चाकरनू कह्यो–'रे ! ऊठ ल्याव, सीरख ल्याव, ताहरां चाकर ऊंठ पलांण मांड ल्यायो । सीरख ल्यायो ।[14] चाकरनू राखियो ।[15] आप ऊठ चढ अर देहरैरै मारग घालि अर फेरिया । आगै बिटड़्यां कनै जाय नीसरियो । आगै एक पलीवाळ ऊभो हुतो, तियेनू कह्यो[16]–'रे ! फळोधी जाय, वाहर घाल, वाहर कर ।'[17]

ताहरां बांभण पुकारियो । आगै राव नरैरा जासूस बैठा हीज हुता । सांमांन तयार कियो । वारह ऊठा माथै सिलह लदियोड़ो हुतो ।[18] अर पाचसै ५०० असवारसूं नरो चढियो आयो । आगै बांभण ऊंठ तांणियो मारग आवतो दीठो ।[19] ताहरां रांमो सोहड बोलियो । कह्यो–'जी, बाभण आवै छै । मत क्युं ही कहो ।[20] वाहर

---

1 निकला । 2 खडा था । 3 आओगे ? 4 हम ब्राह्मणोका क्या काम है ? 5 तव राव तो चढ कर चल दिया । 6 उस समय प्रौलिया कटोरा लिए खडा था । 7 क्या देख रहे हो ? 8 किसीको कटोरा देना है जो परोसवा कर ले आये । 9 इधर दे दो, सो हम परोसवा कर ला देगे । 10 आपको कटोरा कैसे दिया जाय ? 11 कोई भयकी वात नही है, चाकर उठा लेगा । 12 तुम्हारा काम तो करना ही होगा । 13 तुम्हारेसे लाखो काम हैं । 14 तव चाकर ऊट पर पलान रख कर ले आया । रजाई भी ले आया । 15 चाकरको वही रखा । 16 आगे एक पालीवाल ब्राह्मण खडा था, उसको कहा । 17 अरे ! फलोधी जाकर खबर दे कि वाहर करे । 18 बारह ऊँटो पर सिलह-शस्त्र आदि लदे हुए थे । 19 आगे ऊटको खीचते हुए ब्राह्मणको आते देखा 20 इसे कुछ मत कहो ।

रो मांमलो छै। ताहरां नरो बोलियो–'म्हे क्यु ही कहां नही, आवो। ताहरा बांभण पिण चढ आयो, साथ हुवो। जाहरा विटड्या कनै गया, ताहरां रामो बोलियो। कह्यो–'जी, घस को दीसै नही, मारग कोई पग दीसै नही।[1] आपां जास्या केथ?'[2] ताहरा नरो प्रोहित-सौ बाथा घातनै मिळियो।[3] रांमैनूं कह्यो–'म्हे पोकरण लेस्या।'[4] ताहरां रांमै कह्यो–'कोडीधज घोड़ैरो मुहडो कुहटो।' ताहरां कोडी-धजरो मुहडो कुहटता कोड़ीधज फरड़को कियो[5], सो गाम उगरास माहै केरडू मगरै ताई सुणियो।[6] ताहरां राव खीवो न्याळै माहै बैठो हुतो, कोळी हाथ माहै लीवी छै, छाट घालतो हुतो।[7] ताहरा कोड़ी-धजरो फरडको सुणियो ताहरा राव खीवो बोलियो–'भाई! कोड़ी-धज घोडैरा फरडका सुणीजै छै, कोट पण एकलो छै, बांभणियो पण मास ५-६ हुवा आयो बैठो छै, उपद्रव दीसै छै।[8] आजे कुसळ विहावै।'[9]

ताहरां असवार पांच छव चाढिया, 'खबर करो'। ताहरां अै अस-वार मगरै जायनै खडा रह्या। अटकळ करण लागा। 'देखा, कुण छै? कुण वहै छै?'[10] ताहरां असवार आय, मारग माथै ऊभा रह्या।[11] जितरै साथ आयनै नीसरियो।[12] ताहरां असवारां पूछियो–'कुण ठाकुर छै?[13] ताहरां कह्यो–'साथ नरै वीकावतरो छै। अमरकोट परणी-जण जावै छै।'[14] ताहरा कह्यो–'घोड़ो कोडीधज तो नरै सूजावतरो छै।' ताहरा कह्यो–'माहरै घोड़ो सखरो कोई हुतो नही, तिकण पगा

---

1 न तो कोई सेना दिखती है और न मार्गमे किसीका खोज ही दिखाई देता है। 2 अपन जायेंगे किधर? 3 तव नरा पुरोहितसे भुजा पसार कर मिला। 4 हम पोकरण लेंगे। 5 तव कोडीधज घोडेका मुह बाधते समय कोडीधजने अपना मुह और नथुना फड-फडाया। 6 सो वहासे उगरास गावमे और केरडूकी पहाडी तक सुनाई दिया। 7 तव राव खीवा न्यात्नेमे बैठा हुआ था और ग्रास हाथमे लेकर छांट डाल रहा था। (कोळी=देवार्पण निमित्त अजलिमे लिया जाने वाला या लिया हुआ ग्रास परिमाण जितना पक्वान्न आदि खाद्य-पदार्थ) 8 कोडीधज घोडेके फरडके सुने जाते है, कोट सूना है और ब्राह्मण भी ५–६ मास हुए आया बैठा है, कोई उपद्रव दिखाई देता है। 9 आज कुशल नही है। 10 देखें, कौन हैं? कौन जा रहे हैं? 11 मार्ग पर जाकर खडे रहे। 12 इतनेमें दल आ निकला। 13 कौनसे ठाकुर है? 14 उमरकोट व्याहनेको जा रहे हैं।

मांग लियो छै।[1] तै आगै ऊमरकोट सोढांरै वडा वडा घोडा छै।[2] तै भाभैजो कनां मांग लियो छै।'[3] ताहरा कह्यो–'इतरै ऊठे सिलह क्युं छै ?' ताहरां कहियो–'म्हारै वैर-वाढ छै।[4] राजा छां, साथै सिलह चाहीजै हीज।'

इतरो[5] पूछि अर असवारां जाय राव खींवैनू कह्यो–'जु, कोई उपद्रव छै, साथ वहै छै। कहै–नरो वीकावत अमरकोट परणीजण जावै छै। मौड़ बांधै, केसरिया कियां, खंभायच गाईजै छै।[6] इण तरहसूं वहै छै। घोड़ो पण कोड़ीधज छै। कहै–'म्है माग ल्याया छा।'[7]

यु विचार करै छै। तितरै नरो पोकरण जाय पुहतो।[8] आगै प्रोहित जायनै प्रोळियैनू साद कियो।[9] कह्यो–'वेगो थारो कटोरो ल्यै।' उतावळसू ऊठण लागो, त्युं उतावळा साद किया।[10] ताहरां प्रोळियो ऊठियो। नींदाळ थकै हीज खिड़की खोली।[11] कह्यो–'कटोरो दो उरहो।'[12] ताहरां प्रोहित कह्यो–'बाळ रे भाई! थारो कटोरो। म्हारै मांसरै हाथ लगावै कुण ?'[13] ताहरा प्रोळियो बोलियो–'राज! निवाजिया म्हानू।'[14] जिसड़ै हाथ आघो काढियो, तिसड़ै नरै बरछी वाही सु पूठ माहै जाती नीसरी।[15] धरती ढह पड़ियो।[16]

नरो प्रोळि खोलि माहै जाय पैठो।[17] कह्यो–'नरै सूजावतरी आंण।'[18] सहर मांहै आंण फिरै छै[19] नरै सूजावतरो आंण। इतरै

---

1 हमारे पास कोई अच्छा घोडा था नही, इसलिए माग लाये है। 2 क्योकि आगे सोढोके पास वडे वडे घोडे हैं। 3 इसलिए वावाजी (ताऊजी)से माग कर लिया है। 4 हमारे शत्रुता और लडाई है। 5 इतना। 6 मौर वांधे हुए, केशरिया किये हुए है और खभाइच राग गाई जा रही है। 7 हम माग कर लाये है। 8 इतनेमे नरा पोकरण जा पहुचा। 9 पुरोहितने आगे जा करके पौलियेको पुकारा। 10 वह उतावलीसे उठने लगा त्यो उसने उतावलीसे पुकारा। 11 निद्रालु होते हुए ही खिडकी खोली। 12 लाओ कटोरा दे दो। 13 यह ले रे भाई! तेरा कटोरा, मेरे कौन मासके हाथ लगाये ? 14 महाराज! मेरे पर बडी कृपा की। 15 ज्योही हाथ वाहर निकाला त्योही नरेने वर्छीका प्रहार किया सो पीठमे जा निकली। 16 धरती पर गिर पडा। 17 नरा पोलि खोल कर अदर जा घुसा। 18 नरे सूजावतकी आन-दुहाई (विजय-घोषणा)। 19 शहरमें विजयकी घोषणा (आन दुहाई)हो रही है।

राव खीवै असवार पोकरण मूकिया ।[1] सो असवार जायनै देखै तो नरै सूजावतरी आंण फिरै छै । असवारां आयनै राव खीवेनूं कह्यो–'पोकरण नरै सूजावत लीधी ।[2]

ताहरा खीमो पसवाड़ै चालियो पोकरणसौ कोसै तीनै च्यारे ।[3] पसवाड़ै वहता हुता, तिसडै मारगमे एक एवाळियो मिळियो ।[4] लारै बकरो मारियो हुतो[5] । जीव नीसरियो हुतो, पण साबतो हुतो ।[6] सो काधै लिये आवतो हुतो ।[7] उणै आण बकरो दियो ।[8] ताहरा खीवै चाचैनूं पूछियो । कहियो–'चाचा ! ओ कासू कहै छै ?[9] ताहरां चाचै कहियो–'खीवाजी ! ओ बकरो आंपां जितरै कोसे जाय खावां, तितरै वरसे आपा नरो मारा ।'[10] ताहरां वाकरो लियो अर पाच छकड़ एवाळियैनूं दिया ।[11] एवाळियो ल्यै नही ।[12] ताहरां कह्यो–'रे ! ल्यै, माहरै सवण छै ।[13] ताहरा उवै लिया ।[14] भिणीयाणै बारह कोसे जायनै बाकरो खाधो ।[15] लोचा-लाचो घणो ही कियो पण उरै बाकरो खावण न पाया । नररी चोकिया ठांम-ठाम बैठी छै ।[16]

नरो कोट माहै पैठो, ताहरां खीवैरी बैर कह्यो–'बेटा ! कासूं म्हानूं काढै, कैर-कांटो खावता हुता ?'[17] ताहरां कह्यो–'नांनीजी ! थे कैर-कांटो जाय अर खावो । म्हे अठै गेहू खावस्यां ।'[18] ताहरां

---

1 इतनेमे राव खीवेने भी अपने सवारोको पोकरण भेजा । 2 पोकरण पर नरे सूजावतने अधिकार कर लिया । 3 तब खीमा (खीवा) पोकरणसे तीन-चार कोस दूर बाजूमे होकर चला । 4 बाजूमे चले जा रहे थे कि मार्गमे एक गडरिया मिला । 5 पीठ पीछे एक बकरा मारा हुआ था । 6 प्राण तो निकल गया था परन्तु था साबित । 7 सो कधे पर लिए हुए आ रहा था । 8 उसने लाकरके बकरा दिया । 9 यह क्या कह रहा है ? 10 यह बकरा अपन जितने कोसो पर जाकर खायेगे, उतने ही वर्षोमे अपन नरेको मार सकेंगे । 11 तब बकरा ले लिया और उसकी कीमतके पाच छकड गडरियेको दिये । (छकड=एक पुराना सिक्का) 12 गडरिया लेता नहीं । 13 अरे ! लेले, हमारे लिये शकुन है । 14 तब उसने ले लिये । 15 बारह कोस पर भिणियाणे गांवमे जाकर बकरा खाया । 16 खानेकी जल्दी बहुत की परन्तु उधर पूरी तरह खा नही पाये । नरेकी चौकियां जगह-जगह पर बैठी हुई है । 17 नराने जब गढमे प्रवेश किया तब खीवेकी स्त्रीने कहा कि बेटा ! कैर-काटा खाते हुओको क्यो निकाल रहा है ? (कैर-काटो खावणो= मुहा० १ जैसे तैसे गुजारा करना । २ साधारण व हलके भोजन पर निर्वाह करना । ३ मुश्किलसे निर्वाह करना ।) 18 हम यहां गेहूं खायेगे (मौज करेंगे) ।

राजलोक बाहर काढियो।[1] पोकरणांरा लोक सर्व वाहडमेर जाय रह्या। बाहडमेर जायनै दोड़-धाव करण लागा।[2] पोकरणरो देस नरै वसायो। सातलमेर कोट करायो। नरासर तळाव करायो। देस आछो रस आयो।[3]

ईया दोडां घणी ही कीवी[4], पण दखल न पहुचियो।

यु करता लूको बारह वरसरो हुवो। भालै राव[5], घोड़ै असवार हुवौ। ताहरा पोकरणरै देसनू पोकरणा दखल कीवी। एकरसू[6] सिगळा ही[7] पोकरणा बाहडमेरसू चढिनै आया। राव खीवो, चाचो, वरजांग, लूको आय नै पोकरणरो वित[8] लियो। ताहरा वासै[9] चढियो। नरो जाय पुहतो।[10] ताहरां लडाई हुई। साथ काम आयो। राव खीवैरा रजपूत ही काम आया। नरैरा ही रजपूत कांम आया। ताहरा पोकरणा नीसरिया, ताहरा नरै लूकैरै वासै घोडो दियो। ताहरा लूकैनू जाय पुहतो। लूकै वहतै हीज तरवार वाही।[11] इसडी पळसेटी पस-वाडै हुय नै वुही, धड सौं माथौ अळगो जाय पडियो।[12] धड घोडो लियै हीज गयो। पांवड़ा दोय सौ ऊपरा जावतो धड पडियो। पोक-रणा सारा ही नरानू मार, भिणीयाणै जाय उतरिया।[13]

नरैरो साथ पोकरण आयो। नरै वासै सतियां हुवण लागी[14], ताहरा नरैरो माथो नही, ताहरां सतिया पण हुवै नही। ताहरा पोकरणां कना[15] नरारो माथो मगायो। ताहरां पोकरणां कह्यो–'म्हे नरैरो माथो ल्याया नही। धड़हू परै पावडा सौ दोय माथो पडियो छै। एक कैर, एक गागवण, एक झाड़रो पेड छै, उवा झासा माहै नरैरो माथो पड़ियो छै।[16] थे जाय नै ल्यो।' ताहरां

---

1 तव स्त्रियोको वाहर निकाल दिया। 2 वाडमेर जाकर दौडे-धावे करने लगे। 3 देश भली प्रकार आधीन हुआ। 4 इन्होने दौड-धूप बहुत ही की। 5 भाला चलानेमे कुशल। 6 एक वार। 7 सभी। 8 गो-धन। 9 पीछे। 10 जा पहुचा। 11 चलते हुए ही लूकेने तलवारका प्रहार किया। 12 वाजूमे होकर ऐसी आडी तल-वार चली जिससे धडसे सिर अलग होकर जा गिरा। 13 भिणियाणे गांवमे जाकर ठहरे। 14 नरेके पीछे उसकी स्त्रिये सती होने लगी। 15 पाससे। 16 एक करील, एक गागवण इन क्षुपोंके अतिरिक्त एक वृक्ष और है उन झाडियोके अन्दर नरेका सिर पडा हुआ है।

उठै गया ।[1] उठाहू माथो लेनै पोकरण आया ।[2] वांसै सतियां हुई ।

पछै नरैरै टीकै गोयद बैठो । हमै रोज लडायां पड़ै । धरती वसै नही ।[3] ताहरां राव सूजैजी गोयदनू तेडायो ।[4] पोकरणानू तेडाया । धरती आधो-आध वैहच दीवी ।[5] कोट नरैरै माथै साटै कियो ।[6] उवै जाळसौ सीम पडी ।[7]

अजेस पोकरणां कनै तदरी सीम छै ।[8] राव नरो सवत् १५५१ चैत्र वदे २ काम आयो । गोयदरै बेटा जैतमाल नै[9] हमीर हुवा । आधी फळोधीरी धरती हमीरनू दीवी । जैतमालनै सातळमेर दियो ।

पछै कितरेहेक दिने दोन्युई कनांसू गढ राव मालदेजी लिया ।[10]

॥ इति नरै खीमैरी वात सपूर्ण ॥

---

1 तब वहाँ गये । 2 वहांसे सिरको लेकर पोकरण आये । 3 धरती आबाद नहीं होती । 4 बुलाया । 5 बराबर आधी-आधी धरती दोनोंमे बाँट दी । 6 गढको नरेको सिरके बदले दिया गया । 7 उस जाल वृक्षकी सीमा निर्धारित हुई । 8 पोकरणोके पास अभी तक उस समयकी निर्धारित सीमा है । 9 और । 10 पीछे कितने ही समयके बाद दोनोंके पाससे राव मालदेवने गढ ले लिये ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ जैमल वीरमदेवोत नै राव मालदेरी बात लिख्यते

वीरमदे देवलोक हुवो, ताहरां मेडतैरो टीको जैमलनू हुवो। ताहरां राव मालदेजी जोधपुरसौं कहाडियो।[1] जैमलनू कह्यो–'मो सारीखा थारै दुसमण छै, अर तू चाकरानू सोह पडगनो मतां दे।[2] क्युही खालसै ही राख।'[3]

ताहरा जैमलरै ईडवो पावै अरजण रायमलोत।[4] ताहरा जैमलजी अरजणनू आदमी मेलियो[5], कह्यो–'भाईनू बोलाय ल्यावो।' अर अरजणनू पण हुतौ[6] 'तेड़ै आये घरे नावतो, जैमलजी कनै जावतो।'[7] आदमी आयो ताहरां अरजण गांव हुतो।[8]

ताहरां आदमी आयनै कह्यो–'अरजणजी थांनै जैमलजी बोलाया छै। रावजीरो जोधपुरसू कागद आयो छै, सु आप हालो।'[9] ताहरा अरजणजी बोलिया, कह्यो–'राज! रावजी कागद मे कासूं लिखियो छै?'[10] ताहरां कह्यो–'रावजी लिखियो छै, सगळो ही[11] मुलक चाकरांनूं देवै छै, अर क्युही खालसै ही राखे छै? अर वळै इसड़ो कोई छै जु कोई विचै ही ऊभो रहै?'[12] ताहरां अरजणजी कह्यो–'राज! म्हारै पटो सबळो छै, हूं ऊभो रहीस।'[13] ताहरां वळै कह्यो–'इसड़ो कोई छै जु विचमें ऊभो रहै?' ताहरां अरजनजी वुरो मानियो।[14] एकरसौ तो न रहै।[15] यु कहै–'रावजी! म्हे अर थे लडा ताहरा कोई बीच ऊभो रहै?' ताहरां अरजणजी कह्यो–'जी, राज! हूं ऊभो रहीस।[16] म्हारो ईज पटो सबळो छै।

---

1 कहलवाया। 2 मेरे समान तेरे दुश्मन है और तू अपना सभी परगना चाकरोको मत दे। 3 कुछ खालसेमे भी रख। 4 तब जैमलके अधिकारका ईडवा गांव अर्जुन रायमलोतको मिला हुआ था। 5 भेजा। 6 और अर्जनको यह प्रतिज्ञा थी। 7 बुलाने पर घर पर नही जाता, जैमलजीके पास जाता। 8 अर्जुन गांव गया हुआ था। 9 सो आप चलिये। 10 रावजीने पत्रमे क्या लिखा है? 11 सभी। 12 और फिर कोई ऐसा भी है जो बीचमे खडा रहे। 13 मेरे पट्टा वडा है, अत मैं खडा रहूँगा। 14 तब अर्जुनजीको बुरा मालूम हुआ। 15 एक वार तो ऐसा विचारा कि नही रहें। 16 मैं खडा रहूँगा।

ताहरां अरजणजी डेरै आयनै कह्यो–'जु म्है म्होटो (बोल) बोलियो छै[1] कहै छै–'रिणकताल पलकेकमै भलो छै जकणरो भलो। भूडो छै जैरो भूडो[2] भूल जाय छै। ताहरा साखलो १ जाळसूरो वास हुतो।[3] ताहरां उवै कहियो–'जी, याद हू करावोस।[4] ताहरा कहियो–'सावास, वडा रजपूत।' ताहरा कहियो–'सावधांन हुवो।' ईयारै आ लागी हुतीज।'[5]

आसोजी दसराहो पूजि अर मुहिम कीधी।[6] 'ताहरां वडी फोज कर मालदेजी आया हीज। गाम गंगारड़ै आय डेरा किया।[7] फोज च्यारू ही तर्फ दोड़ी छै। मेडतैगे रैत लोग खसीजै छै।[8] देस मारीजै छै।[9] देस विध्वंसीजै छै।[10] अर अचळो रायमलोत कहै छै–'जु जैमलजी मोनू बोलावै छै, पिण हू विहाणरो दिन अठै वैठो छू अर जैमलजी घणो गाढ करै छै।'[11] अचळा! तू आव, पण वेगो आव।' ताहरा अचळै कहाडियो–'जु प्रथीराज जो, अखैराजजीनू बोलावो, जु विहाणरो दिन ऊभौ रहीस। जे म्हासू मया करो तो भली करो, नही तर सवारै हू जैमलजी भेळो होईस।'[12]

ताहरा ईंया[13] कह्यो–'पैहली जैमलनू मार[14] पछै अचळानू मारस्या।[15] अर जो भेळा हूसी तो भेळा ही मारस्या।'[16] तरै जैमल कहै छै–'ज रावस्यू अर म्हांरी सधै तो भला।'[17] ईंयारै परधान जैतमलरै ऊपर मुदार।[18] अखैराज भादावत, चांदराज जोधावत, भादो ही मोकळरो, जोधो ही मोकळरो, काका-बाबारा।[19] ईंयारै

---

1 मैंने अहकारपूर्ण कहा है। 2 भलेका परिणाम भला और बुरे का बुरा, इस बातको भी पल भर मे भूल जाता है। 3 जालसूका एक साखला इनके यहाँ रहता था। 4 मैं याद दिलाऊगा। 5 इनको यह खटक गई थी। 6 आश्विनके दशहरा की पूजन करके सेना तैयार की। 7 गगारडे गावमे आकर डेरा डाला। 8 मेडतेकी प्रजा भाग रही है। 9 देशमे लूट-पाट की जा रही है। 10 देशका विध्वस किया जा रहा है। 11 और जैमलजी वहुत गर्व कर रहे है। (यहा 'गाढ'का अर्थ 'मनुहार' या 'खुशामद' होना चाहिये)। 12 आप हमारे पर कृपा करते है तो विशेष प्रकारसे करिये, नही तो मैं कल जैमलजीके साथ हो जाऊगा। 13 इन्होने। 14 मार करके। 15 मार देंगे। 16 और जो साथमे हुआ तो उसे भी साथमें मार देंगे। 17 रावमे हमारी पट जाय तो अच्छी बात है। 18 दारोमदार। 19 काका-बाबाके वशज।

माथै मेडतैरी मुदार। ताहरां जैमलजी कह्यो–'अखैराजजी ! थे[1] जावो।' ताहरां अखैराजजी कह्यो–'राज ! मोनू काहिणनू मेलो ?[2] अर जे मोनू मेलो छो तो लड़ाईरो सराजाम करो।'[3] ताहरां अखैराजजी, चांदराजजी हालिया।

ताहरा प्रथीराजरै अखैराजसौं क्युहेक नातरो हुतो।[4] ताहरां अै[5] ठाकुर प्रथीराजजीरै डेरै आया। आयनै प्रथीराजजीनू रांम रांम कहाडिया। ताहरां प्रथीराजजी कहाडियो–'हू सपाडो करू छू[6], पछै हूई दरबार आईस।'[7] प्रथीराजजीरै डेरै तरवारयांनू वाढ लागै छै।[8] केई रजपूत बदूकारी चोटा करै छै।[9] घणू ऊधम होय रह्यो छै।[10] ताहरा अै सिरदार देखनै[11] हैरांन हुवा। इतरै माहै[12] प्रथीराजजी पैहर वागो नै तैयार हुय, बाहर पधारिया। ईंया[13] ठाकुरानू लेनै दरबार आया।

आगै राव मालदेजीरो दरबार जुडियो छै। ईंयां सिरदारां जाय राव मालदेवजीसू मुजरो कियो।[14] एकै खवै नगो भारमलोत बैठो छै, एकै खवै प्रथीराजजी बैठा छै।[15] ईंयां सिरदारानू सनमुख बैसांणिया।[16] ताहरां प्रथीराज बोलियो–'रावजी सलामत ![17] मेड़तैरा प्रधांन आया छै।' ताहरा रावजी कहै छै। कह्यो–'परधांन कासू कहै छै ?'[18] ताहरा प्रथीराज बोलियो–'इयु कहै छै महाराज ![19] म्हानू मेडतो दीजै। म्हे रावळी चाकरी करस्या।'[20] ताहरा रावजी कह्यो–'मेडतो न देवा। दूजो पटो देस्यां।'[21] इतरै माहै अखैराज बोलियो–'राज कहो छो, किना किहीरो कहियो कहो छो ?[22] जु मेडतो दे

---

1 तुम। 2 मुझे क्यो भेज रहे हो ? 3 और जो मुझे भेज रहे हो तो लडाईकी तैयारी करो। 4 कुछ नाता था। 5 ये। 6 मैं स्नान कर रहा हू। 7 फिर मैं भी दरबारमे आऊगा। 8 पृथ्वीराजजीके डेरेमे तलवारोको शान चढाकर उनकी धारें तेज की जा रही हैं। 9 कई राजपूत बदूकोसे निशाने लगा रहे है। 10 बहुत ऊधम मच रहा है। 11 देख करके। 12 इतनेमे। 13 इन। 14 प्रणाम किया। 15 एक बाजू नगा भारमलोत बैठा हुआ है, तो दूसरी एक बाजू पृथ्वीराजजी बैठे है। 16 बिठलाया। 17 रावजी चिरजीवी हो। 18 प्रधान क्या कह रहे हैं ? 19 महाराज ! ये यो कह रहे हैं। 20 हम आपकी चाकरी करेंगे। 21 दूसरी किसी जागीरीका पट्टा कर देंगे। 22 आप स्वय ही विचार करके कह रहे है अथवा किसीके कहनेसे कह रहे हैं ?

कुण, अर ले कुण ?[1] थानू जोधपुर दियो छै, तिकै म्हांनू मेड़तो दियो छै।'[2] ताहरां नगो भारमलोत बोलियो–'जु थानू रावरा पांडव ही मारसी, थे चेतो करो।'[3] ताहरा चादराज बोलियो, कह्यो–'जी, रावजीरा पांडव जैमलजीरा पाडवानू मारसी, क जैमलजीरा पाडव रावजीरा पाडवानू मारसी।[4] म्हांनू थे मारस्यो, क म्हे थानू मारस्या।'[5] इतरै[6] मालदेजी बोलिया–'हो प्रथीराज! मेडतैरा प्रधान अै हीज छै, कना और ही छै ?'[7] ताहरा प्रथीराज कह्यो–'जीवै महाराज! अै हीज छै।'[8] तरै रावजी कह्यो–'मेड़तै प्रधांनारा पग पातळा भाई![9]

इतरै मांहै अै खीज अर ऊठिया।[10] ताहरां अखैराज दुपटो झाटकियो, सु दुपटो ताग ताग न्यारो हुय गयो, अर चादराज घोड़ैरो ऊकटो खांचियो, सु च्यारै ही पग घोड़ैरा ऊचा आया।[11] ताहरा अै तो ठाकुर चढ मेडतै आया।

वासै रावजी आपरै लोका कना दुपटा घणा ही झाटकाया, पण इसो तो जैमलजीरै रजपूत ही झाटकियो।[12]

ताहरा अै ठाकुर जैमलजी कनै आया। आयनै जैमलजी आगै वात कही। ताहरां जैमलजी कह्यो–'मोनू मरणसौ क्युं डरावो ?[13] आ वात हवणकी नही।'[14] ताहरा रावजीरा घोडा गगारडै तळाव पाणी पीवणनू आया हुता सु ईसरदास ले आयो। ताहरा जैमलजी

---

1 मेडता कौन तो दे और उसके देनेसे ले कौन ? 2 तुमको जिसने जोधपुर दिया है उसीने हमको मेडता दिया है। 3 तुमको तो रावके सईस मारेंगे, होशमे आकर वात करो। 4 या तो रावजीके सईस जैमलजीके सईसोंको मारेंगे या जैमलजीके सईस रावजीके सईसोंको मारेंगे। 5 हमको तो तुम मारोगे या हम तुमको मारेंगे। 6 इतनेमे। 7 मेडतेके प्रधान ये ही है अथवा और कोई हैं ? 8 चिरजीओ महाराज! ये ही हैं। 9 मेडतेके प्रधानोंके पांव पतले है भाई! (कमजोर हैं) 10 इतनेमे ये गुस्से होकर उठे। 11 तब अखैराजने दुपट्टा झटका तो उसके ताग ताग अलग हो गये और चादराजने घोडेका तंग खींचा तो घोडेके चारों ही पांव ऊपर उठ गये। 12 परन्तु ऐसा (वैसा) झटकारा तो जैमलजीके राजपूत ही लगा सके थे। 13 मुझको मरनेसे क्यों डरा रहे हो ? 14 यह बात होनेकी नहीं।

कह्यो–'वडो चौड़ै पाडियो ।[1] ताहरा थे जांणो नही, राव थांसू टळै नही ?'[2]

बीजै[3] दिन लगती ही फोज आई । पछै बेऊं फोजांरी अणी मिळी ।[4] गोळी दारू छूटै छै ।[5] ताहरां अरजन रायमलोतनू उवै[6] रजपूत बोल याद करायो। अर कहियो–'राज ! थे कहता हुंता "जु म्होटो बोल बोलियो छै," सु तिका वेळा आज छै ।'[7]

ताहरां अरजनजी नगै भारमलोतरै मुंहडै आयो ।[8] नै इतरैमें अखैराज वधनै रावरा हाथी हुता तिकांरै मुहडै आगै आयो ।[9] ताहरां अखैराज हाथियां दोळौ हुवो ।[10] ताहरां अखैराजरै घावसू हाथीरी दोय पासळी भागी ।[11] ताहरा अखैराज कहियो–'म्हारै तो प्रथीराजसौ कांम छै ।' इतरै मांहै प्रथीराज बोलियो । कहियो–'खाटरा ! मोडौ क्यु आयो ?'[12] ताहरा अखैराज बोलियो–'रावजीरा हाथियांरी चाकरी कीधी ।' इतरै माहै प्रयागदास ऐराकी चढियो थको आयो ।[13] घोड़ो सरवरतां थको हीज जैमलजीनू आय सलांम कीधी ।[14] इतरै जैमलजी बोलिया–'आवै प्रयागियो । इतरै वास्तै ईयेरा गुना ही माफ करतो थो ।[15] इतरै मांहै तो राव मालदेजीरी फोजरा माटी आया ।[16] अर प्रयागदासरै माथै मांहै घावारी चौकडी पडी छै, अर उवै फोजांरो वांसो कियो ।[17] इतरै मांहै जाय पहुतो अर बरछी तोली ।[18] कहियो–'रावरै माथैमे द्यू ।' इतरै मांहै तो बरछी कसीसी ।[19] ताहरां

---

1 खूब चौडेमे धाडा डाला । 2 अब भी आप नही समझे कि राव आपसे टलेगा नही । 3 दूसरे । 4 फिर दोनो सेनाओकी अनियें मिली । 5 गोलियें बारूद छूट रहे है । 6 उस । 7 सो वह समय आज है । 8 सम्मुख आया । 9 और इतनेमे अखैराज जहा रावके हाथी थे आगे बढ कर उनके सामने आया । 10 तब अखैराजने हाथियोका पीछा किया । 11 अखैराजके घावसे एक हाथीकी दो पसलियाँ टूट गई । 12 खटरे ! देरीसे क्यो आया ? 13 इतनेमे प्रयागदास ऐराकी घोडे पर चढा हुआ आया । 14 घोडे पर सवार और सरपट दौडते हुए आकर जैमलजीको जुहार किया । 15 इतनेमे जैमलजी बोले—'प्रयाग आ रहा है । इसीलिये तो मैं इसके दोष माफ कर दिया करता था । 16 इतनेमे तो राव मालदेजीकी सेनाके मनुष्य आ गये । 17 और उसने फौजोका पीछा किया । 18 इतनेमे तो जा पहुचा और बर्छी उठाई । 19 इतनेमे तो बर्छी फिसल गई ।

कोई परमेश्वररो ख्याल हुवो, जु कबाण काढनै रावजीरै गळै मांहै घालण करै। ताहरा एक वेळा तो कबांण ऊपर सै रहो गळारै।[1] बीजै फेरै घोडैरै चावखो मारनै कबाण गळै माहै घाती।[2] तरै किहीके वासासू आयनै प्रयागदासनू घाव कियो।[3] ताहरा प्रयाग दोय टुकडा होय पडियो। अर कबाण राव मालदेजीरै गळै मांहै हीज रही। अर उवै आघा हीज गया।[4] अर ओ हेठो पडियो।[5] प्रथीराज लडै छै, नगो भारमलोत लडै छै। राव मालदेजीरी बाकीरी फोज सरब भागी। दोय सिरदार लडै छै।

ताहरा हीगोळो पीपाडो प्रथीराजजीरै चाकर हुतो[6], तिकणनू[7] प्रथीराजजी तरवार बगसी हुती। ताहरा हीगोळै कहियो—'प्रथीराजजी! आप तरवार बगसी म्हनै, सो द्यो।' ताहरा प्रथीराजजी कह्यो—'रे, हीगोळा! रूडी वेळा माहै मागी।[8] पण नीलैरो असवार आवै छै, सु सही सुरताण जैमलोत आयो।[9] आयनै, आवतै ही प्रथीराजनू बरछी वाही।[10] ताहरा प्रथीराज बरछी टाळ नाखी।[11] कहियो—'गीगा! तू नाव, थारै बापनू कहि, ज्यु प्रथीराजनू घाव करै।'[12] पाछै प्रथीराज कडियासू तरवार तोड़नै हीगोळै पीपाडैनूं बगसी।[13] ताहरां कहियो—'भलो प्रथीराज! मारवाड़रो सामत!'[14] ताहरां प्रथीराजजी कहियो—'ना भाई! कुवर मेडतैरो ही भलो।'

प्रथीराज वडो रजपूत। सु प्रथीराजजीरैं साम्हा लोह न लागतो, जोगीरो वरदान हुतो।[15] ताहरा अखैराज भादावत वांसासू

1 तब परमेश्वरने उसे क्या सुझाई सो कमान निकाल कर रावजीके गलेमे डालने लगा। सो एक वार तो वह गलेके ऊपर ही रह गई। 2 दूसरी वार घोडेके चाबुक मार कर गलेमे डाल दी। 3 तब किसीने पीछेमे आकर प्रयागदास पर प्रहार कर दिया। 4 और वे लोग दूर चले गये। 5 और यह नीचे गिर गया। 6 पीपाडा हीगोला पृथ्वीराजजीका चाकर था। 7 उसको। 8 रे हीगोला! अच्छे समय पर तैंने तलवार मागी। 9 परतु नीले घोडे पर सवार निश्चय ही सुरतान जैमलोत आया दिखता है। 10 बर्छीका प्रहार किया। 11 पृथ्वीराजने बर्छीको टाल दिया। 12 और कहा—वत्स! तू मत आ, तेरे बापको जाकर कह सो वह आकर पृथ्वीराज पर घाव करे। 13 पीछे पृथ्वीराजने अपनी कमरमे बंधी तलवारके पट्टेको तोड कर हीगोले पीपाडेको बकसीम करदी। 14 हीगोलाने कहा—'वाहरे पृथ्वीराज! मारवाड़के सामत! 15 पृथ्वीराजजीके सम्मुख कोई घाव नहीं कर सकता था, उसे योगीका वरदान था।

आय अर प्रथीराजजीनू लोह वाह्यो ।[1] ताहरां प्रथीराजजी कह्यो–'फिट रे भादैवाळा ! भी हांडी चाटी ।'[2] ताहरां कहियो–'हांडी तो वडे घररी चाटो । मांहै खीच घणो ।'[3] ताहरां प्रथीराजजी उठै कांम आया। नगो भारमलोत पण कांम आयो। राव मालदेजीरी फोज भागो।

ताहरां जैमलजीनू वधाई दीधी । कहियो–'जी ! राव मालदे भागो ।' ताहरां जैमलजी कहियो–'रे छाती आगासू खिसियो छै, मेडतै गयेरी वधाई द्यो ।'[4]

ताहरां नगारा राव मालदेजीरा पडाऊ हाथ आया ।[5] ताहरां जुगलो मेडतैरो बांभी हुतो, तिण साथ नगारा देनै मेलियो ।[6] जाहरां ऊ बाभी गाम लाबियारै कनारै सै गयो ।[7] ताहरां बांभी दीठो–'नगारा तो बजाय लेवां ।[8] अै तो राव मालदेवरा नगारा छै, सो परहा जासी ।'[9] ताहरां बाभी नगारो बजायो तरै अै दीठो जाईयैरै जे जाइजै ।'

ताहरां चादै कहियो–'म्हारो भाई छै। थे इतरा किहाणनू खडभडो ।[10] अै हू समझाईस ।'[11] तरै कहियो राव मालदे–'चांदा ! म्हानू जोधपुर पुहचाय किणही तरह ।'[12] ताहरां चांदै कहियो–'थे भोमता मानो, कोई ईश्वर तो न छै ।[13] जैमलरो भय थे मता[14] करो । आपनू जोधपुररै कोट दाखल हू कर देईस ।'[15] ताहरा चांदौ

---

1 अखैराज भादावतने पीछेसे आकर प्रहार किया । 2 धिक्कार है रे भादैवाला ! अच्छी हडिया चाटी रे ! 3 उसने कहा––'हडिया तो वडे घरकी चाटी है और उसमे खीच वहुत है । 4 छाती आगेसे दूर हुआ है, मेडते गया होगा, वहाकी वधाई दो । 5 राव मालदेजीके नगारे भागते हुओके पीछे पडे रह गये थे सो हाथ लगे । 6 तव जुगला नामका मेडतेका एक भाभी था उसके माथ नगारे वापिस भेजे । 7 तव वह भाभी लाविया गावके पासमे होकर लिकला । 8 भाभीने देखा नगारे तो वजाले । 9 नगारे राव मालदेके है सो तो उनके यहा जायेगे ही । 10 तुम इतने काहेको घवराते हो ? 11 इन्हे मैं समझा दूगा । 12 चादा ! मुझे किसी प्रकार जोधपुर पहु चा दे । 13 तुम उससे इतने डरते हो वह कोई ईश्वर तो है नही ? 14 मत । 15 आपका जोधपुर गढके भीतर प्रवेश मैं करा दूगा ।

राव मालदेजीरै साथै हुयनै घोडा, हाथी, घायल हुवा हुता[1] सु जिके सरब[2] साथै लेनै राव मालदेजीनू जोधपुर पहुचाया ।

राव मालदेजी जोधपुर जाय बैठा । जैमलजी मेडतैमे सुखसौ राज कियो ।

।। इति मालदेजी जैमालरी वात सपूर्ण ।।

---

1 जो घायल हो गये थे । 2 उन सबको ।

।। श्रीगणेशायनम ।।

अथ वात सीहै सींधलरी

सीहो सीधळ कमळां-पावा रहै ।[1] सीहैरै घोड़ा सरब मर गया । एक दिन सीहो बैठो छै । राजपूत सरब बैठा छै । ताहरां सीहो बोलियो–'ठाकुर ! घोडा तो नही । ताहरां सीहै पूछियो–'केहीरै घोड़ा छै ही ?'[2] ताहरा राजपूता कह्यो–'राज ! गाम धूळहरै घोड़ा छै ? पिण गोयद कूपावत ओथकै रहै छै ।'[3] कहियो–'गोयंद मारो तो घोड़ा हाथ आवै ?' ताहरां सीहो कहै–'घोडा तो आंणणा ।'[4] ताहरां सीहो चढियो । चढनै गांम घूळहरै आयो । आयनै गोयंद कूपावतनू मारियो । २०० घोडा आणिया ।[5]

ताहरां बीजै दिन सीहो चढिनै माडहै सोभतरै गांम गयो । उठै महेस कूपावत रहतो हुतो । ताहरां सीहो ओथकै गयो ।[6] हथियार छोडिनै कहियो–'म्हानू खीच जीमावो ।[7] मोसौ तो ओ काम वण आयो ।'[8] ताहरा महेस खीच जीमायो नही ।[9]

ताहरां आ वात माडण सुणी । ताहरा माडण कहियो–'महेस भूडो काम कियो । जे सीहो आयो हुतो तो खीच जीमावणो हुतो ।[10] महेस बुरो कियो ।

हिवै माडण ही दीवाणरो चाकर अर सीहो ई दीवाणरो चाकर ।[11]

ताहरा भांमैसाह दीवांणनू गोठ कीधी ।[12] सु पुडियो एक १ मोतियासू भर भरनै पातळा माहै मेलियो ।[13] सु मेवाड़ा अमराव

---

1 सीहा सीधल कमला-पावा गावमे रहता है । 2 किसीके घोडे है भी ? 3 परतु गोविंद कूपावत वहाँ रहता है । 4 घोडे तो लाना ही । 5 दोय सौ घाडोको ले आया । 6 तव सीहा वहाँ गया । 7 शस्त्रोको छोड करके वोला–मुझे खीच जमाइये (दड दीजिये) । 8 मेरेसे तो यह काम वन गया है । 9 तब महेशने उसको खीच खिलाया नही (कोई दड नही दिया) । 10 महेशने बुरा काम किया । जो सीहा आ गया था तो उसे जरूर खीच खिला देना चाहिये था । 11 माँडण भी दीवाण (राणाजी) का चाकर और सीहा भी दीवाणका चाकर । 12 भामाशाहने दीवाणको गोठ दी । 13 एक एक पत्तलमे एक एक पुडा मोतियोका भर-भर करके रखा ।

मोतियारा पुडिया ले ले गया। सीहै सीधळ पुड़ियो लियो नही।[1] ताहरा दीवांण बारियांनू पूछियो–'रे पातळा मे क्युही लाधो ही ?'[2] कहियो–'जी, और तो पातळा माहै क्युही लाधो नही, अर सीहैजीरी पातळमे मोती लाधा।' ताहरां अमराव जीम-जीम ऊठिया। ताहरा सीहैरो जोडो[3] माडण साम्है कियो। ताहरां सीधळ सारा ही बोलिया–'भला, हो सीहा! थारा भाग, मांडण ही घस करण लागो ?'[4] ताहरा सीहो बोलियो–'माडण मोनू मारसी।[5] या वात चौकस हुई।'

यु करता कितरेके दिने सीहै दीवाणरो वास छोडियो। ताहरा सीहो जायनै जाळोर गजनीखानरै वास रहियो। डोडियाळ पटै दीधी।[6] ताहरा मांडण जाणियो–'हिवै[7] सीहो गयो। ताहरा माडण पण दीवाणरो वास छाडियो।

ताहरा मांडण मारवाड आयो। कले वीदावत कनै[8] गयो। जायनै कटारी छोडी।[9] माडणजी कहियो–'कला! तू वीदैरो बेटो, जे तू कटारी बधाडै तो बाधू।'[10] ताहरां कलो जितरो[11] आपरो[12] साथ हुंतो, तितरैसो[13] चढिनै साथै हुवो।

अठै मारगमे विचै उदैसी देवडो रहै बाहरली-पालडी।[14] ईयै देवडै सिरदाररै साथ घणो।[15] भला भला राजपूत। सो सीहैरै परणियो अर माडणरै ही उदैसी परणियो।[16] माडणरी बेटी सुहागण, सीहैरी वेटी दुहागण।[17] ताहरा मांडण उदैसी कनै चारण मेलियो[18] अर कहियो–'बाईनू कहजै ज्यु उदैसोनू गुदरावै।[19] थाहरै निलाड दही

---

1 केवल सीहे सीधलने पुडिया नही लिया। 2 अरे! पत्तलोमे कुछ मिला भी ? 3 जूतियोका जोडा। 4 धन्य, ओ सीहा! तेरा भाग्य! मांडण भी युद्धकी तैयारी करने लगा ? 5 मांडण मेरेको मारेगा। 6 डोडियाल गाँव पट्टेमे कर दिया। 7 अब। 8 पास। 9 जाकरके कटारी छोड दी। 10 मांडणने कहा–'कला! तू वीदेका पुत्र है, अब यह कटारी यदि तू बँधाएगा तो बांधूगा। 11 जितना। 12 अपना। 13 उतनेके साथ। 14 यहाँ रास्तेमे बाहरली-पालडी गांवमे उदयसिंह देवडा रहता है। 15 इस देवडा सरदारके पास सैन्य दल बहुत। 16 उदयसिंह सीहेके यहाँ व्याहा था और उदयसिंहके यहा भी व्याहा था। 17 मांडणकी वेटी समादृता और सीहेकी वेटी अनादृता। 18 भेजा। 19 बाईको कहना सो उदयसिंहको हमारी ओरसे गुजारिश करे।

दियो छै।[1] म्है अठै सै दोड़ा छां। मांहरै वैर छै।[2] आप मोटा सिरदार छो। आप टाळो करीजसी।'[3]

तितरै सीहैरा गुढा डोडियाळनू जावै छै, सीधळावटी छाडी छै।[4] तितरैमे च्यार रजपूत बोड़ा सीहैरा चाकर, तिके रीसांणा छै[5], तियांनूं सीहो मनावण आयो छै।[6] सीहो आय उतरियो छै। रजपूत आयनै मिळिया। कहियो–'जो, भगत करा, उतरो।'[7] ताहरां सीहै रजपूतांनू कहियो–'अठै मांडण नैडो[8] छै। हालो, आंपां जाय साथ भेळा हुवां।'[9] ताहरां रजपूत बोलिया–'सीहाजी! तोनू चांदनू कुण गोदमे राखै?[10] ताहरा सीहोजी उतरिया।[11] भगतरी[12] तयारी करण लागा रजपूत। ताहरा एक बाकरानू गयो, एक गोहूं, चावळ, घीनू दोडियो।[13] कहियो–'सीहाजी! आप म्हारै डेरै पधारो, अर म्हे भगत कियां विना क्युं कर मेल्हां?'[14] ताहरां उवां[15] राजपूतांरी मा साकरनू[16] गाडै चढी हुती, सो देखै तो बरछियारी झळोमळ हुय रही छै।[17]

अठै माडण टळतो हो, अर बांभणांरा गाडा वेहता हुंता,[18] तेथ जायनै पूछियो[19]–'मै गजनीखांनका चाकर हूँ। सीहा सीधळ कहां है सो मुझको बतलाओ?' ताहरा बाभण बोलिया–'ओ म्हांरो धणी वड़ हेठै बैठो छै, सीहमाल झळहळाट करै।'[20] त्यु मांडण घोडो फेरण लागो।[21] त्यु सूरजरी किरणसौ बरछी झळहळी।[22]

---

1 तुमारी ललाट पर दहीका तिलक किया है (हमारे यहाँ व्याहे हो)। 2 यहाँ हमारी शत्रुता है, इसलिये हम यहाँ लूटमार कर रहे हैं। 3 आप उसे टाल देंगे (उस ओर ध्यान नही दें)। 4 इधर सीहेके गुढेके लोगोने सीधलावाटी छोड दी है और डोडियालको जा रहे हैं। 5–6 और इधर सीहेके चार वोडा राजपूत चाकर रिसा गये थे, जिन्हे सीहा मनानेको आया है। 7 यहाँ ठहरें, हम आपके लिये भोजनकी तैयारी करें। 8 निकट। 9 चले, अपन जाकर अपने लोगोके सामिल हो जायें। 10 तुझ चाँदको कौन गोदमे रख सकता है (तुझको कौन शरण दे)? 11 ठहरे। 12 भोजनकी। 13 तब एक आदमी वकरे लेने गया और एक दूसरा आदमी गेहू, चावल और घी लेनेको भागा। 14 आप हमारे डेरे पधारे और हम आपकी महमानी किये बिना आपको कैसे जाने दें? 15 उन। 16 शक्करके लिये (?) 17 वर्छियें चमक रही है। 18 यहाँ माँडण जिस मार्ग पर टल रहा था वहाँ ब्राह्मणोके गाडे चल रहे थे। 19 वहाँ जा करके पूछा। 20 तव ब्राह्मण वोले–यह प्रकाशमान हमारा स्वामी सीहमाल वड वृक्षके नीचे बैठा हुआ है। 21 माँडण अपना घोडा वापिस लौटाने लगा। 22 त्योही सूरजकी किरणसे वर्छी चमकी।

ताहरा वाभण बोलियो–'म्हे मांहरो धणी मरायो ।[1] रे वाप ! तूं माडण कूपावत, म्हे ओळखियो ।[2] पण होणी ।[3]

ताहरा माडण कटक भेळो होयनै सीहै ऊपर नांखिया ।[4] इतरैमें रजपूताणी गाडाहू[5] उतर कहियो–'मनाया, मनाया, मनाया रे वाप !'[6] ताहरा डोकरी आपरा वेटानू कहियो–'वाला ! सीहो घणा रजपूतांरो ठाकुर छै, भाई ! देखो ! किसडा हुवो छो ?'[7] ताहरा रजपूत सभिया ।[8] भली भात लडिया । सीहो कांम आयो । राघो वालो ताहरा सीहै कनै हुतो ।[9] पगै खोड़ो हुतो ।[10] काठरी घोडी चढियो फिरतो ।[11] सु नव आदमी राघैरै हाथा रहिया ।[12] ताहरा वरछिये घायो,[13] ताहरा घोड़ी नाख दियो ।[14] कहियो–'जी, इतरा दिन दाळ-पाहोरो इण घोडीनू म्है दियो छै, अवै थे देज्यो ।'[15]

राघै वडो पराक्रम कियो ।

सीहैनू मार माडण कूपावत पाछो वळियो ।[16] उठै उदैसी देवड़ैरो डर । तितरैनू रजपूत चोथो आयो ।[17] आयनै कहियो–'मा ! थारो कासू गयो ?'[18] कहियो–'जी, महारो क्युही नही गयो, जे वेटा ! तू रहियो तो ?'[19] ताहरा रजपूत कहियो–'थारो सावतो ही गयो ।[20] हू

1-2-3 तव ब्राह्मण वोला—'अरे वाप रे ! मैंने अव पहिचाना तू माडण कूपावत है ! हमने हमारे स्वामीको मरवा दिया। लेकिन भवितव्यताकी वात है। 4 माडणने अपने कटकके सामिल होकरके सीहाके ऊपर आक्रमण कर दिया। 5 गाडेसे। 6 अरे वाप ! मनाना, मनाना, मनाना रे इन्हे (रोकना, रोकना, रोकना रे इन्हे)। 7 तव बुढियाने अपने वेटोसे कहा—रे प्रिय पुत्रो ! सीहा अनेक राजपूतोका ठाकुर है, देखना इस वातका है भाई ! कि तुम इस समय अपना कर्त्तव्य कैसा निभा रहे हो ? 8 तव राजपूत तैयार हुए। 9 राघव वाला उस समय सीहेके पास था। 10 लगडा था। 11 लकडेकी घोडी पर चढा फिरता (लकडीकी वनी हुई टागके सहारे चलता-फिरता था)। 12 नौ आदमी राघवके हाथमे मारे गये। 13 तव वर्छियोके लगनेसे घायल हुआ। 15 तव उसकी घोडीने उसे नीचे डाल दिया। 15 इतने दिन घोडीको दालका पाहुरा मैंने दिया है, अव तुम देना। (पाहोरो=घोडेको चनेकी दाल आदि खिलाने के लिए चमडेका वना हुआ एक थैला, जिसमे दाल भर कर घोडेके मुह पर चढा दिया जाता है।) 16 पीछा लौटा। 17 इतनेमे चौथा (चौथसिंह) राजपूत आया। 18 आकरके कहा—'माँ ! तेरे क्या गया ?' 19 (माने व्यग्य मे) कहा—'वेटा तू वच गया तो मेरा तो कुछ नही गया ! 20 'माँ ! अव तेरा सब कुछ गया।'

तो कांम आईस ।[1] ताहरां ऊ रजपूत वांसै जायनै कांम आयो ।[2] हूक फूटो ।[3] मांडण कूपावत सीहो सीधळ मारियो ।

इतरैमे उदैसी पण सुणियो । ताहरां उदैसी कहियो–'मा जाडू मांडणरी ! अम्हांरी तळहटी सीहो मारियो ?'[4] ताहरा मांडणरी बेटी उदैसीरो पलो झालनै कहियो–'थां कासू करणो ? आपरै वैर फिरै छै ? आपरै माथै दही दियो हुतो ।[5] ताहरां उदैसीनू पलो पकड बैसाणियो ।[6] ताहरां कहे–'साड मारूं मांडणरो (?) म्हांनू कुरजपूत किया !'[7] ताहरा उदैसीरा रजपूत सारा कोटड़ी आण भेळा हुवा छै ।[8] ऊभा वाट जोवै छै सिलह किया ।[9] धणी आवै अर चढा ।[10]

तितरै सीहारी डीकरी निकळी, कह्यो–'रे कुरजपूतां ! उवैरा जमाई छै । माडणरो बेटी रोकियो छै ।[11] अर थांहीमे कोई रजपूतांणी-जायो छै, किना नही, इण कोटरी लाजरो रखवाळो ?'[12]

ताहरां ८२ घोडा पायगहरा छोडिनै एके घोडै बे-बे चढिया ।[13] आठ-वोसी जणा बगतरिया जाय पुहता ।[14] उतर घोड़ाहूं[15] नै[16] घोडा तो छोड़ दिया । आगै आय साथरै दे हथवासै ढालां नै उतर पडिया, सारो साथ मारियो । कलो वीदावत काम आयो । ५० रजपूतांसू मांडणरो साथ कांम आयो । माडण घावै पडियो ।[17] रजपूतां हेठै

---

1 मैं काम आ जाऊंगा । 2 फिर वह राजपूत पीछे जाकर काम आ गया । 3 साश्चर्य वात फैली । 4 'माडणरी मा जाडू' (एक गाली) हमारी तलहटीमे उसने सीहाको मार दिया ? 5 तव माडणकी वेटी (उदयसिंहकी पत्नी)ने उदयसिंहके पल्लेको पकडकर कहा—'तुमको क्या करना है ? अपनी दुश्मनीका वदला लेने को फिरते है ? आपके माथे पर तो उसने दहीका तिलक निकाला है ?' 6 विठा दिया । 7 माडणके सॉडको मारूगा । इसने हमको कलकित राजपूत वना दिया ! 8 तव उदयसिंहके सभी राजपूत आकर कोटडीमे इकट्ठे हुए है । 9 सिलह किए हुए खडे प्रतीक्षा कर रहे है । 10 मालिक आ जाये और चढाई करे । 11 इतनेमे सीहेकी पुत्री निकल कर आई और उसने कहा—रे कुराजपूतो ! वे तो उसके दामाद है अत माडणकी वेटीने उन्हें रोक दिया है । 12 और तुममे कोई राजपूतानीका जाया है कि नही जो इस कोटकी लाजका रक्षक हो ? 13 तव घुडशालाके ८२ घोडोको खोल करके एक एक घोडे पर दो-दो जने सवार हुए । 14 १६० कवचधारी जा पहुँचे । 15 घोडोंसे । 16 और । 17 माडण घायल हुआ ।

कर लियो ।[1] इसो रजपूतांरो साथरो हुवो ।[2] उवै सावता ऊभा छै ।[3]

ताहरा राव चंद्रसेण घूघरोटरा पाहड़ां हुंतो'[4] सु रावरो साथ आयो । आयनै देवड़ारो साथ सरब मारियो । इसड़ो[5] मामलो हुवो । जिकण दिनसूहीज[6] कलैरी सायबी[7] तूट गई । ताहरा सीधळांसू वेढ करी, तद कलो पनरै वरसारो हुतो ।[8]

माडणरा पाटा बाधा ।[9] ऊवरियो ।[10]

सीहैनू मारियो ।

॥ इति सीहै माडणरी वात सपूर्ण ॥

---

1 राजपूतोने उसको नीचे दवा दिया । 2 राजपूतोंके सहारसे ढेर लग गया । 3 वे लोग सभी सकुशल खडे है । 4 घूघरोटके पहाडोमे था । 5 ऐसा । 6 उसी दिन से । 7 माहिवी । 8 सीवलोने लडाई की तव कला केवल १५ वर्षका था । 9 माडणके मरहम-पट्टी हुई । 10 वच गया ।

।। श्री गणेशाय नमः ।।

अथ वात रिणमलजीरी लिख्यते

जद राव चूंडोजी कांम आया, ताहरा टीकैरो वखत हुवो। ताहरा राव रिणमलजीनू टीको देता हुंता। इतरै[1] रिणधीर चूंडावत दरबार आयो नै[2] सतो चूंडावत बैठो हुतो।[3] रिणधीर सतैनू देख, कह्यो–'सता! तनै टीको देवा, जो क्युही[4] देवै तो।' ताहरां सतो वोलियो–'राज! टोको रिणमलजीरो छै।'[5] ताहरा रिणधीर कह्यो–'राज! दुहाई छै।'[6] तद[7] सतै रणधीरनू कही–'धरती मा आध थानै देवां।'[8] ताहरा रिणधीर पागड़ो छाड[9] आयनै सतैरै टीको कियो। रिणमलजीनू कह्यो–'जो पटो लेवो तो आवो।'

ताहरा रिणमलजी पटो नाकार नीसरिया।[10] रांणै मोकल पासै गया। रांणै मोकल रिणमलजीरो ऊपर कियो।[11] कह्यो–'सतैनू दूर कर तनै टीको दिरावस्या।' तद रांणो मोकल, राव रिणमल चढिया।[12]

ताहरा सतो साम्हो आयो अर रणधीर नागोरीखाननू ले आयो। आयनै सीम माथै वेढ हुई।[13] नागोरीखांनरै मुहडै आया रिणमलजी।[14] अर सतो नै रिणधीर राणै सांम्हा आया।[15] रिणधीर, सते आगै रांणोजी भागा। नागोरीखान रिणमलजी आगै भागो। तद सतैरा लोकां कह्यो–'फतै सतैरी।'[16] रिणमलजीरा लोगा कह्यो–'फतै रिणमलजीरी।' पछै दोनाई भाईया रांम-राम किया।[17] आपस माहै वतळावण हुई।[18] रिणमलजी कह्यो–'नागोरीखाननू वळै ले आवज्यो।'[19] ताहरां सतै कह्यो–'थेई रिणमलजी! राणैजीनू पूछज्यो।'

---

1 इतनेमे। 2 और। 3 बैठा हुआ था। 4 कुछ। 5 टीकेका अधिकार तो रणमलजीका है। 6 दुहाई देकर कहता हू। 7 तब। 8 धरतीमे आधा भाग तुमको देता हू। 9 घोडेसे उतर कर। 10 इनकार करके निकल गये। 11 सहायता की। 12 तब राना मोकल और राव रिणमल चढ कर आये। 13 सीमा ऊपर लडाई हुई। 14 नागोरीखानके सम्मुख रिणमलजी हुए। 15 और सत्ता रणधीर राणाके सम्मुख भिडे। 16 तब सत्तेके लोगोने कहा—'विजय सत्तेकी।' 17 फिर दोनो भाईयोने परस्पर मिल कर एक दूसरेको राम-राम किये। 18 परस्पर वातचीत हुई। 19 रिणमलजीने कहा—'नागोरीखानको और लाना।

रिणमलजी फेर पाछा रांणै मोकलरै हीज गया। सतो मंडोवर जाय बैठो। राज कियो। कितराहेक दिना दोनू भायारै कुवर हुवा।[1] सतारै नरबद हुदो। रिणधीररै नापो हुवो। कुवर राज करै। ताहरा हेक[2] दिन नरवद विचारियो जु–रिणधीर धरतीरो आध लेवै सो किसै वास्तै ?[3] रिणधीरनू दूर करीस।[4]

ताहरा हेक दिन रुपिया ४००) आया। ताहरां नरवद आध दियो नही। नरबद दाव बैठो। ताहरा एक दिन नापो बैठो हुतो, ताहरा कमाण १ कठाई सौ पेस आई।[5] ताहरा कमाण नापै खांचनै तोड नाखी।[6] ताहरा नरबद कह्यो–'भाई ! भांजी क्यु ?'[7] ताहरां नापै कह्यो–'देसरो हासल आवै तैमे[8] आध मांगू। कालि थेली आई, तै मोनू दीवी क्यु नही ?[9] ताहरा नरबद थेली काढि वाट लीवी।[10] ऊठ घरै गया।[11]

नरबद पालीरा सोनगरारो भांणेजो।[12] नापो सोनगरांरै जुंवाई।'[13] ताहरां नरबद कह्यो–'मामाजी ! थांनू हूं व्हालो कै नापो ?'[14] ताहरां कह्यो–'म्हारै तो थे बिन्है बराबर।[15] पिण तू विशेष, जु थारै वास रहा।'[16] ताहरा नरबद कह्यो–'नापैनूं विस देवो।' तद कह्यो–'म्हांसू तो ओ काम कोई हुवै नही।'[17] ताहरा एक छोकरी हुती।[18] तिणनू[19] नरबद लोभ दिखाय, विस दिरायो।[20] नापोजी मुवा।[21]

---

1 कितनेक दिनोके वाद दोनो भाइयोंके कुवर उत्पन्न हुए। 2 एक। 3 रिणधीर धरतीकी आमदनीमे आधा भाग लेता है सो किसलिए ? 4 रिणधीरको दूर करूगा। 5 एक कमान कहींसे भेट में आई। 6 नापाने कमानको खींच करके तोड डाला। 7 भाई ! इसको क्यो तोडा ? 8 उसमें। 9 कल थेली आई थी, उसमेंसे मुझको क्यो नही दिया ? 10 तव नरबदने थेली निकाल कर वांट ली। 11 फिर वहांसे उठ कर घरको गये। 12 नरवद पालीके सोनगरोका भानजा। 13 नापा सोनगरोका दामाद। 14 तुमको मैं प्रिय हू कि नापा ? 15 मेरे तो तुम दोनो बराबर हो। 16 लेकिन तू विशेष है, क्योकि मैं तेरे यहां रह रहा हू। 17 मेरेसे यह काम नही होनेका। 18 तव एक दासी थी। 19 उसको। 20 विष दिलवाया। 21 नापाजी मारे गये।

ताहरा नरबद रिणधीर मारणनू कटक भेळो कियो ।[1] ताहरां रिणधीर आपरा आदमी मेलिया ।[2] खबर करो जु 'कठैनू कटक भेळो करै छै ?'[3] तद आदमिया आय पूछियो कामदार मुसद्दियानू जु–'कटक कै ऊपर छै ?'[4] ताहरां वां[5] कह्यो–म्हानू तो खबर काई[6] नही ।'

तद आदमी मोदीरै आया, बैठा । दयाळ डोड तैसौ नरबदरै आलोच ।[7] दयाळनू रिणधीर छोटै थकैनू पाळियो हुतो ।[8] तद दयाळ मोदीरै रिणधीररा आदमी आया । मोदी वा आदमियानै सारी ही वसत तोल दीधी[9]; पण मोदी घी देवै नही । ताहरां कह्यो–'रे दयाळ मोदी ! घी दे ।' ताहरां दयाळ मोदी कह्यो–'काळैरै पीळो घणो ही छै ।'[10] इतरो[11] कहि मोदी घी दियो । पछै रिणधीररा परधान पाछा रिणधीर कनै[12] आया । आयनै कह्यो–'राज ! कटकरी खबर काई नही जु किण ऊपर कटक छै ?'[13] तद रिणधीर कह्यो–'रे, क्यू हो दयाळ मोदी ही कह्यो?' ताहरां कह्यो– राज ! बीजो तो क्यु ही कह्यो नही ।[14] म्हे इतरो कह्यो[15]–'मोदी घिरत देवै नही ?' तद मोदी कह्यो–'काळैरै पीळो घणो ही छै ।' ताहरां रिणधीर कह्यो–'रे ! दयाळियो बीजो कासू कहै ?[16] काळो हू, पीळो म्हारै सोनो, तिकै ऊपर कटक ।[17] ओ कटक म्हारै ऊपर छै ।'[18]

ताहरां रिणधीर पण कटक कियो । रोजगार सारानू चुकायो । रजपूता साराही कह्यो–'थाहरै साथ छा ।'[19]

---

1 सेना इकट्ठी की । 2 रिणधीरने अपने आदमी भेजे । 3 किधरके लिए सेना इकट्ठी कर रहा है ? 4 कटक किसके ऊपर है ? 5 उन्होने । 6 कुछ । 7 दयाल डोड जिसमे नरवदका परामर्श (मित्रता) । 8 दयालका रणधीरने उसकी छोटी अवस्थामे पालन किया था । 9 सभी वस्तुएँ तोल कर दे दी । 10 कालेके यहा पीला वहुत है । (साकेतिक भापाका सदेश) 11 इतना । 12 पास । 13 सेनाकी तैयारीके सम्बन्धमे कुछ भी पता नही लगा सका कि किसके ऊपर चढाई करनेके लिए यह सेना तैयार की गई हैं ? 14 दूसरा तो कुछ नही कहा । 15 हमने इतना कहा । 16 अरे ! दयालिया दूसरी क्या वात कहे ? 17 काला तो मै हूं और पीला मेरे पासका सोना (धन-माल) है, जिसके ऊपर यह धावा है । 18 अतः यह सेनाकी तैयारी मेरे ऊपर है । 19 सभी राजपूतोने कहा कि हम तुमारे साथ हैं ।

पछै रिणधीरजी पण राणैरै गया, रिणमलजी पासै ।[1] रिणमलजीनू कह्यो–'हालो, थानै मडोवररो टीको देराऊ ।'[2] ताहरां रातरा रांणैजी पासै गया । रिणधीरजी रांणोजी मिळिया । ताहरां रांणैजी कह्यो–'मामोजी ! क्यु आया ?' ताहरां रिणमलजी कह्यो–'म्हानू मडोवर देण आया छै ।'[3] ताहरां रांणैजी कह्यो–'म्हे ई आवस्या ।'[4] ताहरा रांणजीनू ले अर सतै ऊपर गया ।[5]

ताहरा नरबदनू सतै कह्यो–'तू पण नागोरीखांननू ले आव ।'[6] नरवद कूच कर कोस १ गयो, ताहरां रात पडी । हेकलो ही फिर नै पूठो सतैजी पासै आयो ।[7] छानै लुक, अर मा बापरी वात सुणणनू लागो ।[8]

ताहरा सतो सोनगरान कहण लागो–'सोनगरीजी ! नरबद जांणियो, बाप कपूत हुवो, जु रिणधीरजीनू आध देवै ।[9] पण रिणधीर विना मडोहर रहै नही ।'[10] हमै[11] नागोरीखाननू लेवण गयो छै । सु नागोरीखांन हमै आवै नही । रिणमलजीरा हाथ देख गयो छै ।[12] भली हुई, हूं कांम आईस ।'[13]

इतरै नरवद बोलियो–'जु म्हनै नागोरीखांनरै किसै वास्तै मेल्हो ? हू ई लडीस ।[14] म्हैं पण पण कियो छै, हू ई काम आईस ।'[15] ताहरां सतै कह्यो–'हू आही कहतो हुतो ।'[16] ताहरा नरबद आय नगारो दरायो ।[17] अर लडाई कीवी । नरवद खेत पडियो ।[18] साथै इतरा

---

1 फिर रिणधीरजी भी रिणमलजीके पास राणाके यहाँ गये । 2 चलिये, आपको मडोरका टीका दिलवाऊ । 3 मुझे मडोर देनेके लिए आये हैं । 4 हम भी आयेंगे । 5 तब राणाजीको साथमे लेकर सत्ते पर आक्रमण करनेको गये । 6 तू भी नागोरीखानको ले आ । 7 अकेला ही लौट करके वापिस सत्ताजीके पास आ गया । 8 छिप करके माता-पिताकी बातें सुनने लगा । 9 सोनगरीजी ! नरवदने जाना है कि उसका बाप भी ऐसा कुपूत (कु बाप) हो गया सो रिणधीरको आधा राज्य दे रहा है । 10 परन्तु रणधीरके विना मंडोर अधिकारमे रहनेका नही । 11 अब । 12 नागोरीखान अब आनेका नहीं, क्योंकि वह रिणमलजीके हाथोका चमत्कार देख गया है । 13 अच्छा हुआ, मैं अब काम आ जाऊंगा । इतनेमें नरवद प्रगट होकर बोला—तो फिर मुझे नागोरीखानके पास किसलिए भेज रहे हो ? 14 मैं भी लडूंगा ।' 15 मैंने भी प्रतिज्ञा करली है कि मैं भी काम आ जाऊगा । 16 मैं यही कहता था । 17 तब नरवदने आकर नगारा बजवाया । 18 नरवद घायल होकर धराशायी हुआ ।

रजपूत भला-भला कांम आया । चौहथ ईंदो कांम आयो[1] , पण हुता सु सारा ही निरवाह्या ।[2] जीयो ईदो काम आयो । बीजा[3] ही घणा रजपूत कांम आया । नरबदजीरै घाव लागा, एक आख फूटी ।[4] नरबदजीनू रांणोजी उठाय ले गया ।[5] रिणमलजीनू मडोवर बैसाण, टीको दे, राणाजी पधारिया ।[6]

ताहरा सतोजी पण रांणैजीरै गया । उठै जाय देवलोक हुवा ।[7]

तठा पछै रिणमलजी नित-री-नित गोठा करै ।[8] तै ऊपर सोनगरांरा परधान देखणनू आया । सोनगरांरी ठकुराई नाडूल ।[9] ताहरा परधानां पाछा जायनै कह्यो–'का तो राठोड़नू परणाईजै, नही तो राठोड़ थांसू आघो नहीं काढै ।[10] राठोड थानू मारसी ।[11] इसो दीसै छै ।'[12] तद सोनगरा राव रिणमलजीनू परणाइया ।[13] लोलैजी सोनगरैरी बेटी परणाई ।[14]

परणायां पछै ही सोनगरां दीठो–'रिणमल भलो नही ।'[15] ताहरां सोनगरां रिणमलजीसूं चूक तेवडियो ।[16] सोणहर रिणमलजी पोढिया हुता ।[17] तद लोलैजी रिणमलजीरी सासूनू कह्यो–'आज रामीबाई रांड हुसी ।'[18] ताहरां रिणमलजीरी सासू कह्यो–'भली हुई । एक दीकरी मुई लागी तो कासू हुवै छै ?'[19] इतरै लोलैजीनू प्यालो दारूरो दियो ।[20] ताहरां लोलोजी तो पोढ रह्या ।[21]

1–2 चोहथ ईंदा काम आया, इसने जो पन ले रखे थे सब निबाहे । 3 दूसरे । 4 नरबदजीके घाव लगे, एक आख फूट गई । 5 नरबदजीको राणाजी उठवा कर ले गये । 6 रिणमलजीको मंडोरमे टीका देकर राणाजी वापिस गये । 7 वहा जाकर मर गये । 8 जिसके बाद रिणमलजी नित्य प्रति दावतें करते हैं । 9 सोनगरोकी ठकुराई नाडोलमे । 10 या तो राठौड़को व्याह दें नही तो राठौड तुमको छोडेंगे नही । 11 राठोड तुमको मार देंगे । 12 ऐसा ढंग दिखाई देता है । 13 तब सोनगरोने राव रिणमलजीको व्याहा । 14 लोलाजी सोनगरेकी बेटी व्याह दी । 15 व्याह देनेके बाद भी सोनगरोंने देखा कि रिणमलका व्यवहार अच्छा नही है । 16 तब सोनगरोंने रिणमलजी को धोखेमे मारनेकी ठानी । 17 शयनघरमे रिणमलजी सोए हुए थे । 18 आज रामीबाई विधवा हो जायेगी । 19 अच्छा हुआ, एक लड़की मृतककी स्त्री (विधवा) हो गई तो क्या बिगड जाता है ? 20 इतनेमे उसने लोलेजीको शराबका प्याला दिया । 21 तब लोलोजी नशेमें सो गये ।

ताहरां रामीनूं आय कह्यो–''जु रिणमलजीसूं चूक छै तूं कहि, नीसरो ।'[1] ताहरां रामी आयनै रिणमलजीनूं कह्यो–'थे नीसरो, था सूं चूक छै ।'[2] ताहरां रिणमलजी ऊपर घावड़िया[3] आया । ताहरां रिणमलजी नीसर गया ।[4] ताहरा सासूं कह्यो–'म्हारारी ऊपर राखै ।'[5]

पछै रिणमलजी घरै गया । अबै जायनै सोनगरासूं वैर मांडियो ।[6] पण[7] सोनगरा हाथ आवै नही । तद सोमवाररै दिन सोनगरा आसापुरीरै देहरै आय गोठ करै, सोमवारिया अमल करै ।[8] अमलांसूं छकै सु माचा घातियां सूता घोरावै ।[9] ताहरा हेक दिन हेरो कर सारां ही सोनगरानूं माचा सूतांनूं मारिया ।[10] मार अर नाडूळाईरै कोहर अखा वेरै माहि नांख दिया ।[11] नीचै और सारांहीनूं दिया ।[12] ऊपर सगा साळानूं दिया ।[13] कह्यो–'जी, सासूसूं कौल छै, ऐ ऊपर देवो'[14] कह्यो हुतो–'म्हांरारो ऊपर करै, सु ऊपर देवो ।'[15] पछै धरती सारी ही लीवी ।

पछै फेर राणै मोकलसूं मिलण गया । रिणमलजी रांणा पासै रहै । उठै रहितां चाचै सीसोदियै, महिपै पमार राणैजीसौ चूक कियो ।[16] तद चूक रिणमलजी लाधो ।[17] पण रांणैनूं खबर काई[18] नही पडी । हेक दिन चाचो, महिपो मलेसी डोडियेरै घरे गया ।[19]

---

1 तब रामीके पास आकर उसने कहा कि आज रिणमलजीके साथ चूक है, तू उन्हें कह दे कि यहांसे निकल जाओ । 2 आप निकल जाओ, तुमारे साथ आज धोखा है । 3 घातक लोग । 4 रिणमलजी निकल गये । 5 मेरे वालोंकी सहायता करना । 6 अब सोनगरोंसे शत्रुता ठानी । 7 परन्तु । 8 प्रति सोमवारको आशापुरी देवीके मंदिर जाकर दावतें करते हैं और नियमित रूपसे प्रति सोमवार वहां अफीम गोष्ठी करते हैं । 9 अफीमके नशेमें चूर होकर खाटोंमें सोये हुए खुर्राटे मारते हैं । 10 माचों पर सोते हुओंको मार डाला 11 मार करके नाडूलाई के आखा-वेरे नामक कुएँमें डाल दिये । 12–13 दूसरे सभीको तो सबके नीचे डाला और सगे-सम्बन्धियों और सालोंको सबके ऊपर डाला । 14 कहा कि सासूसे कौल किया है सो इनको ऊपर देओ । 15 सामने कहा था कि हमारे वालोंको ऊपर करना अत. इनको सबके ऊपर देओ । 16 वहां रहते थे, उस समय चाचा सिसोदिये और महिपा पँवारने राणाजीसे चूक करनेका विचार किया । 17 रिणमलजीको इस चूकका भेद मालूम हो गया । 18 कुछ भी । 19 एक दिन चाचा और महिपा मलेसी डोडियाके घर पर गये ।

मलेसी रांणैजीरो खवास । ताहरां रिणमलजी पण जासूस लगायो हुतो ।[1] कह्यो–'जु देखां, अै किसी वात करै छै ?'[2] ताहरां मलेसीनूं अै तो घणा ही कह रहिया—[3] 'जु तू म्हां में भिळ ।'[4] पण मलेसी भिळै नही ।

ताहरा जासूसा आय रिणमलजीनू कह्यो, ताहरा रांणोजी मानै नही।

यू करता रिणमलजी तो पूठा मंडोहर पधारिया ।[5] वांसै राणैजीनू चूक कियो ।[6] तद राणोजी अचळदास खीचीरी मदतनू गढ-सू उतरिया अर नीचै डेरो कियो ।[7]

तद महिपै चाचैनू कह्यो–'जु आज राणो मरै तोमरै; नही तो पछै मरणरो नही ।'[8] ताहरां चाचो, मेरो, महिपो साथ कर आया । तद रांणोजी कह्यो–'अै खातणवाळा आवै सु भला नही, जो गोहुवाळ मांहै आवै ?'[9] इतरी मरजाद हुंती, अै गोहुवाळां मांहै आवण पावता नही, सो आया ।'[10] ताहरां मलेसी डोडियै कह्यो–'जु थानू आगै रिणमलजी कह्यो हुतो जु ईयांरै थांसू चूक छै ।'[11] ताहरां रांणोजी कह्यो–'अै हरामखोर हणा क्यु ?' ताहरां मलेसी कह्यो–'आगै म्है न तो कह्यो हुतो ? पण हमै तो देखोईज छो ।'[13]

पछै वडी लडाई हुई । नव जणा रांणाजीरै हाथ रह्या ।[14] पाच जणा राणीजी हाडीजीरै हाथ रह्या ।[15] पाच जणा मलेसी डोडियारै हाथां रह्या । राणोजी काम आया । चाचा महीपैरै हळका सा घाव लागा ।

---

1 रिणमलजीने भी उनके पीछे जासूस लगा रखा था । 2 देखें, ये लोग क्या बातें करते है । 3–4 मलेसीको बहुत कहा कि तू हमारे शामिल हो जा । 5 इस बीच रिणमलजी तो वापिस मडोर चले गये । 6 इनके जानेके पीछे राणाजीको चूक किया । 7 राणाजी अचलदास खीचीकी मददको जानेके लिये गढसे उतरे और नीचे आकर डेरा डाला । 8 तब महिपेने चाचासे कहा कि राणाको आज मारें तो मरे, नही तो फिर मरनेका नही । 9–10 ये खातिन वाले आ रहे हैं सो खैर नही, जौ वाले (निम्न वर्गवाले) गेहू वालो (उच्च वर्ग वालो) के साथ आ रहे हैं ? यह मर्यादा थी कि ये (निम्न वर्ग वाले) गेहू वालो (उच्च वर्ग वालो) के साथ आ नही सकते सो आ रहे है । 11 मलेसी डोडियेने कहा कि आपको रिणमलजीने कहा था कि इन लोगोका आपके साथ चूक है । 12 पर ये हरामखोर इस समय क्यो ? 13 मलेसीने कहा कि मैंने आपको कहा नही था ? और अब तो आप देख ही रहे हो । 14–15 नौ व्यक्ति राणाजीके हाथ रहे और पाच जने राणी हाडीजीके हाथ काम आये ।

कुवर कुभो नोसरियो ।[1] वासां वाहर हुई ।[2] कुंभो पटेलरै घरै गयो । पटेलरै घोडी दोय हुंती । ताहरां पटेल कह्यो–'हेके घोड़ी तू चढि चाल, नै हेक वीजी घोडी वाढि जा ।[3] नही तर तनै ईयै घोड़ी चढियो पहुंचसी ।[4] अै घोडी वाढो पछै कोई न पहुंचै ।[5]

ताहरा हेके घोड़ी चढियो, हेक वाढि गयो ।[6] लारांसू वाहर आई ।[7] पटेलनू पूछियो–'कुभो कठै ?'[8] ताहरा पटेल कह्यो–'अठै घोड़ी २ हुती, सु एकण घोडी चढ गयो ।'[9] ताहरां दूसरी घोडी जाय देखै तो वाढी पडी छै ।[10] ताहरा वाहर पाछी फिरी ।

रांणो चाचो हुवो ।[11] महिपो परधांन हुवो ।[12] कुभो विखै नीसरियो ।[13]

इतरै[14] रावजी रिणमलजीनू खवर हुई–'जू राणोजी मारिया ।'[15] ताहरा रिणमलजी घणा सूस लिया ।[16] ताहरा रावजी फोज कर मेवाड़ आया । चाचैसू लड़ाई हुई । चाचो भागो । रिणमलजीरी फतै हुई । चाचो मेरो भाग अर पहियड़रै भाखरै चढ गया ।[17] ताहरां राव रिणमलजी रांणै कुभैनू टीको दियो ।[18]

अै पण पहियडरै डूगरां चढिया ।[19] दौडा करै, पण जोर कोई लागो नही । विचाळै एक भील रहै ।[20] तैरो वाप रिणमलजी मारियो हुतो ।[21] तिकणरी पीठ वै राखै ।[22]

---

1 कुंवर कुभा भाग निकला । 2 उसके पीछे वाहर गई । 3 एक घोडी पर तू चढ कर चला जा और दूसरी घोडीको काट कर चला जा । 4 नही तो इस दूसरी घोडी पर चढ कर वे तुझे पहुँच जायेंगे । 5 इस घोडीको काट दी तो फिर तुझे कोई नही पहुँच सकेगा । 6 तव एक घोडीको काट कर और दूसरी पर चढ कर चला गया । 7 पीछेसे वाहर चढ कर आई । 8 कुभा कहाँ है ? 9 यहाँ दो घोड़ियें थी जिनमे से एक घोडी पर चढ कर चला गया । 10 कटी हुई पडी है । 11–12 चाचा राणा वन गया । महिपा उसका प्रधान हो गया । 13 कुभा सकटावस्थामें भाग निकला । 14 इतनेमे । 15 राणाजी मारे गये । 16 तव रिणमलजीने कई प्रतिज्ञाएँ की । 17 चाचा और मेरा भाग कर पहियडके पहाडो पर चढ गये । 18 तव राव रिणमलजीने राणा कुभाको टीका किया । 16 ये (राव रिणमल) भी पहियडके पहाडो पर चढे । 20 (पहाडोके) वीचमे एक भील रहता है । 21 जिनके वापको रिणमलजीने मारा था । 23 जिससे वह उनकी (चाचा मेराकी) सहायता करता है ।

यो रहतां हेक दिन रिणमलजी एकल असवार भीलरै घरै जाय नीसरिया ।[1] भील घरै हुतो नही ।[2] भीलरी मा बैठी हुती । तैंनू बैह्न कह जाय बैठा ।[3] भीलणी कह्यो–'वीरा ! थे बुरी कीवी, पण थे घरै आया ।[4] अबै कासूं हुवै ?'[5] ताह्रां कह्यो–'वीरा ! थे घर माहै पोढो ।'[6] ताह्रा घर मांहै पोढिया ।

यू करतां पाछे ही भाई भील आया । आयनै मा आगै जीमणनू आया ।[7] ताह्रां भीलांनू मा पूछियो–'जु, बेटा ! हमार रिणमल राठोड़ आवै तो कासू करो ?'[8] तद कह्यो–'कासू करा ? मारां ।'[9] ताह्रा वडो बेटो बोलियो । कह्यो–'मा ! जे घरे आवै रिणमल, तो न मारां ।'[10] ताह्रा कह्यो–'साबांस बेटा ! वैरीनू ही घरा आया न मारिजै ।'[11]

इतरै तो रिणमलजीनू साद कियो–'जु वीरा ! आव !'[12] ताह्रा रिणमलजी बाहिर आया । भीलासूं मिळिया । भीलां वडी मनुहार करी । वडी जाबता करी ।[13] भीला पूछियो–'जु थे मरणनू अठै किसै वास्तै आया ?'[14] तद कह्यो–'भाणेज ! म्हनै तो खण छै, जु धान चाचै मारियै खाऊं, पण थां आगै मार सकू नही ।'[15] ताह्रा भीलां कह्यो–'जु थानै म्है हमैं क्यु ही कहां नही ।'[16]

ताह्रां रिणमलजी पाछा आया । आपरो कटक ले अर पहियड़रै भाखरा नीचै आया ।[17] ताह्रां भीलां कह्यो–'पहियड़रै भाखरां वीच

---

1 ऐसी स्थितिमे एक दिन रिणमलजी अकेले सवार होकर उस भीलके घर जा पहुचे । 2 भील घर पर नही था । 3 उसको 'बहिन' सबोधन करके उसके पास जा बैठे । 4-5 भीलनीने कहा कि भाई ! तुमने बुरा किया, पर अब तुम हमारे घर पर आ गये हो, अब क्या हो ? (अब तुमारा कुछ नही बिगड सकता ।) 6 भाई ! अब तुम घरमे जाकर सो जाओ । 7 आकरके अपनी मा के पास खाना खानेको गये । 8 बेटा ! अभी रिणमल राठौड यदि यहा आ जाय तो क्या करो ? 9 तब कहा—'करें क्या ? मार देंगे ।' 10 मा ! यदि रिणमल अपने घर पर आ जाय तो नही मारेंगे । 11 शत्रु भी हो, पर यदि वह घर पर आ जाय तो नही मारा जाना चाहिये । 12 इतनेमे तो भीलनीने पुकारा—'वीरा ! आजाओ' । 13 वडी रखवाली की । 14 आप मरनेके लिये यहा किसलिये आ गये ? 15 तब कहा—भानजो ! मैंने यह बाधा ले रखी है (प्रतिज्ञा की है) कि चाचाको मार करके ही अन्न खाऊगा, परन्तु तुमारे होते हुए मार सकता नही । 16 अब हम आपको कुछ नही कहेंगे । 17 अपना कटक लेकर पहियड पहाडके नीचे आये ।

एक सीहणी छै, सो मांणस आवतां देख गाजसी, तद उवै सावधांन हुसी।'[1]

ताहरा राव रिणमलजी हेकाहेक पगडांडी चढिया।[2] वांसै[3] फोज चढी। ताहरां सीहणीरी थह बराबर गया।[4] तद सीहणी बोली। तद अडमाल तरवाररी दीवी, सो दोय धड हुई पड़ी।[5] सीहणी मारी।

तितरै ऊपरलां कह्यो–'जु सावधान! सुणज्यो! सीहणी गाजै छै।'[6] पण सीहणी हेक वार हीज बोली।[7] तैसू ऊपरलानै वेसास हुवो,[8] कह्यो–'जु हेक वार हीज बोली। किही जिनावरसू बोली हुसी।'[9] इतरै रिणमलजी घोडा नीचै राख, आप ऊपर चढिया।[10] चढिनै दरवाजै गया। तद बरछी दरवाजैनू वाही।[11] ताहरां भीतरला कह्यो–'ठाकुरा! रिणमलजीरी बरछी हुवै?'[12] ताहरा सारोही कह्यो–'ठाकुरां! रिणमलजी छै।'[13]

ताहरा चाचै मेरैसू लडाई हुई। सीसोदियानू मार पगा नीचै दीना।[14] चाचो मारियो। महिपो जनानी पोसाख कर पहाड़सू कूद गयो।[15] रिणमलजी चाचैरी बेटी परणिया।[16] धड़ बाजोट किया।[17] बरछियारी चँवरी कीवी।[18] और कोई सीसोदियांरी कुवारी बेटी हुती, रिणमलजी आपरा भायानू परणाई।[19] रिणमलजी पाछा पधारिया।

---

1 पहियडके पहाडोमे एक सिंहिनी है सो मनुष्यको आता हुआ देख कर दहाडेगी, तब वे लोग सावधान हो जायेंगे। 2 तब राव रिणमलजी एकाएक पगडडीसे ही चढ गये। 3 पीछे। 4 तब सिंहिनीके गुफाके बराबरमे गये। 5 तब अडमाल (अडकमल)ने तलवारसे प्रहार किया सो धडके दो टुकडे होकर पड गई। 6 तब ऊपर वालोने (चाचा आदिने) कहा कि सावधान, सुनना, सिंहिनी दहाड रही है। 7 पर सिंहनी एक वार ही बोली। 8–9 जिनसे ऊपर वालोको विश्वास हुआ कि एक ही वार बोली है, सो किसी जानवरको देख कर बोली होगी। 10 स्वय ऊपर चढे। 11 तब दरवाजेको बर्छी मारी। 12 तब भीतर वालोने कहा –'ठाकुरो! यह बर्छीका प्रहार रिणमलजीके हाथका हो? 13 तब सब जनोने कहा— ठाकुरो! निश्चय रिणमलजी है। 14 सिसोदियोको मार कर पाँवो तले दिये। 15 महिपा जनानी पोशाक पहिन कर बाहर निकल गया और पहाडसे कूद गया। 16 रिणमलजीने चाचा की बेटीसे विवाह किया। 17 धडोको (लाशो को) बिछाकर विवाह-मडपकी चौकी बनवाई गई। 18 बर्छियोकी चौरी बनवाई। 19 और भी सिसोदियोकी क्वारी लडकियां थी उन्हें अपने भाईबन्धुओ को व्याह दी।

महिपो अठैसू मांडवरै पातसाह पासै गयो ।[1] रांणोजीनू अर रिणमलजीनूं खबर हुई, जु महिपो मांडव छै । ताहरां राणोजी अर रिणमलजी माडवरै पातसाहनू जोर घातियो जु 'म्हारो चोर देवो ।'[2] ताहरां पातसाह महिपैनूं कह्यो-'महिपा ! हमै तू म्हासू रहै नही ।'[3] तद महिपै कह्यो-'म्हनै बाँध देवो मतां ।'[4]

तद महिपो घोड़ै चढ नीसरियो । दरवाजै आयो तद घोडै सूधो गढसू कूदियो ।[5] घोडो तो पडता मुवो ।[6] आप नाठो ।[7] गुजरातरै पातसाहरै गयो ।

रांणोजी नै[8] रिणमलजी पाछा चीत्रोड़[9] आया । राणोजी सुखसू राज करै छै । रिणमलजी देसरो कांम करै छै ।

यू करतां हेक[10] दिन महिपो लाकड़ियांरो भारो ले चीत्रोड मांहै आयो । महिपैरै एक बैर हुंती[11], अर एक बेटो हुतो । अर वा बैर दुहागण हुती ।[12] तियैरै[13] घरै आयो महिपो । ताहरा बैर ओळखियो ।[14] घर मांहै लियो । भीतर बैठो रहै । सूतरो काम करै ।[15] मोहरी नै जेवड़ा वटै ।[16] सो एक मोहरी सवार अर बेटैरै हाथ दीवी, कह्यो-'राणौजीरै नजर करै ।[17] अर जो पूछै तो कहै, महिपो हाजर छै ।' तद बेटो हजूर गयो ।[18] ताहरां राणोजी पूछियो । ताहरां कह्यो-'दीवांण ! महिपो हाजर छै ।'

पछै महिपो दीवांणसू मिळियो[19], अर कह्यो-'दीवाण ! धरती मेवाड़री राठोडा लीधी ।[20] दीवांणनू खबर नही ।' ताहरा राणैजीरै मन मे डर पैठो[21]-'कदास मोनूं मार राज लेवै ।'[22] ताहरा राणैजी

---

1 महिपा यहांसे माडवके बादशाहके पास चला गया । 2 तब राणाजी और रिणमलजीने माडवके बादशाह पर जोर डाला कि हमारा चोर हमको देओ । 3 अब तू हमारेसे नही रखा जा सकता । 4 मुझे बंदी बना कर मत दो । 5 दरवाजे पर आया तब घोडे सहित गढसे कूद गया । 6 घोडा तो गिरते ही मर गया । 7 खुद भाग गया । 8 और । 9 चित्तौड । 10 एक । 11 महिपाके एक स्त्री थी । 12 और वह स्त्री तिरस्कृत थी । 13 उसके । 14 तब स्त्रीने उसे पहचान लिया । 15 सूत्रकी वस्तुएँ बनानेका काम करता है । 16 मोहरी और जेवरी वटता है । 17 सो एक मोहरी सँवार करके बेटेके हाथ दी और कहा कि इसे लेजा कर राणाजीके नजर करदे । 18 तब उसका बेटा राणाजीकी कचहरीको गया । 19 पीछे महिपा दीवान (राणाजी) से मिला । 20 मेवाडकी धरती राठोडोने लेली । 21 राणाजीके मनमे भय घुसा । 22 कदाचित् मुझे मार कर राज्य ले ले ।

साथ भेळो कियो ।[1] रिणमलजीसूं चूक तेवड़ायो ।[2] तद चूक रिणमलजीरै डूम लाधो ।[3]

तद डूम रावजीनूं कह्यो–'जु रांणैजीरै थांसूं चूक छै ।'[4] ताहरां रावजी मांनी नही । पण रावजी कुंवर तो सारा ही गढरी तळहटी राखिया ।[5]

यूं करतां हेक दिन रावजीसूं चूक कियो । पचीस गज पछेवड़ी रिणमलजीरै ढोलिये दोळी पळेटी ।[6] आप पोढिया हुंता ।[7] १७ जणा ऊपर घावडिया आया ।[8] सोळै जणा तो माचैरी फेटसूं मुवा ।[9] अर महिपो भागो । रिणमलजी कांम आया । रिणधीर चूडावत काम आयो, रांणैजीरा मोहल जाय पडियो ।[10] सतो भाटी लूणकरणोत कांम आयो । रिणधीर सूरावत काम आयो । बीजो ही घणो साथ कांम आयो ।[11] अर जोधाजी भायां समेत तळहटी हुता, सु नीसरिया ।[12]

वांसेसूं फोजां वाहर चढी सो आडेवळै जाती पुहती ।[13] तठै[14] चरडो, चांदराव अरड़कमलोत, प्रथीराज, तेजसीह बीजो ही घणो साथ कांम आयो ।

रिणमलजीरा कुंवर चोबीसै कुसळै मडोहर पुहता[15] ।

॥ इति राव रिणमलजीरी वात सम्पूर्ण ॥

---

1 तव राणाजीने अपने साथ वालोको इकट्ठा किया । 2 रिणमलजीसे चूक करनेकी तैयारी की । 3 तव धोखेके इस भेदका पता रिणमलजीके एक डूमको लग गया । 4 राणाजीका आपके ऊपर चूक है । 5 रावजीने इस वात पर विश्वास नही किया, परंतु अपने सभी कुवरोको गढकी तलहटी ही मे रखा । 6–7 जिस पलग पर रिणमलजी सोये हुये थे उस पर पच्चीस गज लवी पछेवडी (वस्त्र) लपेट दी । 8 १७ घातक ऊपर आये । 9 १६ जने तो पलगकी फेटमे मर गये । 10 रिणधीर चूडावत काम आया पर स्वास निकल जानेके पहले राणाजीके महलो तक जाकर गिर पडा । 11 दूसरा भी साथ वहुत काम आया । 12 और जोधाजी अपने भाईयोके साथ तलहटीमे थे सो निकल भागे । 13 पीछेमे फौज वाहर चढी सो आडावला (अरावली) जाकर उन्हें पहुंची । 14 वहा । 15 रिणमलजीके चौवीसो ही कुवर सकुशल मडोर जा पहुचे ।

अथ नरबद सतावत री वात सुपियारदे लायो तै समैरी

नरबदजी सतावत मडोहर राज करै। ताहरां सीहड सांखलो रूणरै धणी आपरी बेटी सुपियारदेरो नाळेर नरबदजीनू मेल्हियो।[1] ताहरां नरबदजी ऊपर राव रिणमलजी, राणो मोकळ आया।[2] तद लडाई हुई। नरबद घावै पडियो।[3] रिणमलजो मडोहर लियो। जाय गादी बैठा। नरबदनू रांणो मोकळ ले गयो।[4]

ताहरा नरब्रदरो इसो मामलो सुणियो, तद सांखलां सुपियारदेनू नरसिघ खीदावत जैतारणरो धणी सीधळ, तिणनू परणाई।[5]

तठा पछै नरबदजी राणैजी पासै रहै।[6] रांणैजीरै जीव-प्रांण।[7] रांणो बहोत प्यार करै।

ताहरा एकै दिन राणैजीरा ओोळगवां रांणैजीसू मुजरो कियो, ताहरां खंभायची राग कियो।[8] ताहरा नरबद नीसासो नाखियो। ताहरां दीवांण पूछियो। कह्यो–'क्युं नीसासो नाखियो!'[9] ताहरा नरबद कह्यो–'यू ही।' ताहरा दीवाण फुरमायो–'मडोहर वदळै ?[10] ताहरां नरबद कह्यो–'मंडोहर तो म्हारै हीज छै, काकै पासै छै सु।[11] पण और वात छै।'[12] ताहरा दीवाण फुरमायो–'जिकू छै सो कहो[13] ताहरा नरबदजी कह्यो–'राज! म्हारी माग नरसिघ परणियो।[14] साखलै परणाई, तैरो धोखो छै।'[15]

ताहरा रांणैजी तुरत सांखलै सीहडनू ओठी मेल्ह कहायो–'जु

---

1 रूणके स्वामी साखला सीहडने अपनी बेटी सुपियारदेका नारियल नरबदजीको भेजा। 2 उस समय नरवदजी पर राव रिणमलजी और राणा मोकल चढकर आये। 3 नरवद आहत हुआ। 4 नरवदको राणा मोकल अपने साथ ले गया। 5 जब नरबदके सवधमे यह वात सुनी तव साखलोने जैतारणके स्वामी नरसिह खीदावतके साथ सुपियारदेका विवाह कर दिया। 6 जिसके वाद नरवदजी राणाजीके पास ही रहते है। 7 राणाजीके लिए जीव-प्राणकी भाति। 8 एक दिन राणाजीके गायकोने (ढाढियोने) आकर मुजरा किया और खभायची राग आलापी। 9 नि श्वास क्यो छोडा? 10 क्या मडोरके लिए? 11–12 मडोर तो मेरे काकाके पासमे है सो मेरे ही पास है, पर वात कुछ और है। 13 जो वात है सो कह दो। 14 मेरी मगेतरको नरसिह सीघल व्याह गया है। 15 साखलोने उसे व्याह दी, इस वातका धोखा है।

नरवदजीरी माग देवो ।[1] ताहरा साखला कहायो–सुपियारदे तो परणाई, पण बीजी छोटी बेटी छै, सु लेवो ।'[2] ताहरां नरवदनू राणोजी कह्यो–'बीजी छोटी बेटी सीहडजी थानू दीवी छै, जावो, परणोजो ।'[3] ताहरा नरवद कह्यो–'दीवाणजी ! परणीजू, जे म्हनै सुपियारदे आरती करै तो परणीजू ।[4] तद दीवाण फुरमायो–'करैली'[5] पण नरवद कह्यो–'ना, दीवाण ! ओठी मेल्हीजै ।'[6] ताहरा दीवांण ओठी फेर मेल्हियो ।[7] ताहरा साखला कह्यो–'जु, आरती सुपियारदे करसी ।'[8] तद नरवदजीरी जान[9] चढी ।

वासै[10] दीवाणरी सभा माहै वात हुई–'जु सुपियारदे आरतो करसो तो नरवदजी परणीजसी ।'[11] ताहरा नरसिघ सीघळ पण उठै बैठो हुतो ।[12] ताहरां नरसिघ पण वात सुणी । तद नरसिघ कह्यो–इतरो कासू हुवो, जु नरवद जोरावरी आरती करासी ?'[13] तद राणोजीरा लोका कह्यो–'सु तो आरती करसी ?'[14]

ताहरा नरसिघ पण उठैसू चढियो ।[15] घरै आयो । साखलारा पण माणस आया–'जु सुपियारदेनू मेल्हो, वीमाह छै ।'[16] तद नरसिघ मेल्है नही ।[17] अर सुपियारदे कहै–'हू जाईस ।'[18] ताहरां नरसिघ कह्यो–' आरती न करै तो मेल्हा ।'[19] ताहरां सुपियारदे कह्यो–

---

1 तब राणाजीने तुरत ही साखला सीहडको ऊँट सवार भेजकर कहलवाया कि नरवदजीकी मगेतर देओ । 2 साखलोने उत्तर में कहलवाया कि सुपियारदे तो व्याह दी, परतु दूसरी उसके छोटी बेटी और है सो व्याह लें । 3 दूसरी उसकी छोटी बेटी सीहडजीने तुमको दे दी है, सो जाकर विवाह करलो । 4 दीवानजी ! व्याह् लूगा, परंतु इस शर्त पर कि यदि मेरी आरती सुपियारदे करे तो व्याहू । 5 करेगी । 6 नही, दीवान ! ऊंटसवार भेजिये । 7 तब दीवानने फिर ओठी भेजा । 8 आरती सुपियारदे करेगी । 9 बारात । 10 पीछे । 11 व्याहेंगे । 12 उस समय नरसिंघ सीघल भी वहा बैठा हुआ था । 13 ऐसी क्या वात होगई जो नरवद जबरदस्ती आरती करवायेगा । 14 सो तो आरती करेगी ? 15 तब नरसिंह भी वहासे चढा । 16 सांखलोके आदमी भी आगये कि विवाह है, सो सुपियारदे को भेजो । 17 नरसिंह भेजता नही । 18 मैं जाऊगी । 19 यदि आरती तू नही करे तो भेज दू ।

'आरती न करा।'[1] ताहरां कवल वचन दे, गळै हाथ लाइ गई।[2] सुपियारदे पीहर आई।

जितरै जांन पण आई।[3] ताहरां नरबदजी तोरण आया।[4] बाजोट ऊपर आय ऊभा।[5] कह्यो–'आरतीरी तैयारी करावो।' सुपियारदेनूं कह्यो–'जु आरती करै।' ताहरां सुपियारदे कह्यो–'हूं आरती न करूं।' तद छोटी बैहन सुपियारदेरी आरती करणनूं आई।[6] नैं नरबदजीनूं कह्यो–'राज ! सुपियारदे आरती करै छै।'[7] तरा नरबदजी कह्यो–'म्हैंसूं रामत करो छो, जु, हूं आंधो ? आ सुपियारदे नही हुवै ?'[8]

ताहरां आपरा लोकांनूं कह्यो–'नगारो देरावो।'[9] ताहरा सांखलै कह्यो–'बाई ! हणा कुण देखै छै ? म्हांनूं ओ मारै छै।'[10]

ताहरा सुपियारदे आरती करणनूं आई।

ताहरा नरबदजीनूं कह्यो–'राज ! थे तो आरती करावो छो, पण उवै ठाकुर मनै कीवी छै, सु म्हनै दुख देसी तो ?'[11] तै ऊपर नरबदजो कह्यो–'ओ वचन छै। ऊ तोनूं दुख दै तो मोनूं तू खबर करै, हूं आय ले जाईस।'[12]

ताहरां नरसिंघरो नाई हेरां ऊभो हुतो, तै साळूरै सहनाण

---

1 आरती नही करूंगी। 2 कौल वचन दे और गले हाथ लगाकर गई। ('गळै हाथ लाणो' मारवाडी भाषाका एक मुहावरा है, जिसका लक्ष्यार्थ होता है कि जिसके गलेके हाथ लगाया जाता है, उसकी शपथके साथ अमुक काम करने या नही करने की प्रतिज्ञा करना, होता है। गला काट देनेकी नृशंस हत्याके पापका भागी होना भी इसका लक्ष्यार्थ है)। 3 इतनेमे बारात भी आ गई। 4 तब नरबदजी तोरन पर आये। 5 बाजोट (पाटा) पर आकर खड़े हुए। 6 तब सुपियारदेकी छोटी बहिन आरती करनेको आई। 7 श्रीमान् ! सुपियारदे आरती कर रही है। 8 तब नरबदजीने कहा कि मेरेसे ही मजाक कर रहे हो ? क्या मै अंधा हूं ? यह सुपियारदे नही हो सकती ? 9 तब (नरबदजीने) अपने लोगोसे कहा कि नगाड़ा बजवाओ (युद्धकी तैयारी करो।) 10 तब सांखलेने कहा कि बाई ! अब कौन देखता है ? हमको यह मार रहा है। 11 तब (सांखलेने) नरबदजी को कहा कि श्रीमन् ! आप (सुपियारदेसे) आरती तो करवा रहे हैं, परंतु उस ठाकुरने मना किया है और वह फिर मुझे दुःख देगा तो ? (मेरी क्या गति होगी ?) 12 यदि वह तेरे को दुख दे तो मुझको खबर देना, मै आ करके इसे ले जाऊंगा, यह मेरा वचन है।

कियो ।[1] अर नरवदजीरै खवास पासै पिचरको एक मुहगैं मोलरै अतरसू भरियो तैयार हुतो ।[2]

तद नरवदजी हाथ फेर कह्यो–'आ सुपियारदे हुवै ।'[3] तद खवास पिचरको छोड़ियो ।[4] सुपियारदेरै लागो । पछै आरती करी । वीमाह हुवो ।[5] नरवदजी हलांणो ले घरै गया ।[6]

सुपियारदे पिण घरे गई । तद उवै नाई नरसिघनू कह्यो–'राज ! आरती सुपियारदे कीधी ।'[7] ताहरां सुपियारदेनूं नरसिघ पूछियो–'क्यां सांखली ! आरती कीवी ?'[8] ताहरां कह्यो–'मै न कीवी ।' तद नाई कह्यो–'राज ? थां आरती कीवी । मैं साडीरै सहनांण कियो छै ।[9] अर अतररा पण छाटा लागा छै ।'[10] ताहरां सुपियारदे कूडी हुई ।[11]

तहरा नरसिघ ताजणा वाह्या ।[12] मुसका बांधै माचै नीचै नांखी।[13] अर बीजी बैरनू माणस मेल्ह बुलाई ।[14] अर उवैनू कह्यो–'आव, माचै पण सूय ।'[15] तद सुपियारदे कह्यो–'मोनैं मार, वाढ, खुसी पड़ै सु कर, पण म्हे ऊपर बीजी वैर मांचै ऊपर मती बुलावै ।'[16] तोई नरसिंघ मांचै ऊपर सोकनू[17] ले बैठो । ताह्रां सुपियारदे माटीरो नांम लेनैं वोली ।[18] कह्यो–'नरसिंघ सीधळ ! तै करणी हुती सो कीवी,[19] पण जो ह्मै थारै मांचै आऊं तो भाईरै मांचै आऊं ।'[20]

---

1 तव वहा नरसिहका नाई जासूमीके लिये आया हुआ खडा था, उसने सुपियारदेके सालूके निशान कर दिया । (साळू=लाल रग की एक कीमती ओढनी) 2 और नरवदजीके खवासके पाम महंगे मूल्यके अतरमे भरी हुई पिचकारी तैयार थी । 3 तव नरवदजीने हाथ फिराकर कहा—'यह सुपियारदे हो सकती है । 4 तव खवासने पिचकारी छोड दी । 5 विवाह होगया । 6 नरवदजी अपनी पत्नी और दहेज लेकर घर गये । 7 तव उस नाईने नरसिंहको कहा कि आरती सुपियारदेने की । 8 क्यो सांखली ! तूने आरती की ? 9 मैंने साडीके निशान किया है । 10 और अतरके छींटे भी लगे हैं । 11 तव सुपियारदे झूंठी पडी । 12 तव नरसिहने चावुक मारे । 13 मुश्कें वाघ कर खाटके नीचे डाल दिया । 14 दासीको भेजकर दूसरी स्त्रीको वुलाया । 15 और उसको कहा कि आव, खाट पर सो । 16 मुझे मारदो, काटदो, इच्छा हो सो कर, पर मेरे ऊपर खाट पर दूसरी स्त्रीको मत वुलाओ । 17 सौत को । 18 तव सुपियारदे अपने पतिका नाम लेकर वोली । 19/20 कहा कि नरसिंह सींधल ! तेरेको जो करना था सो कर लिया, पर अव जो तेरे खाट पर आऊ तो अपने भाईके खाट पर आऊं ।

तद छोकरी[1] हुती सु जाय सांखलीरी सासूनू कह्यो–'जु सांखली मांहै इसी अवट हुई ।'[2] ताहरां सासू तुरत आई । नरसिंघ परहो हुवौ ।[3] सुपियारदेनू छोड़ाय लीयाई । हमै सुपियारदे गहणा उतार अबोलणै हुई थकी आपरै घरै रहै ।[4]

ताहरां कागद १ लिखियो नरबदजी साम्हां–'जु थांरी[5] आरती रो फळ मोनू ओ मिळियो छै ।' ताहरां कागद नरबदजी पासै गयो । नरबदजी कागद वांचनै कह्यो–'हूं आहीज[6] चाहतो हुतो । हमै हू तयार छूं ।'[7]

ताहरा नरबदजी वैहलिया[8] २ मोल लिया । सो वैहल जोडनै[9] नित फेरै, भूय चाढै ।[10] रातिब दै ।[11] यू करतां तीस कोस जाय अर पाछा आवै, इसी भूय चाढिया ।[12] ताहरां जांणियो–'हमै पक्का हुवा ।'[13]

ताहरां नरबदजी चालिया । अर जैतारणरी वाड़ीरो ठीक कियो हुतो[14] सो दिन बीसमे[15] तो जैतारणरै गोरमैं[16] वाडो छै जेथ[17] आया । ताहरां जिको[18] सुपियारदे रो कागळ ल्यायो हुतो[19], तै साथै मरदांनी पोसाख मेल्ही सुपियारदेनूं ।[20] ताहरां सुपियारदे वागो पैहर, पाघ बांध, हथियार बांध अर नीसरी ।[21] अर गांव मांहै रावळिया रामत रमता हुता ।[22] सीधळांरो साथ रमत देखणनू गयो हुतो ।[23] अर तै वेळा सुपियारदे नीसरी । जाहरां सुसरो बैठो हुतो, सु आखियां आंधो हुतो, तैरै आगाकर नीसरी ।[24] ताहरा खीदै कह्यो–

---

1 दासी । 2 साखलीकी ऐसी बुरी दशा हुई है । 3 नरसिंह दूर हो गया । 4 अब सुपियारदे सभी गहने उतार और अबोलना होकर अपने घरमे ही रहती है । 5 तुमारी । 6 यही । 7 अब मै तैयार हू । 8 बैल, नाटे कदके बैल । 9 बहलीमे जोडकर । 10 अधिक दूर जानेका अभ्यास कराते हैं । 11 रातब खिलाते है । 12 इतनी दूरी पर जाकर वापिस आ'जानेके अभ्यस्त कर दिये । 13 तब जाना कि अब पूरे तैयार हो गये । 14 जैतारनकी वाडीमे ठहरनेका तय किया था । 15 बीसवें दिन । 16 गावके बाहरका वह मैदान जहा गावका गो-समूह जगलमे चरने जानेको इकट्ठा होता है । 17 जहा । 18 जो । 19 पत्र लाया था । 20 उसके साथमे सुपियारदेको मर्दानी पोशाक भेजी । 21 तब सुपियारदे बागा पहिन और पगडी और हथियार बाध कर निकल गई । 22 गावमे रावल लोग तमाशा (खेल) कर रहे थे । 23 सभी सींघल खेल देखनेको गये हुए थे । 24 आखोसे अधा उसका ससुर बैठा हुआ था, उसके आगे होकर निकली ।

कुण गयो रे ?'[1] ताहरां चरवैदार कह्यो–'राज ! अठै तो को नही ।'[2] ताहरा खीदै कह्यो–'नही क्यां ? कोई तो गयो ?'[3]

यों कहि, खीदो तो भीतर रावळा[4] माहै गयो । आपरी वैर[5] पासै गयो । अर बैरनू कह्यो–'ऊठि, अर वहू री खवर कर ।' ताहरा वैर कह्यो–'क्यु ?' ताहरा खीदै कह्यो–'परणी आई तद सुपियारदेरै पग रो मचको सुणियो हु तो, सु आज वळै सुणियो ।[6] ताहरा जाणां छां, नीसरी ।[7] उसडो[8] पग सुणियो ।' तद छोकरी मेल्ही ।[9] कह्यो–'जु वहूरी खवर लै[10] ।' ताहरा सुपियारदे जावती, चोरसौ मांचै ऊपर ढाळ, सीरखरो वीटो कर, तै ऊपर चोरसौ ढाळियो हुतो ।[11] ताहरा छोकरी देख जायनै कह्यो–'वहुजी तो पोढिया छै ।'[12] ताहरा खीदै आपरी बैरनू कह्यो–'छोकरीरो काम नही, तू जायनै देख ।[13] ताहरां सासू जायनै देखै तो सीरख पडी छै । पाछी आयनै कह्यो–'वहू नीसरी ।'

अर सुपियारदे नीसरी सु रावळियांरी रमत हुती तठै गई ।[14] ताहरा रावळियो थाळी फेरै हुतो ।[15] ताहरा सुपियारदे आघी हुय थाळी माहै मोहर घाती, अर चालती हुई ।[16] आगै नरबदजी वैहल लिया ऊभा हुता ।[17] सुपियारदे तो जाय वैहल वैठी ।

अर अठै रावळिये आण थाळी सिरदार आगै मेल्ही ।'[18] ताहरा सिरदार कह्यो–'आ मोहर के घाती ।'[19] ताहरां रावळिये कह्यो–'राज !

---

1 अरे ! कौन गया है ? 2 यहा तो कोई नही । 3 नही क्यो ? कोई तो गया है ? 4 अन्तःपुर । 5 अपनी स्त्री । 6 खीदेने कहा—विवाह करके जव प्रथम वार आई थी तव उसके पावका झटका (चलनेकी ठसक) सुना था, वही आज पुन सुनाई दिया । 7 इसलिए अनुमान होता है कि निकल गई । 8 वैसा । 9 तव दासीको भेजा । 10 वहूकी खवर कर । 11 सुपियारदेने जाते समय खाटके ऊपर रजाईका लवा वेष्टन वनाकर और उसके ऊपर चौरसा (चद्दर) डाल दिया था । 12 वहूजी तो सोई हुई हैं । 13 दासीका काम नही, तू खुद जाकर देख । 14 सुपियारदे घरसे निकल कर जहा रावलिये रमत कर रहे थे वहा गई । 15 उस समय रावलिया पैसोके लिए थाली फिरा रहा था । 16 तव सुपियारदे, आगे वढकर रावलियेकी थालीमें एक मुहर (स्वर्ण मुद्रा) डालकर चलती वनी । 17 आगे नरवदजी वहली लिए खड़े ही थे । 18 और इधर रावलियेने पैसे इकट्ठे की हुई थाली सरदारके सामने रखी । 19 यह मुहर किसने डाली ?

हेकै मोटियार घाती ।'[1] ताहरां सीधळ सारा ही ऊठिया । कह्यो–'आ तो कोई भली वात नही !'[2] रांमत पूरी कीवी ।[3]

इतरै[4] घरेसू आदमी पण आयो कह्यो–'सुपियारदे नीसरी !' ताहरां गांम मे ढोल हुवो ।[5] सीधळ चढिया । आगै वैहलरा चीला दीठा ।[6] ताहरां कह्यो–'नरबद लिये जावै छै ।' आगै सुपियारदे वैहल बैठी जावै । वांसै वाहर हुई ।[7]

आगै जावतां लूणी नदी आई, सो नदी पूर ।[8] ताहरां नरबदजी कह्यो–'सुपियारदे ! नदी जोर छै, उतर सगां नही ।'[9] ताहरां सुपियारदे कह्यो–'नदी मे नाखो ।[10] नदीरै सिर चढो, पण वासलानू आपड़ण न देवो ।'[11] ताहरां वैहल नदी मे नांखी । वैहलिया सूसाडा मारता पार नीसरिया ।[12] ताहरा सींधळां पण घोडा नदी में घातिया ।[13] ताहरां भाख धिवती नरबदजी तो घरै आया ।[14]

आसकरण चढियो हुतो–'जु नरबदजी अजू[15] न आया ।' सु आसकरणजी सौ सीधळां साफळो हुवो ।[16] वीच मे आसकरणजी नरबदजी सौं पण मिळिया हुता ।[17] ताहरां नरवदजी कह्यो–'आसकरण तू सुपियारदेनू ले जा, अर हू काम आईस ।'[18] ताहरां आसकरण कह्यो–'आप तो पधारो, हू काम आऊं छूं ।'[19] ताहरा आसकरणजी सीधळासू वेढ कर काम आया ।[20] नरबदजी घरै आया । सीधळ पण पाछा घिरिया ।[21]

---

1 श्रीमन् ! एक युवकने डाली थी । 2 यह तो कोई अच्छी वात नही हुई । 3 खेल समाप्त किया । 4 इतनेमे । 5 तव गावमे ढोल वजवाकर ढिढोरा पीटा गया । 6 आगे वहलीके चीले देखे । (चीला = रथ, गाडी आदिके चलनेसे जमीन पर वनी हुई पहियोकी रेखाए ।) 7 पीछे वाहर चढी । 8 आगे जाते हुए लूनी नदीको पहुचे, सो नदी पूर वह रही है । 9 सुपियारदे ! नदी पुर-जोर है, पार नही हो सकेंगे । 10 सुपियारदेने कहा— वहली नदीमे डाल दो । 11 नदीके भेंट चढ जाय, परतु पीछे वालोको पहुचने न दे (उनके हाथ न लगें) । 12 तव वहलीको नदीमे डाल दिया, वैल सूसाडा मारते हुए (पुरजोश और पुरजोरसे) पार निकल गये । 13 तव सीवलोने भी नदीमे घोडे डाले । 14 तव प्रभात होनेके समय नरवदजी तो घर आ गये । 15 अभी तक । 16 सो आसकरणजीसे सीवलोकी झपट हो गई । 17 मिले थे । 18 और मैं काम आऊगा । 19 आप तो पधार जाय, मै काम आ रहा हू । 20 लडाई कर काम आये । 21 सीवल भी वापिस लौट गये ।

ताहरां अठै आसकरणजीरी वहू सती हुवण लागी। ताहरा कह्यो–'जु जेरै वदळै म्हारो धणी काम आयो, सु देखां तो खरी ?'[1] ताहरा आसकरणजीरी वहू सुपियारदेनू दीठी ।[2] तद आसकरणजीरी वहू कह्यो–'जु रजपूतानै मरणो देणो छै, पण जेठजी विसावण सखरी कीवी ।'[3] पछै आसकरणजीरी वहू तो आसकरणजी वांसै सती हुवा ।

अर सीधळ पाछा वळता एकै गामरै ताळाव आयनै उतरिया ।[4] ताहरां एक पिणिहारी तळाव आई, अर कह्यो–'वीरा ! बैर किण सिरदाररी गई ?'[5] ताहरा नरसिघ सीधळ घोड़ो पगा माहै घातनै वड़ री साख पकड अर हीडियो[6], अर कह्यो–'जु बैर म्हारी गई ।[7] जो बळ सौ जाहि तो न जावण देऊ, पण बैरारो सभाव छै, रोकी किणही री नही रहै ।'[8]

ताहरां एकै बीजी कह्यो–'ना, वीरा ! बैर न जावै, पण तै साथै वाढ चाढो छै, अर घणी अवट कीवी छै । तैसू थाहरो बैर गई, नहीतर काहिणनू जावंत ?'[9] पछै सीधळ घरै आया ।

नरबदजी कायलाणै राज कियो ।[10]

इति वात नरवदजी सुपियारदे लाया तै समै री सपूर्णम्

---

1 जिस (स्त्री)के लिये मेरा पति काम आया है, उसे देख तो लू ? 2 देखा । 3 राजपूतोके लिये लडकर मरना तो एक ऋण (उतारने के) समान है, परतु जेठजी (नरवदजीने) शत्रुता भी अच्छी की है । 4 सीधल लौटते हुए एक गावके तालाव पर आकर ठहरे । 5 वीरा (भाई) ! किस सरदारकी स्त्री घरमे भाग गई है ? 6–7 तव नरसिह सीधलने, जिस घोडे पर सवार था उसको अपने दोनो पावोमे डालकर और वडकी शाखाको पकड कर घोडे सहित झूला (पेंग लिया) और कहा कि मेरी स्त्री भाग गई है । 8 यदि वल करके जाना चाहे तो नही जाने दू, पर स्त्री जातिका स्वभाव ही ऐसा होता है, जो किसी की रोकी रुकी नही रहती । 9 तव एक दूसरी स्त्रीने कहा—नही वीरा ! स्त्री कभी घरसे नही जाती, पर तूने उसका घातक अपमान और दुर्दशा की है, जिससे तेरी स्त्री गई है, नही तो किसलिये जाती ? 10 नरवदजीने कायलानामे राज्य किया। (कायलाना मेवाडका एक ठिकाना है)

अथ वात नरबद रांणैजीनू आंख दीवी तियै समै री लिख्यते

जद[1] राव रिणमलजी नै[2] राणो मडोहर ऊपर आया, ताहरां नरबद सांम्है[3] जाय लडाई कीवी। तद नरबदजी खेत पडिया।[4] तद पडतांरै तरवार डावी[5] आख ऊपर पड़ी, तैसू[6] डावी आख फूटी। इतरै[7] रांणो मोकल आयो। ताहरां नरबदनू घावा पड़ियो देख उठायो।[8] रणमलजी मडोहर टीकै बैठो।

अर नरबदजीनू रांणोजी चीतरोड[9] ले गया। पाटा बाधा। घाव सारा किया।[10] अर नरबदजीनू लाख रुपियारो पटो दियो कायलांणो।[11] ताहरा नरबदजी कायलांणै रहै।

वांसै रांणा मोकलनू पण चाचै मेरे मारियो, ताहरा रांणो कुंभो टीकै बैठो।[12] पछै कुभै राव रिणमलजीसू चूक कर, राव रिणमलजीनू मारिया।[13] तद राठवड़ासू वैर पडियो।[14]

तद नरबदजी तो कुभै पासै हीज रहिया।[15] कुभो नरबद सौ वडो प्यार करै।

एक दिन दीवाण दरबार कर बैठा छै। ताहरां दरबार मांहै नरबदजीरी लोकां सुपारस कीधी।[16] कहियो–'आज धरती माहै नरबदजी सारीखो रजपूत कोई नही।[17] नरबद वडो रजपूत छै।' ताहरा राणैजी कहियो–'इतरो कासू छै सो वखांणो छो?[18] ताहरां

---

1 जब। 2 और। 3 सम्मुख। 4 तब नरबदजी घायल होकर धराशायी हुए। 5 बाँई। 6 जिससे। 7 इतनेमे। 8 तब नरबदको घायल पडा हुआ देखकर उठा लिया। 9 चित्तौड। 10 घाव अच्छे किये। 11 और नरबदजीको एक लाख रुपयेकी कायलाणाकी जागीरीका पट्टा कर दिया। 12 पीछे राणा मोकलको भी चाचा और मेरेने मार दिया, तब राणा कुभा गद्दी पर बैठा। 13 पीछे कुभेने राव रिणमलजीसे चूक करके उन्हे मार दिया। 14 तब राठौडोंमे शत्रुता हो गई। 15 तब नरबदजी तो कुभेके पास ही रह गये। 16 तब दरबारमे लोगोने नरबदजीकी सिफारिश (प्रशसा) की। 17 आज देशमे नरबदजीके समान कोई राजपूत नही है। 18 ऐसी क्या बात है सो इतनी प्रशसा कर रहे हो?

लोकां कहियो–'दीवांण ! नरबद मागिया क्यु ही राखै नही ।'[1]

ताहरा राणै कुभै कहियो–'म्हे मागा सो नरबद देसी ?'[2] ताहरां फेर लोका कहियो–'जोवै दीवाण ! देसी ।'[3] तिके दिन नरबदजी रांणोजीरै मुजरै ना आया ।[4] डेरै हुता ।[5]

तद राणौजी आपरो खवास नरबदजीरै डेरै मेल्हियो नै खवासनू कहियो–तू यू कहीजै–'दीवाण था पासा आख मागी छै ।'[6] खवास नरवदजीनू कहियो–'दीवाण थां पासा आख मागी छै ।' ताहरां नरवदजी कहियो–'भला, देस्या ।'[7] ताहरा खवासरी निजर टाळ पसवाड़ै भळको पडियो हुतो, तैसू उकासनै डोळो रुमाल मे घाल दीन्हो ।[8] ताहरां खवासरो मुह भूडो हुवो ।[9] दीवांण कहियो हुतो खवासनू–'नरबद आख काढै तो मतां काढण देई ।[10] सु नरवदजी तो आंख काढि हाथ दीधी ।[11] खवास ले जाय आख दीवाणनू दीधी ।

ताहरा दीवाण आंख देखनै वडो सोच कियो ।[12] घणा पिछताया ।[13] पछै दीवाण नरवदजीरै डेरै पधारिया, वडो सिसटाचार पडवज कियो ।[14] पछै नरबदजीनू राणैजी दोढो पटो दियो ।[15]

ईयै विध राणैजीनू नरवदजी आख दीधी ।[16]

इति नरवदजी राणै कुभैनू आंख दीधी तिणरी वात सपूर्ण

---

1 तव लोगोने कहा कि दीवान ! नरवद मागने पर कुछ भी अपने पास नही रखता । 2 हम मागें सो नरवद दे देगा ? 3 तव लोगोने कहा चिरजीवी रहो दीवान ! देगा । 4 उस दिन नरवदजी राणाजीको मुजरा करनेके लिये नही आये थे । 5 अपने डेरे (मकान) पर ही थे । 6 तव राणाजीने अपने खवासको नरवदजीके डेरे भेजा और खवासको कहा कि तू यो कहना कि दीवानने तुम्हारे पाससे आख मगवाई है । 7 अच्छी वात है, देगे । 8 तव खवासकी नजर वचाकर एक ओर जो भळका पडा था, जिससे आखका कोया निकाल करके रुमालमे डालकर दे दिया (भळको=एक शस्त्र) । 9 खवासका मुह उतर गया । 10 दीवान (राणाजीने) तो उसे कहा था कि यदि नरवद आख निकाले तो मत निकालने देना । 11 सो नरवदजीने तो आख निकाल कर हाथमे देदी । 12 दीवानने आख देखकर वडा फिक्र किया । 13 वहुत पश्चाताप किया । 14 फिर दीवान नरवदजीके डेरे पर गये, वडे शिष्टाचार और सहानुभूतिके साथ उनके वीरतापूर्ण त्यागकी प्रशसा एव दुख प्रगट किया । 15 पीछे राणाजीने नरवदजीका पट्टा ड्योढा कर दिया । 16 इस प्रकार नरवदजीने राणाजीको आख निकाल कर देदी ।

अथ वात राव लूणकर्णजीरी

लूणकर्णजी जेसळमेररी फतै कर पाछा पधारिया।[1] ताहरां लोकां कह्यो–'हिवै एक वार बीकानेररै कोट माहै पधारो।[2] भला सवणां पधारिया छो।'[3] तद रावजी कह्यो–'न जावां।'[4] रावजी वात मांनी नही।[5] दिलीनूं चढि चलाया। तद द्रूणपुर आय डेरा किया। पछै आ जायगा देख अर कह्यो–'आ तो जायगा इसी छै जु अठै कोई कुवर राखीजै।'[6] ताहरा कल्यांणमल उदैकरणोत वीदावत हुतो, तियै सुणियो।[7] ताहरा जाणियो-'जु आ वात तो बुरी हुई।'[8] यूं करता राव लूणकर्णजी तो दिलीनूं आघा हालिया।[9] कल्याणमल वीदावत हरोळ कियो।[10] अर पठांणारी फोजा साम्ही आई, तियै माहै रायमल कछवाहो हरोळ हुतो, सु रायमल कल्याणमलरो नानो हुंतो।[11] अर दिली पातसाही पठाणारी हुती।[12] ताहरा सीवाडो घातता हुता सु राव लूणकर्णजी मांनी नही। कह्यो–'नारनोळ सीव घातो, नारनोळ लेस्या।'[14] सु ईंया आपस माहै वात कर फोज मे भगी घाती।[15] कल्यांणमल उदैकरणोत रायमल कछवाहैनूं कह्यो–'जु थे घोडा घातो।[16] म्हे पालसा। पासो दे जास्या।'[17] ताहरा उवां घोड़ा

---

1 राव लूणकर्ण जैसलमेरकी फतह कर वापिस आये। 2–3 तब लोगोने कहा कि 'अच्छे शकुनोसे पधारे है तो अब एक बार बीकानेरके गढमे पधारे।' 4 तब रावजीने कहा—'नहीं जायेगे। 5 रावजीने लोगोकी बात मानी नही। 6 फिर इस जगहको देख कर कहा—'यह तो जगह ऐसी है सो यहा कोई अपने कुवरको रख देना चाहिये।' 7 इस वातको वीदावत कल्याणमल उदयकरणोतने सुन लिया। 8 उसने विचारा 'यह वात तो बुरी हुई। 9 राव लूणकर्णजी तो दिल्लीके लिये आगे चले। 10 कल्याणमल वीदावतको अपनी सेनाके हरोलमे किया। 11 और उधर पठानोकी सेना सामने आई जिसमे रायमल कछवाहा हरोलमें था। रायमल कल्याणमलका नाना था। 12 दिल्लीमे बादशाहत पठानोकी थी। 13 उस समय सीमाकन हो रहा था पर राव लूणकर्णजीने इस सीमावधीको स्वीकार नही किया। 14 और कहा कि 'नारनोल हम लेंगे नारनोल तक सीमा निश्चित करो।' 15 सो इन्होने (रायमल और कल्याणमलने) परस्पर परामर्श कर सेनामे फूट डाल दी। 16 कल्याणमल उदयकरणोतने रायमल कछवाहेको कहा—तुम घोडे (सीमा चिन्ह) गाड दो (तुम घोडे डाल दो)। 17 हम तुमको रोकेंगे और तुम को मौकाभी देते जायेंगे।

नाखिया।[1] कल्यांणमल टळ गयो, लडाई हुई।[2] राव लूणकर्णजी काम आया। कुंवर प्रतापसिंघजी कांम आया।

पछै राव जैतसिंघजी टीकै बैठा, कछवाहा पवाडो गमायो।[3] ताहरां जैतसिंघजी फोजां कीवी। रायमल कछवाहै ऊपर गया। कछवाहा तो आगासू लड़ाई कर सगै नही।[4] पछै कछवाहा राव जैतसिंघजीनू वीमाह[5] ५ (पांच) दिया। राजा प्रथीराजरी बेटी कुवर ठाकुरसीनू दीनी। रायमलजी कछवाहै री वेटी रायमल मालदेवोतनू परणाई[6]। वीमाह एक वैरसी लूणकरणोतनू दियो। वीमाह एक महेस प्रतापसिंघोतनू दियो।

। इति रावजी लूणकर्णजीरी वात सपूर्ण ॥

---

1 तब उन्होंने घोड़े गाड़ दिये (घोड़े झोंक दिये) 2 लड़ाई हुई तब कल्याणमल ([illegible]) निकल गया। 3 पीछे जब राव जैतसिंह टीके बैठा, तब कछवाहोंने प्रवाडा गमा दिया (युद्धमें हार कर अपनी कीर्ति खो दी)। 4 रायमल कछवाहे पर चढ़ करके गये तो [illegible] ऐसी स्थितिमें डाल दिया कि वह फिर आगे लड़ाई कर ही नहीं सके। (कछवाहे [illegible] लगने।) 5 विवाह। 6 ब्याही।

अथ वात मोहिलां री

मोहिल सुरजनोत चहुवाण छापुर-द्रोणपुर धणी हुवो तिणरी हकीकत ।[1]

चहुवाण नै मोहिला विचै इतरी पीढी[2]—

१ चहुवांण ।

२ चाह, चहुवांण रो बेटो ।

३ घणसूर* रांणै चाह रो बेटो । गग पिण कहांणो ।[3]

४ रांणो इद्रवीर ।

५ राणो अरजन ।

६ रांणो सुरजन ।

७ राणो मोहिल । रांणा सुरजनरो बेटो । मोहिलरै पेट रा मोहिल कहांणा ।[4] मोहिल छापर-द्रोणपुररो धणी हुवो । मोहिलसू आ धरती मोहिलावाटी कहांणी ।[5] सदा छापररो परगनो कहीजतो ।[6]

पाडवा कैरवांरी वार मांहे, तद छापररै परगने द्रोणाचारज आयो ।[7] आपरै नांवै सहर छापर ता कोसै २ वसायो ।[8] काळो-डूंगर कहीजै छै तिणरी जडा सहर वसायनै द्रोणपुर नांम दिरायो ।[9] द्रोणपुररी बे हाटां° सूधी आ ठोड लियै रहै द्रोण ।[10] द्रोणपुर काळै

---

* चार अन्य प्रतियोमे से दो प्रतियो मे, घणर' एक मे 'घणसूर' और एक मे 'वणसूर' नाम भी लिखे मिलते है ।

° 'वेहटा' और 'वैहाटा' पाठ भी कई प्रतियोंमे मिलता है ।

---

1 सुरजनका वेटा मोहिल चौहान छापुर-द्रोणपुरका स्वामी हुआ उसके सम्बन्धकी हकीकत । 2 चौहान और मोहिलो के वीच (मोहिल और उसके वशजोमे) इतनी पीढियें है । 3 घणसूर राणा चाहका वेटा । इसका नाम गग भी कहलवाया । 4 मोहिल राणासे उत्पन्न उसके वशजोकी अल्ल मोहिल कहलाई । 5 मोहिलके नामसे इस धरतीका नाम 'मोहिलावाटी' प्रसिद्ध हुआ । 6 पहले इस धरतीको 'छापरका परगना' ही कहा जाता था । 7 पाडवो कौरवोके समयमे महर्षि द्रोणाचार्य छापरके परगनेमे आये थे । 8 छापर मे दो कोस पर अपने नामसे शहर वसाया । 9 'काळो डूगर' (काला पहाड)के नामसे प्रसिद्ध पहाड है, उसकी तलहटीमे शहर वसा कर द्रोणपुर नाम रखा । 10 द्रोणने द्रोणपुरके दो वाजारो (दो उप-वस्तियो) जितनी इस जगहको घेर रखा है ।

डूंगरियां नव काळै-डूगर वसियो छै ।[1] सु काळै-डूगर लागती डूगरी ८ तथा ९ छै ।[2] डूगरिया ९ नव काळै-डूगर लागती द्रोणपुर वसायो ।[3]

१ काळो-डूगर	५ देवीजीरी डूगरी
२ विनायकरो डूगरी[4]	६ कोढणोरी डूगरी
३ सालेररी डूगरी	७ चरलारी डूगरी
४ भैंसे-सिरारी डूगरी	८ चिमररी डूगरी

छापररै परगनै गाव १४०० लागै । छापररै परगनै मांहै इतरी ठोड—'छापर, लाडणू, करणावटी ।[5] करणावटी रिणीरी पैली तरफ छै ।[6] किरतावटी—किरता आहेडोतरी ठोड ।[7]

द्रोणपुर, भारद्वाजरो बेटो द्रोणाचारजनू थो, पाडवां कैरवारी वार[8] माहै । पछै पमार डाहळियानू हुतो द्रोणपुर ।[9] डाहळिया सिसपाळरांनू छापर-द्रोणपुर घणा दिन रह्यो ।[10] डाहळियारो छापर वडी साहिबी थी । नै वागडी रजपूतारी भोम नागोर थी ।[11] सु नागोररी धरती माहै वागडियारो वडो मेवासो ।[12] वागडी वडा रजपूत नै वडा राहवेधी था ।[13] सु डाहळियां नै वागड़ियां माहो माहि खिसण थी ।[14] सु वागडिया डाहळियांसू चूक विचारियो ।[15] वागडी कटक करनै डाहळिया ऊपर आया ।[16] डाहळिया चलाय साम्हा

1 काले डूगरीकी नौ काली डूगरियो (पहाडियो) मे द्रोणपुर बसाया गया है। 2 उस काले डूगरसे लगती हुई डूगरी (छोटी पहाडियें) ८ तथा ९ हैं। 3 काले डुगरसे लगती हुई उन नौ डूगरियोके पास द्रोणपुर वसाया गया। 4 गणेशजीकी पहाडी। 5–6–7 छापरके परगनेमे इतने स्थान प्रसिद्ध है—छापर, लाडनू, करणावटी और किरतावटी। करणावटी रिणी गांवके उस ओर आई हुई है और किरतावटी, आहेडके पुत्र किरताकी जागीरीकी ठोडको कहा जाता है। 8 पाडवो-कौरवो के समयमे द्रोणपुर भारद्वाज ऋषिके पुत्र महर्षि द्रोणाचार्यके अधिकारमे था। 9 फिर द्रोणपुर परमार डाहलियेके अधिकारमे हो गया था। 10 शिशुपालके वशज डाहलियेके अधिकारमे छापर और द्रोणपुर बहुत दिन तक रहे। 11 और नागोर वागडी राजपूतोकी भूमि थी। 12 नागोरकी धरतीमे वागडियोका बडा मेवासा। (मेवासो = धाडा डालने वालो व लूट-पाट करने वालोके लिये रहनेका सुरक्षित स्थान।) 13 वागडी राजपूतोका बडा समूह और सभी राहवेधी। (राहवेधी = १ दूरदर्शी। २ युद्धागणी। ३ युद्ध विशेषज्ञ।) 14 डाहलियो और वागडियोमे परस्पर शत्रुता चल रही थी। 15 वागडियोने डाहलियोको मारनेका विचार किया। 16 वागडी सेना लेकरके डाहलियोके ऊपर चढ आये।

आया ।[1] वडी वेढ कीवी ।[2] डाहळियारा मांणस ६०० कांम आया। बाकीरा नास गया ।[3] धरती वागड़िया लीवी ।[4] डाहळिया थी छूटी ।[5] वागड़िया धरती सारी वसाई ।[6] वडी जमीयत कीवी। वागड़ी जोर थका वहै ।[7]

हमै वागडिया तीरा धरती मोहिल सुरजनोत लीवी छै, तिणरी हकीकत[8]—

चहुवांणारी चौवीस साख कहीजै । राणो सुरजन पूरब दक्षिण वीच श्रीमोररो परगनो कहीजै छै, तठै रांणै सुरजनरो राजस्थान ।[9] सुरजनरी वडी साहिबी छै । तद धरती मांहै चहुवांण घणी धरती भोगवै ।

सु रांणा सुरजनरो वडो बेटो मोहिल, तिणसू सुरजन मया न करै ।[10] माहो माहि रस काइ नही ।[11] नै मोहिल वडो रजपूत, सु बाप सौं वणै नही ।[12]

ताहरां मोहिल दीठो—'काइक और नवी धरती खाटू ।[13] तिण ऊपर मांणस दोय रूडा आपरा मेल्हिया ।[14] कह्यो—'इण तरफरी गिरवा जोइ आवो ।[15] काय धरती आपणै लेणरी काबू होय तो देख आवो ।'[16] सो उवै[17] रजपूत धरती जोवता-जोवता[18] इण तरफ आया । सु विचली ठोड़ देखी । वयु ही एक[19] धरती भाया-बधां

---

1 डाहलिये भी सम्मुख चले आये । 2 वडी लडाई हुई । 3 डाहलियोके ६०० आदमी काम आये । शेष भाग गये । 4 धरती पर वागडियोने अधिकार कर लिया । 5 डाहलियोके अधिकारसे धरती जाती रही । 6 वागडियोने सब धरतीको वसाया । 7 वागडियोकी स्थिति सबल हो गई है । 8 अब वागडियोमे मोहिल सुरजनोतने धरती ले ली है, उसकी हकीकत इस प्रकार है । 9 पूर्व और दक्षिणके बीच जो श्रीमोरका परगना कहा जाता है, वहाँ राणा सुरजनकी राजधानी । 10 राणा सुरजनका बडा बेटा मोहिल जिसके साथ सुरजन कृपा भाव नही रखता है । 11 परस्पर प्रेम नही । 12 मोहिल बडा वीर राजपूत परतु बापसे बनता नही । 13 तब मोहिलने देखा कि कोई और नई धरती प्राप्त करें । 14 जिसके लिए अपने दो अच्छे आदमियोको भेजा । 15 इस तरफ के इर्द-गिर्दका प्रदेश देख कर आओ । 16 कोई धरती लेकर कब्जा करने जैसी हो तो देख आओ । 17 वे । 18 देखते देखते । 19 कुछ, कुछेक ।

हेठै ।[1] क्यु हेक जोरावरां हेठै ।[2] नै छापर द्रोणपुर अै[3] रजपूत आया । आ ठोड सखरी दीठी ।[4] अर सहल हीज दीठो ।[5] कोट मांहै घणा सा आदमी को नही । ताहरां रजपूता आ ठोड़ हेरी ।[6] हेरनै पाछा गया ।[7] जायनै मोहिलनू हकीकत मालम कीवी ।[8]

तिण ऊपर मोहिल धरतीरो साथ भेळो कियो ।[9] वागड़ी हजार पाच माणसारा धणी था ।[10] नै मोहिल माणस हजार पनरै[11] तथा सतरै[12] भेळा किया । सु मोहिल तीरै[13] खजानो नही, नै धरती अळगी ।[14] तिणरो वडो सोच हुवो ।[15] तिण ऊपर रांणा सुरजनरै दरबार माहै वोहरो सतन वडो माणस हुतो, तिणनू तेडनै मोहिल कह्यो[16]–'म्है एक ठोड लेणी तेवडी छै[17], तिण सारू कटक भेळो कियो छै, पिण खावणनू क्यु ही नही छै, थे म्हांरी गरज सारो, करज द्यो ।'[18] ताहरा संतन वोहरै कह्यो–'थानै पईसा कहसो सो देईस ।[19] थे तयारी कर चढो ।' सतन वोहरै खत कियो । खरच दियो । हमै सतननू साथ लेनै चालिया ।[20] उठारा चालिया अजाणजकरा मोहिल छापर-द्रोणपुर ऊपर आया ।[21] वागड़ी पण सारो साथ लेनै बारे आया ।[22] वडी वेढ[23] हुई । माणस हजार १००० दोनू तरफांरा कांम आया । तिण माहै[24] वागडी घणा सिरदार कांम आया । वागडियां रा पग छूटा ।[25] वागडी नाठा ।[26] धरती मोहिलरै आई ।[27]

---

1 भाई-बंधुओंके अधिकार मे । 2 कुछेक बलवानोकी दवाई हुई । 3 ये । 4 यह जगह अच्छी देखी । 5 और अधिकार करनेमे सरल दिखाई दी । 6 तब राजपूतोंने इस जगहको लेना निश्चय किया । 7 निश्चय कर वापिस लौटे । 8 मोहिल के पास जा करके उसे सब हकीकतसे वाकिफ किया । 9 जिस पर मोहिलने अपनी धरतीके मनुष्योको इकट्ठा किया । 10 वागडी पांच हजार मनुष्योके स्वामी थे । 11 पन्द्रह । 12 सत्रह । 13 के पास । 14 दूर । 15 इसकी वडी चिन्ता हुई । 16 जिसको बुला कर मोहिलने कहा । 17 मैंने एक जगहको लेनेका इरादा किया है । 18 तुम हमारी जरूरत पूरी करो और कर्जा देओ । 19 जितना कहोगे उतना पैसा तुमको दूगा । 20 संतन वोहरेने खत लिखवाया । अब संतनको साथमे लेकर चले । (वोहरो = ऋण दाता । खत = ऋण पत्र) 21 वहांसे चल कर अचानक छापर द्रोणपुर ऊपर मोहिल चढ आये । 22 वागडी भी अपना सब साथ लेकर बाहर आये । 23 लडाई । 24 जिसमे । 25 वागडियोंके पाव छूट गये । 26 वागडी भाग गये । 27 धरती मोहिलके अधिकारमे आ गई ।

मोहिलरी फतै हुई। मोहिल सारी धरती मार मनाई।[1] मोहिल छापर टीकै वैठो। रांणारी पदवी दीवी। मोहिल आपरी वडी जमीयत[2] कीवी। गांम १४०० वसाया। वडी धरती खाटी।[3] वोहरै सतननू रांणै मोहिल सुरजनोत लाडणू परगना मांहै छापरथी[4] कोस ७ गाम कसूंवी छै, तिका गाम ५ सू दीवी।[5] नै कह्यो-'थे कसूवी जायनै आपरी वसी करावो।'[6] वोहरो संतन कसूबी वसियो।[7] वडी वसती कीवी। वोहरै संतन १ देहुरो शिखरवंध श्री ठाकुरांरो करायो।[8] नै वावडी[9] १ वधाई छै। तिका वावड़ी अजेस तांही संतनरी कहीजै छै।[10]

वागडियां तीरा मोहिल धरती लीवी छै। मोहिल नै देवराम वीदावत मांहोमांहि वेढ कीवी छै, तिणरी साखरा वे-अखरी छंद चारण चांपै सामोररा कह्या छै, तिणमे साख आंणी छै।[11]

मोहिलरै पेटथी मोहिलारी साख चहुवाणां मांयसू नीसरी।[12]

---

1 मोहिलने सारी धरतीको वलपूर्वक अपने वशमे किया। 2 सुरक्षा और राज्य कारोवारके लिये घोडो और ऊटो सहित सवारोका मुकम्मल थाना। 3 वडी धरतीको प्राप्त किया। 4 छापरसे। 5 जिसको ५ गावोके साथ प्रदान किया। 6 तुम कसूवी गावमे जाकर अपनी वसी (वस्ती) कायम करो। 7 वोहरा सतन कसूवीमे जाकर बसा। 8 वोहरे सतनने एक शिखरवध मदिर श्री ठाकुरजी (श्रीकृष्ण)का वहा वनवाया। 9 वापिका। 10 वह वावली अभी तक 'सतनकी वावडी' कही जाती है। 11 मोहिल और देवराम वीदावतने आपसमे लडाईकी जिसकी साखके 'वे-अखरी' छद चारण चापेके रचे हुए हैं, जिनमे इस लडाईका प्रामाणिक वर्णन किया गया है। 12 मोहिलके वशसे चौहानोमे से मोहिलोकी शाखा निकली।

मोहिलांरै पीढियांरी हकीकत[1]

१ मोहिल रांणा सुरजनरो बेटो

२ रांणो हरदत्त

३ राणो वैरसी

४ राणो वालहर

५ राणो आसल

६ रांणो आहड

७ रांणो रैणसी

८ रांणो साहणपाळ

९ राणो लोहट

१० रांणो बोवौ

११ राणो वेग

१२ राणो माणकराव

१३ रांणो सावतसी, अर १३ रांणो सागो
दोनूं भाई मांणकरावरा बेटा।[2]
सांगो राणो राव लखणसेनरो दोहीतरो।[3]

१४ मोहिल अजीत सावतसीओत।[4] सांवतसी माणकरावरो।[5] सु अजीत वडो रजपूत हुवो।

मोहिल अजीतनूं राव जोधैजी आपरी बेटी परणाई हुती, नाम राजांबाई।[6] सु अजीत सासरै मडोहर गयो हुतो।[7] सु राव जोधो तिणा दिना जोरावर वहै। सु मोहिल वडा सगा, नै या तीरे धरती घणी।[8] सु राव जोधोजी मोहिलासूं सदा खोट करणरो विचार करै[9]; पण मोहिलामे अजीत वडो रजपूत जोरावर। ईयै थकां धरती आवै नही।[10] ताहरा दीठो–'अजीत मारीजै तो धरती आवै।'[11] 'ताहरां अजीतनूं जोधैजी मारणरो विचार कियो। सु राव जोधैजीरी राणो भटियाणी,

---

1 मोहिलोके वशक्रमका वृत्तान्त। 2 राणा सावतसी और राणा सागा (क्रम स० १३) दोनो भाई माणकरावके बेटे। 3 राणा सागा राव लखणसेनका दोहिता। 4 मोहिल अजीत सावतसीका पुत्र। 5 और सावतसी माणकरावका बेटा। 6 राव जोधाजीने अपनी राजाबाई नामकी कन्या मोहिल अजीतको व्याही थी। 7 अजीत अपनी ससुराल मडोर गया हुआ था। 8 राव जोधा उन दिनो वडा जोरावर राजा और इधर मोहिल भी वडे सवबी और इनके पास धरती भी बहुत। 9 अत राव जोधा मोहिलोसे नित्य दगा करनेका विचार करता है। 10 इसके रहते हुए धरती अपने अधिकारमे नही आ सकती। 11 तव विचार किया कि अजीत मारा जाय तो उसकी धरती अपने अधिकारमे आ जाये।

अजीतरी सासू, तिणनूं खबर हुई[1], 'अजीतनूं राव मारसी ।'[2] ताहरां रांणी अजीतरा खवास परधांन, त्यांनूं कहाडियो[3]–'रावजी थांसूं चूक कियो छै, थे रह्या तो दुख पावस्यो ।'[4]

तिण ऊपरा अमरावा परधांनां विचार कियो–'अजीत तो भाजण री परत* वहै छै, आ वात कहस्यो तो जांणसी नही ।[5] इण सौको तोत करनै चाढां ।'[6] ताहरा ईया सारां ही भेळा होयनै कह्यो–'छापर थी आदमी आयो छै । जाटवांरो कटक राणा वछराज सागावत ऊपर आयौ छै नै रांणो घेरा मांहै छै । कहाड़ियो छै, म्हा मुवां ऊपर आय सको तो वेगा आवज्यो ।'[7] आ वात कही तिण ऊपरा चढणरी तयारी कीधी । नगारो हुवो, नै चढि खड़िया ।[8] ताहरा राव जोधै कह्यो–'रे ! नगारो कठै ह्वै छै ?'[9] ताहरा कह्यो–'अजीत चढि खडियो ।'[10]

ताहरां राव जोधैजी दीठो–'चूकरो जणाव हुवो; नै ओ जीवतो गयो तो म्हांनूं दुख देसी, तिण ऊपर रावजी वासै चढि खडिया ।'[11] आगै अजीत जाय छै, वासै राव जोधोजी जाय छै ।[12] सु द्रोणपुरसौ कोसां ३ छापरसौ कोस ५ आया, तठै फोजा दोऊवा देठाळा हुवा[13]

---

* एक प्रतिमें 'परग' पाठ है । 'परग वहै' का तात्पर्य होगा— 'रिश्ते के लिहाज से' वा 'रिश्ते का लिहाज करता है ।' 'परत न वहै छै, पाठ होना चाहिये ।

1–2 राव जोधाजीकी राणी भटियाणी जो अजीतकी सास थी उसे इस वातका पता लग गया कि अजीतको राव मारेंगे । 3 तव राणीने अजीतके जो खवास और प्रधान थे जिनको कहलवाया । 4 रावजीने तुमारे साथमे धोखा विचारा है सो अव यदि तुम यहा रहे तो दुख पाओगे । 5 इस पर उमरावो और प्रधानोने विचार किया कि अजीत तो भागनेकी वातके विरुद्ध रहता है यह वात उसे कहेंगे तो इसे सत्य जानेगा ही नही । 6 इससे कोई अन्य वखेडेकी वात करके यहासे ले चले । 7 तव इन सवने इकट्ठे होकर कहा कि वछराज सागावत पर जाटवोका कटक आया है और राणा घेरेमे फस गया है सो उसने कहलवाया है कि मैं मारे जानेकी स्थितिमे हू, यदि सहायता कर सको तो तुरत आओ । 8 यह वात कही तव चढनेकी तैयारी की । नगारा वजवाया और चढकर रवाना हुए । 9 अरे ! नगारा कहा वज रहा है ? 10 अजीत रवाना हुआ है । 11 तव जोधाजीने देखा कि धोखेकी जानकारी हो गई और यदि अव यह जीता निकल गया तो हमको दुख देगा । इस पर रावजीने उसके पीछे चढाई कर दी । 12 आगे अजीत जा रहा है और उसके पीछे राव जोधाजी जा रहे हैं । 13 सो द्रोणपुरसे तीन कोस और छापरसे पाच कोस उरे पहुचे तव दोनो फौजोको एक दूसरेकी फौज दिखाई दी ।

तरै अजीत पूछियो–'आंपा वासै घणो सो साथ दीसै तिको किणरो ?'[1] तरै या कह्यो–'थांसू राव जोधै चूक कियो थो, सु रांणीजी जांणियो।[2] ताहरा म्हांनू कहाड़ियो[3]–'थे जमाईनू लेनै परहा चढो।[4] ताहरा म्हे थासू तोत करनै थानै इतरी भुय आणियां।[5] आ[6] वात कही, ताहरा अजीत घणो बुरो मानियो। कह्यो–'थे म्हारो सबळो पण* घटायो।'[7]

ताहरां अजीत आपरा[8] साथ सारैसू वानू[9] वांसै[10] आया देख ऊभो रह्यो।[11] रावजी पण चलाय गया। दोनू तरफा लोह मिळियो।[12] मांमलो हुवो।[13] अजीत मांणस ४५ सू काम आयो। गांम गणोडै वेढ हुई।[14] राव जोधोजी अजीतनू मार पाछा वळिया।[15] मडोवर पधारिया। बाई राजां अजीत वांसै सती हुई।[16] हमै राठोडा नै मोहिला माहोमाहि सबळो वैर पड़ियो।[17] राठोड सबळा, मोहिलांरी ठकुराई सबळी, पण भाईबधे मेळ घणो काई नही।[18]

यु करता वरस १ आघो नीसरियो।[19] नै मोहिलांरी धरती ऊपर राव जोधै डांण घातियो।[20] सारा भाईबंध भेळा करनै राव जोधोजी चढ मोहिला ऊपर आया। रांणो वछराज सांगावत माणस २६५ सू मारियो। मोहिल हारिया। पग छूटा।[21] राव जोधैजीरी फतै हुई।

---

* एक प्रतिमें 'सवळापण' पाठ है। 'म्हारो सवळापण घटायो' = १ मेरी वीरतामें कलक लगवा दिया। २ मेरी सवलता घटा दी।

---

1 अपने पीछे वडीसी सेना आती दिख रही है वह किसकी है ? 2 तव इन्होंने कहा कि तुम्हारे साथ राव जोधेने चूक करनेका विचारा था, जिसका राणीजीको पता लग गया। 3 तव उन्होंने हमको कहलवाया। 4 तुम मेरे दामादको लेकर रवाना हो जाओ। 5 तव हम वनावटी वात करके आपको इतनी दूर ले आये। 6 यह। 7 तुम लोगोंने मेरी जो नवल प्रतिज्ञा थी, उसको घटा दिया (उसमे वट्टा लगवा दिया।) 8 अपने। 9 उनको। 10 पीछे। 11 खडा रह गया। 12 दोनो ओरके शस्त्र मिले। 13 लडाई हुई। 14 गणोडै गावमें यह लडाई हुई। 15 पीछे लौटे। 16 राजा-बाई अजीतके पीछे सती हुई। 17 परस्पर वहुत जवरदस्त शत्रुता वधी। 18 परन्तु उनके भाई-वधुओंमें परस्पर अधिक मेल नही। 19 इस प्रकार एक वर्ष निकल गया। 20 मोकेकी ताकमें रहा। 21 मोहिलोंके पग छूट गये।

कुवर मेघो वछू रावरो बेटो नीसरियो ।[1] राव जोधैजी जाय छापर मारियो ।[2] राव जोधैजी धरती मांहै अमल कियो ।[3] सु मेघो जोरावर सु मेघै आगा धरती वस सगै नही ।[4] नै कटकनू रातीवाहा दै ।[5] ताहरा रावजी विचारियो—'मेघा जीवतां धरती आवणरी नही ।' तिण ऊपर मास दोय अठै रहिनै[6], धरती मारनै[7] पाछा मंडोवर पधारिया ।

मेघो कुवर पाछो द्रोणपुर छापर आयो । मेघो टीकै बैठो । रांणो मेघो हुवो । वडो रजपूत, वडो तरवारियो, वडो राहवेधी, वडो जोरावर ।[8] सु राव जोधोजी राणै मेघेनूं मारणरो तलास घणी ही करै, पण हाथ आवणरो नहीं । मेघो वडो भोमियो हुवो ।[9] पछै कितरेहेक वरसै मेघो काळ प्राप्त हुवो ।[10] ताहरां भाया धरती माहै धूकळ माडियो ।[11] ताहरां धरती भायां वंट हुई । ठकुराई निबळी पडी ।[12] १६ भाग हुआ ।[13] रांणा मेघारै पाट रांणौ वैरसल हुवो,[14] सु राणा कुंभै सीसोदियैरो दोहितरो । बीजो बेटो नरबद, तिको रावत काधळ रिणमलोतरो दोहितरो ।[15] वैरसल टीकै बैठो । रांणो वैरसल हुवो, सु निबळो सो ठाकुर हुवो । भाई बंध सगळा मांणस हुता सु धरती वंटाय लीवी नै माहोमांही भाइयां खसण लागी ।[16] रोजीना आपसमे वेढां हुवै, सु सारा डीलां कट निवडिया ।[17] मोहिलारी ठकुराई निबळी पड़ी ।

अर राव जोधोजी मंडोहर भोगवै, सु पाखती[18] जोरावर साहिबी । सु रावजी विचारियो जु, आज मोहिल निबळा पडिया छै

---

1 राव वछूका वेटा कुवर मेघा बच करके निकल गया । 2 छापरको लूटा । 3 अपना अमल जमाया । 4 मेघेके आगे धरती वस नही सकती । 5 और कटकके ऊपर रातको हमला करे । 6 यहा रह करके । 7 धरतीको लूट करके । 8 मेघा राणा हुआ । मेघा वड़ा वीर राजपूत, वड़ा तलवार चलाने वाला, वड़ा दूरदर्शी और वडा जोरावर । 9 मेघा वड़ा भोमिया हुआ । 10 पीछे कितनेक वर्षो वाद मेघा मर गया । 11 तव भाईयोने देशमें वड़ा उपद्रव मचाया । 12-13 देशके १६ भाग हो गये और ठकुराई निर्वल पड गई । 14 राणा मेघाकी गद्दी पर वैरसल राणा हुआ । 15 दूसरा वेटा नरवद जो रावत कावल रिणमलोतका दोहिता था । 16 जितने भी भाई-वन्धुओके मनुष्य थे उन्होने धरतीका वट करवा लिया और भाइयोमें परस्पर खीचातानी होने लग गई । 17 रोज युद्ध होते रहते हैं इसलिए सव (मोहिल) परिवार आपसमें ही कटकर खत्म हो गये । 18 पासमे ।

वडी वात छै[1] । तिण ऊपर राव जोधोजी आपरा भाई बंध भेळा करनै रांणा वैरसल, नरबद ऊपर आया ।[2] वैरसल नरबद रावजी जोधैजीनू आवता सुणनै आपरी वसी लेनै नीसर गया ।[3] धको झालियो नही ।[4] राव जोधाजी द्रोणपुर छापर मारियो ।[5] सारी धरती पजाई ।[6] वडो अमल कियो ।

मोहिल रांणै वैरसल नरवद धरती छाड कानो लियो ।[7] कितराहेक दिन तो फतैपुर, जूझणू, भटनेर रहिया ।[8] तठा पछै मेवाड राणा कुभारी तीरै गया ।[9] उठै पण कितराइक दिन रह्या । पछै यां विचारियो—'म्हांसू धरती छूटी । सबळी ठोड़ आंणी । नै म्हांरै प्रांण तो धरती वळणरी नही ।'[10] तरै मोहिल नरबद मेघावत नै राठोड़ वाघो काधळोत मांमा भांणेज व्है ।[11] या भेळा होय आलोच कियो ।[12] आपासू धरती छूटी । काहेक धरतीरी वाहर कीजै ।[13]

तिण ऊपरां या दोनू जणा पातसाह कनै दिली जावणरो विचार कियो ।[14] अै मांमा भाणेज दिलीनू हालिया ।[15] ताहरा दिली माहै लोदिया-पठांणारी साहिवी थी ।[16] सु अै जाय मिळिया । पातसाहजीसू फरियाद कर अरज कीवी । ताहरां वानू पातसाहजी घणी दिलासा दीनी ।[17] यां मास दस इगियारह चाकरी कीवी ।[18] पातसाह यांसू महरवान हुआ । यांरी कुमुखनू घोडा हजार पांच दिया ।[19] यारै

1 वडे अवसरकी वात है । 2 अपने भाई-वधुओको इकट्ठा करके राणा वैरसल नरवद पर चढ कर आये । 3 वैरसल और नरवद, राव जोधाजीको आया सुन करके अपनी वमी (वस्ती) लेकरके निकल गये । 4 आक्रमणका सामना नही किया । 5 राव जोधाजीने द्रोणपुर छापर लूटा । 6 सारी धरतीको हैरान किया । 7 मोहिल राणा वैरसल और नरवदने धरतीको छोड कर किनारा लिया । 8 कितनेक दिन तो फतहपुर, झुझनू और भटनेर रहे । 9 जिसके वाद मेवाडमे राणा कुभाके पास गये । 10 हमारे अधिकारसे धरती गई, मवल जगह थी सो राव जोधाने अपने अधिकारमे ले ली और अव हमारे वल पर तो यह धरती वापिस हाथ आनेकी नही । 11–12 तव मोहिल नरवद मेघावत और वाघा काधलोत, जो परस्पर मामा भानजे हैं, इन्होने मिल कर विचार किया । 13 किसी और धरतीकी तलाश की जाय । 14 इस पर इन दोनो जनोने वादशाहके पास दिल्ली जानेका विचार किया । 15 ये मामा-भानजे दिल्लीको चले । 16 उन दिनो दिल्लीमे लोदी पठानोकी वादशाहत थी । 17 तव वादशाहने उनको वहुत आश्वासन दिया । 18 इन्होंने दस-ग्यारह मास तक वादशाहकी चाकरी की । 19 इनकी सैनिक सहायताके लिए पाच हजार घोडे दिये ।

साथै सारंगखान पठांणनूं मेलियो ।[1] पछै सारंगखांन पठांण, नरबद मोहिल, वाघो कांधळोत राठोड़ अै सारा ही चलायनै फतैपुर जूंझणूंरी पाखती आया ।[2] रांणो वैरसल पण आय भेळो हुओ ।

राव जोधाजी पण आपरा मांणस हजार ६००० लेनै सामा आया ।[3] अै पण फतैपुर नै छापररी काकड माथै आया ।[4] दोनूं फोजा दोनूं तरफ आई । आयनै उतरिया ।[5] दोनूं तरफां वेढरी तैयारी हुवै छै ।[6]

ताहरां राव जोधैजी राठोड वाघा कांधळोतनूं छांनै तेडायो ।[7] तेडनै जोधैजी कह्यो–'साबास ! भतीजा तोनूं ! म्हां ऊपरां मोहिलारै वासतै तरवार बांधी । भोजायां बैरानूं बध कराईस ?[8] ताहरां ईयै वाघै विचार दीठो–'यां मोहिलांरै वासतै आ करू छूं भायासूं, पण भली नही ।'[9]

ताहरां वाघै रावजीनूं कह्यो–'हूं थां मांहै छूं । कहो सु तरदोज करू । थांहरै फायदो होय सो करू ।'[10] ताहरा वाघै रावजीनूं कह्यो–'मोहिलारै घोड़ा दूबळा[11] छै । घोडारा पग ऊपड़ै न छै ।[12] सो या तीरा हूं पाळांरी वेढरो मतो कराड़ीस ।[13] नै पठांण कहसी–'म्हे चढिया वेढ करस्यां ।[14] यां कनां हूं मतो कराऊ छूं ।[15] मोहिल

---

1 इनके साथ सारंगखान पठानको भेजा । 2 फिर सारगखा पठान, नरवद मोहिल और राठौड वाघा काधलोत–ये सभी चला करके फतहपुर झुंझुनूंके पास आये । 3 राव जोधाजी भी अपने ६००० आदमियोको लेकर सामने आये । 4 ये भी फतहपुर और छापरकी सीमा पर आये । 5–6 आकरके ठहरे हैं और दोनो ओर लडाईकी तैयारियां हो रही हैं । 7 तब राव जोधाजीने राठौड वाघा काधलोतको गुप्त रीतिसे अपने पास बुलवाया । 8 बुला करके जोधाजीने कहा—'भतीज ! तेरेको शावास है. मोहिलोके लिए मेरे ऊपर तूने तलवार बाधी है, अपने कुल की भोजाईयां आदि स्त्रियोको कैद करवायेगा ? 9 इस पर वाघाने विचार कर देखा-–'इन मोहिलोके लिए भाईयोके साथ ऐसी बात करूं यह तो वास्तवमें अच्छी बात नहीं । 10 मैं तुम्हारे साथ हूं, जो तुम कहो सो तजवीज करूं, तुमको जिस प्रकार लाभ हो वही करूं । 11 दुर्वल । 12 घोडोके पग नही उठते हैं । 13 इसलिए मै इनसे पैदल लडाई करनेका निश्चय करवा दूंगा । 14 और पठान तो कहेंगे ही कि हम तो सवार होकर ही लडाई करेंगे 15 सो इनसे मैं इस प्रकार निश्चय करवाता हूं ।

पाळा लडसी[1] , तिको तमाचो डावै हुसी नै पठांणारो तमाचो जीमणो हुसी ।[2] सु थे लोह मिळतै सारा मोहिलांरो साथ पाळो हुसी, तिणा ऊपर घोडा नाखज्यो ।[3] पाळो साथ हुसी सु नीसर जासी ।[4] तुरक चढिया छै, त्या ऊपर तरवारिया खेरज्यो ।[5] मरणहारा छै सु मरसी[6] बीजा तुरक भागजासी ।[7] यू मचकूर करनै वाघो उठै गयो ।[8]

या मोहिलासू मसलत वेढरी कीवी ।[9] मोहिल लोह मिळिया ।[10] सु मोहिला ऊपर राठोडारो साथ तूट पडियो ।[11] सु अै पाळा धको झाल सगिया ही नही, नीसरता हुवा ।[12]

राव जोधैजोरै साथ नै[13] सारगखान वडी वेढ[14] हुई । पठाण सारगखान माणस ५५५ सू खेत पडियो ।[15] बाकीरा के घावै पड़िया, के नीसर गया ।[16] खेत राव जोधैजीरै हाथ आयो ।[17] राव जोधैजीरी वडी फतै हुई । राव जोधोजी द्रोणपुर पाछा आया । राव धरती माहै वडो जमाव कियो ।

राणो वैरसल पाछो मेवाड नानाणै[18] गयो, नै नरबद फतैपुर काठै पडियो रह्यो ।[19] मोहिलाथा धरती छूटी ।[20]

राठोडारी सायबी वडी जमीयत हुई ।[21] राव जोधोजी कुवर जोगैनू आ ठोड देखनै दीधी ।[22] पछै आप मडोहर पधारिया ।

1–2 मोहिल पैदल लडेंगे सो उनकी टुकडी बाई ओरको होगी और पठानोकी टुकडी दाहिनी ओर होगी । 3 सो भिडत शरू होनेके समय मोहिलोंका साथ, जो पैदल होगा, उन पर अपने घोडे डाल देना । 4 जो सैनिक पैदल होगे सो भाग निकलेंगे । 5 तुर्क चढे हुए होंगे जिनके ऊपर तलवारोसे प्रहार कर देना । 6–7 मरने वाले हैं सो तो मर ही जायेंगे और दूसरे तुर्क भाग जायेंगे । 8 इस प्रकार मजकूर (उक्त निश्चय) करके वाघा उधर चला गया । 9 मोहिलोके पास जाकर यही मसलहत (गूढ और हितकारक परामर्श) लडाईके सम्बन्धमें की । 10 मोहिल शस्त्र लेकर भिडे । 11 सो मोहिलोके ऊपर राठोडो-का साथ टूट पडा । 12 सो ये लोग पैदल थे, आक्रमणका धक्का नही सम्हाल सके, भाग खडे हुए । 13 और । 14 लडाई । 15–16 पाचसो पचपन आदमियोके साथ पठान सारगखान खेत रहा, शेष कई आहत हुए और कई भाग निकले । 17 राव जोधाजी-के हाथ खेत आया । 18 ननिहाल । 19 और नरवद फतहपुरके पास पडा रहा । 20 मोहिलोंसे धरती छूट गई । 21 राठौडोकी वहा बडी प्रभुता और जमीयत हुई । 22 यह ठौड देख कर राव जोधाजीने इसे कुंवर जोगेको दे दी ।

सु कुंवर जोगो भोळो सो ठाकुर हुतो ।[1] सु जोगासू धरती रस नह आई, नै धरती मांहै मोहिलांरो दखल हुवण लागो ।[2] धरतीरो मोहिल विगाड[3] करण लागा । ठोड-ठोड़थी फरियाद आवरण लागी । ताहरा कुवर जोगैरै वहू झाली हुती, तिरण आपरा सुसरा रावजीसू कहायो[4]–'जु, थाहरा वेटा मांहै लखण क्यु नही छै ।[5] नै धरती लीवी छै सु जाय छै ।[6] जांणों सु इलाज कीज्यो ।'[7] तिरण ऊपरा कुवर वीदो वीकेजीरो छोटो भाई साखली नवरंगदेरो बेटो, तिणनू द्रोणपुर छापर दीधी अर जोगानू बोलाय लियो ।[8]

रावजी वीदानूं कह्यो–'देखां, किसड़ो बंधेज करै छै, नै किसडो सिरदोर व्है छै ?'[9] ताहरां वीदोजी रावजीरै पाय लागनै[10] चढिया सु द्रोणपुर-छापर आया । वडो वंधेज कियो ।[11] वडो अमल धरती माहै । मोहिल मांहो माही वडी खसण वहै ।[12] सु मोहिलांनू राठोड़ वीदे पटो दे नै चाकर किया ।[13] मोहिल चाकरी करै ।

जवो सीगटोत, सीगट जगरामरो, जगरांम जवरणसीओत ।[14]

तिण जबै वीदेजीनूं नारेळ मेलियो, बेटी परणाई ।[15] सु जबो मायाधारी ठाकुर हुतो नै भायांसू वडो वैर ।[16] ताहरां राव वीदेनूं परणायो ।[17] वीदो पेहलो वीमाह मोहिलै परणियो ।[18] जबै वीदेजीनूं दायजो[19] घणो दियो । घोड़ा १००, ऊँठ २०० नै रुपिया लाख १ रो

---

1 कुंवर जोगा सीधा-सादा ठाकुर था । 2 सो जोगासे धरती सम्हल नही सकी और धरतीमे मोहिलोका दखल होने लगा । 3 नुकसान । 4 तब कुवर जोगेकी पत्नी झालीने अपने ससुर रावजीसे कहलवाया । 5 तुम्हारे पुत्रमे योग्यता कुछ भी नही है । 6 और जो धरती ली है वह वापिस जा रही है । 7 उचित उपाय करें । 8 इस पर, वीकाजीका छोटा भाई कुवर वीदा साखली नवरगदेका वेटा, उसे द्रोणपुर छापर दी और जोगाको वापिस वुला लिया । 9 रावजीने वीदाको कहा कि देखें कैसी व्यवस्था करता है और कैसा सरदार वनता है ? 10 चरण स्पर्श करके । 11 वडी अच्छी व्यवस्था की । 12 मोहिलोके परस्पर वडी खटपट चलती है । 13 इसलिए राठोड वीदेने पट्टे देकरके मोहिलोको अपना चाकर वना लिया । 14 सीगटका वेटा जबा, सीगट जगरामका वेटा और जगराम जवरणसीका वेटा । 15 उस जवेने वीदेजीको नारियल भेजा और अपनी वेटी व्याही । 16 जबा वडा धनवान परन्तु भाइयोसे उसकी शत्रुता थी । 17 इसलिए उसने राव वीदेको व्याहा । 18 वीदेने अपना पहिला विवाह मोहिलोके यहाँ किया । 19 दहेज ।

माल दियो। वडो व्याह कियो। वीदैरै ठकुराई पगथी मडी।[1] मोहिलाणी-सू वीदो घणी मया करै।[2] पछै जबै वीदासू कहिनै कितराहेक मोहिलासू जबैरै वणतो नही, तिके सारा धरती मांहेसू कढाया।[3] वीदै वडो अमल कियो। वीदै द्रोणपुर फेर वसायो।[4] द्रोणपुर वडी वसती कीवी।[5]

संमत ६३१ वागडियां तीरा मोहिले धरती लीवी थी, सु ९०० वरस ताई मोहिले धरती भोगवी। संमत १५३१ सूधी मोहिलारै धरती रही।[6]

समत १५२३ राव जोधै ी धरती लीवी थी, मास ४ तथा ५ रही।[7]

पछै कुवर मेघो वछराजोत तिके फेर धरती अपूठा लीवी।[8] मेघो टीकै बैठो। धरती वसाई। पछै मेघो मुंवो[9] ताहरां वैरसल नै नरबद पाट बैठा।

ताहरां राव जोधोजी मडोवरसू कटक करनै छापर द्रोणपुर ऊपर आया, ताहरां वैरसल नरबद नीसर गया।[10] ताहरां राव धरती लीवो, तिणरी हकीकत ऊपर छै। राव जोधै धरती लेनै कुवर वीदेनू दीधी हुती।[11] सु आज सूधी धरती वीदेजीरा पोत्रां वीदावतां हेठै छै।[12]

राठोड रांमदेरा बे-अखरी छद, तिणां मांहै सारी हकीकत छै[13]—

---

1 वीदेकी ठकुराईकी नीव जमी। 2 वीदा मोहिलाणीसे खूब प्रेम करता है। 3 फिर जवेने वीदाको कह करके, कितनेक मोहिलोको, जिनका जवेसे वनता नही था, उन सवको धरतीमेसे निकलवा दिया। 4 वीदेने द्रोणपुर पुन' वसाया। 5 द्रोणपुरको वडी वस्ती वना दिया। 6 सम्वत् ६३१मे वागडियोंसे मोहिलो ने धरती ली थी, उस धरतीको ९०० वर्षों तक मोहिलोंने भोगी। सम्वत् १५३१ तक यह धरती मोहिलोंके अधिकारमे रही। 7 यद्यपि सम्वत् १५२३में राव जोधाजीने उस पर अधिकार कर लिया था, किन्तु केवल ४ या ५ महीनो तक ही उनके अधिकारमे रह सकी। 8 वादमे कुवर मेघा वछ-राजोतने वापिस छीन ली थी। 9 मर गया। 10 तव वैरसल और नरवद भाग कर निकल गये। 11 राव जोधाने इस धरतीको लेकर कुवर वीदेको देदी थी। 12 सो आज तक यह धरती वीदाजीके पौत्र वीदावतोके अधिकारमे है। 13 राठौड रामदेव द्वारा रचित निम्नाकित वे-अखरी छद, जिनमे सारा वृत्तान्त कहा गया है।

।। छंद बे-अखरी ।।

(राठोड़ रामदेवरा कहिया)

बागड़ियै[1] भोगवी वसाई,
नमियर उवही[2] कळ[3] नह आई।
चोळी[4] वळै[5] मोहिलै वरवा[6],
घर रस चूप[7] इधक[8] मन धरवा ।। १
अजवड़[9] पांण[10] लियां खत्र[11] धोड़ै,
रेहिलिया[12] मोहिल राठोड़ै।
मेवासी राव जोधै मिळिया,
दोमज[13] भांज मिरी[14] सिर दळिया[15] ।। २
वहै अजीत जिसा[16] वैराई[17],
वसुधा जोधै राव वसाई।
रूकै[18] बरछां सिंघारै[19] रांणो,
थापै[20] जोधै छापर थांणो ।। ३
वीदै वांको[21] दुरग[22] वसायो,
जैत हथो[23] राव जोधै-जायो।[24]
सीरै फेर घांस[25] सत्रां[26] सिर,
गढ वीदो तपियो द्रोणागिर ।। ४
केवी वीद घरोघर कीधा[27]।
लीया देस ग्रास डड लीधा।[28]
... .,
... . ।। ५

---

1 वागडियोने। 2 पृथ्वी (पाठान्तर–'उरही', 'उरवी')। 3 युद्ध। 4 लौटाई (पाठान्तर–'वोली')। 5 फिर। 6 वरनेके लिये, वरण करनेके लिये। 7 अनुराग, उत्कट इच्छा। 8 अधिक। 9 तलवार। 10 के द्वारा, से। 11 क्षत्रिय। 12 मार लिया, नाश कर दिया। 13 शत्रु (पाठान्तर–'दोयण')। 14 मीर, मुसलमान (पाठान्तर–'मीर')। 15 नाश किया। 16 जैसे। 17 शत्रु। 18 तलवारोसे। 19 सहार कर दिया। 20 स्थापित किया, स्थापित करके। 21 वका, दुर्जेय। 22 दुर्ग। 23 विजयी, जिसके हाथोसे विजय प्राप्त हो। 24 जोधाका पुत्र। 25 १. युद्ध, २. सेना, ३. आक्रमण। 26 शत्रुओके। 27–28 वीदेने शत्रुओको घर घरका बना दिया (उनको विसंगठित कर दिया।), उनका देश ले लिया और उनसे डड और ग्रास भी लिया।

दूहा

॥ चारण चापै सामोररा कहिया ॥

सेलहथां देवडांण सह, गोराहां गीलांह ।
वाघोड़ां वगाह वरण, एको गोत इतांह ॥ १
सोनगरा हाडा सकळ, राखसिया निरवांण ।
चाहिल मोहिल खीचियां, एता सोह चहुवांण ॥ २[1]

---

1 (१) सेलहथा=सेलोत, (२) देवडाण=देवडे, (३) गोराहा=गोरा या गोराहा, (४) गीलाह=गीला, (५) वाघोडा=वाघोडे, (६) वगाह=वगा, (७) सोनगरा, (८) हाडा, (९) राखसिया, (१०) निरवाण, (११) चाहिल, (१२) मोहिल और (१३) खीची—ये सभी चौहान है। इनमेसे सेलोत, देवडे, गोराहे, गीले, वागोडे और वगा—ये एक गोत्रके हैं।

चौहानोकी चौवीस शाखायें कही जाती हैं। यहा इन दो दोहोमे केवल १३ नाम आये है। इन दो दोहोमे दोहा प्रथमके वाद कदाचित एक दो दोहे और हो, जिनमे शेष शाखाओका उल्लेख हो, परन्तु सभी प्रतियोमे ये दो दोहे ही प्राप्त हैं। ख्यात, भाग १, पृ० ८७मे चौहानोकी २४ शाखाओकी जो सूची दी है, उसमे इन दोहोके गोराहा, वाघोडा, मोहिल और वगा—ये चार नाम नही हैं। ये नाम नैणसीकी निम्न सूचीके किन्ही नामोके पर्याय नही हो तो चौहानोकी शाखाओकी सख्या २८ हो जाती है। इन नामोके अतिरिक्त वागडिया (भाग १, पृ० ११७), पूरेचा (पृ० २२८), कापलिया (पृ० २४८) इत्यादि शाखाओके नाम और पीढ़ियोका विवरण ख्यातमे मिलता है। कायमखानी भी चौहानोमेसे ही निकले हैं। इस प्रकार शाखा-सूचीके नामोके अतिरिक्त कई शाखाओंके नाम और हैं अथवा शाखा-सूचीके अतिरिक्त जो नाम प्राप्त हैं वे या तो सूचीके नामोके पर्याय हैं या अतर शाखाये हैं। कर्नल टॉडने जो नाम दिये हैं, उनमे और इनमे भी वहुत अतर है। तुलनाके लिये दोनो सूचिया दे रहे हैं—

नैणसी की सूची

१ चहुवाण
२ सोनगरा
३ खीची
४ देवडा
५ राखसिया (साखसिया)
६ गीला
७ डेडरिया
८ वगसरिया
९ हाडा
१० चीवा
११ चाहेल (चाहिल)
१२ सेलोत
१३ वेहळ
१४ बोडा
१५ वालोत
१६ गोलासण (गोळासण)
१७ नहरवण
१८ वेस (वैस)
१९ निरवाण
२० सेपटा
२१ ढीमडिया
२२ हुरडा
२३ माल्हण (म्हालण)
२४ वकट

दूहा पीढियारी विगतरा

चाह हुवो चहुवाणरो[1], प्रथमी गढ जस-पूर ।[2]
चक्रवत[3] उदियो[4] चाहरै, समवड़ मघवन सूर[5] ॥ १
महि-पुड़[6] भीच[7] प्रवाड़मल[8], भूबळ आपण भाव ।
सिघ हुवो घणसूररै, रूपक वँस इदराव[9] ॥ २
पात वडा सारी प्रथी, जपै सदा जस जीह[10] ।
रढवांवण[11] इँद्ररावरै, उदियो अजण अबीह[12] ॥ ३
पूरबलो पळ पाळवा, तुड़ तांणग गहवत ।[13]
अजण तणो वँस ओपियो, सुजन हुवो सामत[14] ॥ ४

[पिछले पृष्ठ का शेष]

कर्नल टॉडने जो नाम दिये है, उनमे ६–७ नामोको छोड़ करके सब दूसरे है। टॉड-की सूची इस प्रकार है—

१ चौहान	१३ पूरबिया
२ सोनगरा	१४ मादडेचा
३ खीची	१५ वालेचा
४ देवडा	१६ गोहिलवाल
५ रोसिया	१७ भूरेचा
६ साचोरा	१८ तसेरा
७ पविया	१९ निरवाण
८ भेदोरिया	२० संकरेचा
९ हाडा	२१ निकुभ
१० चादू	२२ भावर
११ चाचेरा	२३ मालण
१२ सूरा	२४ वकट

1 चहुवान का पुत्र चाह हुआ। 2 पृथ्वीके गढपतियोमें पूर्ण कीर्तिमान हुआ। 3 चक्रवर्ती। 4 उत्पन्न हुआ। 5 इन्द्रके समान शूरवीर, (मघवन+सूर=घन+सूर7घणसूर) 6 पृथ्वीतल। 7 वीर। 8 यशप्राप्त वीरोमे वीराग्रणी। 9 घणसूरके वशमे सिहके समान ओज गुणो वाला इद्रराव (इद्रवीर) उत्पन्न हुआ। 10 सारी पृथ्वीके वड़े-वडे चारण-कवि उसका यश वर्णन करते हैं। 11–12 महाहठी इन्द्ररावके निर्भय पुत्र अर्जुन उत्पन्न हुआ। (रढरावण=रावणके समान वली और हठीला।) 13 वह पूर्ण वलवान शूराभिमानी और उपकार और युद्धके अवसरोको तुरत साधनेवाला था। 14 अर्जुनका पुत्र सुजन (सुर्जन) भी सामत और वशको सुशोभित करने वाला हुआ।

सुवस किया[1] खेड़ा[2] सकल, चक्रवत चवदै-चाल[3] ।
मोहिल तपियो[4] महपती[5], सुजन तणो सीगाळ[6] ।। ७
रेणा[7] कीधी आपरी, सह अत्रखाळै[8] सत्त ।
मोहिल तण[9] उदियो[10] मछर[11], दीपक वँस हरदत्त ।। ८
रांण वडम[12] छळ[13] रक्खवा, आपण पांण अबीह[14]।
दळनायक हरदत्तरै, सोहै वँस वरसीह[15]।। ६
कुळ दीपक चढती कला, सुत वरसीह सुचाव ।
हायाळौ[16] जुग-पुड़[17] हुवौ, रांणो बालहराव[18]।। १०
राज वसरा रेहलौ, चूको जाव सुचल्ल ।
वाहळरौ[19] टीकौ वडम, ले दीनौ आसल्ल[20] ।। ११
अतुळीवळ[21] राखण अचड़[22], भुज निरवाहण भार ।
आसलरैं उदियो अभग, आहड़ वस-उदार[23]।। १२
सोह मेवासी सकिया[24], भूप लियेवा भीह[25]।
आहड़ तण तपियौ इळा[26], सादूळो रणसीह[27]।। १३
सुरहै[28] चवदै-चाळ सै, दीन्है कळप दुवाह[29] ।
साहणमल रणसीहरौ, पतगरियो पतसाह[30] ।। १४
वळहट दव … वडम, हुवा मुकत्ता हट्ट ।
पाट जु साहणपाळरै, लाज भुजं लोहट्ट[31] ।। १५

---

* 'चवदै-चाळ' (चौदहसौ चालीस गावोका क्षेत्र) । गावोकी सख्याके उदाहरणके लिये देखिये ख्यात भाग १, पृ० '२८७

---

1 भली प्रकार वसाया (भली प्रकार वशमें किया) । 2 गाव । 3 चौदहसौ चालीस गावोका प्रदेश । 4 शासन किया । 5 राजा । 6 सुर्जनका निर्भीक पुत्र । 7 पृथ्वी । 8 उद्दड वीर । 9 पुत्र । 10 उत्पन्न हुआ । 11 चौहान । 12 वडा, श्रेष्ठ । 13 (१) युद्ध, (२) लिये, कारण । 14 निर्भय और शक्तिमान । 15 सेनानायक हरदत्तके वरसिह (वैरसीह) नामका पुत्र शोभायुक्त है । 16 वलशाली हाथी वाला । 17 पृथ्वीतल । 18 वालहराव (वालहर) राणा । १६ वालहराव (वालहर) की ऊन मजा । 20 वालहरावका उत्तराधिकारी राणा आसल । 21 अतुलित वलशाली । 22 कीर्त्ति । 23 आसलका पुत्र आहड वडा अभग और वशमे उदार उत्पन्न हुआ । 24 समस्त मेवासियोने भय खाया । 25 डर । 26-27 फिर आहडके पुत्र सिहके समान वलशाली रणसिह (रैणसी)ने पृथ्वी पर शासन किया । 28 गायें । 29 घोडे । 30 वादशाहको जिसने वशमे किया । 31 अपनी सुदृढ भुजाओंके वल राज्यकी लाजको रखने वाला लोहट साहणपालके पाट पर आसीन हुआ ।

थरकै[1] खळ दूरै थका[2], अद्दल वरतै आंण[3] ।
लोहट पाट विराजियो, राजन बोबौ रांण[4] ॥ १६

सिद्धां गृह साधक हुवै[5], जग-मालम[6] खग-जैत[7] ।
बैसै[8] गादी बोब-उत, वेगो वँस वांनेत[9] ॥ १७

छापर धणी जु छत्रपति, सामँत वेग-सुजाव[10] ।
धर खागां बल धूपटै, रांणो मांणकराव[11] ॥ १८

साख चोवीसां सोहियो, नरां चढावै नीर[12] ।
रांणा मांणकरावरै, सांगो पाट सधीर[13] ॥ १६

सोहै चवदै-चाळसै, लेखीजै भुज लाज[14] ।
सांगारी गादी सुगह, रांण तपै वछराज[15] ॥ २०

साह सिकदर सकियो[16], दे पिसुणां सिर दौड़[17] ।
रूप गादी बछराजरी, मेघो वँस सु मौड़[18] ॥ २१

मोहिल दाता-मोहरी[19], जस गाहक गुण जाण ।
सुकवि पालग वैरसल, मेघावत महरांण[20] ॥ २२

मोहिल दीधा मांगणां, हित दाखै वरहास[21] ।
वैरावत कुळ वाचिजै, दीपक जाळपदास[22] ॥ २३

---

1 कपित होते हैं। 2 दूरसे ही। 3 जिसकी अदल आज्ञा प्रवर्त होती है। 4 लोहटके पाट बोवा राणा बैठा। 5 सिद्धोके घरमे साधक ही उत्पन्न होते है। 6 जग-प्रसिद्ध। 7 खड्गके द्वारा विजय प्राप्त करने वाले। 8 बैठा, बैठता है। 9 वंशमे ध्वजा-रूप बोवेका पुत्र वेगा। 10 वेगाका पुत्र। 11 राणा माणकराव खड्ग-बलसे शत्रुओको जीत कर उनकी धरतीको अपने अधिकारमे कर उसका उपभोग करता है। 12 मनुष्योमे प्रतिष्ठा बढानेवाला चौहानोकी चौबीस शाखाओमे शोभित हुआ। 13 राणा माणकरावकी गद्दीपर धैर्यवान सागा आसीन हुआ। 14 वीरोकी भुजाओका लाजरूप माना जानेवाला चौदह-चालकी भूमिमे शोभित है। 15 सागाकी गद्दी पर उसका पुत्र वछराज राज्य करता है। 16 भय माना, डर गया। 17 शत्रुओ पर आक्रमण करता है। 18 वछराजकी गद्दी पर वशका मुकुट मेघा स्थापित हुआ। 19 मोहिल दानदाताओमें प्रथम। 20 दानियोमें महार्णवके समान विशाल हृदय वाला दानी मेघा जिसका पुत्र कवियोका पालन करने वाला वैरसल हुआ। 21 मोहिल (वैरसल)ने हितपूर्वक याचकोको घोडे दानमें दिये। 22 उस वैरसलके वशका कुल-दीपक जालपदास हुआ।

परविड़यां जागै प्रथी, कळह सँवारै कांम[1] ।
जाळपरै हद जोमरै, वीणो वँस वरियांम[2] ॥ २४
सीगाळौ कुलमे सदा, जुध वेला खग-जैत[3] ।
चाव न चूकै रामचद, वेणावत वांनेत[4] ॥ २५

॥ इति मोहिलां री वात संपूर्ण ॥

॥ कल्याणमस्तु ॥

---

1 पृथ्वीके लिये जब युद्ध प्रारभ होता है तो उसमें प्रवाडे गाये जाने जैसी वीरतासे युद्ध करके विजय प्राप्त करता है । 2 असीम शक्ति वाले जालपके कुलश्रेष्ठ वीणा उत्पन्न हुआ । 3 कुलमे वीर पुरुष और सदा युद्धमें विजय प्राप्त करने वाला (सीगाळो = १. उच्चाशय २ वीर) 4 विरुदधारी वीणाका पुत्र रामचद्र कभी अवसरको नही चूकता । (वांनेत = १. विरुदधारी २ ध्वजाधारी, ३ भालाधारी ।)

छत्तीस राजकुली इतरै गढेराज करै

१. कनवजगढे[2] राठोड ।
२ धार नगर मालव देसै पमार ।[3]
३. नाडूलगढे[4] चहुवांण ।
४. आहाड़ नगरे[5] मोहिल ।
५. साहिलगढे दहिया ।
६. थोहरगढे काबा ।[6]
७. दुरगगढे सिणवार पांणेचा बोर ।
८. रोहिरगढे* सोळंकी ।
९. मांडहड़गढे खैर ।[7]
१०. चीत्रोड़गढे मोरी ।[8]
११. मांडलगढे निकुंभ ।[9]
१२. आसेरगढे टाक ।
१३. खेड़-पाटण गोहिल ।[10]
१४. मडोहर पड़िहार ।
१५. अणहलपुर-पाटण चावोड़ा ।[11]

---

1 छत्तीस राज्यवश इतने (निम्नाकित) गढ (तथा देशो पर) राज्य करते है। 2 कन्नौजगढ पर । 3 पंवार, परमार । 4 नाडोलगढ पर । (नाडोल मारवाडके गोडवाड प्रान्तका एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर है ।) 5 आहाड नगर पर । (आहाडका प्राचीन नाम आघाट या आघाटपुर है। महाराणा उदयसिंहने इसके समीप ही अपने नाम पर उदयपुर नगर बसाया था । पुरातत्त्व विभाग, राजस्थानकी ओरसे आहाडमें इस समय खुदाई करवाई जा रही है। इस खनन-कार्यसे राजस्थान और भारतकी प्रस्तर और ताम्रयुगकी सभ्यतापर महत्व-पूर्ण प्रकाश पडा है। शोध और खनन अभी चालू है ।) 6 काबा परमारोकी एक शाखा है। 7 खैर, परमारोकी एक शाखा है। 8 चित्तौडगढ पर मौर्य राज्य। 9 माडलगढ पर निकुभ। (निकुभ, दहियोके वडेरे हैं । निकुभ ऋपिसे निकुभ शाखा चली और उनके पौत्र दधीचि ऋपिसे दहिया वश चला। किणसरिया गावके केवायदेवीके मन्दिरके वि० स० १०५६के शिलालेखमें दहियोको दधीचि ऋषिका वशज होना बतलाया है ।) 10 खेडपाटण (मार-वाड)में गोहिलोका शासन। (राठौड सीहोजी और उनके पुत्र आसथानने गोहिलोको मार-भगा कर पहले-पहल खेडपाटणमें अपनी राजधानी स्थापित की जिससे राठौडोकी पहली शाखा 'खेड़चा' प्रसिद्ध हुई। इस समय खेडपाटणमे कोई घर नही है । भग्नावशेषोके बीच केवल २–३ टूटे-फूटे मदिर स्थित हैं । बड़े मदिरकी श्री रणछोडरायकी प्रतिमा डॉ० तैस्सितोरी द्वारा पल्लू (राजस्थान)में प्राप्त की हुई सरस्वतीकी समान आकृतिकी दो प्रसिद्ध प्रतिमाओके समान आकार व समान कलापूर्ण है।) 11 अणहिलपुर-पाटनमें चावड़े। (चावडोको वाट्सन, फार्बस आदिने परमारोकी एक शाखा माना है। नैणसीने परमा-रोकी ३६ शाखाओके जो नाम दिये हैं उनमे यह नाम नही है।)

पाठान्तर—*रोहितगढ, रोहिलगढ ।

१६. पाटड़ी झाला ।
१७. करनेचगढे बूर ।
१८. कळहटगढे कागवा ।[1]
१९, भूभळियागढे* जेठवा ।[2]
२०. नारगगढे रहवर ।[3]
२१. लोहवैगढ बूया ।
२२ ब्राह्मणवाडै वारड़ ।[4]
२३. जायलवाडै खीची ।[5]
२४. वसहीगढे खरावड़ ।[6]
२५. रोहितासगढे डोड• ।[7]
२६. हिरमजगढे हरियड़
२७. दिलीगढे तुवर ।
२८. कपडविणज डाभी ।[8]
२९. हथणापुर कौरव ।
३०. मगरोपगढे मकवांणा ।[9]
३१. जूनैगढ जादम ।[10]
३२. थोहरगढे कछवाहा ।
३३ लुद्रवै भाटी ।
३४. कच्छ देसे स्यांमा ।[11]
३५ सिंध देसे जांम ।[12]
३६. अजमेरगढे गोड ।
३७ घाट देसे सोढा ।[13]
३८. देरावर दहिया ।

---

1 कागवा, परमारोकी एक शाखा । 2 जेठवा, प्रतिहारोकी शाखा है । 3 रहवर, सोलकियोकी एक शाखा । 4 वारड, परमारोकी एक शाखा । 5 खीची चौहानोकी एक शाखा । 6 प्रतिहारोकी एक शाखा । 7 परमारोकी एक शाखा । 8 डाभी, प्रतिहारोकी एक शाखा या प्रतिहारोका दूसरा नाम । (नैणसीने एक स्थान पर आबूके अनलकुडसे उत्पन्न चार क्षत्रियोके नामोमें चौथा नाम पडिहारके स्थान पर 'डाभी' नाम लिखा है । (देखिये नैणसीरी ख्यात भाग १, पृ० १३४) कपडविणज, गुजरात के नडियाद जिलेका एक नगर है । नडियाद जकशनसे कपडविणजको एक रेलकी शाखा जाती है । आजकल इसे कपडवज कहते है ।) 9 मकवाणा, झालाओकी एक शाखा है । 10 यादव । 11 स्यामा, श्रीकृष्णके पुत्र साम्बके नाम पर उसके वशज स्यामा (सम्मा) कहलाये । 12 जाम, यादवोकी एक शाखा । (जादम, स्यामा, जाम और भाटी–ये सब यादव है ।) 13 सोढा परमारो की एक शाखा ।

पाठान्तर—*भूमळियागढ । खरवड, खरवड, खराबड, खारावड । •डोडा, डोडकाग । हरमल, हिरमल, हरिमड । शुद्ध नाम 'तोमर' है । होरघ, होरड, होरव । थोहरगढ, ऊपर स० ६ मे आ चुका है । एक प्रतिमें नरवरगढ पाठ है, अतः नरवरगढ पाठ ही उचित है ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ परमारांरी वंसावली

आबू स्थान, अनळ कुंड निकासाय, पच प्रवराय।
वच्छस गोत्राय, मादधुनी साखाय, सचियाय कुळ देव्याय ॥[1]

प्रथम, आद[2]	१	राजा इद्र	१९
जुगाद[3]	२	राजा चित्रांगद	२०
कमळ	३	राजा गंद्रपसेन[10]	२१
ब्रह्मा	४	राजा वीरविक्रमादित्य	२२
मरीच[4]	५	राजा विक्रमचरित	२३
कश्यप	६	राणो अजै भूपाळ[11]	२४
धूमरिख[5]	७	राणो महपाळ[12]	२५
राजा उपळ[6]	८	रांणो मधुर	२६
राजा परूराई[7]	९	रांणो चंद	२७
राजा धर्मागद	१०	रांणो गोसील[13]	२८
राजा धरणीवराह	११	राजा सिघलसेन[14]	२९
राजा धारगिर	१२	राजा-भोज	३०
राजा धाहड	१३	राजा उदैकरण	३१
राजा धीरसेन	१४	राजा देवकरण	३२
राजा पोहपसेन[8]	१५	राजा सत[15]	३३
राजा लखसेन[9]	१६	राजा सिवर[16]	३४
राजा बुद्धसेन	१७	राजा सालवांहण[17]	३५
राजा काळसेन	१८		

---

1 परमारोका गोत्रोच्चार इस प्रकार है–आबू स्थान, अग्निकुंडसे निकास, पंच प्रवर, वच्छस (वत्स व वशिष्ठ) गोत्र, माध्यंदिनी शाखा और सचियाय कुलदेवी। 2 आदि पुरुष (परब्रह्म)। 3 युगादि (विष्णु) 4 मरीचि। 5 धूम्रऋषि। 6 उत्पल। 7 पुरुरवा। 8 पुष्पसेन। 9 लक्षसेन। 10 गंधर्वसेन। 11 अजय भूपाल। 12 महिपाल। 13 गोशील। 14 सिंहलसेन। 15 सत्य। 16 शिविर। 17 शक सम्वत् प्रवर्तक राजा शालिवाहन।

राजा हस	३६	रावत हमीर	५२
राजा हरिवस	३७	रावत हापो	५३
राजा सिध[1]	३८	रावत महपो	५४
राजा मधु	३९	रावत राघवदास	५५
राजा धुझाळक[2]*	४०	रावत करमचंद	५६
राजा बुध ईच[6]	४१	रावत पचायण	५७
राजा माघ[ᐡ]	४२	राजा मालदेव	५८
राजा उदयादीत[3]	४३	राजा सादूळ	५९
राजा जगदेव[ᐤ]	४४	राजा रायसल	६०
राजा पातळसिघ[•]	४५	राजा जूझारसिघजीरा	
राणो गुणराज	४६	भाई वखतसिघजी	६१
रांणो लाखण	४७	ठाकुर जगरूपसिघजी	६२
रांणो जसपाळ[4]	४८	ठाकुर सुरतांणसिघजी	६३
राणो लखमसी[5]	४९	ठाकुर जैतसिघजी	६४
रावत कोदो	५०	ठाकुर केसरीसिघजी	६५
रावत साघण	५१	ठाकुर माधोसिघजी	६६

---

1 सिधु। 2 धूम्रज्वालक। 3 उदयादित्य। 4 यशपाल। 5 लक्ष्मणसिंह।

[आदि पुरुपसे ठाकुर माधोसिंह तक केवल ६६ पीढियें एक विचित्र-सी वात ज्ञात होती है। ख्यातके प्रथम भाग, पृ० ३३६ और पृ० ३३८ मे दो छोटी वशावलियें सोढो और साखलोसे सबध जोडने वाली और दी गई है, जो कोई किसीसे मेल खाती हुई प्रतीत नहीं होती। पिछली वशावलियें तथ्योंसे निकट जान पडती हैं।]

पाठान्तर— *अनूप सस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर की प्रतिमे 'राजा झालक' नाम लिखा है। [6]बुधईस। [ᐡ]वाघ। [ᐤ]जयदेव। [•]पताळसिघ, पीथळसिघ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ राठोड़ांरी वंसावली लिख्यते

सूर्यवंस प्रसूत-राठोडान्वयावतंस-महाराजाधिराज-महाराजा श्री अनोपसिंघजी कस्य वंसावळी ।

महाराजाधिराज महाराजा श्री सूरतसिंघजी परत लिखाई[1]–

श्री आदनारायण[2]	१	शावस्त*	१३
ब्रह्मा	२	वृहदश्व	१४
मरीच	३	कुवलयाश्व (अस्यैव नामधुधुमार इति)	१५
कश्यप	४	दृढाश्व	१६
सूर्य	५	हरियश*	१७
श्राद्धदेव	६	निकुंभ	१८
इक्ष्वाकु	७	बर्हणाश्व	१९
विकुक्षि	८	कृशाश्व	२०
अनेना	९	सेनजित	२१
विश्वगंध	१०	युवनाश्व (द्वितीय)	२२
इंद्र	११		
युवनाश्व	१२		

1 सूर्यवंशमें उत्पन्न राठोडान्वयावतंश महाराजाधिराज महाराजा श्री अनूपसिंहजीकी वंशावली, जिसे महाराजाधिराज श्री सूरतसिंहजीकी प्रतिसे लिखवाई । [अन्वय=वंश । अवतंश=(१) भूषण, (२) सबसे श्रेष्ठ । परत = (१) स्वयं, (२) प्रति, नकल, (३) परतः, दूसरेसे । (४) पीछेसे । (५) पुनः, फिर । (६) किन्तु, इत्यादि ।]

[महाराजा सूरतसिंहका राज्यकाल वि० सं० १८४४से प्रारंभ होता है और ख्यात-लेखक नैणसीकी मृत्यु वि० सं० १७२७में हो जाती है । अतः नैणसी महाराजा अनूपसिंह (राज्यकाल वि० सं० १७२६–१७५५) के आगे उल्लेख ही नहीं कर सकते । इससे ऐसा प्रतीत होता है कि वंशावली बादमें लिखी गई है । परन्तु यह मिलती सभी प्रतियोंमें है । इससे मालूम होता है (और जैसा कि 'परत' शब्दके विभिन्न अर्थों पर विचार करते हैं तो यह अनुमान होता है) कि महाराजा सूरतसिंहके समय या बादमें वंशावलीका मिलान किया गया है और तत्पश्चात् शीर्ष-वाक्यमें 'महाराजाधिराज महाराजा श्री सूरतसिंहजी परत लिखाई' जोड कर वंशावलीमें आगे नाम लिख दिये और लिखते गये । सभी प्रतियोंकी मूल बीकानेरकी अनूप संस्कृत लाइब्रेरीकी प्रतिमें तो ऐसा परिवर्धन (आगेके नामोंका भी) स्पष्ट नजर आता है । अतः यह स्पष्ट है कि नैणसीने यह वंशावली महाराजा अनूपसिंह तक ही लिखी है ।] 2 श्री आदिनारायण ।

पाठान्तर—*(१) श्रावस्त, (२) श्रीवत्स । *(१) हरिअश्व, (२) हरिताश्व ।

माधाता चकवै[1]	२३	नाभ	४७
पुरुकुत्स	२४	सिंधुद्वीप	४८
त्रिदस[2]	२५	अयुतायु	४९
अनरण्य	२६	ऋतपर्ण[4]	५०
हर्यश्व	२७	सर्वकाम	५१
प्रणव	२८	सुदास	५२
त्रिवंधन	२९	अश्मक	५३
सत्यव्रत	३०	मूलक	५४
हरिश्चद्र[3]	३१	दशरथ (प्रथम)	५५
रोहिताश्व	३२	एलविल	५६
हरित	३३	विश्वसह	५७
चप*	३४	खटवांग[5]	५८
सुदेव	३५	दीर्घबाहु	५९
विजय	३६	रघु	६०
भरुक°	३७	अज	६१
वृक	३८	दशरथ (द्वितीय)	६२
बाहुक	३९	श्री रामचन्द्रजी	६३
सगर	४०	कुश	६४
महायश	४१	अतिथि*	६५
अजमजस	४२	निषध	६६
अंशुमान	४३	नल	६७
दिलीप	४४	पुडरीक	६८
भागीरथ	४५	खेमधुनी[6]	६९
श्रुत	४६	देवनीक	७०

1 मान्धाता चक्रवर्ती। 2 त्रिदस्यु। 3 कई प्रतियोमे स० ३० और ३१के दोनो नामोको 'सत्यव्रत हरिश्चन्द्र' एक करके लिखा है। 4 ऋतुपर्ण 5 खट्वांग (षट्वांग) नामक एक राजर्षि। 6 क्षेमध्वनि।

पाठान्तर— *(१) चंपक (२) पच। °(१) रुरुक, (२) रुरु। *अतिथ।

अहीन	७१
पारियात्र◎	७२
वृहस्थल	७३
अर्क	७४
वज्रनाभ	७५
सगण	७६
वृहत्	७७
हिरण्यनाभ	७८
पुष्य	७९
ध्रुवसंधि*	८०
भव	८१
सुदर्शन	८२
अग्निवर्ण	८३
शीघ्र	८४
मरु	८५
प्रसयतु¤	८६
सिधु	८७
अमर्षण	८८
सहस्वान	८९
विश्वसक्त	९०
प्रसेनजित	९१
तक्षक	९२
वृहब्दल	९३
वृहद्रण◊	९४
गुरुक्रिय✱	९५
वत्सवृद्ध	९६
प्रतिव्योम	९७
भानु	९८
विश्वक⁶	९९
वाहनीपति	१००
सहदेव	१०१
वीर	१०२
वृहदश्व	१०३
भानुमान	१०४
प्रतीक*	१०५
सुप्रतिकाश¤	१०६
मरुदेव	१०७
क्षत्र	१०८
....	१०९
पुष्कर°	११०
अतरिख[1]	१११
वृहद्भानु	११२
वह◊	११३
कृतजय✱	११४
रणजय	११५
संजय	११६
श्राव⁶	११७
शुद्धोद*	११८

1 अतरिक्ष।

पाठान्तर—◎पारिजात्र। *ध्रुवसिन्धु, ध्रुवसध। ¤प्रशस्तनु। °विश्वस्त विश्वस्नक, विश्वसिक्त। ◊वृहद्रण। ✱गुरुप्रिय। ⁶विशक, विथक। *प्रतीक्ष। ¤सुप्रतिकाम। °पुष्य। ◊वहीं। ✱क्रतुजय। ⁶श्रीय। *शुद्धोदन।

लांगल	११९	१० राव छाडोजी	१४४
प्रसेनजित	१२०	११ राव तीडोजी	१४५
क्षुद्रक	१२१	१२ राव सलखोजी	१४६
रुणक	१२२	१३ राव वीरमदेजी	१४७
सुरथ	१२३	१४ राव चूडोजी	१४८
सुमित्र	१२४	१५ राव रिणमलजी*	१४९
महिमडल पालक	१२५	१६ राव जोधोजी	१५०
पदारथ	१२६	१७ राव वीकोजी	१५१
ज्ञानपति	१२७	१८ राव लूणकरणजी	१५२
तुगनाथ	१२८	१९ राव जैतसीहजी	१५३
भरत	१२९	२० राव कल्यांणमलजी	१५४
पुजराज	१३०	२१ महा० श्री रायसिघजी	१५५
वभ	१३१	२२ महा० श्री सूरसिघजी	१५६
अजैचद	१३२	२३ महा० श्री करणसिघजी	१५७
अभैंचद	१३३	२४ महा० श्री अनोपसिघजी	१५८
विजैचद	१३४	२५ महा० श्रीसुजांणसिघजी	१५९
१ जयचद	१३५	२६ महा० श्रीजोरावरसिघजी	१६०
२ वरदायीसेनजी	१३६	२७ महा० श्री गजसिघजी	१६१
३ सेतरामजी	१३७	२८ महाराजाधिराज महा० श्री सूरतसिघजी	१६२
४ राव सीहोजी	१३८	२९ महाराजाधिराज महा० श्री १०८ रतनसिघजी	१६३
५ राव आसथानजी	१३९	३० महाराज कुंवर श्री १०८ श्री सरदारसिघजी	१६४
६ राव धूहडजी	१४०		
७ राव रायपालजी	१४१		
८ राव कान्ह	१४२		
९ राव जालणसीजी	१४३		

[आदि स० १७ और पश्चात स० १५१ राव वीकासे वीकानेरके राठौड-शासकोकी वशावली प्रारम्भ होती है। राव वीकाने स० १५४५मे वीकानेर नगर अपने नामसे वसा कर वहा अपनी राजधानी स्थापित की। इसके पूर्व राव जोधाने (स० १६ और १५०) सं० १५१५मे अपने नामसे जोधपुर नगर वसा कर मडोरसे अपनी राजधानी उठा कर जोधपुरमे स्थापित की।]

पाठान्तर—*रिडमलजी।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

टीकै बेठांरी विगत

संमत १५०० राव श्री जोधोजी टीकै बैठा गांम चूडासरमें वीकानेररै देस ।[1]

समत १५२९ रावजी श्री वीकोजी टीकै बैठा गांम कोडमदेसरमे[2] ।

संमत १५५४ रावजो श्री लूणकरणजी टीकै बैठा ।

संमत १५८१ रावजी श्री जैतसिंघजी टीकै बैठा ।

समत १५९९ रावजी श्री कल्याणमलजी टीकै बैठा ।

समत १६३० महाराजा श्री रायसिंघजी टीकै बैठा ।

संमत १६७० महाराजा श्री सूरसिंघजी टीकै बैठा ।

समत १६६८ दलपतसिंघजी टीकै बैठा । वरस २ राज कियो । पछै महाराजा श्री सूरसिंघजी टीकै बैठा ।

समत १६८८ महाराजा श्री करणसिंघजी टीकै बैठा ।

संमत १७२६ महाराजाधिराज श्री अनोपसिंघजी टीकै बैठा ।

संमत १७५७ महाराजा श्री सुजाणसिंघजी टीकै वैठा सतारेमें वैसाख सुदि ३ ।[3]

समत १७९३ महाराजाधिराज श्री जोरावरसिंघजी टीकै बैठा गढ वीकानेर । मिती आसोज सुदि१०, दिन घडी ११ चढिया बैठा ।[4]

संमत १८०३ मिती आसोज वदि१२ महाराजाधिराज महाराजाजी श्री गजसिंघजी राजतिलक विराजिया गढ वीकानेर ।[5]

संमत १८४४ वैसाख सुदि९ राजसिंघजी टीकै बैठा । दिन१२ ।[6]

समत १८४४ आसोज सुदि१० महाराजाधिराज महाराजा श्री सूरतसिंघजी राजतिलक विराजिया ।

---

1 वीकानेर राज्य (अब राजस्थान राज्यका एक जिला)के चूडासर गावमे सम्वत् १५००मे राव जोधाजी सिंहासनासीन हुए । 2 वीकानेरके कोडमदेसर गावमे राव वीकोजी सम्वत् १५२९मे गद्दी वैठे । 3 सम्वत् १७५७की वैशाख शु० ३को महाराजा सुजानसिंहजी सतारेमे टीके वैठे । 4 महाराजाधिराज जोरावरसिंह सम्वत् १७९३के आश्विन शु० १० को ११ घडी दिन चढे वीकानेरके गढ़मे टीके वैठे । 5 महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंहका सम्वत् १८०३ मिती आसोज वदि १२को वीकानेरके गढमे राज्यतिलक हुआ । 6 सम्वत् १८४४ वैशाख सुदि ९को राजसिंहजीका राज्यतिलक हुआ । केवल १२ दिन राज्य किया ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जोधपुररी पीढियां

(टीकै बैठारी विगत[1])

समत १५२६ राव सातल टीकै बैठो मडोहरमें ।[2]

समत १५४६ राव सूजो टीकै बैठो ।

समत १५७२ राव गागोजी टीकै बैठा ।

समत १५८२ राव मालदेवजी टीकै बैठा ।

समत १६१६ राव चद्रसेणजी टीकै बैठा ।

समत १६४० राव उदैसिघजी टीकै बैठा । पछै राजाईरो टीको दियो ।[3]

समत १६५२ राजा सूरसिघजी टीकै बैठा ।

समत १६७६ राजा गजसिघजी टीकै बैठा ।

समत १६९५ राव ग्रमरसिघनूं टीको देनै नागोर दियो ।[4]

समत १६९५ महाराजाधिराज श्री जसवतसिघजी टीकै बैठा ।

। इति श्री पीढियांरी टीकै बैठारी विगत सपूर्ण ॥

॥ शुभ भवतु ॥

---

1 जोधपुरकी पीढिया और राज्यासीन हुए जिसका विवरण । 2 सम्वत् १५२६-मे राव सातल मडोरमे टीके बैठा । (राव सातलके राज्यतिलकका समय सवत् १५४५ जेठ सुदि ३ का है । स० १५४५मे राव जोधाके देहान्तके बाद जोधपुरमे सातल उनके पट्टाधिकारी हुए ।) 3 सम्वत् १६४० राव उदयसिहजी टीके बैठे । पीछे राजाकी उपाधिका टीका दिया गया । 4 सम्वत् १६९५मे राव ग्रमरसिहको टीका देकरके नागोर दिया ।

।। श्री रांमजी ।।

भिन्न भिन्न वाकांरा संमत[1]

गढ लियारी विगत[2]

समत ११६७ दिली तुरकांणो हुवो । चहुवांण रतनसी जुहर कर कांम आयो । गजनीसूं पातसाह साहिबदी लीधी ।[3]

समत १६२४ मिगसर वदि२ पातसाह अकबर आय चीतोड घेरियो । चैत वदि११ गढ तूटो । राठोड़ जैमल काम आयो । पतो सीसोदियो, मालदे पमार, बीजो घणो ही साथ कांम आयो ।[4]

समत १५९२ श्रावण सुदि११ चांपानेर पातसाह हुमाउ आयो । राव प्रतापसी चहुवांण जुहर कर काम आयो ।[5]

समत १३६१ पातसाह अलावदीनरी फोजां जेसळमेर आई । वरस १२सू गढ तूटो । रावळ मूळराज रतनसिंघ काम आया ।[6]

संमत १३५२ पातसाह अलावदीनरी फोजां आई । गढ दोलतावाद तूटो । जादव रांम कांम आयो ।[7]

समत १३५० गढ ग्वाळेर तूटो । राजा मांन तुवर पासा पातसाह अलावदीन गढ लियो । पछै पातसाह गढ चढियो ।[8]

---

1 अलग अलग युद्धोके सम्वत् । 2 गढ विजय किये उनका वर्णन । 3 सम्वत् ११६७मे दिल्लीमे तुर्कोंका राज्य हुआ । चौहान रतनसी जौहर कर काम आया । गजनीमे वादशाह शाहवुद्दीनने आकर दिल्ली पर अधिकार किया । 4 सम्वत् १६२४ मृगशीर्ष कृष्ण २को वादशाह अकवरने चित्तौडको घेरा । चैत्र कृष्ण ११को गढ टूटा । राठौड जयमल काम आया । पत्ता शिशोदिया, मालदे, पँवार और दूसरा वहुत साथ काम आया । 5 सम्वत् १५९२ श्रावण शुक्ल ११ वादशाह हुमायु चापानेर पर चढ कर आया । राव प्रतापसी चौहान जौहर कर काम आया । 6 सम्वत् १३६१मे वादशाह अलाउद्दीन की फौजे जैसलमेर पर चढ आई । वारह वर्षोंमे गढ टूटा । रावल मूलराज और रतनसिंह काम आये । 7 सम्वत १३५२मे वादशाह अलाउद्दीनकी फौजे दौलतावाद पर चढ कर आई । दौलतावादका गढ टूटा । यादव राम काम आया । 8 सम्वत् १३५०मे ग्वालियरका गढ टूटा । राजा मान तोमरसे वादशाह अलाउद्दीनने गढ लिया, फिर वादशाह गढ़ पर चढा ।

समत १३५३ अलावदीन पातसाह गुजरात लीधी करण गेहलड़ा पासा। नागर बाभण माधव आगै हुय दिराई।[1]

समत १३५५ राणा रतनसेन ऊपरा पातसाह अलावदीन आयो। भड लखमणसी बेटां १२सू कांम आयो। गढ राखियो। राणानू छुडायो।[2]

संमत १३५८ गढ रिणथंभोर तूटो। राव हमीरदे चहुवांण कांम आयो। पातसाह अलावदीन आप आयो।[3]

समत १३६८ जाळोर तूटो। पातसाह अलावदीन आयो। चहुवांण कांन्हड़दे वीरमदे सोनगरा काम आया।[4]

संमत १३६४ गढ सिवांणो तूटो। पातसाह अलावदीन आयो। चहुवांण सातल सोम काम आया।[5]

समत १३६५ अजमेर लियो। पातसाह अलावदीन आप आयो।

संमत १३६५ मडोहर लियो। पातसाह अलावदीन आयो।

संमत १३.. रावळ दूदै तिलोकसीह जुंहर कियो। पातसाह पीरोजसाहरो फोजां आई। जेसळमेर पालटियो।[6]

---

1 सम्वत् १३५३में अलाउद्दीन बादशाहने कर्ण गहलडेसे गुजरात ली। नागर ब्राह्मण माधवने आगे होकर अधिकार करवाया। 2 सम्वत् १३५५में राणा रत्नसेन पर बादशाह अलाउद्दीन चढ कर आया। भड लखमणसी अपने १२ पुत्रो सहित काम आया। गढको रख लिया और राणाको छुडाया। 3 बादशाह अलाउद्दीन स्वय चढ कर रणथभोर पर आया। राव हमीरदे चौहान काम आया। सम्वत् १३५८में रणथभोरका गढ टूटा। (नैणसीरी ख्यात भाग १ पृ २२०मे 'सवत् १३५२ श्रावण वदि ५ हमीरदेजी काम आया' लिखा है।) 4 सम्वत् १३६८ में जालोरका गढ टूटा। बादशाह अलाउद्दीन चढ कर आया। चौहान कान्हडदे और वीरमदे सोनगरे काम आये। 5 सम्वत् १३६४में सिवानेका गढ टूटा। बादशाह अलाउद्दीन चढ कर आया। चौहान सातल और सोम काम आये। 6 सम्वत् १३६ . रावल दूदा और तिलोकसीने जौहर किया। बादशाह फिरोजशाहकी फौजे चढ़ कर आई। जैसलमेरका राज्य पलटा।

दिल्ली राजा बैठा तियांरी विगत[1]

राज कियो तिका विगत[2]

१. राजा जुधिष्ठिर	वरस ६३ राज कियो।				
द्वापरमे वरस ६०, कळूमें वरस ३[3]					
२. राजा परीक्षित	वरस ६०				
३. राजा जनमेजय	वरस ८५	मास	५।।		
४. राजा अश्वमेघ	वरस ८२	मास	२।।		
५. राजा अर्धसोम	वरस ८०	मास	४।।		
६. राजा वर्ततेजस	वरस ८१	मास	११[4]		
७. राजा आदिसथ	वरस ७८	मास	७		
८. राजा चित्ररथ	वरस ७२	मास	११		
९. राजा धृतस्यंद	वरस ७५	मास	११		
१०. राजा सुविधि	वरस ६९	मास	११		
११. राजा सेन	वरस ६८	मास	५		
१२. राजा रिष	वरस ६५	मास	०		
१३. राजा मरु	वरस ६४	मास	७		
१४ राजा सिहबल	वरस ६३	मास	०		
१५ राजा परपाल*	वरस ६१	मास	१०		
१६. राजा कीर्त	वरस ५०	मास	२		
१७. राजा सत्न	वरस ५६	मास	८		
१८. राजा मेढारि	वरस ५२	मास	८		
१९. राजा बीज	वरस ५१	मास	१		

1 दिल्लीमे राजा सिंहासनासीन हुए उन (हिन्दू) राजाओंका वर्णन। 2 किसने कितने वर्ष राज्य किया उसका ब्यौरा। 3 राजा युधिष्ठिरने ६३ वर्ष राज्य किया। ६० वर्ष द्वापरमे और ३ वर्ष कलियुगमे। 4 दो तीन प्रतियोंमे राजा वर्ततेजस्के राज्यकालके वर्ष शब्दके आगे केवल दो वर्णोंकी शीर्ष-रेखा है, आगे ११ मास लिखा हुआ है।

पाठान्तर— *परिपाल।

२०.	राजा अंबुदेव	वरस ४८	मास	१०
२१.	राजा निगम	वरस ४७	मास	६
२२.	राजा जोधरथ	वरस ४५	मास	११
२३.	राजा वमुदान	वरस ४४	मास	४
२४.	राजा सडोव*	वरस ५१	राज्यम्	
२५.	राजा आदित्य	वरस ५४	मास	१०
२६.	राजा हयनर	वरस ५१	मास	--
२७.	राजा डडपान†	वरस ४८	मास	०
२८.	राजा नीत	वरस ५८	मास	५
२९.	राजा देसावर	वरस १७	मास	३
	नीतकूं मारकै राज लिया ।[1]			
३०.	राजा सूरसेन	वरस ४२	मास	८
३१.	राजा वीरसेन	वरस ५२	मास	१०
३२.	राजा अनेकसिंघ	वरस ४७	मास	१०
३३.	राजा प्राछित‡	वरस ३५	मास	६
३४	राजा विद्रुथ§	वरस ४४	मास	२
३५	राजा विजय	वरस ३२	मास	८
३६.	राजा आसावुद्धि	वरस २७	मास	३
३७.	राजा अनेकसाह	वरस २२	मास	११
३८.	राजा शत्रुजय	वरस ४७	मास	०
३९.	राजा सुवन	वरस ३०	मास	०
४०.	राजा परमपथ	वरस ४४	मास	६
४१	राजा जोधरथ	वरस २५	मास	४
४२.	राजा वीरवलसेन	वरस २१	मास	७
४३.	राजा वहुवै	राजा वीरबलसेनको मारकै राज लियो ।[2]		

1 राजा देसावरने राजा नीतको मार करके राज्य लिया । १७ वर्ष ३ मास राज्य किया । 2 राजा वहुवैने वीरवलसेनको मार करके राज्य लिया । एक प्रतिमे १७ और एक दूसरीमे २७ वर्ष इसका राज्यकाल लिखा है ।

पाठान्तर— *नडोव । †डडपाल, दडपाल । ‡पराछित । §विद्रुरथ । वडुवै ।

४४.	राजा जेसावर*	वरस	२७	मास	७
४५.	राजा शत्रुघ्न	वरस	२७	मास	२
४६.	राजा अहिपथ	वरस	१५	मास	४
४७	राजा महाबल	वरस	४०	मास	१
४८.	राजा कीर्त्तिमत	वरस	१७	मास	४
४९.	राजा चित्रसेन	वरस	२४	मास	५
५०.	राजा अनंगपाल	वरस	१७	मास	१०
५१.	राजा अनतपाल	वरस	२८	मास	११
५२.	राजा बलाहक	वरस	१९	मास	७
५३.	राजा कलकी	वरस	४२	मास	१०
५४.	राजा सेरमर्दन	वरस	८	मास	११
५५.	राजा जोवनजीत	वरस	२६	मास	९
५६	राजा हरिवश	वरस	१३	मास	११
५७.	राजा वीरधन⁕	वरस	३५	मास	४
५८.	राजा ओसत	वरस	२८	मास	११
५९	राजा डंडध°	वरस	४२	मास	७

राजा ओसतकू मारकै राज लिया ।[1]

६०.	राजा रसखडवीज	वरस	५५	मास	१०
६१.	राजा महाजोध	वरस	३०	मास	२
६२.	राजा वीरनाथ	वरस	२८	मास	५
६३.	राजा जोवराज	वरस	४५	मास	२
६४.	राजा उदयसेन	वरस	३७	मास	९
६५.	राजा आणदचंद	वरस	५२	मास	१०
६६.	राजा जैपाल	वरस	२६	मास	०

६७. राजा सुंकायत वरस १४ राज कियो ।

जैपालकू मार राज लियो ।[2]

---

1 राजा डडधने ४२ वर्ष ७ मास राज्य किया । राजा ओसतको मार करके राज्य लिया ।

2 राजा सुंकायतने जैपालको मार करके राज्य लिया । १४ वर्ष राज्य किया ।

पाठान्तर— *जैसा । ⁕वीरघन। °डडघर ।

६८. राजा विक्रमादित्य वरस ३५ राज कियो।
सुकायतकू मार राज लियो।[1]
६९. राजा समुद्रपाल वरस २४ राज कियो।
विक्रमादित्यकू मार राज लियो।[2]
७०. राजा चंद्रपाल वरस २६ मास ५
७१. राजा नयपाल वरस २१ मास ४
७२. राजा देसपाल वरस १९ मास १
७३ राजा शिभूपाल वरस ४ मास ११
७४. राजा लछपाल वरस २३ मास ३
७५. राजा गोविंदपाल वरस २८ मास १
७६. राजा अमृतपाल वरस १६ मास १०
७७ राजा लद्धपाल* वरस २२ मास ५
७८ राजा महिपाल वरस ३१ मास ९
७९. राजा हरीपाल वरस १३ मास ९
८०. राजा भोमपाल वरस ११ मास १०
८१. राजा मदनपाल वरस १७ मास ६
८२. राजा वीरमपाल® वरस १९ मास ३
८३. राजा विक्रमपाल वरस १९ मास ११
८४. राजा मलूकचंद। राजा विक्रमपालकू मार
राज लियो। वरस २ राज्यम्।[3]
८५ राजा विक्रमचंद वरस १२ मास ७
८६. राजा कामकाचंद वरस १ राज्यम्।
८७. राजा रामचंद्र वरस १३ मास ११
८८. राजा सुंदरचंद वरस १४ मास १०
८९. राजा कल्याणचंद वरस १० मास ५
९०. राजा भीमचंद वरस १६ मास २

1 सुकायतको मार करके विक्रमादित्य ने राज्य लिया। ३५ वर्ष राज्य किया।
2 समुद्रपालने २४ वर्ष राज्य किया। विक्रमादित्यको मार कर राज्य पर अधिकार किया।
3 राजा मलूकचंदने राजा विक्रमपालको मार करके राज्य पर अधिकार किया। दो वर्ष राज्य किया।

पाठान्तर— *वृद्धपाल। ®वीर्यपाल।

९१	राजा लोहचद*	वरस	२६	मास	३
९२	राजा गोविंदचंद	वरस	२१	मास	७
९३	राणी परमावतो*	वरस	१	राज्यम् ।	
९४	राजा हरभीम	वरस	४	मास	५
	राणी परमावतीकूं मार राज लियो ।[1]				
९५	राजा गोविद	वरस	२०	मास	२
९६	राजा गोपीचद	वरस	१५	मास	७
९७	राजा किसनचद	वरस	६	मास	७
९८	राजा विजैसेन	वरस	१८	मास	५
	बगाळासू आयो । किसनचदकू मार राज लियो ।[2]				
९९	राजा धनालसेन°	वरस	१२	मास	४
१००	राजा केसोसेन	वरस	१५	मास	७
१०१	राजा लछमणसेन	वरस	३६	मास	१०
१०२	राजा महादेवसेन®	वरस	११	मास	७
१०३	राजा सुखसेन	वरस	२०	मास	१
१०४	राजा सिवसेन	वरस	५	मास	१०
१०५	राजा कांतिसेन**	वरस	४	मास	८
१०६	राजा हरिसेन	वरस	१२	मास	--
१०७	राजा दससेन	वरस	८	मास	११
१०८	राजा नारायणसेन	वरस	२	मास	२
१०९	राजा दामोदरसेन	वरस	२१	मास	५
११०	राजा माधोसेन	वरस	१२	मास	२
	दामोदरसेनकू मार राज लियो ।[3]				

1 राणी पदमावती (पद्मावती)को मार करके राज्य पर अधिकार किया। 2 राजा विजयसेन बगालसे आया। किशनचदको मार करके राज्य किया। 3 राजा माधोसेनने दामोदरसेनको मार करके राज्य प्राप्त किया। वर्ष १२ मास २ राज्य किया।

पाठान्तर—*लोढचद, लोदचद। *पदमावती। °धनपालसेन। ®माधवसेन। **कीर्तिसेन।

१११	राजा लीला माधो	वरस	११	मास	५
११२	राजा माधव माधो	वरस	९	मास	१
११३	राजा सुचद माधो	वरस	१०	मास	१०
११४	सक्र माधो*	वरस	३	मास	५
११५	राजा देसावल माधो	वरस	३	मास	५
११६	राजा दससक्र माधो	वरस	२	मास	७
११७	राजा हरिसिंघ	वरस	१७	मास	२
	दससक्र माधोकू मार राज कियो ।[1]				
११८	राजा रणसिंघ	वरस	१४	मास	--
११९	राजा राज्यसिंघ	वरस	७	मास	१०
१२०	राजा वीरसिंघ	वरस	४५	मास	०
१२१	राजा नरसिंघ	वरस	१८	मास	--
१२२	राजा कलोलसिंघ	वरस	८	मास	४
१२३	राजा पिथोरा	वरस	१०	मास	२
१२४	राजा अभैमल पिथोरा	वरस	१४	मास	५
१२५	राजा दुर्जनमल ,,	वरस	१५	मास	६
१२६	राजा उदैमल	वरस	१३	मास	७
१२७	राजा विजयमल ,,	वरस	३६	मास	७
	मुसलमान				
१२८	राजा सुलतांण सांगो	वरस	३२	मास	३
१२९	सुलताण कुतबदीन[2]	वरस	४	मास	०
१३०	सुलताण अलावदीन[3]	वरस	१	मास	०
१३१	बेटो कुतबदीन ।				
१३२	समसदीन[4] सुलतांण	वरस	२६	मास	०
१३३	सुलताण रुकनदीन[5]	वरस	३	दिन	१८

1 दशसक्र माधोको मार करके राज्य प्राप्त किया । 2 कुतबुद्दीन । 3 अलाउद्दीन 4 शम्सुद्दीन । 5 रुक्नुद्दीन ।

पाठान्तर— सुरचद माधो, सुवचद, सुखचद माधो । *सकर माधो ।

१३४	साहिजादी आछी, जोरू रुकनदीन को[1], वरस ६		
१३५	सुलतांण मोजदोन, बेटो विरामसाहको[2] वरस २ मास १		
१३६	सुलतांण अलावदीन वि०	वरस ४	मास १
१३७	सुलतांण नासरदीन[3]	वरस १९	मास ३
१३८	सुलतांण गयासुदीन बलबंड[4]	वरस २१	मास ५
१३९	सुलतांण कुदाद	वरस ३	मास १०
१४०	सुलतांण जलालदी[5]	वरस ७	
१४१	सुलतांण अलावदीन	वरस २०	मास ४
१४२	सुलतांण कुतबदीन ममारख[6]	वरस ३	
१४३	सुलताण खुसरू[7]	वरस ०	मास ६
१४४	सुलताण गयासुदीन तुगलकसाह		
१४५	सुलतांण महमदी आदल[8]	वरस २७	
१४६	सुलतांण पीरोसाह[9]	वरस ६	मास ८
१४७	सुलताण तुगलसाह बेटा खिलचखां[10]	मास ६	दिन १९
१४८	सुलतांण अबाबकर[11]	वरस १	मास ६
१४९	सुलतांण महमदसाह	वरस १९	मास ६
१५०	सुलतांण अलावदीन	वरस १	मास १ दिन ६
१५१	सुलतांण अहमदसाह*	वरस १९	मास ६
१५२	खिजरखा लोदी	वरस ७	मास २
१५३	सुलताण ममारखसाह[12]	वरस १३	मास ० दिन २६
१५४	सुलतांण अहमदसाह*	वरस १०	मास ४
१५५	सुलतांण अलावदीन	वरस ७	मास ३
१५६	सुलतांण बहलोल	वरस ३८	मास ५

1 रुकनुद्दीनकी जोरू शाहजादी आछी। 2 सुलतान मौजुद्दीन विरामशाहका बेटा। 3 नासिरुद्दीन। 4 गयासुद्दीन वलवंड (वलबन)। 5 जलालुद्दीन। 6 सुलतान कुतबुद्दीन मुबारक। 7 खुशरो। 8 मुहमुद्दीन आदिल। 9 सुलतान पिरोजशाहका एक प्रतिमे वर्षके आगे दो वर्षोंकी शिरो-रेखा और आगे केवल ८ मास लिखे है। 10 खिलचखाका बेटा तुगलकशाह। 11 अबूबकर। 12 मुबारकशाह।

पाठान्तर—*महमदसाह (मुहम्मदशाद)। *महमदसाह।

१५७ सुलतांण सिकदर लोदी वरस २८ मास ५

१५८ सुलताण वहिराम वरस ७ मास २

१५९ सुलताण बाबर पातसाह वरस ३८

वरस २९ विलायत मे पातसाही करी। वरस ३ हिंदु-स्तान वीच पातसाही कीधी। सर्व वरस ७० राज्य।[1]

१६० पातसाह हमाऊंनू दिलीसू काढियो। पठांण सेरसाह पातसाही लीधी। हमाऊ विलायत गयो।

वरस ५ मास ८ पातसाही कीधी।[2]

१६१ पातसाह सेरसाह वरस ५ मास ८ राज्यम्।

१६२ पातसाह सलेमसाह[3] वरस ९ राज्यम्।

१६३ सुलतांण महमदअली[4] वरस २ मास २

१६४ पातस्याह हमाऊ[5] मास ६

१६५ पातस्याह अकबर जलालदीन[6] वरस ५१ मास ३ दिन १३

१६६ पातसाह जहाँगीर[7] नूरदीन° वरस २२ मास ६ दिन २५

१६७ पातसाह साहयार[8] मास २ दिन २५

१६८ पातसाह साहजहाँ सायवदीन[9] वरस ३२

तठा पछै औरंगसाह साहजहाँ जीवतै दक्षिणसौं आय दारासुकरसौं श्रावण वद ९ राजास खेड़ै समोगढ° कनै लडाई कीवी। दारासाहकौ नसायकै, साहजहाँकू आगराके कोटमे निजर कैद करकै औरंग दिली जाय, संमत १७१५ श्रावण सुदी १३ शुक्रवार, तारीख १ जुलकादि सन् १०६८ दोय पोहर दिन घडी १ चढियो तव दिलीका मैहला जाय तखत बैठो। तब औरंगसाह आलमगीर कहाणी।[10]

पाठान्तर—°नूरदी। °समोगर।

---

1 वादशाह बाबरने ३८ वर्ष और फिर २९ वर्ष विलायतमे बादशाही की और हिंदुस्तानमे ३ वर्ष बादशाही की। कुल ७० वर्ष तक राज्य किया। 2 बादशाह हुमायूको पठान शेरशाहने दिल्लीसे निकाल कर बादशाही ले ली। हुमायू विलायत चला गया। उसने पाँच वर्ष आठ मास बादशाही की। 3 सलीमशाह। 4 मुहम्मद अदली। 5 बादशाह हुमायू। 6 जलालुद्दीन अकबर। 7 नूरुद्दीन जहांगीर बादशाह। 8 शहरयार। 9 शाहजहाँ शहाबुद्दीन। 10 जिसके बाद औरंगशाहने शाहजहाँके जीते जी दक्षिणसे आकर दाराशिकोहसे सावन वदी ९को राजाम खेडेके समोगढके पास लडाई की। दाराशाहको भगा कर शाहजहाँको आगरेके किलेमे नजर कैद करके सम्वत् १७१५ श्रावण सुदी १३ शुक्रवार, तदनुसार तारीख १ जिलकाद, सन् १०६८को दो पहर और एक घडी दिन चढा तब दिल्लीके महलोमे जाकर तख्त पर बैठा। औरंगशाह आलमगीरके नामसे प्रसिद्ध हुआ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ वात सेतरांम वरदाईसेनोत राठोड़री लिख्यते

राजा वरदाईसेन कनवज माहै राज करै। सो वरदाईसेनजीरै सेतराम कुवर सो वडो सिरदार। पण नित्य-प्रत ३ पईसां भर अमल खावै तीनै वखते।[1] पण डील बहोत चाक रहै।[2] ताहरा किहिकै राजानू कह्यो–'जु महाराज कुमार तो तीन पईसा भर अमल रोज खावै छै।'[3] ताहरां राजा वरदाईसेनजी कही–'दीसै तो चाक छै, पण अमल खावै छै तो उरहो बोलावो ज्यु पूछां।'[4] ताहरां सेतरांम वरदाईसेनजीरी हजूर आयो। ताहरां राजा पूछियो। कह्यो–'कुमार! तू अमल कितरोक खावै छै?'[5] ताहरां कुवर कही–'महाराज! हू तो अमल कोई खाऊ नही।'[6] ताहरां वरदाईसेनजी कह्यो–'तोनूं म्हारी आंण छै, साच बोल।'[7] ताहरां कुवर सेतरांम कह्यो–'राज! तीनै वखतै तीन पईसां भर अमल खाऊ छू।'[8] ताहरा राजा अमल मगाय खवायनै देखियो।[9] ताहरां राजा कह्यो–'वेटा! जके तीन पईसा भर अमल रोजीना खाय, तिणसू काई भली होणहार नही। वेटा! थे बेहवाल हुआ।'[10] तद कुवर कही–'राज! अमल खाधो तो कासू हुओ? पण कठै मेल जोवो, काय चाकरी भळाइ जोवो?[11] देखां, किसोइक काम करू छूं।[12]

---

1 परतु नित्य प्रति तीन पैसे भर (लगभग सवा पाच तोले) अफीम दिनमे तीन वार करके खा जाता है। 2 परतु शरीर वहुत तदुरुस्त रहता है। 3 तव किसीने राजाको कहा कि 'महाराज-कुमार तो तीन पैसे भर नित्य अफीम खाता है।' 4 दिखता तो निरोग है, परन्तु जो अफीम खाता ही हो तो यहा बुला लो सो पूछ कर देख ले। 5 कुमार! तू कितना अफीम खाता है? 6 मैं तो अफीम नही खाता। 7 तुझे मेरी शपथ है, सच कह दे। 8 महाराज! दिनमे तीन समय तीन पैसो भर अफीम खाता हूँ। 9 तब राजाने अफीम मगवा कर और खिला कर जाच की। 10 पुत्र! जो तीन पैसो भर अफीम नित्य खाता है, उससे कोई भला (पुरुषार्थ) होने वाला नही। पुत्र! तुम वेहाल हो गये। 11 अफीम खाने लग गया तो क्या हुआ? कही भेज कर देख लीजिये, कोई चाकरी जिम्मे देकर देख लीजिये? 12 देख ले, कैसा काम वजा लाता हू।

अर जो आपरै दाय न आऊं छू तो क्या गळै पड़िया छां नहीं।'[1] अर बेटो थाहरो छूं सो तो धोयो ही उतरां नही।[2] और कमाय खावस्यां।'[3] ताहरा रावजी कही–'जु, अजू तो कमायो नही छै। कमावसो तद देखस्या ?'[4] ताहरा कुवर तो अठासी ऊठ अर आपरै रहवास आयो, पण उदास वहोत हुओ।[5] ताहरां रात पड़ी।

ताहरा सेतरामजी घोडै जीण कराय आपरा हथियार वाध चढ चालतो हुओ।[6] ताहरां सेतरांम चालतो-चालतो एक राजारै आयो। सेतराम राजासू मिळियो।[7] ताहरा राजा सेतरामनू जात पूछ अर आपरै गोढै राखियो।[8] अवै सेतराम अठै रहै।[9]

सु एक दिन राजा सिकार चढियो हुतो।[10] साथै सरव साथ छै। अर सेतराम पण साथ छै। तठै अै सिकार आय कठै छाया बैठा छै।[11]

अठै एक राकस रहै।[12] सु तिको राकस म्रगरो रूप कर राजारै वीच कर नीसरियो।[13] तद राजा कह्यो–'हां, जावण न पावे।'[14] तद और तो सरब बैठा रह्या, अर सेतरांम घोड़ै चढ अर लारै हुवो।[15] आगै म्रग और वांसै सेतरांम।[16] ताहरां आगै रोही मे जावतां राकस म्रगरो भैंसो हुवो।[17] ताहरा भैंसो सेतरामरै साम्हा आयो।[18] ताहरां

---

1 और जो आपके पसद नही आता हू तो आपके कही गले तो नही पड़ा हू। 2 और आपका पुत्र हू सो तो धोनेसे भी नही मिट सकता। (धोया ही नही उतरणो=१ असभव वात कभी सम्भव नहीं हो सकती। २ सम्वन्ध असम्वन्ध नही हो सकता)। 3 और कही कमा खायेंगे। 4 अभी तक तो कुछ कमाया (उपार्जन किया) नही है। कमाओगे तव देख लेंगे ? 5 तव कुमार यहांसे उठ कर अपने निवासस्थान पर आ गया, परतु उदास वहुत हो गया। 6 तव सेतरामजी घोडे पर जीन कसवा, शस्त्र वांध और चढ कर चलता वना। 7 सेतरामजी राजासे मिला। 8 तव राजाने सेतरामको उसकी जाति आदि पूछ कर अपने पास रख लिया। 9 अव सेतराम यहां रह रहा है। 10 सो एक दिन राजा शिकारको चढ़ा था। 11 वहां ये शिकारके लिये आकर कही छायामे वैठे हुए है। 12 यहा एक राक्षस रहता है। 13 सो वह राक्षस मृगका रूप वना कर राजाके (पडावके) बीचमे होकर निकला। 14 हा, सरदारो ! यह जाने नही पाये। 15 और सेतराम घोडे पर चढ कर पीछे हुआ। 16 आगे मृग और पीछे सेतराम। 17 तव आगे जगलमें जाते-जाते राक्षस मृगमे भैंसा वन गया। 18 भैंसा सेतरामके सम्मुख आया।

सेतरांम पण ऊभो रह्यो ।[1] ताहरां भैंसो राकस रूप कर बोल्यो ।[2] कहियो–'वडा रजपूत ! ओ राजा तो केहो कामरो न छै अर तू वरदाईसेनरो बेटो छै, सो तू म्हनै सौ बाकरा, सौ भैंसा अर सौ मण दारूरी म्हनै वळ दै तो तोनै हू वर देऊं ।[3] ताहरां सेतरांम कह्यो–'तो किसै दिन दियां ?'[4] ताहरां राकस कह्यो–'जु परभात देज्यो ।'[5] ताहरां सेतरांम कह्यो–'आ म्हारी बाह छै । परभातै वळ ले आवां छां ।'[6]

ताहरा सेतराम पाछो आयो । ताहरा राजा पूछियो । कह्यो–सेतराम ! कासू हुतो ?'[7] ताहरा सेतराम कह्यो–'महाराज ! हिरण थो सु नीसर गयो ।'[8] ताहरां ऐ अठै गोठ जीम घरै आया छै ।[9]

तद सेतरांम सौ भैंसा, सौ बाकरा अर सौ मण दारू मंगायो । ताहरां रात आधीक गई, ताहरा सेतरांम वळ सरब ले अर अठै राकसरै ठिकांणै आयो ।[10] ताहरां बकरा, भैंसा मार, दारू नाख अर राकसनू वळ दियो ।[11] राकस त्रिपत हुओ ।[12] ताहरां राकस कही–'जु, सेतरांम ! तू कहै तो तोनै द्रव्य वताऊं ?' ताहरा सेतराम कही–'द्रव्य तो म्हारै घणो ही छै, पण कोई इसो वर दै तैसू नाम रहै ।'[13] ताहरा राकस कही–'जा, तैमे पांच हाथियारो बळ हुसी ।'[14] सेतरांम मे पाच हाथियांरो बळ हुओ । ताहरा सेतराम विचारियो–'जु ईयै राजारै तो न रहा, औेर कठै ही जायगा जावस्यां ।'[15]

ताहरा सेतराम उठैसू आपरो हक चुकाय अर चालियो सु केही

---

1 तव सेतराम भी खडा रह गया । 2 तव भैंसेने राक्षसका रूप वना कर कहा । 3 यह राजा तो किसी कामका नही है और तू है वरदाईसेनका पुत्र, अत तू मुझे १०० वकरे, सौ भैंसे और सौ मन मदिराकी वलि दे तो मैं तुझे वरदान दू । 4 कौनसे दिन दू ? 5 कल प्रभातको देना । 6 यह मेरी वाह है (मेरी प्रतिज्ञा है), प्रभातको वलि ले आता हूं । 7 क्या था वह ? 8 हरिण था सो निकल गया । 9 तव ये गोठ जीम करके घर पर आ गये हैं । (गोठ=प्रीतिभोज) । 10 जव आधी रातके लगभग हो गई तव सेतराम वलिका सव सामान लेकर राक्षसके ठिकाने पर आया । 11 तव वकरे और भैंसोको मार कर और शराव डाल कर राक्षसको वलि दी । 12 राक्षस तृप्त हुआ । 13 द्रव्य तो मेरे पास वहुत है परन्तु ऐसा वर दे जिससे मेरा नाम प्रसिद्ध हो । 14 जाओ, तेरेमे पाच हाथियोंका वल होगा । 15 अव इस राजाके यहाँ तो नही रहे, और कही दूसरी जगह जायेंगे ।

बीजै राजारै सहर आयो ।[1] तद सेतराम दरबार मांहै आय बैठो। ताहरां दरबारी ईयारी पोसाख अर बळ देख अर भीतर जाय राजा-सू अरज गुदराई ।[2] कह्यो–'महाराज ! एक इसो सिपाही आयो छै सु देख्यो चाहीजै । वडो सिरदार छै ।'[3] ताहरा राजा कही–'तो भीतर बुलावो ।' ताहरा दरबारी सेतरांमनू भीतर ले गयो । और जाय राजासू मिळियो । राजा सेतरामरी पोसाख देखनै वहोत ही राजी हुओ । विचारो–'ओ कोई सिरदार दीसै छै ।'[4] ताहरां राजा वडो आदर करनै वैठायो । अर राजा पूछियो–'जु कि–जातिया सिर-दार छो ?'[5] ताहरा सेतरामजी कह्यो–'राठोड छा[6], चाकर राखो तो अठै रहां ।'[7] ताहरा राजा रुपिया चार रोजीना कर दिया अर चाकर राखियो ।

हमैं सेतराम अठै रहै चाकर-वासै अर साथ भेळो करै, घोड़ा भेळा करै, वडै सैमानसू रहै ।[8] तठै सेतरांम राजारी हजूर आवै सु बरछी लिया आवै, तद मुजरो करै ।[9] राजा कहै–'बैठो ।' ताहरा बरछी लेअर खडी कर दावै सु बिछायत माहै कर गढरो आंगणो तैमे हाथ एक बरछी गरक हुवै ।[10] सु राजा तो काहिणनू मन हकरै,* पण लोक देखै अर राजारी राणी पण कही भांत देखै[11], सु अै हैरान रहै अर विचारै–'जु आज ईयै बराबर सामंत कोई नही ।[12]

1 तव सेतराम वहांसे अपना हक अदा करके रवाना हुआ सो किसी दूसरे राजाके शहरमे आया । 2 तव दरवारीने इसकी पोशाक और वलका अनुमान कर और भीतर जाकर राजासे अर्ज पेश की । 3 महाराज ! एक ऐसा सिपाही आया है सो देखना चाहिए (देखने योग्य है ।) वडा सरदार है । 4 यह कोई सरदार दिखता है । 5 किस जातिके सरदार हो ? 6 राठौड है । 7 चाकर रखो तो यहां रहें । 8 अव सेतराम यहां चाकर वासमे रह रहा है, आदमी और घोडे इकट्ठे करता है और वडे ठाठसे रहता है । 9 वहां सेतराम मुजरेको आता है तव अपने साथ वर्छी लेकर आता है और वर्छी के साथ मुजरा करता है । 10 तव वर्छी खडी करके दवाता है सो विछायतमे होकर गढ के आगनमें एक हाथ ऊडी वर्छी प्रवेश हो जाती है । 11 सो राजा तो इधर ध्यान ही क्यो देने लगा, परन्तु दूसरे सभी लोग देखते ही हैं और राजाकी राणी भी किसी प्रकार देख लेती है । 12 आज इसके समान सामंत कोई नही है ।

* 'काहिणनू मनह करै' पाठान्तर है ।

सु ओ रोज नवी-नवी जायगा बरछी खोहै सु आगणा मैं वेडा-वेडा हुय रह्या ।[1] ताहरा रांणी एक दिन सात तवा लोहरा, सवा-सवा मणरो एक-एक तवो, कराय अर जठै सेतराम आय बैसतो तठै गच-मे तवा गडाया । ऊपर विछावणा विछाया ।[2] ताहरा प्रभातरा सेत-रांमजी राजाजीरी हजूर मुजरै आया ताहरां वैसतां बरछो दावी ज्यु भूय करड़ी लखाई, ताहरां जोर कर दाबी, सु बरछी हाथ दोय गडी ।[3] ताहरां सेतरांमजी मनमे जाणियो–'आज तो बरछी बळ करायो ।'[4] पछै सेतरांमजी बैठा । ताहरा राणी जाणियो–'जु तवा तो फोडिया पण बरछी काडसी किसी भांत ?'[5] पछै सेतरांमजी कितरीहिक जेजसू बोहडण लागा; बरछीनू हाथ घातनै ज्युं खांची सु तवा साते ही साथै आया बरछीरै ।[6] आंगणो पण खुल गयो अर विछायत पण ऊपडी ।[7] ताहरा राजा कह्यो–'ओ कासू ?'[8] ताहरां सेतरांम कही–'महाराज ! हूं बैठतो तठै बरछी गडती, सु दीसै छै आज कोई म्हारी मसकरी कीवी छै ।'[9] तद राजा विछावणा परहा कराय देखै तो कासू ? सारे ही वेडा-वेडा छै ।[10] ताहरा राजा बहोत महरवान हुओ । वडो कारण कियो अर रिजक पण वडो कर दियो ।[11]

अठै सेतरांमजीरो पण एक जुदो ही राज हुओ ।[12] ताहरां यु करतां राजा एक दिन सिकार चढियो सरब साथ लेअर ।[13] साथै

---

1 यह नित्य नई-नई जगहोमे वर्छी घुसेडता है सो आगनमे खड्डे ही खड्डे हो रहे हैं । 2 तब रानीने सवा-सवा मनके लोहेके सात तवे करवाये और जहां सेतराम आ करके बैठा करता था वहा गच के अदर तवे गडवा दिये और ऊपर बिछौने विछवा दिये । 3 प्रभातके समय जब सेतरामजी राजाजीकी हजूरमे मुजरा करनेको आये तब बैठते हुए वर्छीको दबाया सो भूमि कठिन मालूम हुई, तो जोर करके दबाया सो वर्छी दो हाथ गहरी गड गई । 4 आज तो वर्छीने जोर मागा है । 5 तवे तो फोड दिए परन्तु वर्छी निकालेगा कैसे ? 6 कितनीक देरके बाद जब सेतरामजी लौटने लगे तो बर्छीको हाथ डाल कर ज्यो खींचने लगे त्योही बर्छीके साथ सातो तवे उखड़ि आये । 7 आंगन खुल गया और विछायत भी साथ की साथ उठ आई । 8 यह क्या ? 9 महाराज ! जहाँ मैं बैठता था वहाँ वर्छी गड जाया करती थी सो आज ऐसा मालूम होता है कि किसीने मेरी मजाक कर दी है । 10 तब राजा विछायतको दूर करके क्या देखता है कि सभी जगह खड्डे ही खड्डे बने हुए हैं । 11 बडा सम्मान किया और जीविका भी बढा दी । 12 यहा सेतरामजीका भी एक अलग राज्य कायम हो गया । 13 एक दिन राजा सभीको साथमे लेकर शिकारको चढा ।

सेतरामजी पण हुआ ।[1] सु कठैक जावता सूअररो सिकार हाथ आयो ।[2] सु केई केहि पासै सूअरा वांसै दिया[3], केई केहि पासै हुआ ।[4] सेतरामजी एकै सूअर वासै घोडो दियो ।[5] सो सूअर कठै ही जाय नीसरियो ।[6] जठै[7] हाथियारो वन हुतो अर रात पडण लागी । ताहरा सेतरामजी एकै रूख[8] चढि बैठ रह्या छै अर घोडो रूख हेठै[9] बाधियो हुतो[10], सु सीह खाय गयो ।[11] ताहरा प्रभात हुओ । ताहरा सेतरामजो विचारियो–'जु घोड़ो तो नही अर डील मे भारी सु पाळा चालियो न जाय ।'[12] ताहरां मन मे विचारियो–'जु एकै हाथी चढ अर जावां ।'

ताहरा सेतरामजी एकै नाळेररै रूख चढि अर बैठा छै ।[13] तितरै एक वडो हाथी आय नाळेररै रूख नीचै नीसरियो । ताहरां सेतरामजी उठैसू धमक अर आय हाथी चढिया ।[14] ताहरा हाथी क्यु जोर करण लागो । ताहरा सेतरामजी दोय कटारी वाही तैसूं सूधो हुओ ।[15] सु हाथो लियां-लिया सहर आया ।[16] ताहरा सेतरामजी राजारी हजूर आया । ताहरां हाथी लोहीसू ववाळियो राजा दीठो ।[17] तद राजा पूछियो । कहियो–'ओ कासू ?' ताहरा सेतरामजी कह्यो–'जु सूअर तो नीसर गयो अर इण भांत रात वनमे रह्या । सु घोडो तो सिंघ मार गयो । ताहरां म्हे पाडो पकड अर चढ आया ।'[18] 'ताहरा राजा वळै[19] बहोत महरवान हुओ ।

---

1 सेतरामजी भी साथ हो गये । 2 सो कही एक दूर जाते सूअरका शिकार हाथ आया । 3–4 सो कईयोने किसी (एक) ओरसे और कईयोंने किसी (दूसरी) ओरसे सूअरो के पीछे अपने-अपने घोडे दिये । 5 सेतरामजीने भी अपना घोडा एक सूअरके पीछे दिया । 6 सो सूअर तो कहीं जा निकला । 7 जहां । 8 वृक्ष । 9 नीचे । 10 था । 11 सो सिंह खा गया । 12 घोडा तो है नही और खुद शरीरमे भारी इसलिए पैदल तो चला नही जा सकता । 13 तब सेतरामजी एक नारियलके वृक्ष पर चढ कर बैठ गए हैं । 14 तब सेतरामजी उस परसे कूद कर हाथी पर सवार हो गए । 15 सेतरामजीने कटारीमे दो प्रहार किए जिससे सीधा हो गया । 16 सो हाथीको लिये लिये शहरमे आये । 17 तब राजाने खूनसे लथ-पथ हाथीको देखा । 18 तब हम इस पाडेको पकड कर चढ आये । 19 पुन ।

ताहरा अै तो अठै रहै छै ।[1] अर ईयै[2] राजारो भाई सो दूसरै सहररो धणी । सु तैरो बेटो परणीजणनूं कठैक गयो हुतो सु हलांणो लियां आवतो ।[3] सु वीच आवतां महळरो डोल वेचाक हुओ ।[4] ताहरां एकै सहर आय मुकांम कियो । ताहरां कुवर सहररै राजानूं कह्यो–'जु थांहरै कोई वैद हुवै तो मेलो ।[5] ताहरा राजारै नाई वैद हुतो, तियेनूं राजा कुवररै डेरै मेलियो ।[6] ताहरा कुंवर नाईनूं[7] भीतर ले गयो । आगै तम्बूरो कोटडी माहै महळ सूतो हुतो ।[8] ताहरां पड़दैसू हाथ बाहिर काढि अर नाड़ दिखाई । ताहरां नाई हाथ देख अर थकित हुओ ।[9] विचारी–'जु जैरो ओ हाथ छै तो रूपरी निधांन हुसी ।[10]' ताहरां नाई तो नाड देख, ओखद वताय अर घरै आयो ।[11] ताहरा मास एक कुवर अठै रह्यो । महळ चाक हुओ ।[12] ताहरां नाईनूं घोडो सिरोपाव दे विदा कियो ।[13]

ताहरा नाई राजारी हजूर गयो । ताहरां राजा पूछियो । कह्यो–'रे ! आयो ?'[14] ताहरा नाई कह्यो–'महाराज ! आयो तो सही, पण कुवररै महळ छै तैसो आज कहीरै नही ।[15] वडा वखांण किया ।[16]' तद राजा कही–'तो कही भात आंपणै ही हाथ आवै ?[17] ताहरा नाई कह्यो–'राज ! कुवरनूं मारनै[18] लेवो तो हाथ आवै ।'

तद राजा अठैसूं[19] चढ अर कुवररै डेरै आयो । ताहरां राजा कहियो–'जु कुवरजी ! राज प्रभातै माहरी महमानी जीम अर चढो ।[20]'

---

1 यह तो यहाँ रह रहे है । 2 इस । 3 सो उसका वेटा कही शादी करनेको गया था सो वधूको ले करके आ रहा था । 4 सो आते रास्तेमे वधू वीमार हो गई । 5 तुमारे यहाँ कोई वैद्य हो तो भेजिए । 6 राजाके पास एक नाई वैद्य था उसे राजाने कुँवरके डेरे पर भेजा । 7 नाईको । 8 तवूकी एक कोटरीमे स्त्री सोई हुई थी । 9 नाई हाथ देख कर चकित हो गया । 10 जिसका यह हाथ है वह रूपकी तो निधान होगी । 11 तव नाई नाडी देख और औषधि वता कर अपने घर पर आ गया । 12 स्त्री स्वस्थ हो गई । 13 तव नाईको घोड़ा और सिरोपा देकर विदा किया । 14 अरे ! आ गया । 15 महाराज ! आ तो गया ही हू , परतु उस कुवरकी जो स्त्री है ऐसी रूपावान स्त्री आज किसीके नही । 16 उसके वहुत बखान किए । 17 किसी प्रकार अपने हाथ वह लग सके ? 18 मार कर । 19 यहाँसे । 20 कुवरजी ! आप कल प्रभातमे हमारा आतिथ्य स्वीकार करें और भोजन करके रवाना होएं ।

ताहरा इहां वडो हठ कियो आपस मे ।[1] पण आखर कुवर आरै हुओ ।[2] कह्यो–'भला राज ! जीम अर चढस्यां ।[3]' ताहरा राजा महमांनीरो तयारी कीवी ।[4] अर दारू आसो मगायो तैं पियासू तुरत घूट हुवै ।[5] अर राजा आपरा चाकरांनू कह्यो–'आज सारत छै, जद हूं कहू–कुंवरजीनूं एक प्यालो वळै फेरो, ताहरां थे लोह कर मार लिया ।[6]

ताहरा गोठ तयार हुई ।[7] अर कुवरनू, सारै साथनू कोटमे तेडि ले आया ।[8] अर वासै आदमो ५–१० राख अर कुवर राजा पासै आयो ।[9] अर अठै कुवरनू अर रजपूतानू इसा छकाया तैंसू पग टेक सगै नही ।[10] ताहरा कुवर राजानू कही–'राज ! आप पण आवो जीमां ।'[11] तद राजा कही–'हू थाहरी चाकरी मे ऊभो छूं ।'[12] ताहरां सारै साथनू परीसारो करण लागा ।[13] ताहरां राजा सारत वोलियो ।[14] कह्यो–'एक प्यालो वळै फेरो ।'[15] ताहरां राजारो लोक ऊभो थो तिकै भच-भचाय अर कुवरनू अर रजपूतानू मार लिया ।[16]

राजा चढ डेरै आयो । अर राजा महळनू लेअर घर घातियो ।[17] अर लोक नाठो सु ईयै राजा पासै आयो अर कही–'आ हकीकत हुई । कुवरजीनू मारिया अर महळ ले गया ।'[18]

---

1 तो इन्होने परस्पर वडा हठ किया । 2 परन्तु अन्तमे कुंवर विवश हुआ (स्वीकार किया ।) 3 अच्छा श्रीमान् ! भोजन करके रवाना होगे । 4 तव राजाने भोजनकी तैयारी की । 5 और ऐसा आसा मद्य मगवाया जिसके पीनेसे तुरन्त वेभान हो जाय । 6 राजाने अपने चाकरोसे कहा कि आज यह सकेत है कि जव मैं कहूं कि कुवरजीके लिए एक प्याला और फिराया जाय, तव तुम शस्त्रोके प्रहार कर मार देना । 7 अव गोठ (भोजन) तैयार हुई । 8 कुंवरको और उसके समस्त साथको कोटमे वुला कर ले आये । 9 पीछे सिर्फ ५–१० आदमियोको रख कर कुवर राजाके पास आया । 10 यहां कुंवर और उसके राजपूतोंको शराव पिलाकर ऐसा छकाया कि खडे हो तो पांव भी नही टिक सके । 11 तव कुंवरने राजासे कहा कि राज ! आप भी आईये और भोजन करिये । 12 मै तुमारी चाकरीमे खडा हूं । 13 तव सवको परोसगारी की जाने लगी । 14 तव राजाने संकेतमे कहा । 15 एक प्याला और फिराओ । 16 तव राजाके आदमी खड़े थे उन्होने भचाभच शस्त्र चला कर कुंवर और उसके राजपूतोको मार दिया । 17 राजाने उसकी स्त्रीको ले जाकर अपने घरमे डाल दी । 18 शेष लोग जो रह गए थे वे वहांसे भागे सो इस राजा (कुवरके वाप) के पास आये और कहा कि कुंवरजीको मार दिया है और वधूको वह राजा ले गया । यह हकीकत वीती है ।

ताहरा ईयै राजा साथ भेळो कियो अर भाईनू कहायो–'जु भाभोजी ! एक हजार असवार म्हांरी मदत मेलज्यो ।[1] कुवररै वैरनूं चढां छां ।'[2] ताहरां ईयै राजा कहाई–'जु भावै हजार असवार लियो अर भावै एकलो सेतरांम ल्यो ।'[3] तद आदमियां जाय कहियो–'जु महाराज ! भावै हजार असवार ल्यो, भावै एक सेतरांम ल्यो ।' ताहरां राजा कहियो–'सेतरांमनू ले आवो ।' ताहरा आदमी लेअर सेतरांमनू राजारी हजूर आया । ताहरा राजा अठैसू चढियो सु ईयै राजारै सहर आयो ।[4] ताहरा ईयै राजा सहर तो उजड कियो अर कोट सभियो ।[5] ताहरा ओ राजा अठै लड़ियो सु वरस २ अथवा ३ लड़ियो पण कोट भिळै नही ।[6] ताहरा राजा सेतरांमजीनू कही–'कोट तो भिळै नही अर सांम्हो लोकरी ज्यांन ह्वै छै ।'[7] ताहरा सेतरामजी कही–'जु जो म्हारी पूठ राखो तो दरवाजैरा किंवाड छै सु हू तोड़ू ।[8] अर पछै भीतर थे वड़ज्यो ।'[9] ताहरा राजा कही–'बहोत भलां ।' ताहरां औ चढ हल्लो कर, अर दरवाजै आय लागा ।[10] ताहरां सेतरामजी घोड़ैसू उतर् अर किवाडांनू टिल्लो दियो ।[11] ताहरां किवाड़ हुता सु तूट गया अर अठै राजा भीतर वडियो ।[12] अर सेतरांमजीरै पण घाव लागा । आगलै राजारो लोक सरब मार लियो । गढ लियो ।[13]

---

1 तब इस राजाने साथ जोडा और अपने भाईको कहलवाया कि भाभाजी ! एक हजार सवार हमारी मददके लिए भेजिये । 2 कुवरको मार देनेके वैरका बदला लेनेके लिए चढाई कर रहे हैं । 3 चाहे तो एक हजार सवार लेओ चाहे अकेले सेतरामको लो । 4 तब राजा यहांसे चढा सो इस राजाके शहरको आया । 5 तब इस राजाने शहर तो खाली कर दिया और कोटमे युद्धकी तैयारी की (कोटको युद्ध सामग्रीसे सज्जित किया) । 6 यह राजा २ या ३ साल तक लडा परन्तु गढ कब्जे नही होता । 7 और उलटी लोगोंकी बरबादी हो रही है । 8–9 जो मेरी मदद करो तो दरवाजेके किंवाड तो मै तोड दू । और बादमे भीतर तुम लोग घुस जाना । 10 तब ये लोग एक साथ हल्ला करके दरवाजे तक आ लगे । 11 तब उस समय सेतरामजीने घोडेसे उतर कर किंवाडोको धक्का मारा । 12 तब किंवाड थे सो टूट गये और राजा अदर घुस गया । 13 अगले राजाके सभी मनुष्योको मार दिया और गढ़ पर अधिकार कर लिया ।

ताह्रा राजा सेतरामजीनू कही–'जु वडा राठोड़ ! तैं कीवी जिसी तू हीज करै ।[1] पण ह्मै वीजो तोनू कासू देऊ ? म्है तनैं म्हारी वेटी दीवी ।'[2] ताह्रां सेतरांमजी ऊठ सलांम कोवी ।[3] अठै[4] सेतराम-जीरा घाव साजा[5] कर अर ग्रै अठै आपरा[6] किलेदार वैठाय, अर राजा नै सेतराम आपरै घरे सहर आया । ताह्रां राजा सेतरांमजीनू भलीभांत परणायो ।[7] आधो राज दियो । वडो दायजो दियो ।[8] घोड़ा, हाथी दिया । ताह्रा सेतरांमजी मास १ अठै रह्या । ताह्रां वै राजा सेतरांमजीनू तेडायो ।[9]

ताह्रां सेतरांमजी सुसरैनू कही–'महाराज ! ह्मै मोनूं विदा दीजै । म्हनै राजा बोलायो छै ।[10] चाकर हूं उवांरो छूं ।'[11] ताह्रा राजा जवाईनू-बेटीनू विदा दीवी ।[12] सेतरामजी हर्लांणो लेअर उवै राजा पासै आया ।[13] ताह्रा राजा सांम्हां जाय ले आयो, अर वडी मनुहार कीवी ।[14] ताह्रां राजा कह्यो–'थां कीवी जिसी थांसू ही ह्वै।'[15]

ताह्रां सेतरांमजी अठे रहै छै । अर एक भोमियो धाड़ै दोड़ियो[16] सु अठै ईयैं[17] सहर आयो । आयनै सहररो वित घेरियो ।[18] ताह्रां खवर हुई–'जु भोमियो सातवीसी असवारांसू आयो नैं सहररो वित लियो ।'[19] ताह्रां सेतरांमजी एकल असवार वांसै चढ दोड़ियो ।[20] नै वांसै राजा पण वाहर चढियो । ताह्रां पहली कटकनू सेतरांमजी

---

1 तव राजाने सेतरामजीको कहा—वडे राठोड ! तूने आज जो किया है वैसा तो तू ही कर सकता है । 2 परन्तु इसके वदलेमे मैं तुझे और क्या वस्तु दू ? मैंने तुझे अपनी पुत्री दी । 3 तव सेतरामजीने उठ कर सलाम की । 4 यहां । 5 ठीक, अच्छे, स्वस्थ । 6 अपने । 7 विवाह किया । 8 वहुत दहेज दिया । 9 तव उस राजाने सेतरामजीको वुला लिया । 10 महाराज ! अव मुझे जानेकी आज्ञा दीजिये, मुझे राजाने वुलवाया है । 11 मैं उनका चाकर हूं । 12 तव राजाने अपने दामाद और वेटीको रवाना किया । 13 सेतरामजी अपनी वधूको लेकर उस राजाके पास आये । 14 तव राजा सामने जाकर ले आया और वड़ा सत्कार किया । 15 तुमने जो विलक्षण शूर-वीरताका काम किया है, वह तुममे ही हो सकता है । 16 एक भोमिया लूट-खसोटके लिए दौडा । 17 इस । 18 आकरके शहरका गोधन घेर ले गया । 19 कि भोमिया सात-वीसी (१४०) सवारोंके साथ आया और शहरका गोधन ले लिया है । 20 तव सेतरामजी अकेला सवार होकर पीछे दौडा ।

पुहता ।[1] ताहरां सारा ही असवार पूठा फिरिया ।[2] कहियो–'एक असवार छै ।' 'ताहरा भोमियै कह्यो–'रजपूत ! हथियार दे अर जीवतो जा ।'[3] ताहरां सेतरांमजी कह्यो–'थे म्हांरो वित, हथियार दे अर जीवता जावो ।'[4] पछै सेतरांमजी भोमियांनू कही–'थे पहली लोह करो, ज्यु पछै हूं करूं ।'[5] ताहरां पहली सातवीसी तीर छूटा सु सरब सेतरांमजीरै लागा ।[6] ताहरा सेतरामजी घोडो उपाड़ नाखियो; सु सिरदार थो जिणनू सेतरांमजी मार लियो बरछीसू ।[7] ताहरा भोमियारा असवार भागा । ताहरां सेतरांमजी यारै तीररी दै सु ठोड रहै ।[8] ताहरां असवार ५०क तो मार लिया । ताहरां बीजा दीठो–'जु मारै सिगळानू ।'[9] तद हथियार छोड़-छोड सेतरामजी आगै आया नै कहियो–'म्हानू मारो मती ।'[10]ताहरा सेतरामजी सारानू मुसका बांधिया अर घोडा, हथियार, वित सरब लेअर पाछा आया ।[11] ताहरा राजा दीठो–'जु सेतरांम कांम आयो अर भोमियो पाछो आयो !'[12] ताहरा साहणी दोड़ आया, देखै तो सेतरांमजी आवै छै । ताहरा पाछा आया खबर दी कहियो–'जु सेतरांमजी आवै छै । भोमियो मारियो अर रजपूतानू बांधै लिया आवै छै ।'[13] ताहरा राजा सांम्हा जाय अर सेतरामजीरी निछरावळ कर अर घरे ले आयो छै ।[14] घोडा, हाथी दिया ।

ताहरां सेतरामजी केइक दिन अठै रहिनै राजासू विदा कीवी छै ।[15] राजा वळै दत-दायजो घणो रिजक देअर विदा दीवी ।[16] सेतरांमजी वडी जलूसाईसू कनवज पधारिया ।[17]

---

1 पहुँचे । 2 तब दूसरे सभी सवार पीछे लौट गये । 3 राजपूत ! अपने शस्त्र हमे दे दे और जिंदा चला जा । 4 तुम हमारा गोधन और शस्त्र देकर जीवित चले जाओ । 5 तुम पहले प्रहार करो और पीछे मैं करूं । 6 तब पहले १४० तीर छूटे सो सभी सेतरामजीके लगे । 7 फिर सेतरामजीने अपना घोडा उठाया और जो धाडेतियोंका सरदार था उसे बर्छीका प्रहार कर मार गिराया । 8 फिर सेतरामजी इन पर तीर चलाने लगे सो जिसके लगे सो उसी ठिकाने रहे । 9 तब दूसरोंने देखा कि यह तो सबको मार देगा । 10 हमे मत मारो । 11 तब सेतरामजीने सबकी मुश्के बांध दी और उन्हें, उनके घोडे, शस्त्र और गोधन आदि सर्व लेकर पीछे लौटे । 12 तब राजाने देखा कि सेतराम तो काम आ गया और भोमिया वापिस लौट कर आ रहा है । 13 कहा कि यह तो सेतरामजी आ रहे हैं । भोमिएको मार दिया है और उसके दूसरे राजपूतोंको बांध कर लिए आ रहे हैं । 14 तब राजा सामने जाकर सेतरामजी पर निछरावल करता हुआ अपने घर ले आया है । 15 कई दिन यहां रह करके सेतरामजीने राजासे विदाई ली । 16 राजाने और बहुत सा धन माल और दहेज देकर विदाई दी । 17 सेतरामजी बडे ठाटसे कन्नौज गये ।

ताहरां राजा वरदाईसेनजी सांम्हा जाय कुंवरनूं वदाय घरे ले आया छै।[1] राजा वरदाईसेनजी बेटैनूं देख बहोत राजी हुआ। विचारी–'जु बेटो सपूत, धरती भलीभांत राखसी।[2]

ताहरां कितरैहेक वरसे पछै वरदाईसेनजी देवलोक हुआ।[3] ताहरा सेतरामजी टीकै बैठा। सेतरामजी वडो प्रतापीक राजा हुओ।[4]

॥ इति सेतरांमजी वरदाईसेनोत री वात संपूर्ण ॥

---

1 तब राजा वरदाईसेनजी सामने जाकर बड़े आदरके साथ कुंवर (सेतरामजी) को घर पर लेकर आए हैं। 2 विचारा कि बेटा है सो सपूत, धरती को भलीभांति रखेगा। 3 कितनेक वर्षों बाद वरदाईसेनजी देवलोक हो गए। 4 सेतरामजी बड़ा प्रतापी राजा हुआ।

॥ श्री रांमजी ॥

वीकानेर री हकीकत

रावजी श्री वीकैजीरै कंवरां रा नांम—

१. रावजी श्री लूणकरणजी।
२. नरोजी।
३. घड़सीजी।
४. केल्हणजी।
५. मेघवीसो।[1]
६. राजो।
७. देवराज।

रावजी श्री लूंणकरणजीरै कंवरां रा नाम—

१. रावजी श्री जैतसीहजी
२. परतापसी (परतापसिंघ)
३. रतनसी।
४. वैरसी (वैरीसिंघ)
५. तेजसी
६. करमसी।
७. रूपसी।
८. रांम (रांमसी, रांमसिघ)
९. सूरजमल।
१०. किसनसिघ।

रावजी श्री जैतसिंघजीरै कंवरांरा नांम—

१. रावजी श्री कल्यांणमलजी
२. भीमरावजी (भीमराजजी, भीवराजजी)
३. मालदेजी (मालदेवजी)
४. ठाकुरसी।
५. मानसिंघ।
६. अचळदास।
७. पूरणमल।
८. सिरंगजी (श्रीरंगजी, सिरंगसीजी)
९ सुरजनजी।
१०. कांन्ह।
११. भोजराज।
१२. करमचंद।
१३. तिलोकसी।

---

1 कई प्रतियोमे मेघवीसो और मेघसी नाम लिख करके वीकाजीके कुंवरोकी संख्या ७ बताई है. परन्तु कई प्रतियोमे मेघो और वीसो अलग अलग लिखे है इस प्रकार उनके कुंवरोकी सख्या उनमें आठ बताई गई हैं। मेघो और वीसो अलग-अलग दो नाम होना ही ठीक प्रतीत होता है।

रावजी श्री कल्यांणमलजीरै कंवरां रा नाम[⊛]—

१. महाराजा श्री रायसिंघजी
२. रामसिंघजी ।
३. प्रिथीराजजी* ।
४. सुरताणजी ।
५. भांण ।
६. अमरो ।
७. गोपाळदास ।
८. राघवदास ।
९. डूगरसी (डूगरसिंघ)

⊛ राव कल्याणमलके दसवां भाखरसी और ग्यारहवां भगवानदास ये दो कुंवर और कहे जाते हैं ।

* राठौड़ पृथ्वीराज कल्याणमलोत डिंगलके प्रसिद्ध रसिक और भक्त कवि हो गये हैं । ये काव्यमे 'पीथळ' उपनामसे भी प्रसिद्ध हैं । डिंगलके अतिरिक्त पिंगल छन्द शास्त्रके भी ये अच्छे ज्ञाता थे और दर्शन, ज्योतिष, संगीत, वाद्य और नृत्यकला इत्यादि शास्त्रों और संस्कृत तथा व्रज भाषाके बड़े विद्वान थे । विद्वान और रसिक होनेके साथ यह वीर भी थे । अकबर बादशाहकी ओरसे इन्होंने कई युद्ध भी लड़े थे । एक क्षत्रियमे ये तीनों गुण एक साथ इन्हींमें पाए जाते हैं । साहित्य संसारमे इनकी रची हुई 'वेलि क्रिसन रुकमणीरी राठौड़ राज प्रिथीराजरी कही' साहित्य और काव्यकी अद्वितीय कृति जगत्-प्रसिद्ध है ।

इसके अतिरिक्त—

श्री गुरु प्रार्थना (गुरु विट्ठलनाथजीरा दूहा १२)
श्री कृष्ण स्तुति (वसदेवरावउतरा दूहा १८५)
श्री राम स्तुति (दशरथ रावउतरा दूहा ५४) और
श्री गंगा स्तुति (भागीरथी, जाह्नवी और मंदाकिनी रा दूहा ८८)

आदि अनेक गीत-छन्द, पद और प्रस्ताविक दूहे लोक-कंठ पर खूब प्रसिद्ध हैं । 'प्रेम दीपिका' और 'श्याम लता' ग्रंथ भी इनके रचे कहे जाते हैं, पर अभी प्राप्त नहीं हो सके हैं । पृथ्वीराजकी प्रथम पत्नी लालादेके मरनेके बाद उसकी बहन चांपादेके साथ उन्होंने दूसरा विवाह किया था । जैसलमेरके रावल हरराज (नैणसीरी ख्यात, भाग २, पृ० ९२, ९७, ९८, १०२ इत्यादि) की ये दोनों कन्याएँ विदुषी थीं । पृथ्वीराजका जन्म वि० सं० १६०६ मार्गशीर्ष कृष्ण १ को बीकानेरमे और मृत्यु वि० सं० १६५७मे मथुरामे हुई थी ।

दयाळदास सिंढायचने अपने लिखित 'दयाळदासरी ख्यात' ग्रंथ मे इनका परिचय विस्तारसे लिखा है । 'नैणसीरी ख्यात' प्रथम भाग, पृ० २५६ मे बादशाह अकबर द्वारा पृथ्वीराजको गागरोनगढ दिए जानेका उल्लेख किया गया है ।

विद्वानोंका अनुमान है कि 'वेलि'की रचना गागरोनगढ़मे हुई है ।

महाराजा श्री रायसिंघजीरै कंवरांरा नांम—

१. महाराजा श्री सूरसिंघजी । ३. भोपतजी (भूपतजी) ।
२. दळपतजी* । ४. किसनसिंघजी ।

---

* बीकानेरके महाराजा रायसिंहके द्वितीय पुत्र दलपतसिंहका जन्म वि० सं० १६२१की फाल्गुन बदी ८को महाराणा उदयसिंहकी पुत्री जसमादेकी कोखसे हुआ था। यह बडी वीर प्रकृतिके थे। बचपनमे ही बडी वीरताके काम कर दिखाए थे। जावदीखाकी ८० हजार सेनाको सरसेमे इन्होने मार भगाया था। इनके चाचा राठौड पृथ्वीराजने इनकी इस युद्ध वीरता पर बड़ा सुन्दर निम्न गीत-काव्य कहा है—

दला दियतां ओलभा जैतमालां दिसा,
निस अरध जागवी थाट नमियो।
साहिजादी तणै महल नवसाँहसो,
रायउत दुइ पहोर तेण रमियो ॥ १

रौद घड़ राव रावल रमै आध रत,
भाग सोभागणी कमध भीनो।
मुगलणि आंगणै प्रेम रस मांणवा,
दलै दीहां भलो मूहुत दीनो ॥ २

हार सिणगार गजमीर खडत हुआ,
उर अरध चूरिया लोह आडै।
सेत संभ्रम तणै तखत रायसिंघ सुव,
लोद्र घड़ भोगवी भांजि लाडै ॥ ३

जोर जोवण चढी अणी नख जोड़ली,
पिलग पाधर पड़ी दलै पाली।
जावदी तणी घड़ पूगड़ी जीव ले,
होड ग्रहणा हसक छोड हाली ॥ ४

दलपतसिंहके पकड़े जाने पर, जो भाई बधु और सरदार आदि उनके साथमे थे, कुछ भी साहस न दिखा कर छोड कर भाग गए। इस पर एक कविने इन सरदारोको कितना अच्छा धिक्कारा है।

फिट बीकां फिट कांधलां, जगलधर लेडांह।
दलपत हुड़ ज्यु पकड़ियो, भाज गई भेड़ांह ॥•

• किसी अज्ञात लेखकने दलपतसिंहके वीर कृत्यो पर राजस्थानी गद्य में 'दलपत विलास' नामक एक पुस्तक लिखी है। अनूप संस्कृत लाइब्रेरीकी यह एक मात्र त्रुटित प्रति शार्दूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट बीकानेरकी ओरसे हिन्दी अनुवाद सहित अभी प्रकाशित हो चुकी है। ज्ञात होता है कि लेखक उसे पूर्ण नही कर सका है। भाषा-शैलीकी दृष्टिसे वह तत्कालीन (१७वी शतीकी) लिखी हुई प्रतीत होती है।

राजस्थानी साहित्यकी सर्वोपरि व्यापक मारवाडी भाषाके गद्य-लेखनकी परम्परा और प्राजलता पर यह छोटी ऐतिहासिक पुस्तक भी अच्छा प्रकाश डालती है।

महाराजा श्री सूरसिंघजीरै कंवरां रा नांम—

१. महाराजा श्री करणसिंघजी
२. अरजुणजी ।
३ सत्रसाल ।

महाराजा श्री करणसिंघजीरै कंवरांरा नांम—

१. महाराजा श्री अनोपसिंघजी* ।
२. केसरीसिंघजी ।
३. पदमसिंघजी ।
४ माहेणसिंघजी ।
५. अजबसिंघजी ।
६. उदैसिंघजी ।
७ मदनसिंघजी ।
८. अमरसिंघजी ।
९ देवीसिंघजी ।
१० माळीदासजी ।

महाराजा श्री अनोपसिंघजीरै कंवरांरा नांम—

१. सुजांणसिंघजी ।
२. अणदसिंघजी ।
३ सरूपसिंघजी ।
४. रुद्रसिंघजी ।
५. रूपसिंघजी ।
६. गजसिंघजी ।

अणंदसिंघजीरै कंवरां रा नांम—

१. महाराजा श्री १०८ श्री गजसिंघजी ।
२ अमरसिंघजी ।
३. तारासिंघजी ।
४. गूदड़सिंघजी (गोदडसिंघजी) ।

---

* महाराजा अनूपसिंघजी बडे विद्या-रसिक हुए हैं । इन्होंने संस्कृत, राजस्थानी और व्रज-भाषाके सभी विषयोके सहस्रों हस्तलिखित ग्रंथोका संग्रह किया था, जो आज अनूप संस्कृत लाइब्रेरीके नामसे प्रसिद्ध है । 'नैणसीरी ख्यात'की भी सुलेख्य विश्वस्त हस्त-लिखित प्रति इस पुस्तक भंडारमे मौजूद है । असली प्रतिकी यही पहली प्रति होनेका अनुमान किया जाता है ।

महाराजा अनूपसिंघजीके बादके राजाओंके नाम पीछेसे लिखे गये हैं जो अनूप संस्कृत लाइब्रेरीकी इस प्रतिमें बीच-बीचके भिन्न भिन्न अक्षरोंसे स्पष्ट मालूम होता है ।

सतियां हुई

महाराजा श्री अनोपसिंघजी री सतियां, संमत १७५५ जेठ सुदी ६ नै हुई[1]—

२. रांणियां दोय—
   १. जेसळमेरी रतनकंवरजी।
   २. तुंवरजी अतरंगदेजी✣।
३. खवासां तीन—
   १. सुघड़राय।
   २. रगराय।
   ३. गुलाबराय।
४. पातरियां च्यार ४—
   १. जैमाळा।
   २. नारगी।
   ३. सरकसळी (सरसकळी)
   ४. अनारकळी।
२. खालसा दोय २—
   १. रूपकळी।
   २. कपूरकळी।
७. सहेलियां सात सतियां हुई—
   ४. तैमे चार सहेलियां जेसळमेरीजी साहिबां री—
      १. रूपरेखा।
      २. हररेखा (हरखरेखा)
      ३. गुणजोत।
      ४. मोतीराय।
   १. तुवरजी साहिबां री सहेली—
      १. हरमाळा।
   २. खवासा री सहेलियां—
      १. कमोदी।
      २. डगली।

रावजी श्री कल्यांणमलजीरै सतियां, समत १६३० मे हुई[2]—

४. राणियां चार ४—
   १. रांणी हांसांजी गहलोत।
३. भटियाणियां तीन—
   १. रामकवरजी।

✣ एक प्रतिमे 'पवारजी अतरगदेजी' लिखा है।

---

1 वि० सं० १७५५ ज्येष्ठ शुक्ल ६को महाराजा श्री अनूपसिंहजी देवलोक हुए, तब उनके पीछे इस प्रकार (रानियां, खवासिनें आदि १८ स्त्रिया जीवित जल कर) सतियें हुईं। [पडदायत, पासवान, खवास, वडारण, डावडी, ओळगण, गायणी, पातर, खालसा और सहेली आदि दासियोके कई प्रकार और श्रेणियां है। इनमे पड़दायत और पासवानका दर्जा ऊँचा होता है। वे रानीकी तरह पर्दमे रखी जाती है।]

2 वि० स० १६३० रावजी कल्याणमलजी देवलोक हुए तब उनके साथ इस प्रकार सतियें हुईं।

२. प्रेमकंवरजी ।
३. लूग कंवरजी (लवग कंवरजी)

३. खवासां तीन ३—
१ .... ।
२......... ।
३. ... . .. ।

१. ओळगण[1] एक—
१. पोहपराय ।

१०. पातरियां १०—
१. जीऊ (जीवी, जीवू)
२. जैमाळा (अजैमाळा)
३. बुधराय ।
४. कांमसेना ।
५. रगराय ।
६. पदमावती ।
७. सुघड़राय ।
८. मांणवती (भांणवती, भानुमती)
९. रूपमंजरी ।
१०. रगमाळा ।

महाराजा श्री रायसिघजीरै सतियां, समत १६६८ में हुई[2]–

३. राणियां तीन ३–
१. तुवरजी द्रोपदा ।
२ सोढी मांणवदे (भांणवदे, भानुदेवी)
३. भटियांणी अमोलकदे ।

३. पातरिया तीन ३–
१ रगराय ।
२. नैणजवा (नैणजीवा)
३. कामरेखा ।

महाराजा श्री सूरसिघजीरै सतिया, समत १६८८ मे हुई[3]–

२ रांणियां दोय २–
१ भटियाणी मनरगदेजी ।
२ रांणी रतनावतीजी ।

२. पातरियां दोय–
१. रंगरेखा ।
२. गुणकळी ।

महाराजा श्री करणसिघजीरै सतिया, संमत १७२६ में हुई[4]–

८. राणियां ८ आठ–
१. भटियाणी धनराजोत अजबदेजी ।
२. जेसळमेरी सिणगारदेजी ।

---

1 (१) ढोली या ढाढी जातिकी गाने वाली स्त्री । ढोलिन, ढाढिन । (२) गायिका ।
2 वि० स० १६६८ मे महाराजा श्री रायसिहजीका देहान्त हुआ तव इतनी सतियें हुई ।
3 महाराजा श्री सूरसिहजीकी मृत्यु वि० सं० १६८८ में हुई तब उनके पीछे इतनी सतियें हुई ।
4 वि० सं० १७२६मे महाराजा श्री करणसिहजीकी मृत्यु हुई तव उनके साथ इतनी स्त्रियां जल कर सती हुई ।

३. वीकूंपुरी कोडमदेजी ।
४. वीकूपुरी मनसुखदेजी ।
५. सेखावत सोभागदेजी ।
६. सेखावत प्रतापदेजी ।
७. सोढी सुगणादेजी ।
८. तुंवर साहिबदेजी ।

१०. खवास-पातरियां १० दस—
१. कमोदकळा ।
२. रांमोती ।
३. मेघमाळा ।
४. किसनाई (किसनराय)
५. गुणमाळा ।
६. चंपावती (चंपाकळी)
७. रूपकळी ।
८. पेमावती (प्रेमकळी)
९. कुजकळी ।
१०. मृदंगराय ।

महाराजा श्री सुजांणसिघजीरै सतिया, संमत १७९२ हुई[1]—

१. रांणी १ एक—
१. देरावरी सुरताणदे

४. पातरियां ४ चार—
१. गरुडराय ।
२. रगराय ।
३. नैणसुखराय ।
४. गुमांनराय ।

१. वडारण १ एक—
१. हरजोतराय ।

२ खालसा २ दोय—
१ हसती (हसणी, हसणी)
२. चैनसुख (चैनसुखी, चैनसुखराय)

महाराजा श्री जोरावरसिंघजीरै सतियां, समत १८०३ मे हुई[2]—

२. रांणियां २ दोय—
१. देरावरी अखैकुवरजी (अभैकुवरजी) ।
२. तुंवरजी उमेदकुंवरजी ।

१. खवास १ एक—
१. सदाजी ।

१२. पातरियां १२ बारैह—
१. गोरा (गवरा) ।
२ सरूपां ।
३ गुलाबा ।
४. तनतरग ।
५ रगनिरत (रगनृत)
६. फत्तू ।
७ वनां ।
८. सुखविलास (सुभविलास)

---

1 महाराजा सुजानसिंहजीकी मृत्यु वि० सं० १७९२ मे हुई, उस समय ये स्त्रिया सती हुईं । 2 वि० स० १८०३में महाराजा जोरावरसिंहजीके साथ ये स्त्रियां सती हुईं ।

९. राजां ।
१०. गुमांनी ।
११. विजी (विजनां)
१२. महताब ।
२. खालसा २ दोय—
१ रामजोत ।
२. कपूरकळी ।
१ वडारण १ एक—
१. गुणजोत ।
३. सहेलियां ३ तीन—
१ तुवरजी री सहेली एक (कुवरांणीजीरी सहेली) राही ।
२ पातरियांरी सहेली २ दोय—
१ फत्तू ।
२ सकांमी (सदांमी)
१. पातरियांरो रसोईदार १ एक—
१. ब्रांह्मणी राही १ एक ।

॥ श्रीरांमजी ॥

जोधपुररा राजाश्रांरी ख्यात

महाराजा श्री भीमसिंघजी रावळोतांरा दोहीतरा। भोमसिंघ, किसनसिंघ सादूळसिंघोतरा दोहीता।[1]

महाराजा श्री विजयसिंघजी भाटियांरा दोहीतरा। दौलतसिंघ गजसिंघोतरा दोहीतरा।[2]

महाराजा श्री वखतसिंघजी चहुवांणांरा दोहीतरा। चत्रभुज दयाळदासोतरा दोहीतरा।[3]

महाराजा श्री अजीतसिंघजी जादवांरा दोहीतरा। जादव भीमपाळ छत्रमणोतरा दोहीतरा। मांजोरो नांम पोहपकंवर।[4]

---

1 महाराजा भीमसिंहजी रावलोत भोमसिंह किशनसिंह सादूलसिंहोतके दोहिते थे।

महाराजा भीमसिंह महाराजा विजयसिंहके पौत्र और उनके उत्तराधिकारी भी। इनकी मृत्यु वि० स० १८६० कार्तिक सुदि ४ को हुई।

2 महाराजा विजयसिंह भाटी दौलतसिंह गजसिंहोतके दोहिते।

ये महाराजा परम वैष्णव थे। जोधपुरका विशाल गंगश्यामजीका मन्दिर और गिरदीकोट इन्होने बनवाये थे। इनकी पासवान गुलाबरायने बहुत ही भव्य श्री कुंजविहारीजीका प्रसिद्ध मन्दिर और उसका कटला बाजार, गुलाब सागर, महिला बाग और उसका झालरा (चारो ओर सीढियों वाली वापिका) आदिका निर्माण कराया था। विजयशाही मुद्रा इन्ही महाराजाने चलाई थी। इनका जन्म वि० सं० १७८६ मार्गशीर्ष कृष्णा ११, राज्यगद्दी वि० सं० १८०९ और मृत्यु स० १८५० आषाढ वदि १४ को हुई।

3 महाराजा वखतसिंह चौहान चतुर्भुज दयालदासोतके दोहिते।

इनका जन्म सम्वत् १७६६ की भादों वदि ८ को और मृत्यु सम्वत् १८०९ भादौ सुदि ११ को हुई थी। जोधपुर और नागौरमे इन्होने अपने नामसे 'वखतसागर' नामके तालाब बनवाये थे।

4 महाराजा अजीतसिंह यादव भीमपाल छत्रमणोतके दोहिते। इनकी माजीका नाम पोहप कंवर (पुष्प कुंवरि) था।

जन्मसे मृत्यु पर्यन्त इनका जीवन और राज्यकाल बडा अशान्त रहा। युवा होने तक वीर दुर्गादास जैसे स्वामी-भक्त सरदारोकी देख-रेखमे इन्हें गुप्त रहना पडा। ये महाराजा बडे ही वीर-विद्वान और कवि थे। गुणसागर, गजउद्धार और गुण दोहे आदि इनके रचे हुए ग्रंथ हैं। इनके सम्बन्धमें बने 'अजितोदय' और 'अजित ग्रंथ' भी है। मरुनायकजीका मंदिर पंच देवलिया, मडोरमे डकथभिया महल. वडी-वडी मूर्तियो वाले देवताओकी शाला आदि कई दर्शनीय स्थान इन्होने वनवाये। इनकी मृत्युके समय इनके साथ रानिया, दासिया और ५७ स्त्रिया सती हुई थी। इनके दाह-स्थान पर मडोरमे वना विशाल वडा (देवल) वास्तु-विद्याका एक नमूना है।

महाराजा श्री जसवंतसिंघजीरी मा गायड़देवी सीसोदणी । भांण सगतावतरी बेटी ।[1]

महाराजा श्री गजसिंघजीरो मा केसरदे कछवाही । रूमीखां करमसीओतरी वेटी ।[2]

महाराजा श्री सूरसिंघजीरी मा साहमती कछवाही । आसकरण भीमावतरी बेटी ।[3]

महाराजा श्री उदैसिंघजीरी मा सरूपदे झाली । सझै राजावत-री बेटी ।[4]

---

1 महाराजा जसवन्तसिंहजी (प्रथम)की माता भाण शक्तावतकी पुत्री गाड़्हदेवा शिशोदनी ।

इनका जन्म वि० स० १६८३ माघ वदि ४ को हुआ था और वि० स० १७३५ की पौष वदि १० को जमरूदमे मृत्यु हुई थी । ये महाराजा वडे वीर थे । औरगजेव भी इनसे सशकित रहता था । ये महाराजा वडे विद्वान और वेदान्ती थे । इन्होंने वेदान्तके अनेक ग्रथ लिखे हैं । आनन्दविलास, अनुभवप्रकाश, सिद्धान्तसार, अपरोक्ष सिद्धान्त और सिद्धान्तबोध मुख्य है । भाषा-भूषण आदि अन्य ग्रथ भी इनकी विद्वताके उच्चकोटिके ग्रथ हैं । हमारे ख्यात लेखक मुहता नैणसी वि० स० १७१४मे इनके दीवान बने थे । आगे जाकर महाराजासे इनकी कुछ खटपट हो गई थी । जिस पर महाराजाने नैणसी और इनके भाई सुदरसीको जेलमे डाल दिया और एक लाख रुपये डड कर दिया । इस अपमानसे दोनो भाइयोने स० १७२७मे आपघात कर दिया । नागोरके राव अमरसिंह राठौड इनके वड़े भाई थे ।

2 महाराजा गजसिंहकी माता रूमीखा करमसीओतकी पुत्री केशरदेवी कछवाही ।

इनका जन्म वि० स० १६५२ कार्तिक सुदि ८ को हुआ था । इनकी वीरता पर वादशाह जहागीरने इन्हें 'दलथभन' का विरुद दिया था । इन्होने कुमारावस्थामे ही जालोरसे विहारी-पठानोको भगा कर उस पर अपना अधिकार कर लिया था ।

3 महाराजा सूरसिंहकी माता आसकरण भीमावतकी पुत्री शाहमती कछवाही ।

इनका राज्यतिलक सम्वत् १६५२ सावन वदि १२ को लाहोरमे और इसी वर्ष माघ शु० ५ को फिर जोधपुरमे हुआ । जोधपुरके सूरसागर तालावको इन्होने वनवाया था । मारवाडमे वादशाही ढंगसे राज्य-प्रवंध इन्होने चालू किया । महकरमे सम्वत् १६७६की भादों शु० ६ को इनकी मृत्यु हुई ।

4 महाराजा उदयसिंहकी माता सझै राजावतकी पुत्री स्वरूपदे झाली ।

मोटा राजा उदयसिंहका जन्म सम्वत् १५९४ माघ सुदि १२ को हुआ था । स० १६४०-की भादों वदि १२ गद्दी वैठे । सं० १६५२की आषाढी पूनमको लाहोरमे मृत्यु हुई । सिवानेका प्रसिद्ध वीर राठौड कल्ला रायमलोत जिसने वादशाही मनसवदारको मार डाला था, वादशाहकी ओरसे आक्रमण करदेने और हार जाने पर इन महाराजाने पोलिया नामक नाईसे किलेका भेद और गुप्त मार्ग मालूम कर किलेमे प्रवेश कर लिया । कल्ला रायमलोत वडी वीरतासे लड कर काम आया ।

राव मालदेवजीरी मा पदमां देवड़ी । जगमाल लाखावतरी बेटी ।[1]

राव गागोजीरी मा उदैकवर चहुवांण । राम कँवरावतरी बेटी ।[2]

राव वाघोजीरी मा लिखमादे भटियांणी । जेसै कलिकरणोतरी वहन ।[3]

(पिछले पृष्ठकी टिप्पणीका शेषांश)

इन महाराजाके द्वारा चारणोंके गांव जब्त करने पर संवत् १६४३ का प्रसिद्ध धरणा आऊवामें हुआ था ।

---

1 राव मालदेवकी माता (सिरोहीके राव) जगमाल लाखावतकी पुत्री पद्मा देवडी ।

इनका जन्म वि० सं० १५६८ पौष वदि १ को हुआ था । संवत् १५८८ (विगतमें १५८२) आषाढ वदि ५ को सोजतमें गद्दी बैठे और संवत् १६१९की काती सुदि १२को देहान्त हुआ ।

मालदेवजी बड़े ही प्रतापी राजा हुए । इन्होंने अपने समीपवर्ती सभी राजाओंको जीत करके अपने राज्यकी सीमाका खूब विस्तार कर लिया था । ५२ परगनोंके ८४ गढ़ और ६००० गांव इनके अधिकारमें थे । इसीलिए इनका विरुद 'नवसहँसा' हुआ और पश्चिमके बादशाह प्रसिद्ध हुए । जैसलमेरके रावल लूणकर्णकी कन्या उमादेवी भटियानी उपनाम रूठी-रानी इन्हींकी रानी थी ।

मेड़तेका मालकोट और अजमेरका अपूर्ण बीटली किला और अन्य कई किले कोट इन्होंने बनवाये थे । इनके २२ पुत्र थे ।

2 राव गांगेकी माता राम कँवरावतकी पुत्री उदयकुवरि चौहान ।

इनका जन्म वि० स० १५४० वैसाख सुदि ११, बड़े भाई वीरमजीके उत्तराधिकारी होते हुए सरदारोंने इन्हें सम्वत १५७२ मिगसर सुदि १२को गद्दी पर बिठाया । संवत १५८८ जेठ सुदि ५को अफीमके नशेमें झरोखेसे गिर कर मर गये ।

जोधपुरके प्रसिद्ध गंगश्यामजीके मन्दिरकी विष्णु भगवानकी मूर्ति राव गांगाजी सिरोही-से लाये थे । गांगाजीने अपने नाम पर 'गंग स्वामी' नाम रखा जो बादमें गंगश्याम हो गया । उस समय यह मूर्ति किलेमें रखी गई थी । महाराजा विजयसिंहजीने तलहटीके महलोंके पास भव्य मन्दिर बनवा कर सं० १८१८में उसमें स्थापित की । गांगारी बावडी और गांगेलाव तालाब इन्हीं महाराजाने बनवाये । इनकी रानी (राणा सांगाकी कन्या) पदमावतीने मेवाड़के पदमा सेठ द्वारा बनवाये हुए पदमसर तालाबको अधिक बड़ा बनवाया ।

3 राव वाघाजीकी माता भाटी जैसे कलिकर्णोतकी बहिन लखमादे (लक्ष्मीदेवी) भटियानी ।

कुंवर वाघा अपने पिता राव सूजाकी विद्यमानतामें ५७ वर्षकी आयु प्राप्त कर संवत १५७१की भादों सुदि १४को काल-कवलित हो गये । इनका जन्म वि० स० १५१४की वैशाख वदि ३०को हुआ था ।

राव सूजोजीरी मा हाडी जसमादे । अजीत मालदेवोतरी बेटी ।[1]

---

१ राव सूजाकी माता अजीत मालदेवोतकी पुत्री हाडी जसमादे ।

राव सूजाका जन्म वि० सं० १४९६ भार्दो वदि ८को हुआ था । वि० सं० १५४८ (विगतमें १५४९) की वैशाख सुदि ३को गद्दी बैठे और संवत १५७२की काती वदि ९को देहान्त हुआ ।

जोधपुर पर आक्रमण करके राव बीकाजी इन्हींसे जोधपुरके राज्य-चिन्ह ले गये थे ।

उपरोक्त नामोंका क्रम उलटा लिखा हुआ है और कई नाम छूटे हुए हैं एवं महाराजा जसवन्तसिंहजीके पीछेके नाम नैणसीके बादमें लिखे हुए हैं ।

किसनगढरी विगत

राजा प्रतापसिंघ । उदोतसिंघ उमेदसिंघोतरो दोहीतो । साहपुरारै राजावतारो ।[1]

राजा विरदसिंघ । सुखसिंघ सूरजमलोतरो दोहीतो । फतहगढ गौड ।[2]

राजा वहादुरसिंघ । उदैसिंघ कीरतसिंघोतरो दोहीतरो । कांबा राजावत ।[3]

राजा राजसिंघ । हरीसिंघ जसवंतसिंघोतरो दोहीतरो । देवळियै सीसोदियांरो ।[4]

राजा मानसिंघ । वलू सांवतसिंघोतरो दोहीतो । साचोरा चहुवांणांरो ।[5]

राजा रूपसिंघ । हरीराम रायसलोतरो दोहीतो । सेखावत खडेलारा ।[6]

राजा भारमल । दयाळदास खेतसीग्रोतरो दोहीतरो । जेसळमेर भाटियांरो ।[7]

राजा किसनसिंघ । ग्रासकरण भीमावतरो दाहीतो । नरवरगढ कछवाहा ।[8]

---

1 राजा प्रतापसिंह—शाहपुराके राजावत उद्योतसिंह उम्मेदसिंहोतका दोहिता ।
2 राजा विरुदसिंह—फतहगढके गौड सुखसिंह सूरजमलोतका दोहिता ।
3 राजा बहादुरसिंह—काबाके राजावत उदयसिंह कीरतसिंहोतका दोहिता ।
4 राजा राजसिंह—देवलियाके सिसोदिया हरिसिंह जसवतसिंहोतका दोहिता ।
5 राजा मानसिंह—साचोरा-चौहान वलू सामतसिंहोतका दोहिता ।
6 राजा रूपसिंह—खडेलाके शेखावत हरीराम रायसलोतका दोहिता ।
7 राजा भारमल—जैसलमेरके भाटी दयालदास खेतसीग्रोतका दोहिता ।
8 राजा किशनसिंह—नरवरगढके कछवाहा ग्रासकरण भीमावतका दोहिता ।

राजा किशनसिंहका जन्म वि० सं० १६३९की जेठ वदि २को हुग्रा था । इन्होने ग्रपने नामसे वि० स० १६६६मे किसनगढ नामका नगर बसाया ग्रौर बादशाह जहागीरसे जागीरी प्राप्त कर ग्रलग राज्य स्थापित किया । राजा किशनसिंह जोधपुरके मोटा राजाके १७ पुत्रोमे से एक थे ।

इस विगतमे लिखे नामोका क्रम उलटा लिखा हुग्रा है ।

राठोड़ांरी तेहरै साखाओंरी विगत

राजा धुधमाररै १३ पुत्र हुआ । तिणांसू जुदी-जुदी तेहरै साखाआ हुई[1]–

१ वडो पुत्र अभैराज, तिण अभैपुर वसायो, तिणसू अभैपुरा कहाणा ।[2]

२ वीजो जयवत हुओ । तिणसू जयवत कहांणा ।[3]

३. तीजो वागुळ हुओ । बुगळाण देस वसायो, तिणसू बुगळांणा कहाणा ।[4]

४. चोथो अहिराव, तिण आहोरगढ वसायो, तिणसू अहिराव कहाणा ।[5]

५ पाचमो, करहो* हुओ । जिण करहेड़ोगढ करायो, तिणसू करहा कहाणा ।[6]

६ छठो जसचद हुओ । तिण जळखेडपाटण वसायो, तिणसू जळखेडिया कहाणा ।[7]

७. सातमो कमधज हुओ । तेरह साखारो राव कहाणो ।[8]

८ आठमो चदेल हुओ । तिण चदेरी वसाई, तिणसू चंदेल कहाणा ।[9]

---

1 राजा धुधमारके १३ पुत्र हुए जिनके नामोसे अलग-अलग तेरह शाखाएँ चली ।

2 वडा पुत्र अभयराज हुआ जिसने अपने नामसे अभयपुर वसाया और उसके वशज अभयपुरा कहलाये ।

3 दूसरा जयवत हुआ जिसके वशज जयवत कहलाये ।

4 तीसरा वागुल हुआ जिसने बुगलाना देश वसाया और उसके वशज बुगलाना कहलाये ।

5 चौथा पुत्र अहिराव हुआ जिसने आहोरगढ वसाया । उसके वशज अहिराव कहलाये ।

6 पांचवा पुत्र करहा हुआ जिसने करहेडोगढ वनवाया । उसके वंशज करहा कहलाये ।

7 छठा पुत्र जसचद हुआ जिसने जलखेडपाटन (जसखेडपाटण) वसाया । उसके वशज जलखेडिया (जसखेडिया) कहलाये ।

8 सातवां पुत्र कमधज हुआ । यह तेरह शाखाओका राव कहलाया ।

9 आठवां पुत्र चंदेल हुआ जिसने चदेरी वसाई और उससे चदेल प्रसिद्ध हुए ।

---

*पाठान्तर– कुरहो ।

९. नवमों अजवाराह* हुओ। तिण पूरबमें अजैपुर वसायो, तिणसू अजबेरिया कहांणा।[1]

१०. दसमो सूरदेव हुओ। तिण सूरपुर वसायो, तिणसू सूरा कहाणा।[2]

११. इग्यारवों धीर हुओ। तिण धीरावादगढ करायो, तिणसू धीरा कहांणा।[3]

१२. बारवो क्रपाळदेव हुओ। तिण कँवळपुर॰ वसायो, तिणसू कपाळिया* कहाणा।[4]

१३. तेहरवो खीमपाळ हुओ। तै खैरावाद नगर वसायो, तिणसू खैरूंदा कहाणा।[5]

---

1 नौवाँ पुत्र अजवाराह (अजयवार) हुआ जिसने पूर्वमे अजयपुर बसाया। उसके वंशज अजवेरिया कहाये।

2 दशवा सूरदेव हुआ जिसने सूरपुर वसाया। उसके वशज सूरा कहलाये।

3 ग्यारहवाँ पुत्र धीर उत्पन्न हुआ जिसने धीरावदगढका निर्माण कराया। इसके वशज धीरा कहलाये।

4 बारहवाँ पुत्र कृपालदेव हुआ जिमने कमलपुर वसाया। इसके वंशज कपालिया कहलाये।

5 तेरहवाँ पुत्र खीमपाळ उत्पन्न हुआ। इसने खैरावाद नगर वसाया। इसके वशज खैरूदा कहलाये।

पाठान्तर– *अजवार, अजयवार ॰कमळपुर। *कपलिया।

अथ जेसलमेरी ख्यात

१. रावळ मूळराजजी सोढारा दोहीतरा। रिणछोड गगादासोतरा।[1]

२. अखैसिघजो १, बुधसिघजी २, जोरावरसिघजी ३, दोहीता खाबडियारा।[2]

३ जगतसिंघजी १, ईसरीसिंघजी २, दोहीता सोढांरा।

४. जसवतसिघजी १, पदमसिघजी २, जैसिघजी ३, विजैसिघजी ४, दोहीता सोढारा।

५. जूझारसिघजी दोहीता हळोदरा झालारा।[3]

६ अमरसिघजी १, रतनसिघजी २, बाकीदासजी, ३ महासिघजी ४, दोहीता रूपनगररा।[4]

७. सवळसिघजी १, विहारीदासजी २, दोहीता कलै रायमलोतरा समियांणैरा।[5]

८. दयाळदास १, पचायण २, ईसरीसिघ ३, सगतसिघ ४, वाघ ५, दोहीता सातळमेररा।[6]

९. खेतसी १, हरराज २, भानीदास ३, डूगर ४, सहसो ५, नारायण ६, . . . ७।

१० मालदेजी १, ... ।

११ लूणकरणरै दूजा भाई मरोट। सरब भाई ११[7]

मूळराजसू पीढी तीन जगतसिघ रावळरा भाई हुआ[8]—

सरदारसिघजी ३, तेजसिघजी ४, दोहीतरा जसोलरै रावळरा।[9]

---

1 रावल मूलराज सोटा रणछोड गगादासोतका दोहिता। 2 अखैसिह बुधसिह और जोरावरसिह तीनो खावडियोके दोहिते। 3 जूझारसिह हलवद (सौराष्ट्र)के झालोका दोहिता। 4 अमरसिह, रतनसिह वाकीदास और महासिह रूपनगर वालोके दोहिते। 5 सवलसिह और विहारीदास सिवानाके कल्ला रायमलोतके दोहिते। 6 दयालदास, पचायन ईश्वरीसिह, सगतसिह और वाघ ये सातलमेर वालोके दोहिते। 7 लूणकरणके दूसरे भाई मरोठ रहते हैं। सभी ११ भाई हैं। 8 मूलराजसे जगतसिह तक तीन पीढी तक जो रावल हुए वे मूलराजके भाई ही हुए थे। 9 सरदारसिह और तेजसिह जसोल रावलके दोहिते।

सूरतसिंघजी ५, दोहीतो सोढांरो।

गजसिंघ ६, हरीसिंघ ७, इन्द्रसिंघ ८, दोहीता महेचांरा जसोलरा।[1]

१२. जैतसीजी दोहीता सोढांरा।

१३. देवीदास।

१४ चाचगदे।

१५ वैरसी १, रूपसी २, राजधर ३, ... ४।

१६ लखमण, संमत १४९४ श्री लक्ष्मीनाथरो देहरो करायो।[2] सोम २, केलण ३।

१७. केहर १, कळिकरण° २, विजो ३, तणुराव ४ रा भटनेर।

.... १. राजपाळ २, कीरतसिंघ ३ रा भटनेर तुरक हुआ।[3]

१८ देवराज १, हमीर २, सत्तो ३, ...४।

१९. मूळराज १, रतनसी २, राणो ३, तैरो बेटो घड़सी १, कान्हड २।

२० वडो जैतसी १, करण २, जसहडरा बेटा। दूदो रावळ वरस १०।

२१. रावळ तेजरावजी १, तिलोकसी २, भीमदे ३, आसकरण ४, भोजनूं चूक कियो।[4]

२२. रावळ चाचगदे १, जैचद २, आसराव ३, पाल्हण* ४, सागण⁶ ५, बागण° ६, गांम कोहर।

२३. कालण १, सालवाहण २, राव वीजळ ३, वांदर ४। समत ११३४ राज लायो हासू ३ सु रैतरा .. स लूणो १, उछरग २, मोकल ३, सुथार हुओ। समत १२४६ कांम आयो, वलोचासू वेढ हुई।[5]

---

1 गजसिंह, हरीसिंह और इन्द्रसिंह—ये जसोल महेचाके दोहिते। 2 लखमणने वि० सं० १४९४मे (जैसलमेरके किलेमे) श्री लक्ष्मीनाथजीका मदिर बनवाया। 3 ... . ,राजपाल और कीरतसिंघके लडके भटनेरमे तुर्क हो गये। 4 भोजको धोखेसे मारा। 5 मोकल सुथार हो गया। सवत् १२४६मे वलोचोसे लडाई हुई जिसमे काम आया।

°वळकरण। *पाहुण। ⁶सांगण। °बागण।

२४. जेसळ १, विजैराव लंजो २, विजैराव लांजै लुद्रवै राज कियो वरस २५ ।[1]

विजैरावरा बेटा—

भोज १

राजसीरो बेटो [रा]हुड़ । तैरी साख हुई ।[2]

विजैरावरी बेटी—

लांग १, लाछ २, तिकै सगतियां हुई ।[3]

२५. रावळ दुसाभ्क १, सिंघराव २, मूळपसाव ३, उणंग ४, वापै रावरा पाहु-भाटी कहीजै ।[4]

उणंग रावरा भाटी ही ज वाजै । गांम गुड़ै ।[5]

सिंघरावरा सिंघराव वाजै । गांम खूहड़ी । फूलियो उतन सदामदसू ।[6]*

---

1 विजयराव लजेने लोद्रवेमे २५ वर्ष राज किया । 2 राजसीका वेटा राहुड जिससे राहडिया शाखा निकली । 3 विजयरावके दो पुत्रिया हुई जो दोनो शक्ति रूप हुई । 4 वापा रावके वंशज पाहु-भाटी कहलाते हैं । 5 उणगरावके वशज गूडा गावमे हैं और वे भाटी ही कहलाते हैं । 6 सिहरावके वशज सिहराव कहलाते हैं और गाव खूहडीमें रहते हैं, परन्तु फूलिया गाव इनका सदामदसे वतन रहा है ।

---

*यह वंशावली अशुद्ध, आगे पीछे और अस्पष्ट है । पहलेकी वशावलियोसे मेल नही खाती ।

॥ श्री गणेशाय नम ॥

अथ सिरंगोतांरी पीढी

ठिकांणो भूकरी[1]

१. मदनसिघजी
२. सवाईसिंघजी
३. कुसळसिघजी
४. प्रथीराजजी
५. खडगसेनजी
६. करमसेनजी
७. मनोहरदासजी
८ भगवानदासज
९ सिरंगजी

वाय*रा सरदारांरी पीढियां

१. पेमसिंघजी
२. बहादुरसिंघजी
३ दौलतसिघजी
४. प्रथीराजजी

जासांणारै[2] सिरदारांरी पीढियां

१ लालसिघजी
२. अनोपसिंघजी
३. सगरामसिंघजी
४. भांनीसिंघजी
५. सायबसिंघजी
६ अमरसिघजी
७ खडगसेनजी

अजीतपुरैरी[3] पीढियां

१ दलसिंघजी
२. सिवदांनसिघजी
३. दीपसिघजी
४. कीरतसिघजी
५ फतैसिंघजी
६. रामसिघजी
७ किसनसिंघजी
८. मनरदासजी (मनहरदासजी, मनोहरदासजी)

सिधमुखरी पीढियां

१. रुघनाथसिंघजी
२ भवानीसिंघजी

पाठान्तर– [1] भूकर; भूकरको। *वाप। [2] जाणा। [3] अजीतपुर।

३. जालमसिंघजी
४. सुरतांणसिंघजी
५. उत्तमसिंघजी
६. प्रतापसिंघजी
७. किसनसिंघजी

गांम सिरंगसररी पीढियां

१ धीरतसिंघजी
२ हीमतसिंघजी
३. फतैसिंघजी

गांव भनाईरी पीढियां

१ देवीसिंघजी
२ जगमालसिंघजी
३. रूपसिंघजी
४ फतैसिंघजी

किसनसिंघोतांरी पीढियां ठिकांणो सांखू

१ नवलसिंघजी, डूगरसीजी
२ जगरूपसिंघजी
३. सुजाणसिंघजी
४ दुरजणसिंघजी
५. जगतसिंघजी
६ किसनसिंघजी
७ महाराजा रायसिंघजी

गांव बंधारी पीढियां

१. फतैसिंघजी
२. सवाईसिंघजी
३. अजबसिंघजी
४. अमरसिंघजी
५. रुघनाथसिंघजी
६. जगजीवणदासजी
७ किसनसिंघजी

गांव करणीसररी पीढियां

१ सुखसिंघजी
२. जैतसिंघजी
३ इंद्रसिंघजी
४. रुघनाथसिंघजी
५. ....
६ ....

....

१. जालमसिंघजी
२ सूरतसिंघजी
३. इंद्रसिंघजी
४ लालसिंघजी
५. पहाडसिंघजी
६, रुघनाथसिंघजी

गांव नींबांरी* पीढियां

१. भोमसिंघजी
२. पेमसिंघजी
३. बाघसिंघजी
४. रामसिंघजी
५. भीमसिंघजी
६. जगतसिंघजी
७. किसनसिंघजी

रूपावतांरी पीढियां

गांव भादलो

१. सतीदानजी।
२. भगवतसिंघजी।
३. पदमसिंघजी।
४. रामचंदजी।
५. कल्यांणदासजी।
६. दुरगदासजी।
७. भीमराजजी।
८. दयाळदासजी।
९. भोजराजजी।
१०. सादुळसिंघजी।

गांव ढींगसरीरी पीढियां

१. सवाईसिंघजी।
२. वखतसिंघजी।
३. फतैसिंघजी।
४. करमसिंघजी। (करणसिंघजी)
५. दयाळसिंघजी (दयाळदासजी)

( )

१. ऊमसिंघजी। (ऊमरसिंघजी)
२. गजसिंघजी।
३. रुघनाथसिंघजी।
४. हररामसिंघजी।
५. जैतसिंघजी।
६. दयाळदासजी।

गांव भेलूरी पीढियां

१. दळसिंघजी।
२. चैनसिंघजी।
३. भीमसिंघजी।
४. नरसिंघदासजी।
५. स्यांमदत्तजो (स्यांमदासजी)
६ सुदरदासजी।
७ नारायणदासजी।

पाठान्तर– *नीबावरी। नीबोवरी।

८. जैमलजी ।
९. भाण ।
१०. भोजराज ।
११ सादूळसिंघजी ।

गांव केलणसररी पीढियां

१ भगवतदासजी ।
२ सांमतसिंघजी । (सांवतसिंघजी)
३. उदैसिंघजी ।
४ जयसिंघजी ।
५. सुदरदासजी ।

गांव कूदसूरी पीढियां

१. हठीसिंघ ।
२ सूरतसिंघ ।
३ केसरीसिंघ ।
४ उदैसिंघ ।
५ जयसिंघ ।

गांव रोहीणैरी* पीढियां

१. तेजमाल (जैतमाल)
२. अणदसिंघ ।
३. भायसिंघ (भावसिंघ)

गांव रोणवैरी पीढियां

१. संग्रामसिंघ ।
२. गजसिंघ ।
३. देवीसिंघ ।
४ नरसिंघदास ।

गांव ऊडसररा सिरदारांरी पीढियां

१. सेरसिंघजी ।
२. देवीसिंघजी ।
३ भगवतसिंघजी ।
४ भोजराजजी ।
५ दुरजणसालजी ।
६. बळभद्रदासजी ।

गांव कांणांणैरा सिरदारांरी* पीढियां

१. भारतसिंघजी ।
२ सवाईसिंघजी ।
३ रुघनाथसिंघजी ।
४. भोजराजजी ।
५ दुरजणसालजी ।
६ बळभद्रदासजी ।

पाठान्तर—*रोहीणी ।

वीर दुर्गादास राठौडके करणोतो के वंशका कणाणा गाव मारवाडमे बालोतराके पास एक अन्य ठिकाना है । राठोडोकी करणोत शाखा राव रणमलजीके पुत्र करणसे चली ।

गांव करेझड़ोरा* सिरदारांरी पीढियां

१ सुरतांणसिंघजी ।
२ आईदानजी ।
३ हठीसिंघजी ।
४. केसरीसिंघजी
५ हररामदासजी ।
६. सुदरदासजी ।
७ भोपतसिंघजी ।
८ नारायणदासजी ।
९ वैरसीजी ।

गांव कल्यांणसररी पीढियां

१. जसराजजी ।
२ गजसिंघजी ।
३ हठीसिंघजी ।

नारणोतांरी पीढियां

गांव तिहांणदेसर

१ सूरजमल ।
२. मोबतसिंघ ।
३ दौलतसिंघ ।
४ आईदांन ।
५. रामसिंघ ।
६. उदैसिंघ ।
७. सावळदास ।
८. जैमलदास ।
९. नारायणदास ।
१० वरसिंघ ।
११ लूणकरण ।

गांव कतररा सिरदारांरी पीढियां

१. छत्रसिंघ (छतरसिंघ)
२. लाडखांन (लाडखा)
३. गोरखदान
४. रामसिंघ ।

गांव गैड़ापरै सिरदारांरी पीढियां

१. बहादुरसिंघ ।
२. जोरावरसिंघ ।
३. गुमानसिंघ ।
४. गोरखदांन ।
५. रामसिंघ ।

गांव मेदसररै सिरदारांरी पीढियां

१ बहादुरसिंघजी ।
२. उदैसिंघजी ।

पाठांतर–*केरझड़ो, केरझड़ ।

गांव मलकासररी पीढियां

१. रूपसिघ ।
२ आणदसिघ ।
३. मानसिघ ।
४. साहिबसिंघ ।
५ किसनसिघ ।
६ जगतसिंघ ।

गांव कलासररी पीढियां

१ भोपतसिंघ ।
२ हिमतसिघ ।
३. मोहकमसिंघ ।
४ सबळसिंघ ।
५ सुद्रसेन (सुदरसणसेन)
६. दौलतखांन ।
७ जसवतसिंघ ।
८. उदैभाण ।

गांव दुणियासररी पीढियां

१ भायसिघ (भावसिघ)
२. जोरावरसिंघ ।
३. केसरीसिंघ ।
४. अखैसिंघ ।
५ सुद्रसेन (सुदरसणसेन)

गांव जैतपुररी पीढियां

१ पदमसिंघ ।
२. सपरूसिघ ।
३. सूरसिघ ।
४. अर्जुनसिंघ ।
५. देवीसिंघ
६. चद्रसेण
७. मनहरदास (मनोहरदास)
८. गोपाळदास
९. उदैभाण

गांव साहोररी पीढियां

१ रांमसिंघ
२. अर्जुनसिंघ
३. दुर्गादास (दुरगदास)
४. देवीसिंघ

वीदावतांरी पीढियां

ठिकांणो वीदासर

१. रांमसिंघ
२. अमेदसिंघ (उमेदसिंघ)

३. जालमसिंघ
४. केसरीसिंघ
५. कुसळसिंघ
६. धनराज
७. मांनसिंघ
८. गोविंददास
९ केसवदास
१० गोपाळदास
११ सांगो
१२. ससारचंद
१३. वीदोजी
१४. राव जोधोजी

गांव वैणारीतै पीढियां

१. उदैसिंघ
२ दुर्गादास (दुरगदास)
३. वीरभाण
४. लखमीदास
५ गोविंददास (गोयददास)

गांव दुसारणैरी पीढियां

१ हणूतसिंघ
२. जैतसिंघ
३. सरदारसिंघ
४ दीपसिंघ
५. किसनसिंघ
६ अचळदास
७. गोविंददास (गोयददास)

गांव खूहड़ीरी पीढियां

१ दलजी (दल्लूजी । दल्लोजी)
२. नवलसिंघ
३ गुमानसिंघ
४ जोरावरसिंघ
५. फतैसिंघ
६ कुंभकर्ण
७ किसनदास (किसनसिंघ)
८ खंगारजी
९. जाळपदास
१०. सूरसेन
११. ससारचंद

गांव गोरीसररी पीढियां

१ नवलसिंघ
२. वाघ (वाघो)
३ प्रतापसिंघ
४ मांनसिंघ
५ किसनदास

३ जोरावरसिंघजी । ७ वळभद्रजी ।
४. रुघनाथसिंघजी । ८ नारायणदासजी ।
५ भागचंदजी । ९ वैरसीजी ।
६ वीरमदेजी ।

रतनदासोतांरी पीढियां

ठिकांणो महाजन

१ ठाकुर अमरसिंघजी । ७. ,, प्रतापसिंघ ।
२ ,, वैरीसालजी । ८. ,, उदैभाण ।
३. ,, सेरसिंघजी । ९. ,, जसवंतसिंघ ।
४. ,, सिवदांनसिंघजी । १० ,, अर्जुनसिंघजी ।
५. ,, भीमसिंघजी । ११ ,, रतनसिंघ ।
६ ,, अभैरांम । १२. राव लूणकरणजी ।

गांव नाथवांणैरी पीढियां

१ माधोसिंघ । ३ भायसिंघ (भावसिंघ)
२ वखतसिंघ । ४. अभैरांम ।

गांव कुंभांणैरी पीढियां

१ किसनसिंघ । ४. केसरीसिंघ ।
२. चैनसिंघ । ५. अभैराम ।
३. जोरावरसिंघ ।

गांव कालुवासरी पीढियां

१. भानीसिंघ (भवानीसिंघ) ४. लक्ष्मीदास (लखमदास, लखमीदास)
२ सायवसिंघ (साहेवसिंघ)
३. खड्गसेन । ५. उदैभांण

(गांव)

१ नारसिंघ । (नाहरसिंघ) २. सरूपसिंघ ।

गांव रंगाईसररी पीढियां

१. सुखरांमदास ।
२. चर्तुभुज ।
३ सावतसिंघ ।
४. उदैभाण ।

रावतोतांरी पीढियां

ठिकांणो रावतसर

१ नाहरसिंघ ।
२. विजैसिंघ ।
३. हिमतसिंघ ।
४. अणतसिंघ ।
(अणदसिंघ)
५ चतुरसिंघ ।
६. लखधीरसिंघ ।
७ राजसिंघ ।
८. जगतसिंघ ।
९ राघोदास ।
१० उदैसिंघ ।
११ किसनदास ।
१२ राजो ।
१३ कांधळजी ।
१४. राव रिणमलजी ।

गांव घांधूसररी पीढियां

१. सेरसिंघ ।
२ बहादुरसिंघ ।
३ जोरावरसिंघ ।
४. लखधीरसिंघ ।

गांव रांणासररी पीढियां

१ अर्जुनसिंघ ।
२. इद्रसिंघ ।
३. सवाईसिंघ ।
४. रुघनाथसिंघ ।
५ लखधीरसिंघ ।

गांव पलूरी* पीढियां

१. जसवतसिंघ ।
२ सूरतसिंघ ।
३ मालदे (मालदेव)
४. केसरीसिंघ ।
५ जगतसिंघ ।

पाठान्तर– पळू । पल्लू ।

गांव कणवारीरी° पीढियां

१. दलपतसिंघ
२. हरनाथसिंघ
३ दीपसिंघ
४ बखतसिंघ
५ फतैसिंघ
६. देवीदास
७ लाखणसी
८ खगारसीजी

गांव जासालररी पीढियां

१. बुधसिंघ
२. खडगसिंघ
३ मानसिंघ
४ किसनसिंघ (किसनदास)

गांव सेलैरी पीढियां

१. जूझारसिंघ
२. सांवतसिंघ
३ स्यांमसिंघ
४ मांनसिंघ

गांव लोवैरी पीढियां

१ कीरतसिंघ
२ पृथ्वीसिंघ (पिरथीसिंघ)
३ भवानीसिंघ (भांनीसिंघ)
४. वैरीसाल
५. बखतसिंघ

गांव हरदेसररी पीढियां

१ परसरांम
२ धीरतसिंघ
३. मोहकमसिंघ
४ मनरूप
५. सगतसिंघ
६. खगारसिंघ

गांव सांडवैरी पीढियां

१ रणजीतसिंघ
२ जैतसिंघ
३ भोमसिंघ
४. धीरतसिंघ
५. दांनसिंघ
६ महोकमसिंघ
७ जगमालसिंघ
८ मनहरदास
९ जसवंतसिंघ
१०. गोपाळदास

°कणवारा ।

गांव पिड़िहारांरी पीढियां

१. जालमसिंघ (जांमळसिंघ)
२. ईसरीसिंघ
३. दांनसिंघ

गांव पातलासररी° पीढियां

१. जयसिंघ
२ माधोसिंघ
३ दांनसिंघ

गांव ज्याकरोरी* पीढियां

१ नाहरसिंघ
२ कनीरांम (कांन्हीरांम)
३ प्रागदांन (प्रागदास)
४ मोहकमसिंघ

गांव चीमणवैरी पीढियां

१ अभैसिंघ
२. रायसिंघ
३. प्रागदास

गांव ककुरी पीढियां

१. ऊमजी
२ हिमतसिंघ
३ इद्रभाण
४ मोहकमसिंघ

गांव जीलीरी पीढियां

१. पदमसिंघ
२. जोधसिंघ
३. अमरसिंघ
४ मालदे (मालदेव)
५. मनहरदास

गांव बमूरी पीढियां

१. रायसिंघ
२ भगवंतसिंघ
३ अमरसिंघ
४. मालदे (मालदेव)

गांव लखमणसररी पीढियां

१. जयसिंघ
२. फतैसिंघ
३. आईदांन
४. डूगरसी
५. मनहरदास

पाठान्तर—°पातळसर। *ज्याकरी।

गांव कल्यांणसररी पीढियां

१. गोविंददास (गोयंददास)
२. दौलतसिंघ
३. फतैसिंघ
४. अखैराज
५. देईदास (देवीदास)
६. मनहरदास

गांव चंडावैरी पीढियां

१. पहाड़ो
२ कुंभो
३. प्रताप
४. जगमाल

अथ जोधपुररा सिरदारांरी पीढियां

ठिकांणो नींबाज[1]

१. सांवतसिंघ
२. सुरताणसिंघ
३. संभूसिंघ
४ दौलतसिंघ
५. कल्यांणसिंघ
६. अमरसिंघ
७. कुसळसिंघ
८. जगराम
९. विजैराम
१० मुकंददास
११. कल्यांणदास
१२. रतनसिंघ
१३. खीमो (खींवो)
१४. ऊदो
१५ राव सूजोजी
१६. राव जोधोजी

ठिकांणो रासरी[2] पीढियां

१. जवानसिंघ
२. वनैसिंघ
३. केसरीसिंघ
४. वखतसिंघ
५ सभुसिंघ
६. जगरांम

ठिकांणो लांबियारी[3] पीढियां

१. चांदसिंघ
२ भारतसिंघ
३. पेमसिंघ
४. सुभराम

गैमल्यावासरी पीढियां

१. इद्रसिंघ
२ फतैसिंघ
३. चैनसिंघ
४. सुभराम

---

1 नीमाज जोधपुर राज्यके जैतारण परगनेमे राठौड़ोकी ऊदावत शाखाका ताजीमी ठिकाना था। राव सूजाके पुत्र ऊदासे ऊदावत शाखा चली। 2 रास ठिकाना भी ऊदावत राठौडोका जैतारण परगनेमे था। 3 लावियाके दो ठिकाने थे। एक पाली परगनेमे चापावतोका और दूसरा जैतारण परगनेमे ऊदावतोका। प्रस्तुत उल्लेख ऊदावतोका ही अधिक सम्भव है।

ठिकांणो रायपुररी[1] पीढियां

१ केसरीसिंघ
२. भाखरसिंघ
३ हृदैनारायण
४ राजसी (राजसिंघ)
५ वल्लभरांम (वळरांम)
६. दयाळदास
७ कल्याणदास

गांव नींबोलरी[2] पीढियां

१. नरसिंघदास
२. जगतसिंघ
३ उदैरांम
४. जगराम

गांव जुणलो

१. रायसिंघ
२. अनोपसिंघ
३. उदैरांम
४. जगरांम

गांव खारियारी पीढियां

१. महासिंघ
२. वैरीसाल
३. मनरांम
४. विजैरांम

गांव खनावड़ीरी पीढियां

१. दौलतसिंघ
२. राजसिंघ
३ मनरांम
४ विजैराम
५ मुकनदास

गांव वैरोलरी पीढियां

१. सभुसिंघ
२. वनैसिंघ
३. हीरसिंघ (हीरासिंघ, हरीसिंघ)
४. मनरांम
५. विजैरांम
६. मुकुनदास

गांव छिपियैरा सिरदारांरी पीढियां

१. अमरसिंघ
२ जैतसिंघ

---

1 रायपुर ठिकाना भी ऊदावत राठोड़ोका जैतारण परगनेमे था। 2 नीबोल भी जैतारण परगनेमें ऊदावतोका ठिकाना था।

३. भांनीसिंघ (भवांनीसिंघ)
४. जसकरण
५. सांवतसिंघ
६. प्रतापसिंघ
७. राजसिंघ
८. बळरांम
९ दयाळदास

गांव नींबाड़ारी पीढियां

१. वनैसिंघ
२. उदैसिंघ
३. प्रतापसिंघ
४. राजसिंघ

गांव बांसोरी पीढियां

१. संभुसिंघ
२. भावसिंघ
३. जसकरण

गांव देवलीरी[1] पीढियां

१. सिवसिंघ
२. उदैसिंघ
३. प्रतापसिंघ
४. राजसिंघ
५. बळरांम

---

1 देवली भी ऊदावतोका ठिकाना था जो ऊदावतोकी देवली कहलाता है। जोधपुर राज्यके ऊपर लिखे सभी ठिकाने ऊदावतोके ही हैं। मारवाडके अन्य ठिकानोकी पीढियोका और ऊदावतोकी भी सभी ठिकानोकी पीढियोका वर्णन नही दिया गया है।

इन सभी पीढियोके नामोका क्रम उलटा लिखा हुआ है।

विगत

संमत ८०९ वैसाख सुदि १३ दिली वसी[@] ।

संमत १५९८ पातसाह अकबर रो जनम* ।

समत १६१३ फागुण सुदि १२ टीकै बैठो ।

समत १६६९ फोत हुवौ ।

समत १६६२ पातसाह जहांगीर टीकै बैठो । वर्ष २२ राज कियो । पातसाह जहांगीररी ऊमर वरस ६३ री हुई ।

संमत १६८४ पातसाह साहजांह टीकै बेठो । वरस ३१ पातसाही कीवी ।

समत १७१५ औरंगजेब टीकै बैठो । वरस ४८ पातसाही कीवी ।

संमत १७६३ फोत हुवौ ।

[@]एक विगतकी प्रतिमे—'स० ८२९ दिली खूटी गाडी । दिली वसाई अनगपाळ ।' एक दूसरी प्रतिमे भी 'समत ८२९ वैसाख सुद १३ सुकरवार नखत उतरा फालगणी तुवर अणगपाल राज दिली मडी' लिखा है ।

*वर्ष प्रारभके मासान्तरोके कारण विगतोमे प्रायः अकबरका जन्म समत १५९९ लिखा मिलता है। एक विगतमे 'स० १५९९ काती सुद ९' का जन्म होना लिखा है । एक दूसरी प्रतिमे 'स० १५९९ काती सुदी ६ शनिवार घटी २/७ पूर्वाषाढा नक्षत्रे २९/० दिन गत समस्त राति गत घटी २१/९ सुनि ९४९ मास रजब तुल सक्राति दिनगत १४/० भोग्य दिन १६ गमोतडी । अकबर पातिसाह जलालदीन मोहमद गाजीरी (जन्मकुडली)

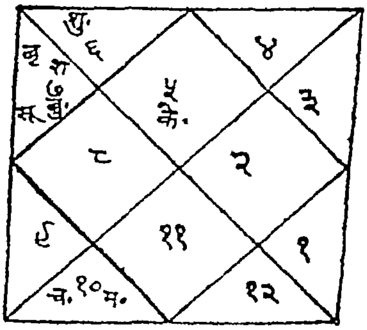

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ वात चंद्रावतांरी

रांमपुरैरा धणी, रांणा मेवाड़रा धणी, तिणां रांणां मांहै मिळै ।[1]

रांणै भवणसीरै बेटो चांदरो । तियैरा चंद्रावत कहीजै ।[2]

पीढी ११८ हुई, पाछै रांणो भवणसी हुवो । तैरै पेटरा चंद्रावत कहीजै ।[3]

संमत १६८१ रांणो मैहपो रावळ श्रीकरणरो बेटो ।[4] आगै ईंयांरै घरे रावळाई हुती, मैहपै रांणाई पाई ।[5] नै सीसोदै गांवरै नांव सीसोदिया कहांणा ।[6] अठासूं दोय साखां हुई–एक रांणा सीसोदै धणी तिका साख, नै एक रावळ बीजो भाई कहाणो, तिणरै रावळरी पदवी हुई ।[7]

चांदरारै पेट टीकायत पाट हुवा । तिण पाटवियांरा नांम चद्रावतांरी पीढी चाली[8]–

१. रांणो भवणसी (भीवसी)

२. चांदरो ।

३. सजन ।

४. झांझणसी ।

५. भाखरसी ।

पैहली चांदरारै पोत्रां मांहै भाखरसी पाटवी थो । भाखरसी माथै मुदार थी । ईंयांरै भोम परगनो आंतरी थी ।[9]

---

1 रामपुराके स्वामी मेवाड़के अधिपति-राणाओमे जाकर मिलते है। 2 उनमे राणा भवणसी हुआ जिसका वेटा चादरा हुआ और चादराके वशज चद्रावत कहे जाते है। 3 ११८ पीढियोके वाद राणा भवणसी हुआ। उसके पेटके चद्रावत कहे जाते हैं। 4 सम्वत् १६८१ मे रावल श्रीकर्णका वेटा राणा महपा हुआ। 5 पहले इनको रावलकी पदवी थी, किन्तु महपैने राणाकी पदवी प्राप्त की। 6 और शिशोदा गावके नामसे शिशोदिया कहलाए। 7 यहासे दो शाखायें प्रसिद्ध हुई—एक राणा शिशोदाके स्वामी जिनकी शाखा शिशोदिया और एक दूसरा भाई जो रावल कहलवाया जिसको रावलकी पदवी प्राप्त हुई। 8 चादराके वशज टीकायत और पट्टाधिकारी हुए। उन पट्टाधिकारियो के नामसे चंद्रावतोकी पीढिया चली। 9 इनकी भूमि आतरीका परगना थी।

आंतरीरो परगनो आमद देस माहै छै। तिण आंतरीरा परगना मांहै पठाररा गाम छै। त्यां पठाररा गांवां ईयारै उतनरी ठोड छै।[1]

भाखरसी नै भाखरसीरो काको छाजू दोनूंही वडा भूमिया, वडा रजपूत।

माडवरो पातसाह तिणरी हद माहै आमद देस माहै आंतरीरो परगनो गाव १४० लागै।[2] वडो मुलक, वडी धरती छै। सारा गाम दुफसला छै।

आगै आंतरीरो कसबो कहीजतो। राजथान आंतरी हुतो।[3] नै पातसाह अकबररी वार मांहै राव दुरगो हुवो। तिण रामपुरो वसायो। हिवै रामपुरै चंद्रावतांरो राजथान छै।[4] चांद रावरै पेटरा चंद्रावत आंतरीरा परगना माहै वडा भोमिया।[5] माडवरै पातसाहरै आंतरीरो परगनो खालसै हुतो, सु परगनारै हासल मांहै चोथाई परापरीसौ भोमियारै दाळरी लाग, सु अै परगना माहै लेता, वखत-गुदारी करता।[6]

चद्रावत वडा रजपूत था, नै तिकां दिनां पातसाही पण हळकी हुती; नै हिंदुवांरो दिन भलेरो हुतो। सु चंद्रावतां माहै भाखरसी झांझ-णोत ऊपर मुदार हुती। सह कोई चद्रावत भाखरसीरै हुकम मांहै हुता।[7]

भाखरसीरो काको छाजू वडो रजपूत। छाजूरै घरै वडो विभौ।[8] घोडिया, सांढियां, गायां, भैसिया। गायारा वडा धण हुता। चौपदो

---

1 आंतरीका परगना आमद देशमें आया हुआ है। उस आंतरीके परगनेमे जो पठारके गाव है, उन पठारके गावोमें इनके निवासकी ठौर है। 2 माडवके बादशाहकी हदमे आमद देश और उसमें आंतरीका परगना जिसमे १४० गांव (लगते) है। 3 राजधानी आतरी मे थी। 4 बादशाह अकबरके समय राव दुर्गा हुआ जिसने रामपुरा बसाया। अब (ख्यात-लेखनके समय) रामपुरा चंद्रावतोकी राजधानी है। 5 राव चांदके वंशज चन्द्रावत आंतरीके परगनेमे बडे भोमिये है। 6 माडवके बादशाहके आतरीका परगना खालसे था; सो इस परगनेमे हासलका चौथा हिस्सा परम्परा से 'दाल की लाग' के नामसे भोमियोका लगता था, सो ये वसूल करके अपना गुजरान करते थे। 7 चन्द्रावत अच्छे राजपूत थे, उन दिनो (मांडव की) बादशाही निर्बल पडी हुई थी और हिन्दुओंका समय अच्छा था। चन्द्रावतोंके दारोमदार भाखरसी झांझणोतके ऊपर थी। सभी चन्द्रावत भाखरसीकी आज्ञामे थे। 8 भाखरसीका चाचा छाजू अच्छा राजपूत था, छाजूके घरमे बडा वैभव था।

धण । सो ईयांरो धण लोकांरा खेत खावै ।[1] वसीरा लोकांरा खेत ऊभा खाईजै ।[2] सु लोक वसीरो भाखरसी आगै नित-प्रत पुकार घालै ।[3] ताहरां भाखरसीनू छाजू ओळभा तो घणा ही दरावै, पण रुळियार धण हुवो सु रहै नही ।[4] लोक सारा पच थाका ।[5] तिण ऊपर छाजूसौ भाखरसी घणो बुरो मानियो, नै छाजूनू कहाड़ियो—मै थाहरा घणा ही ओळभा टाळिया, थे मांनो नही । थे म्हांसू कोस १० आघेरा जायनै रहो ।[6] अठै रहितां था नै म्हां विगावो हुसी ।[7] थे वेगा छोडणरी तयारी करज्यो ।

तिण ऊपर छाजू नै छाजूरो बेटो सिवो ईयां दीठो-'भाखरसी सबळ मांणस, नै काढण ऊपर आयो । रहियां थकां विगोवो हुसी ।'[8] तिण ऊपरा छाजू छाडणरी तयारी कीवी नै ठोड जोवाड़ी[9] सो अै बूदी चीत्रोड़, आंतरी विचै पठाररा गांव यांरी वसती; तठाथी छाड़नै कोसे १२ आंतरीरो परगनो थो तिणरो कसबो थो, तिण कसवाथी कोस १ नदी वेत वहै छै ।[10] तिण वेत नदी ऊपर वडो जगळ छै । तिण मे द्रोबं, करड़री वडी ऊगम छै । तिका ठोड जोय आया ।[11] जांणियो—मांहरो हसम थाट अठै चरसी ।[12] सु नदीथा कोस १

---

1 घोडिया, साढिया, (ऊटनिया) गाये और भैंसे इत्यादि वडा चौपद समूह इसके पास था और गायोके तो वड़े (वहुत) समूह थे । सो इनका यह चौपद-धन लोगोके खेतोको खा जाता है । 2 वसीके लोगोके खडे खेत खा लिये जाते हैं । 3 वसीकी प्रजा नित्य प्रति भाखरसीके आगे जाकर पुकार करती है । (वसी=१ निजकी वसाई हुई वस्ती या प्रजा । २ रिआयतसे वसाये हुए लोग ।) 4 तव छाजू भाखरसीको उपालभ तो वहुत दिलवाता है, परन्तु छाजू क्या करे, धन (चौपद) ही ऐसा निषिद्ध हो गया कि रोकने पर भी रुकता नही । 5 सव लोग कोशिश करके थक गये । 6 जिस पर भाखरसीने छाजूसे वहुत बुरा माना और फिर छाजूको कहलवाया कि मैंने तुम्हारे अनेक ओलभे टाले, परन्तु तुम मानते नही । सो अव तुम हमारेसे १० कोस दूर जाकर रहो । 7 यहा रहने से तुमारे और हमारे वीचमे टटा-फसाद होगा । 8 जिस पर छाजू और उसके वेटे शिवाने देखा कि भाखरसी जवरदस्त आदमी है और अपनेको यहांसे निकालने पर तुल गया है, ऐसी दशामे यहां रहने पर फसाद होगा । 9 इस पर छाजूने छोडनेकी तैयारी की और जगहकी तलाश करवाई । 10 उस कस्वेसे एक कोस दूर वेत नामकी नदी वहती है । 11 उसमे दूव और करड घासकी खूब उपज होती है । उस जगहको देख आये । 12 विचारा कि हमारा चौपद-समूह यहां चर सकेगा ।

तथा २ गांम मिळसियाखेडी छै, तठै छाजू आपरा हसम थाट लेनै आयो ।[1] मिळसियाखेडी आसरा बाधिया ।[2] हसम थाट जगळ मांहै ढवै । वडो ठोड ।[3] छाजू, सिवो वडा रजपूत, नै कनै वडो वित[4], तिण घर २० तथा २५ रजपूतारा वसाया । वडी वसती हुई ।

कसबो आंतरी वडो सहर छै, नै सहर माहै वडो महाजन हुंतो ।[5] सो कसबा माहै चोर घणा लागै ।[6] पातसाही किरोडीरो परगना माहै भोमियां वीच अमल को नही ।[7] महाजन चोरी कर वडा दिलगीर ।[8] तिण ऊपर महाजना विचारियो–'किरोड़ीमे घणी वरकत काई नही ।[9] नै सीसोदियो छाजू, सिवो चंद्रावत, अै वडा रजपूत छै, नै वडा भोमिया छै, यांनू गांवरो सांसर सूपा तो अै जतन करै ।[10]

ताहरां महाजनां विचारनै छाजूसू वात कराई । वात छाजू कबूल कीवी । महाजना रुपियो १) रोजीनो सांसररो कर दियो ।[11] क्युही जायै-परणिये कर दियो ।[12] छाजूनै सिवो बाप बेटो कसबारी टहल करै । पाखती भाईवध छाजूरा भोमिया था, तिणांरा चोर कसबानू लागता सु छाजू मनह कराया ।[13] वार वार चोरी कीवी थी, तिणांनू आपडनै मारिया ।[14] सु उठासू ही हद पड गई ।[15] कसबै महाजनांनू वडो चैन हुवो । छाजू सिवैरो मांमलो भारी पडियो ।

---

1 सो नदीसे एक या दो कोस पर जहा मिलसियाखेडी नामका गाव है, वहा छाजू अपने चौपद-समूहको लेकर आया । 2 मिलसियाखेडीमे झोपडे वनाये । 3 सपूर्ण ठट्ठ (थाट) जगलमे निभ सके ऐसी वडी ठौर । 4 और पासमे वडा गो-धन (चौपद-समूह)। 5 और शहरमे महाजनोंकी वडी वस्ती थी । 6 कस्वेमे चोर वहुत लगते थे । 7 वादशाही करोडीके परगनेमे भोमियोंके ऊपर उसका कोई अमल नही । 8 महाजन लोग चोरियो के कारण वडे दुखी । 9 करोडीमे कोई योग्यता नही । 10 इनको गावकी रक्षाका भार सौंप दें तो ये प्रवन्ध कर देंगे । 11 महाजनोने प्रतिदिनका एक रुपया चोरो से रक्षाकी जिम्मेवारीका कर दिया । 12 जन्म और विवाह पर भी कुछ लगान वाध दिया । 13 पास-पडोसमे छाजूके भाई-वन्धु भोमिये थे, उनके यहाके जो चोर कस्वे को लगते थे, उन्हे छाजूने मना करके रोक दिया । 14 और जो कई वार चोरियां कर चुके थे उन्हें पकड करके मारा । 15 सो फिर तो वहींसे चोरी करनेकी हद पड गई अर्थात् इनके वाद कोई चोरी नही हुई ।

वडो कायदो हुवो ।[1] घोड़ा, रजपूतांरी पण कनारै वडी जोड हुई ।[2]

छाजूरो बेटो सिवो वडो रजपूत, वडो जवांन सु आठ पोहर नदी-री पाखती सिकार खेलतो रहै । ओधूळा करै ।[3]

तद मांडवरी पातसाही पातसाह गौरी हुसंग भोगवै ।[4] नै दिली तद लोदी पठाणांरी साहिबी, सु लोदी दिलीरी पातसाही भोगवै ।[5] सु मांडवरो पातसाह हुसंग दिलीरै पातसाहरी बेटी परणियो थो ।[6] सु साहिजादी दिली हुती, नै मांडवरै पातसाहरो लोक साहिजादीनू लेण दिली गयो हुतो । सु साहिजादी दिलीसू चाली थी सु आतरीरै कसबैरी नदी आई । पैंडे चाली सु दिन भाद्रवा आसोजरा हुंता ।[7] नदियांरो जोर हुतो, सु उतरणरो को घाट नही ।[8] ताहरां साहिजादी नदी माहै डूडो नखायनै उतरती हुती[9], सु वीच जावतां डूंडो फूटो, सु तखता जुदा-जुदा हुय गया । ताहरां साहिजादी डूबती थकीरै हाथ पाटियो १ डूडारो आयो ।[10] तिको झालनै बैठी सु नदीरी धार माहै वूही जावती हुती ।[11] सु नदी ऊपर पातसाही लोक हुतो सु कूक ऊठियो[12]–'साहिजादी डूबी जाती है ।'

ताहरा सिवो छाजूरो बेटो नदी थी निजीक सिकार खेलतो हुतो, सु कूकवो सुणनै दोड आयो ।[13] साहिजादी नदी माहै वूही जावती दीठी । सु सिवो आप वडो तेरू हुंतो ।[14] सु आडवाहो होयनै नदी मांहै कूद पडियो ।[15] ताहरां तिरतो-तिरतो साहिजादीसौ निजीक

---

1 छाजू और शिवाकी साख जम गई और मान-रुतवा बहुत वढ गया। 2 घोडे और राजपूतोका भी वडा समूह पासमें हो गया। 3 मौज करता है। 4 उस समय मांडवकी वादशाही का उपभोग वादशाह हुशग गौरी करता है। 5 और दिल्लीमे लोदी-पठानोका राज्य सो लोदी वहाकी वादशाही भोगते हैं। 6 सो माडवके वादशाह हुशगने दिल्लीके वादशाहकी लडकीसे विवाह किया था। 7 पैदल रवाना हुई थी और भादो आसोजके (वर्षाके) दिन थे। 8 नदियोमे पानीके पूरका जोर था सो पार उतरनेका कोई साधन नही था। 9 इसलिए नदीमे डोगी डाल करके पार उतर रही थी। 10 सो डूवती हुई शाहजादीके डोगीका एक पाटा हाथ आ गया। 11 उसे पकड करके उस पर बैठी हुई नदीकी धारामे वही जा रही थी। 12 नदी पर वादशाही लोग थे उन्होने शोर मचाया। 13 सो शोर सुन करके दौड आया। 14 शिवा स्वय वडा तैराक था। 15 सो आडी नदीको पार करता हुआ उसमे कूद पडा। (आड वहाव तैरनेके लिए नदीमे कूद पडा।)

गयो। उठै जायनै साहिजादीनू सलांम कही। कह्यो–'कुण हुकम छै?'[1] तरै साहिजादी कह्यो–'तू माहरो भाई छै नै हू थारी बहन छूं। मोनू तू लेयनै नीसर गयो तो, तो सारीखो कोई नही।[2]

ताहरां सिवो साहिजादीरै निजीक गयो। जायनै कह्यो–'बाईजी सलामत! म्हारै खवै हाथ द्यो ज्या हू राजनू लेयनै नीसरू।'[3] ताहरां साहजादी खवो झालियो।[4] सिवो नदी तिरनै साहजादीनू ले नीसरियो। सारै वधाई वांटी।[5] साहजादी सिवैसू बहोत राजी हुई। वहोत वधाई दीवी।[6] घोड़ो सिरोपाव दियो।

सिवानू साहजादी कह्यो–'तू म्हारो भाई छै। तू म्हां साथै माडव आवै तो तोनू पातसाहजीसू अरज करनै मुनसब दिराऊं।'[7] तिण ऊपर सिवै ही दीठो[8]–'मोसू साहजादी मया करै छै। म्है खिजमत रूडी करी छै। जाऊ तो पाऊ।'[9] तिण ऊपर सिवै ही साथै आवणो कवूल कियो।

घरे जायनै दस माणस आपरा लेयनै आयकर भेळो हुओ। साहिजादी साथै हुओ जाय।[10] खावण-पीवणनू रोजीनो कर दियो।[11] बीजो ही माहैसू इनांमरो पण क्युहेक मेल्है। सु साहिजादी चाली मांडव गई। उठै जायनै साहिजादी सिसोदिया सिवारो सैमान कराय दियो। नै पातसाहजीसू मालम कियो–'पातसाह सलामत! मोनू नदी माहैसू वूडतीनू एकै सिसोदियै रांणारै भाई काढी छै।[12] तिणनू म्है भाई कहि बोलायो छै, सु हजरत उसकू पावां लगावो नै चाकर करो।'[13] तिण ऊपर पातसाहजी फुरमायो–'आय पावां लागो।'[14] ताहरा सिवानू पांवां लगायो।

---

1 मेरे लिए क्या आज्ञा है? 2 मुझको लेकरके बाहर निकल गया तो तेरे समान कोई (उपकारी) नही। 3 मेरे कंधे पर हाथ दे दो (मेरा कंधा पकडलो) सो मैं आपको लेकर बाहर निकल जाऊं। 4 तब शाहजादीने कंधा पकड लिया। 5 सबने बधाइयां बांटी। 6 बहुत उपहार दिया। 7 तू मेरे साथ मांडवको आये तो बादशाहसे अर्ज करके तेरेको मनसब दिलवाऊं। 8 इस पर शिवाने ही देखा (सोचा)। 9 मेरे पर शाहजादी कृपा कर रही है, मैंने भी अच्छी सेवा की है। साथमे जाऊं तो प्राप्त करूं। 10 शाहजादीके साथ होकर जा रहा है। 11 खाने-पीनेके लिए रोजाना निश्चित कर दिया। 12 बादशाह सलामत! मुझको नदीमे डूबती हुईको राणाके भाई एक शिशोदियाने बाहर निकाला। 13 उसको मैंने अपना भाई कहा है सो हजरत उसे अपने पावों लगाये और अपना चाकर बनाएं। 14 आकरके पावां लगे।

हमै सिवो पातसाहजीरी चाकरी करै। पातसाहजी सिवै ऊपर घणी महरवानगी करै।

एक दिन पातसाहजी सिवैनू फुरमायो–'तू मांग। तोनू मांगै सो ठोड़ द्यां।'[1] ताहरां सिवै अरज कीवी–'पातसाह सलांमत! महरवांन छो तो हूं म्हारो उतन पाऊं।'[2] तिणै ऊपर पातसाह सिवैनू उतनरी तसलीम कराई नै पातसाह कह्यो–'थारो उतन कासू छै?'[3] ताहरां पातसाहजीसू सिवै अरज कीवी–'आमद देसमे आतरीरो परगनो छै सु माहरो उतन छै।' तिण ऊपर सिवानूं उतनरो पटो कराय दियो। घोड़ो सिरपाव दियो। घणी दिलासा देनै देसनू विदा कियो।[4]

साहजादी पण इणनू विदा हुतैनू घोड़ो सिरपाव देय, रुपिया हजार तीस-चाळीसरो माल देनै विदा कियो। फुरमायो–'हूं थारी बहन छू। तू म्हारो भाई छै। तू खातर जमै राखै। हू तोनू म्होटो करीस।' सिवानू रावरो खिताब देरायो।[5]

ताहरां सिवै उठासू देसनै चढ खडियो। वीच मे आवतै दस मांणस रूड़ा चाकर राखिया। पटा लिख-लिख दिया। असवार ४००-सू घरे आयो।[6]

पछै सारा परगना मांहै जायनै वडो अमल कियो। धरती माहै राखण जोगो हुतो सु राखियो। काढण जोगो हुतो सु काढियो।[7] धरतीरो वडो सलूक कियो।[8] आपरो जमीयत खरी कीध्री।[9] सिसो-

---

1 तू मागे सो ही जगह तेरेको दे दें। 2 वादशाह सलामत! आप यदि महरवान हैं तो मुझे मेरा वतन (देश) मिले। 3 इस पर वादशाहने शिवा के वतन (देश) की तसलीमकी और वादशाहने कहा कि तुमारा वतन कौनसा है? 4 घोडा सिरोपाव दिया और खूव सान्त्वना देकर देशको विदा किया। 5 तू खातिरजमा रखना, मैं तुझे वडा वनाऊगी और शिवाको रावका खिताव दिलवाया। 6 तव शिवा वहासे देशको रवाना हुआ। वीचमे आते हुए दस अच्छे आदमियोको चाकर रखा। गावोके पट्टे लिख-लिख कर दिए। इस प्रकार ४०० सवारोको साथ लेकर अपने घर आया। 7 फिर सारे परगनेमे जाकर वडा अमल जमाया। देशमे जो रखने योग्य था उसे रखा और निकालने योग्य था उसे निकाल दिया। 8 देशका वडा अच्छा प्रवन्ध किया। 9 अपने समुदाय को दृढ किया।

दियै सिवै छाजुओत बहोत साहिबी पाई। सिवैथी चंद्रावतांरी साख ठकुराई हुई।[1] सिवै गांव १४००सूँ आंतरीरो परगनो पायो। सिवो राव कहाणो।

१. राव सिवो।

२. राव रायमल।

३. राव अचळो।

इतरी पीढी तो आतरी राज हुतो।[2] पछै अचळैरो बेटो दुरगो टीकै बैठो। तिण राव दुरगै कसबो नवो वसायो नै श्री रांमचद्रजीरै नांमसूँ रांमपुरो ठाकुरांरै हेत नांम दियो।[3] राव वडो देसोत[4] हुओ। राव दुरगो वडो दातार हुओ। चंद्रावतांरै घर मांहै वडो कारणीक ठाकुर हुओ।[5] हिवै चंद्रावतांरै पाटवीरो राजथान रामपुरै छै।[6] रामपुरो वडो ठोड़। सारी धरती दुफसळी छै। वडी जरायत धरती।[7]

---

1 शिवासे चन्द्रावत शाखाकी ठकुराई हुई। 2 इतनी (शिवा, रायमल और अचला—ये तीन) पीढी तक तो आतरीमे राज्य रहा। 3 राव दुर्गाने नया कस्बा बसाया और श्रीरामचन्द्रजीके नाम पर श्रीठाकुरजी श्रीरामचन्द्रजीके हेतु (अर्पण करके) उसका नाम रामपुरा दिया। 4 देशपति। 5 चन्द्रावतोके घरमे राव दुर्गा बड़ा प्रतिष्ठित (प्रामाणिक) ठाकुर हुआ। 6 अब चन्द्रावतोंके पाटवी अधिपतियोकी राजधानी रामपुरा है। 7 खेतीके लिए बहुत बढ़िया धरती। (जिराअत=१ खेती। २ खेतीकी भूमि। ३ कृषिकी बहुत बढ़िया भूमि। ४ पुष्कल वर्षा द्वारा सिंचित होने वाली कृषि योग्य भूमि। जरायत का विपरीत बागायत है। बागकी सीचाई कुएसे होती है।)

पीढियांरी हकीकत

१. पाट बैठा त्यांरा[1] नांम

१. रांणो भीमसी–

भीमसी दस सहँस मेवाडरो धणी ।[2] तिणरो बेटो चाँदरो । तिणरै पेटरा चद्रावत कहीजै ।[3] उतन रामपुरो ।[4] रांणो भीमसी मेवाड़रो धणी । रांणाजीरी पीढियांमें रांणो भीमसी पीढी ११८ मांहै छै ।[5]

२ चांदरो सिसोदियो

चांदरो रांणा भीमसीहरो बेटो । चांदरारा पोतरा ठाकुर गढ-पति हुआ ।[6] तिणरा चंद्रावत कहीजै ।[7]

३. सिसोदियो साजन चांदरारो बेटो

चांदरा पछै पाट बैठो । साजनरै बेटा २ हुआ । जांझण टीका-यत ।[8] छाजू छोटो बेटो ।

४. सिसोदियो छाजू साजनरो बेटो

छाजू भोमियो थको धरती मांहै रहतो हुतो पठाररै गांवां ।[9]

५ राव सिवो

छाजूरो बेटो ठाकुर हुओ । मांडवरै पातसाह हुसग गोरीरो चाकर हुओ । आतरीरो परगनो पायो । गांम १४०० पाया । रावाईरो किताव पायो ।[10] राव सिवैसूं राव कहांणा ।[11] कुंवर पृथ्वीराज रांणा रायमलरा बेटासूं वडी वेढ कीधी ।[12]

---

1 उनके । 2 भीमसी दस सहस्र मेवाड(के गावो)का स्वामी । 3 जिसके वशज चद्रावत कहे जाते है । 4 वतन (निवास) रामपुरा । 5 राणाजीकी पीढियोमे राणा भीमसी ११८वी पीढीमे है । (वात चन्द्रावतारी पृ० २३९मे ११८ पीढीके वाद राणा भवणसी [भीमसी]का होना वताया है ।) 6 चादराके पौत्र-ठाकुर गढपति हुए । 7 जिसके वशज चन्द्रावत कहे जाते हैं । 8 जाभण टीकायत हुआ । 9 छाजू देशके पठारके गावोमें भोमियाकी स्थितिमे रहता था । 10 रावाई (राव)का खिताव पाया । 11 राव शिवासे राव कहलाने लगे । 12 कुवर पृथ्वीराजने राणा रायमलके वेटेसे वड़ी लडाई लडी ।

६. राव रायमल

सिवारै पाट बैठो। मांडवरी पातसाही निबळी पड़ी नै रांणैरी वडी साहिबी।[1] तरै राणै कूभै रायमलनू दबायो। चाकर कियो।[2] राव रायमल जाय राणैसूं मिळियो।

७ राव अचलो रायमलोत

पछै अचळो पाट बैठो। अचळै रांणै सांगेरी चाकरी कीधी। राणारा थको हुअो।[3] रांणो सांगो वडो प्रतापीक हुअो। माडव दिलीरी धरती दबायनै लीधी।[4]

८. राव दुरगो

अचळारै पाट दुरगो बैठो। वडो देसोत[5] हुअो। वडो ठाकुर हुअो। राव दुरगो जोरावर थको रहै। रांणासूं मिळै नही। रांणा नै राव दुरगै आपसमे वांणक को नही।[6] नै रांणैरी वडी साहिबी। ताहरा दुरगो दिलीरा पातसाह अकबरसू जाय मिळियो। चाकर हुअो। राव दुरगो पातसाह अकबररी वार माहै कारणीक ठाकुर हुअो।[7] रामपुरा ऊपर च्यार ठोड पातसाह बीजी दीधो।[8] राव दुरगै आतरीरो कसबो छाड नै नवो कसबो वसायो, रामपुरो नाव दियो।[9]

९. राव चंदो

राव दुरगैरै पाट बैठो।

१०. नगजी

नगजी राव चदैरो टीकायत बेटो थो, सु कुवरपदै राव चदै जीवतां हीज मुवो।[10]

---

1 माडवकी वादशाही निर्बल हुई उस समय राणाकी वडी साहिवी हुई। 2 तब राणा कुभेने रायमलको दबा कर अपना चाकर बनाया। 3 अचलाने राणा सागाकी चाकरी की। राणाके आधीन हुआ। 4 मांडव और दिल्लीकी धरती दबा कर ले ली। 5 बडा देशपति हुआ। 6 राणा और राव दुर्गाके परस्पर मेल-जोल नही। 7 राव दुर्गा बादशाह अकबरके समयमे बडा प्रतिष्ठित (प्रामाणिक) ठाकुर हुआ। 8 रामपुराके अतिरिक्त चार ठौर (परगने) और वादशाहने दीं। 9 राव दुर्गाने आंतरीका कस्वा छोड़ कर नया कस्वा वसाया, उसका नाम रामपुरा दिया। 10 नगजी राव चदेका टीकायत बेटा था सो राव चदाके जीतेजी कुवरपदे ही मर गया।

११. राव दूदो

तिण नगजीरै बेटो दूदो हुतो, तिणनूं टीकायत कियो। टीकै बैठो। राव दूदो वडो देसोत हुओ। पातसाह साहजहां दौलताबाद ऊपर मोहबतखांननूं मेलियो, ताहरां दौलताबाद लेतां राव दूदो कांम आयो।[1] राव दूदैरो काको गिरधर चांदावत पण दौलताबाद दूदा भेळो कांम आयो।[2]

१२. राव हठीसिंघ

पछै दूदैरै पाट राव हठीसिंघ बैठो। सु राव हठीसिंघरै छोरू नही हुओ। मोटियार थको मुंवो।[3]

१३. रूपसिंघ रुखमांगदोत

राव हठीसिंघरै पाट रूपसिंघ रुखमांगदोत। रुखमांगद चांदावत। सु रूपसिंघ पाट बैठो।

१४. राव अमरसिंघ हरिसिंघोत

राव रूपसिंघरै पाट राव अमरसिंघ हरिसिंघोत। हरिसिंघ चांदावत। सु अमरसिंघ पाट बैठो। राव रूपसिंघरै छोरू को नहीं हुओ।[4] पछै बेटो जायो।[5] पातसाह साहजहां राव अमरसिंघनूं टीको दियो।[6]

---

1 बादशाह शाहजहाने महोबतखानको दौलताबादके ऊपर भेजा, तब दौलताबाद पर अधिकार करते समय दूदा काम आया। 2 राव दूदेका चाचा गिरधर चांदावत भी दौलताबादमें दूदाके साथ काम आया। 3 राव हठीसिंहके कोई पुत्र नही हुआ। युवावस्थामें ही मर गया। 4 राव रूपसिंहके कोई पुत्र नही हुआ। 5 बादमें पुत्र उत्पन्न हुआ। 6 बादशाह शाहजहाने राव अमरसिंहको टीका दिया।

अथ वात सिखरो बहलवै रहै तैरी

जेसळमेर सोढारैं विचमें कोटेचा रजपूत रहै।[1] कोटेचारै वड-कुवार दीकरी सु पड़िहारैरो मोहिल परणीजणनू आयो।[2] भली-भांतरो व्याव हुवो।

व्याव कर तठासू चालिया।[3] वीच मारगमें आवता भगत हुई, तेथ सोळै बाकरा किया था।[4] सु बाकरारा माथा, खुरा चरू माहै राखिया हुता।[5] पछै उठासू कूच हुवो। आगै मारगमे तळाव आयो। ताहरा वडेरा[6] ठाकुर हुता[7] सु बोलिया–'जु सिनान करो, सेवा-पूजा कर अमल करो। सेजवाळो एकै आंतरै छोड़ावो।'[8] ताहरा कोटेची छोकरीसू कह्यो–'दातण लाव।' ताहरां छोकरी दातण लाई। दातण कर कागसी वाही।[9] सिनांन कियो। श्री ठाकुरांरा नांम लिया।[10] पछै सिरावण मांगियो।[11] ताहरां छोकरी कह्यो–'बाईजी! एथ सिरांवण बीजो तो क्युही नही। बाकरारा पूचणा तो चरू मांहै छै।'[12] ताहरां कह्यो–'चरू हेठो उतार।'[13] पछै छोकरी पुरसती गई। ठकुरांणी जीमती गई।[14] वे पूचणा सेह ही आचमन किया।[15]

पछै ठाकुरां दातण सिनांन कर नाम ले[16] सीस खुरा मंगाया। आयनै छोकरीनूं कह्यो–'प्रांचणांरो चरू दै।' ताहरां छोकरी कह्यो–'चरूसौं कासूं करसो?'[17] कह्यो–'चरू मांहै प्रांचणा छै।' ताहरां छोकरी कह्यो–'प्रांचणा सिगळांहीरो सिरांवण कियो।'[18] ताहरां

---

1 जैसलमेर (भाटियो) और (उमरकोट) सोढोके बीचमे कोटेचा राजपूत रहते हैं। 2 कोटेचोके एक वड कुमारी पुत्री जिसको पडिहारेका मोहिल व्याहनेको आया। 3 विवाह कर वहासे चले। 4 लौटते हुए मध्य मार्गमे खानेकी तैयारी हुई जहा सोलह वकरे मारे गये थे। 5 सो वकरोके सिर और खुर चरुआमे डाल रखे थे। 6 वडे-वुड्ढे। 7 थे। 8 स्नान करलो और सेवा-पूजा कर के अफीम लेलो। पालकीको एक ओर थोडी दूर छुडवा दो। 9 दांतुन कर कघी की। 10 श्री भगवानका नाम-स्मरण किया। 11 फिर नाश्ता मागा। 12 वाईजी! यहा कलेवाके लिए और तो कुछ नही है, वकरोके सिर-खुर तो चरु मे रखे हैं। 13 चरूको नीचे उतार दे। 14 फिर दासी परोसती गई और ठकुरानी खाती गई। 15 उन सभी पूचनोंका आचमन कर गई। 16 भगवानके नामका सुमिरण कर। 17 चरूका क्या करेंगे? 18 सभी प्राचणोका नाश्ता कर लिया।

सारा ही ठाकुर अबोला रह्या ।[1] मनमैं सोच हुवो । पछै हालिया । पड़िहारै आय पहुता ।[2]

पडिहारै जायनै ठाकुर प्रधाननू कह्यो । ठाकुर प्रधान आलोच करनै कह्यो–'जु ईयै ठाकुरांणीरा मोजडा म्हांसूं ऊपड़ै नही ।'[3] तिवारै रात कागळ लिख गांव बधायो नै कह्यो–'ईयै रजपूतांणीरा गरजू म्हे नही ।'[4] प्रभात हुवै रजपूताणी कागळ वाचियो । कोटेची रजपूतांसू कहायो–'अठै इसी वात छै ।'[5] पछै कोटेचा सिरदारा आदमी मेल्ह आपरी दीकरी बुलाय लीधी ।[6]

पछै आ वात रावळ मालैजीरै हजूर हुई–'जु खाधरै वई एक रजपूत रजपूतांणी छोडी ।'[7] महेवैरै दरबार मांहे इसी वात हुई ।[8] ताहरां रावळ मालोजी कहै छै–'ओ रजपूत चूको ।[9] उवै रजपूताणीरै पेटरा इसा बळवंत, औनाड़ जोधा हुवत, जु कोटांरा किमाड़ भांजै । भूतां दईतांसू लडै । जीवता सीह पाकड़ै ।'[10]

ताहरां रांणो ऊगमड़ो ईदो बहेलवैरो धणी, रावळ मलीनाथरो चाकर । सु वै ठाकुर दरबार माहै वात सुणी । अर पछै ऊगमसी आदमी कोटेचां आगै मेल्हियो । वीनती कराई–'थांहरी बेटी मोनू दो ।'[11] ताहरां कोटेचा आपरी बेटी ऊगमसी ईंदैनू दीधी । ऊगमसी कोटेचीनू घरे घाली ।[12]* घणो हरख हुवो ।

---

1 तब सभी ठाकुर चुप रह गये (चकित हो गये ।) 2 फिकर हुआ । फिर रवाना हो गये और पडिहाराको आ पहुंचे । 3 ठाकुर और प्रधानने परामर्श करके कहा कि इस ठकुरानीकी जूतियें हमसे नही उठे (इतना खाने वालीको हम वरदाश्त नही कर सकते ।) 4 उस दिन रातको पत्र लिख कर आदमीके साथ गावको वँधवाया और कहा कि इस राजपूतानीकी हमे आवश्यकता नही । 5 प्रभात होने पर (उस आदमीसे लेकर) राजपूतानीने भी उस पत्रको पढा, तव कोटेचीने भी राजपूतो (पीहर वालों)को कहलवाया कि यहा ऐसी वात हो गई है । 6 फिर कोटेचा सरदारोने आदमी भेज कर अपनी पुत्रीको वुला लिया । 7 फिर यह वात रावल मल्लीनाथजीके पास पहुची (दरवारमे फैली) कि खानेकी बातके लिए एक राजपूतने, राजपूतानी (अपनी पत्नी)को छोड दिया है । 8 महेवेके दरवारमे ऐसी चर्चा चली । 9 इस राजपूतने भूल की । 10 उस राजपूतानीकी कोखसे ऐसे वलवान, अनम्र जोधा उत्पन्न होते जो कोटोके किवाड़ तोडे, भूतो और दैत्योसे लडे और जीवित सिंहोको पकडे । 11 और पीछे ऊगमसीने कोटेचोके पास आदमी भेजा और विनयपूर्वक कहलवाया कि तुमारी वेटीको मुझे दे दो । 12 ऊगमसीने कोटेचीको अपने घरमे डाली ।

पाठान्तर—*१ घरे वाळी । २ घरे वासी ।

कोटीचीरै सात बेटा हुवा । तिकांरा नाम–

१. सिखरो ।
२. रोय धवळ ।
३. ऊदो ।
४. राजो ।
५. लाखो ।
६. .... ।
७. .... ।

एक दिन राय धवळ नै ऊदो नीसरिया हुता, रामत करता ।[1] जंगळ माहै रमता-रमता गया । ताहरा एक वघेरो दीठो ।[2] ताहरां लारै छोकरा हुता, तियां कह्यो–'ओ किसो जिनावर छै ?'[3] तद उवा देखता सीह ऊठण पायो नही । ईयां जाय कांनाहू पकड़ियो ।[4] पछै खाचियां-खांचियां गवाड[5] माहै ले आया । खूटो रोपनै बांधियो । छोडियो ताहरां लोकै दीठो[6]–'जु ओ तो नाहर छै ।'[7] ताहरां माणसै कहियो[8]–जु रावळजीरो वचन साचो हुवो, जु ईयै रजपूतांणीरै पेटरा इसा हुसी, सु साच हुई ।[9]

हिवै[10] वहेलवै[11] नै[12] महेवै[13] बीच भ्रोटेळाव[14] तळाव छै । तिण माहे[15] एक भ्रोटिंग[16] रहै । दिन अस्त हुआं पछै जिको[17] तळाव ऊपर कर नीसरै, तिणनू[18] मारै । यू करता एक दिन जगमालजीनू[19] रावळ मलीनाथजीरो बोल[20] याद आयो–'जु ईयै रजपूतांणीरै पेटरो हुसी सु दैतां-भूतासू लडसी ।'[21] सु सिखरैरी परीक्षा कीजै ।

चादणी चवदसरो दिन छै ।[22] सनि आदित्यवाररी सध छै ।[23] ऊपर भ्रड़ मंडियो छै ।[24] सिणफिण मेह वरसै छै ।[25] जगमालजी

---

1 एक दिन रायधवल और ऊदा खेलते-खेलते वाहर निकल गये । 2 तव एक वघेरा देखा । 3 उनके पीछे जो छोकरे थे, उन्होंने कहा कि यह कौनसा जानवर है ? 4 इन्होंने जाकर उसे कानोंसे पकड लिया । 5 गवाड=(१) वाडा (२) मोहल्ला, गली । 6–7 छोडा तव लोगोंने देखा कि यह तो नाहर है । 8 तव मनुष्योंने कहा । 9 इस राजपूतानीके पेटके ऐसे (वली) होंगे, सो सच हुई । 10 अव । 11 एक गावका नाम । 12 और । 13 एक गावका नाम । 14 एक तालावका नाम । 15 उसमे । 16 घने वालों वाला एक काला और दृढ भूत । 17 जो । 18 उसको । 19 जगमालजी-को । 20 वचन । 21 इस राजपूतानीकी कोखसे जो उत्पन्न होगा वह दैत्यो और भूतो-से लडेगा (लड़ने वाला होगा ।) 22 शुक्ल पक्षकी चौदसका दिन है । 23 शनि और रविवारकी सधि (मध्य) है । 24–25 ऊपर वर्षाकी झड़ी लगी हुई और थोडा-थोडा मेह वरस रहा है ।

झरोखै बैठा छै। ताहरां दोय बळाहियां[1] नूं हुकम कियो–'भारा २ लकड़ियांरा बहेलवैरै तळाव झोटेळाव ऊपर वड़ छै, तेथ जाय नांखो।'[2] ताहरां बळाहियां ले जाय लकड़ियां नांखी।

जगमालजी खुसी थका बैठा छै। रात घडी ४ गई छै। खवास, प्रधांन, उमराव मुहडै आगै ऊभा छै।[3] ताहरां सिखरैजीनूं जगमालजी कहियो–'आज राज घरे पधारो।'[4]

एकै भांभी[5]नूं कहियो–'सिखरैजीनूं एक बाकरो आंण देजो।'[6] सिखरैजीनू कहियो–'सिखरोजी! आज झोटेळाव ऊपर सूळा करै घरे जाईजो।'[7]

ताहरां सिखरैजी बाकरैरो कांन चीरनै साथै बांध लियो नै जाय तळाव पुहुता।[8] चढियै ही वडरी साखसौ डोर बांधी नै घोड़ैसू नीचे उतरिया।[9] पासै दोवड़[10] थी तिका नीचे विछाई। घोड़ैरै दुबकी दीधी।[11] ऊपर ढाल मेल्ही।[12] ढाल ऊपर आपरा हथियार मेल्हिया।[13] चकमक झाड़ अगन कीवी।[14] अगीठो जगायो।[15] सिनाननूं पोत काढी।[16] आप तळाव मांहे पैठा।[17]

ताहरां झोटिंग भैंसेरो रूप कर अर आयो। ओ[18] ठाकुर बोलियो-हीज नही। सिखरो पाछो आयनै तरवार ले बाकरो मारियो। बाकरो मारियां पछै झोटिंग एक विपरीत रूप भूत करनै आयो। अकास सीस, पग धरती, इसो भूत आवतो दीठो।[19] चवदसरी चांदणी रात हुती।[20]

---

1 वळाही = निम्न श्रेणीकी एक जाति का पुरुष। 2 झोटेलाव तालावके ऊपर जहा वड वृक्ष है वहाँ जाकर लकडियोके दो भारे (गट्ठड) डाल दो। 3 खवास (चाकर) प्रधान और उमराव मुहके सम्मुख खडे हैं। 4 आज आप घर पर पधारें। 5 भाभी (भावी, वाभी) = निम्न श्रेणीकी एक जाति का पुरुष। 6 सिखराजीको एक बकरा लाकर दे देना। 7 आज झोटेलाव तालाव पर शूले (कवाब) वना कर घर पर जाना। 8 पहुचे। 9 घोड़े पर चढे-चढे ही वडकी शाखा (जटा)से डोरको वाध कर घोड़ेसे नीचे उतरे। 10 दोवड = दो परतो वाली चादर। 11 घोडोको दुमची दे दी। 12 रखी। 13 रख दिये। 14–15 चकमकको झाड कर अग्नि वनाई और अगीठी जगाई। 16–17 स्नान करनेके लिये घोती निकाली और तालावमे प्रवेश किया। 18 यह। 19 ऐसा भूत आता हुआ देखा। 20 उस दिन शुक्ल पक्ष चौदसकी चादनी रात थी।

पछै असवार ४ वासै जगमालजी सेसू मेल्हिया—'देखां सिखरो कासू करै छै ? सु थे जोय आवो ।'[1] ताहरा सेसू ऊभा जोवै छे ।[2] ताहरा सिखरै भूतनू कह्यो—'जु तै इतरो सरीर वधारियो सु हू डरू नही ।[3] हूं आदमी इतरै सरीरनू पोहचू ।'[4] ताहरा भूत माणस जेवडो हुवो ।[5] सिखरो बोलियो—'जु तू ही आव । सूळा खाह ।[6] आपा पछै लड़स्या ।' ताहरा भूत आय गोढै[7] बैठो ।

सिखरै काढि छुरी अर बाकरारी खाल काढी ।[8] बाकरो टांकणै कियो ।[9] पीडी तां[10] मास उतारियो । भीनी पोत ऊपर मांस सूड-सूड़ अर राखियो ।[11] तरगस मांहै सूळो काढियो । बोटी लूण लाय अर सूळो उण झोटिंगरै हाथ दियो ।[12] जितरै झीटोळिया भूत बीजा ही आण बैठा ।[13] सिखरोजी बोलिया—'जु यांनू[14] कहो जु लकड़ियां लावै ।' ताहरां झीटोळिया भूत लकड़िया आंणण लागा ।[15] सिखरोजी सूळैरो बोटी आप ही खावै अर भूतनू ही हेक-हेक[16] दै । इसी भात बाकरो खाधो ।[17] वांसै बाकरारो सिरो रह्यो ।[18] ताहरां एक लकडीरो चाहोलो कर बाकरारै नाक माहैं देअर झोटिंगरै हाथ दियो ।[19] कह्यो—'जु तू दुवि ।' ताहरां झोटिग दुवण लागो ।[20] आप ऊठ अर वागो पहरियो । हथियार बाधा ।[21] ताहरा झोटिंगनू कह्यो—'जु बाकरैरा दात ढाक, मुहड़ै तीव दै ।'[22] तीब लगाई । ताहरा दांत

---

1 पीछे चार जासूस सवारोको जगमालजीने भेजा कि देखें, सिखरा क्या करता है सो तुम देख कर आओ । 2 शेषू (जासूस) खडे-खडे देख रहे हैं । 3–4 तूने इतना शरीर वढा लिया है इससे मैं डरता नही; लेकिन मैं आदमी जितने (लवे) शरीरको पहुच सकता हू । 5 तव भूत मनुष्यके जितने शरीर वाला हो गया । 6 शूले खा । 7 पास । 8 वकरेकी खाल निकाली । 9 वकरेको काटा । 10 से । 11 गीली धोती पर मासको उतार-उतार कर रखा । 12 तरकशमेसे शूल (तीर) निकाल करके और उस पर बोटियोके नमक लगा कर शूले झोटिंगके हाथ दिये । 13 इतनेमे दूसरे छोटे भूत भी वहा आकर वैठ गये । 14 इनको । 15 तव झीटोलिये भूत लकडिया लाने लगे । 16 एक-एक । 17 इस प्रकार वकरेको खाया । 18 पीछे वकरेका सिर रहा । 19–20 तव एक लकडीका चाहोला वना कर वकरेके नाकमे फँसा कर झोटिंगके हाथमे दिया और उसे कहा कि तू इसको इसमे खमोल दे । तव झोटिंग खसोलने लगा । 21 खुदने उठ कर वागा पहिना और हथियार बाँधे । 22 वकरेके दांतोको ढक कर मुह पर तीव लगादे (सी दे) ।

उघडै । ताहरां सिखरो तमकि अर घोड़ै असवार हुवो ।[1] ताहरां झोटिंग हाथी हुय आडो आय फिरियो । सबळा रोड़ा-झोड़ा हुआ[2] । ताहरां सिखरै झटको वाह्यो सु हाथीरी सूंड खिर पडी ।[3] बांठ-बांठ रूंख-रूख चीस हुई ।[4] असवार २ तो, वांसै मेल्हिया हुता त्यां माहिला मर गया ।[5] असवार २ मुरछागत हुवा ।[6]

ताहरां रावळजी असवार ४ प्रभाति वळै मेल्हिया ।[7] आगै आइ देखै तो घोड़ा कायजै कियां फिरै छै अर असवार नही ।[8] जणा २ ससकता लाधा ।[9] उणांनू आणिया ।[10] रावळ मालैजी परमेश्वररो नाम लेअर हाथ फेरियो । दिने दसै-बारैह बोलिया ।[11] ताहरां वात सारी ही जिसी दीठी तिसी कही ।[12]

रावळजी सिखरैजीनू पूछियो–'जु उण झोटिंगसू धको हुवो ?[13] ताहरां सिखरै कह्यो–'मिळियो तो खरो पण धको काई हुवो नही ।'[14]

यु सिखरो बहेलवो गयो रहै ।[15]

इति सिखरैरी वात सम्पूर्ण ।

---

1 तब सिखरा लपक कर घोडे पर सवार हो गया । 2 जबरदस्त लडाई हुई । 3 तब सिखराने तलवारका प्रहार किया सो हाथीकी सूड कट कर गिर पडी । 4 (हाथीकी चिघाड़ इतनी जोरसे हुई कि) जंगलका प्रत्येक वाठका (क्षुप) और वृक्ष चीस उठे (हिल गये ।) 5–6 पीछे जो सवार भेजे थे उनमेसे दो तो मर गये और दो मूर्च्छित हो गये । 7 फिर भेजे । 8 आगे आकर देखते है तो घोडे तो कायजा किये हुए फिर रहे है परन्तु सवारोका पता नही । 9 दो जने सिसकते हुए मिले । 10 उनको घर ले आया । 11 रावल मल्लीनाथजीने परमेश्वरका नाम लेकर उनके ऊपर हाथ फेरा तब कही दस बारह दिनोमें बोले । 12 तब सभी बात जैसी उन्होंने देखी वैसी कह सुनाई । 13 उस झोटिंगसे झपट हुई क्या ? 14 मिला तो सही, परन्तु ऐसी कोई झपट नही हुई । 15 इस प्रकार सिखरा वहलवे गया हुआ रह रहा है ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ वात ऊदै ऊगमणावतरी

ऊदो ऊगमणावत ईंदो[1] महेवै रावळ मलीनाथजीरी चाकरी करै। तद वाघ १ गोयांणारै भाखरां रहै सो देस मांहै विगाड़ करै।[2] ताहरां रावळजी रजपूतांनू हुकम दियो–'चौकी द्यो।' ताहरां रजपूत चौकी दै, गोयाणारै डूगर दोळी[3]।

ताहरां एक दिन ऊदैजीरी चौकीरी वारी आई। ताहरां ऊदैजीनू कहाडियो।[4] ताहरां ऊदैजी कह्यो–'भलां राज !'[5] ताहरां ऊदो गयो। भाखर रोकियो। घेरनै वाघनूं पकड़ियो।[6] आणनै रावळजीनू सापियो।[7] ताहरा रावळजी कह्यो–'सैबास ! ऊदा सैबास !!' ताहरां वाघ रावळजी ऊदैनू बगसियो। ताहरां ऊदै लियो। लेयनै गळटो कर बांधिनै छोडियो। कह्यो–जी, वाघ मांहरो छै। जिको ईयैनूं मारै तो तीयैसू मांहरो वैर छै।[8] ताहरां वाघ फिरै, विगाड करै। कोई वाघ मारै नही। ताहरां वाघ फिरता-फिरता भाद्राजण जाय निकळियो।[9]

ताहरां भाद्राजण सीधळां वाघ मारियो। तठै वैर हुवो। ईंदा नै सीधळां माहोमांह वैर हुवो।[10] सीधळां ईंदां लड़ाई हुई। सीधळ २५ कांम आया। हिवै वैर पड़ियो।[11] भाद्राजण अर चौरासीरो मारग भागो। कोई मारग वहै नही। इसो वैर पडियो।[12]

---

1 ईंदा शाखाका ऊगमडेका वेटा ऊदा। 2 तव वाघ १ गोयणाके पहाडमे रहता है सो देशमे विगाड़ करता है। ('गोयणा' मालानीके मेहवे और राडधरेका एक पहाड है जो भीतरसे खोखला वताया जाता है।) 3 तव राजपूत गोयामणाके पहाडके चारो ओर चौकी देते हैं। 4 कहलवाया। 5 अच्छी वात है श्रीमान्। 6 पहाडको घेरा लगा करके रोक दिया और बाघको पकड लिया। 7 ला करके रावलजीके सुपुर्द कर दिया। 8 लेकरके गलेमे कपडा लपेट और वाघ करके छोड दिया और कहा कि यह वाघ मेरा है जो इसको मारेगा उससे मेरी दुश्मनी है। 9 तव वाघ फिरता-फिरता भाद्राजुन जा निकला। 10 तव भाद्राजुनमे सीधलोने वाघको मार दिया। ईंदो और सीधलोके आपस में शत्रुता हो गई। 11 अव शत्रुता और चेत गई। 12 भाद्राजुन और चौरासी (भाद्राजुनके ८४ गांवोका समूह)का मार्ग वन्द हो गया। कोई मार्ग चलता नही। ऐसी शत्रुता वंध गई।

ईहड़ सोळंकी सींधळांरो चाकर । सु ईहड़रै ऊदोजी परणिया हुंता । सु कोई आवै नहीं । मारग न वहै । यु करतां वरस सात हुवा ।[1]

एक दिनरो समाजोग छै ।[2] बाळसीसर तळाव ऊपर सिखरै ऊगमणावत गोठ कीवी छै ।[3] सारा ईंदा एकठा छै । अमल-पाणियां चाक हुवा छै ।[4] बाकरा मारिया छै । सोहिता हुवै छै । तिसै समईयै एक रजपूत बोलियो–'ऊदाजी ! कदै भाद्राजण ही जासो ?'[5] ताहरां ऊदैजी कह्यो–'आज जासां । जावणरी तो मन न हुती, पण थां कह्यो तो आज ही जावस्यां ।'[6] तद ऊदैरै चढणनूं काछण घोड़ी हुती तीयैनूं रातब अणायो ।[7] जवांरो आटो अर गुळ घोड़ीनूं दियो । ताहरां सिखरैजी उड़दावो देतां घोड़ीनूं दीठो । ताहरां कह्यो–'घोडीनूं उड़दावो क्युं ?'[8] ताहरां कहियो–'जी, ऊदाजी भाद्राजण जावसी ।' ताहरां सिखरैजी कह्यो–'जेथ इवड़ो वैर पड़ियो, गाडां-गाडां मांटी मरै, तेथ क्युं जाईजै ?'[9] ताहरां कह्यो–'जी, बोलिया तो दुगापचारी* आॅण छै ।[10]

आथवणरी विरिया, बीजै साथ तो घरानूं खड़िया, ऊदैजी भाद्राजणनूं खड़िया ।[11] आधी रात आगै, आधी रात पाछै, भाद्राजण जाय पुहुता ।[12] ताहरां उघाड फळसो मांहि हालिया ।[13] आगै सरगरै

1 सोलकी ईहड सीधलोका चाकर और इधर ईहड़के यहां ऊदोजी व्याहे थे । सो कोई आता जाता नही । मार्ग पर किसीका चलना भी बद हो गया । इस प्रकार सात वर्ष हो गये । 2 एक दिनका प्रसग है । 3 वालसीसर तालावके ऊपर सिखरै ऊगमणावत (ऊदाका भाई)ने गोठ की है । 4 अफीम, शराब आदि लेकरके नशेमें चूर हो गये है । 5 ऊदाजी ! कभी भाद्राजुन भी जाओगे ? 6 आज जायेंगे । जानेकी तो मनमें नही थी, परन्तु तुमने कह दिया है तो आज ही जायेंगे । 7 ऊदाके चढनेके लिए कच्छी घोडी थी उसके लिए रातिव मगवाई । 8 तव सिखरोजीने घोडीको अरदावा देते हुए देखा, तव कहा कि घोडीको अरदावा क्यो दिया जा रहा है ? 9 जहा इतनी अधिक शत्रुता वनी हुई, गाडे-गाडे (अनेक गाडोंमें भरे जायें जितने, अर्थात् वहुत अधिक) मनुष्य मरते हैं, वहा क्यो जाना चाहिये ? 10 वोले तो (मना किया तो) आपको दुगापचाकी(?) शपथ है । 11 संध्याके समय दूसरे सभी तो घरोको चले परन्तु ऊदाजी भाद्राजुनको रवाना हुए । 12 मध्य रात्रिको भाद्राजुन जा पहुचे । 13 फलसा खोल करके अदर चले ।

पाठान्तर–*दुगाय चा, दुर्गापंचा ।

जायनै ईहडदे जागविया। कह्यो–'जी! ऊदोजी आया।' ताहरां बारणो खोल माहै लिया। ढोलियो बिछाय दियो। ऊदोजी जाय पोढिया।[1]

घोडी हुती सु कायजै कीवी ऊभी हीज रही। कायजो उखेलियो नही। वीसर गया।[2] ताहरा ऊदोजीरो साळो जागियो। देखै तो घोड़ी छै। ओळखी तो घोडी ऊदोजीरी।[3] ताहरां ऊठनै घोड़ी पकडी दीठो–'जायनै पायगा माहै बाधू।' ताहरा घोड़ी लेअर हालियो।[4] जिसड़ घोडी ताणियां जाय छै, तिसड़ ऊदोजी जागिया।[5] दीठो–'घोडी चोर लिया जाय छे।' जांणियो–'भाद्राजण मांहै चोर घणा छै।' वासांसू ऊदैजी तरवार काढ अर वाही सु बिधड़ हुआ।[6] तितरै ओळगाणी जागी। कह्यो–'जी! कासू कियो? म्हारो भाई मारियो?'[7] ताहरां ऊदैजी कह्यो–'जो हुई सो हुई।' ताहरां सासू जागवी[8]। कह्यो–'जी, थे जायनै पोढो। हुवणहार हुई।' आगै सीधळासूं वैर हुतो, हिवै साळो मारियो, हिवै वैर वधियो।[9] ताहरां ऊदैजी तो पाछली रातरा चढ परताळिया सो घरे गया।[10]

ताहरां मेळो सेपटो भाद्राजणरै काठै रहै।[11] सु मेळैरी नायण एक दिन ईहड सोळकीरै घरे गई हुती। सु उठै ऊदैरी वैर सोळकणी दीठी।[12] नायण सिनांन करायो। ताहरा नायण जायनै मेळैनू वात कही–'जु ईहडरी बेटी पदमणी छै। मेळाजी! आप लायक छै। इसी नारी फूटरी कठै ही नही दीठी।'[13] ताहरां मेळै भाद्राजणमे आयनै

---

1 सरगरेने आगे जा कर ईहड़देको जगाया और कहा कि ऊदाजी आये है। तव द्वार खोल करके ऊदाजीको अदर लिया और पलग विछा दिया। ऊदोजी जाकर सो गये। 2 घोडी कायजा की हुई ही खडी रही। कायजा खोलना भूल गये। 3 पहिचान की तो घोडी ऊदोजीकी मालूम हुई। 4 तव घोडी लेकर चला। 5 ज्यो ही घोडी खेंचे हुए जा रहा है त्यो ही ऊदोजी जग गये। 6 पीछे जाकर ऊदाजीने तलवार निकाल कर प्रहार किया सो धडके दो टुकडे हो गए। 7 इतनेमे वियोगिनी जगी तो कहा कि यह क्या किया? मेरे भाईको मार दिया? 8 जग गई, (जगाई गई)। 9 आगे सीधलोंसे शत्रुता थी ही, अव मालेको मार दिया, अव तो वैर और वढ गया। 10 तव ऊदोजीने तो पिछली रातको (घोडी पर) चढ कर फटकारा सो घरको चले गये। 11 भाद्राजुनके पास मेला सेपटा रहता है। 12 सो वहा ऊदेकी स्त्री सोलकिनीको उसने देखा। 13 ऐसी सुन्दर स्त्री कही नही देखी।

सोळकियांनू कह्यो–'थांहरो वैर ऊदै कना लू, थांहरी बहन मोनूं द्यो तो।'[1] ताहरां ग्रा वात सोळकणी सुणी, ताहरां सोळकणी कहाडियो–'मेळा ! म्हारो भरतार, जेठ इसड़ा नही सु तियारी बैर तूं ले जावै ग्रर उवानूं पाल ग्रर ग्रावै।'[2]

ताहरां सोळकणी सासरै बांभण मेल्है कहाड़ियो–'ग्रो मेळो सेपटो ईयै विध ग्रावै छै। थे जेठजी ! ईयैरा भली विध हीडा करजो।'[3] ताहरा बांभण जाय वालसीसर ग्रै समचार कह्या, ताहरां उवा ही रै सांजत हुवै छै।[4]

एक दिनरो समाजोग छै। सेपटो मेळो खानाजाद काछी चढिनै खडिया।[5] एकल ग्रसवार चढ खडिया। वालसीसररै तळाव जायनै उतरियो। ग्रागै एवाळिया ग्रायनै ऊभा छै।[6] तिकां एवाळियां हिमायचा भांगरा(?) नाखिया छै। तीर-धणियां मूकिया छै।[7] ताहरा मेळै पूछियो–'कठारा एवड ?[8] 'ग्रै म्होटा बाकरा ?[9] ग्रठै कोई रजपूत वसै छै किना नही ?'[10] एवाळिया कह्यो–'ऊगमड़ैरै बारह विरद।[11] काय खेडा बाकरा मरै छै, काय प्राहुणो ग्रावै ताहरा मरै छै। बीजूं नहीं मरै छै। विकै नही छै।'[12] ताहरा मेळै कह्यो–'ठाकुर ! बाकरो एक मोनू द्यो तो म्हे ही ग्राज थांसूं वातां करा, बैसा।'[13] ताहरां एवाळां[14] कह्यो–'लीजै राज !'

---

1 तुमारी बहिन मुझको दो तो तुमारा वैर मैं ऊदेसे लू। 2 तब सोलकिनीने कहलवाया कि मेला ! मेरा पति और जेठ ऐसे नही हैं सो तू उनकी स्त्रीको ले जाये और उनके तेरे पीछे चढने पर तू उनको रोककर (मारकर) सकुशल चला जाये। 3 तब सोलकिनीने ब्राह्मणको ससुराल भेज कर कहलवाया कि मेला सेपटा इस इरादेसे आ रहा है सो जेठजी ! आप इसकी खातिर भली प्रकार करे। 4 ब्राह्मणने वालसीसर जाकर जब यह समाचार कहे तब उधर भी तैयारी होने लग रही है। 5 मेला सेपटा खानाजाद कच्छी घोडी पर चढ कर चला। 6 आगे गडरिये भी आकर खडे है। 7 तीर कमान (जमीन पर) रखे हैं। 8 रेवड कहा के ? 9 ये इतने बडे बकरे ? 10 यहा कोई राजपूत भी वसता है किम्वा नही ? 11 ऊगमडेको बारह विरुद है। 12 या तो बाहर पर (चढाई करने पर) बकरे मारे जाते हैं या कोई पाहुना आये तो मारे जाते हैं, नही तो नही मारे जाते है और बेचे भी नही जाते है। 13 एक बकरा मुझको भी दो तो हम भी तुमसे यहा बैठ कर आज बातें करे। (तुमारे साथ बैठ कर उसे बनाएँ और खाएँ।) 14 गडरियेने।

मेळै कह्यो–'यूं ही नही ल्यूं। जो थे मोल ल्यो तो ल्यूं।'[1] ताहरां एवाळां कह्यो–'दीजै राज !' ताहरां मेळै सेपटै नव फदिया पड़दी मांहेसूं काढिनै दिया।[2] ताहरां उवां कह्यो–'बाकरो लीजै राज !' ताहरां वडो जूह बाकरो जोयनै लियो।[3] लेयनै मारियो। ताहरां हाड काढि-काढि जुदा किया।[4] सुणियो हुतो सिखरैरे कूतरा दोय छै सु चोर ढूकण नही पावतो।[5] तै वासतै हाडांसूं लेयनै कूरबांण भरियो।[6] ऊपर कसो बाधो।[7]

पछै बाजरी घातनै बाजरियो कियो।[8] ताहरां खीलोहरियां कह्यो–'राज ! जीमण तयार छै। आप हालो। जीमण विराजो।' ताहरा आपही जीमिया, खीलहरी पण जीमिया।[9]

पछै ऊठ हथियार बांध, घोड़ैरा तंग खांच, खीलहरियांसूं विदा कीवी।[10] मेळै कह्यो–'मांहरै तो वीकूपुर जावणो छै।[11] ताहरा खीलहरियां कह्यो–'राज ! बोहुड़ता आवो तो ईयै तळाव आवजो।[12]

पछै मेळै उठासूं खड़िया सु गांम आय लागो।[13] ताहरां कुत्ता सांम्हां दोड़िया। ताहरां कुत्तांनूं हाड नांखिया।[14] कुत्ता तो हाडै विलूबिया।[15] आप आघो[16] गांम मांहै चालियो। भाथै अफीमरो पोतो हुतो सु खिर पड़ियो।[17] पछै कूतरांनूं मारनै गांम मांहै

---

1 यदि तुम मूल्य लो तो लू, योही (मुफ्तमे) नही लू। 2 तब मेले सेपटेने पर्दीमेसे नौ फदिये निकाल करके दिये। (फदिया = रुपयेके आठवें भागका (दुअन्नी बराबर) एक छोटा सिक्का।) 3 तव एक वहुत पुष्ट वकरा देख कर लिया। 4 तव हड्डियोको निकाल निकाल कर अलग किया। 5 सुन रखा था कि सिखरेके दो कुत्ते ऐसे हैं जिनके कारण कोई चोर लग नही सकता। 6 इसलिए हड्डियोको लेकर कूरवान भर दिया। (कूरवाण = एक पात्र।) 7 ऊपर (वस्त्रसे ढक कर) कसना बाँध दिया। 8 फिर (मासमे) वाजरी डाल करके वाजरिया वनाया। 9 तव गडरियोने कहा कि राजन् ! भोजन तैयार है। आईये ! जीमनेको वैठिये। तव खुद ही जीमे और गडरिये भी जीमे। 10 पीछे उठ कर शस्त्र वाधे, घोडेके तग खींचे और गडरियोसे विदा ली। 11 हमारे तो वीकूपुर जाना है। 12 तव खिलहरियोंने कहा–राजन् ! लौटते आओ तव इस तालाब पर फिर आईये। 13 फिर मेला वहाँसे रवाना हुआ सो गाँवके पास आ गया। 14 तव कुत्ते सामने दौडे तो उनको हड्डियें डाल दी। 15 कुत्ते तो हड्डियोको चाटने लग गये। 16 आगे। 17 भाथेमे अफीमका पोतो था सो गिर गया।

धसियो।[1] आगै जायनै देखै तो ऊदाजी पोढिया छै। ताहरां मेळै जायनै हथियारांरी वाधरचां वाढी। सेजबध वाढिया। अस्त्रीरी चोटी वाढी। तरगसांरा पंखारा वाढिया। वाढनै मेळो पाछो वळियो।[2]

इतरै रजपूतांणी जागी। जागी अर कह्यो–चोरासिया ठाकुर! सेपटो ठाकुर आयो हुतो। माथै हाथ लावै तो चोटी नही। इतरै सिखरो जागियो।[3] ऊठनै बरछी हाथ लेयनै घोड़ै आयो। अपलांणै घोड़ै चढियो, हाथ एकै बरछी लियां।[4] सिखरैरो घोडो नै ऊदैरी घोड़ी, बेऊ एकी छान में बंधै।[5] सु घोडीरी वा बछेरी मास ११री सु घोड़ै ही आगै चरै नै घोडी ही आगै चरै।[6] सिखरो चढि अर नीसरियो, ताहरां वा बछेरी घोड़ैरै लारै हुई।[7] हिवै सिखरो बाहिर आयो। देखै तो घोड़ैरा खुर, मेह वूठो हुतो सु दीखण लागा[8] आगै देखै तो कूतरा वढिया पड़िया छै।[9] कूतरारै कनारै धवळो सो क्युं पड़ियो छै।[10] जोयो, देखै तो अमलरो पोतो छै।[11] ताहरां सिखरैजी उठाय लियो, घात घोड़ैरै .... पगै लगाय फिटा किया।[12]

पछै मेळो कोढणैरै तळाव गयो।[13] प्रभात हुवो। ताहरां मेळै पोतो सभाळियो। देखै तो पोतो नही। ताहरा उतर घोड़ैसू, बिछा-

---

1 पीछे कुत्तोको मार करके गावमे घुसा। 2 आगे जाकर देखा तो ऊदाजी सोये हुए है। तब मेलेने जाकरके शस्त्रोकी डोरियें काट दी, सेजवध काट दिये, स्त्रीकी चोटी काट ली और तरकशोके पख काट लिये। ये सब काट करके मेला वापिस लौटा। 3 इतनेमे सिखरा जगा। 4 उठ करके बर्छीको हाथमे लेकरके घोडोंके पास आया। हाथमे एक बर्छी लेकर विना जीन कसे हुए घोडे पर चढ गया। 5 सिखरेका घोडा और ऊदेकी घोडी दोनो ही एक छप्परमे बँधते है। 6 सो घोडीकी ११ महीनोकी बछेरी घोडे और घोडी दोनो के साथ चरती है। 7 तब वह बछेरी घोडेके पीछे हो गई। 8 अब जब सिखरा बाहर आया तो देखता है कि वर्षा हुई थी जिसमें घोडेके खुर मँडे हुए दिखाई देने लगे। 9 आगे देखता है तो कुत्ते कटे हुए पडे हैं। 10 कुत्तोके पास सफेद-सा कुछ और पडा है। 11 देखा तो अफीमका पोता है। 12 सिखरोजीने उसे उठा लिया और घोडेके (हानेमे डाल और घोड़ेको एडी मार ?) चल दिया। 13 फिर मेला कोढणे गांवके तालाब पर गया।

वणा कर सूतो ।[1] सिखरो वांसै लागो थको ही आयो ।[2] आय अर जोयो ।[3] देखै तो, कोई सूतो छै । जोयो, भाई ! असवार तो ऊ हीज ।[4] पण सूतो क्यु ?'[5] ताहरां सिखरो घोड़सू उतरियो । उतरनै नैडौ आयो ।[6] आयनै कपडो ताणियो ।[7] ताहरां मेळो जागियो । कहियो–'ठाकुरारो नाम ?' कह्यो–'मेळो सेपटो ।' ताहरां सिखरो बोलियो–'मेळाजो ! चवरासी छेडी छै, ठांम-ठाम ढोल हुआ छै, ऊदै सारीखा रजपूत छेड़िया छै, अर थे पोढिया छो ? कासू जाणो छो ?'[8] ताहरा मेळो बोलियो–'ठाकुरांरो नांम ?' कह्यो–'जी, म्हारो नांम सिखरो ।' ताहरां मेळै कह्यो–'सिखराजी ! हू तो बायड़ियो छूं ।'[9] ताहरां कह्यो–'ऊठो ठाकुरां ! अमल करो ।'[10] ताहरां कह्यो–'जी, अमल तो हू म्हारै पोतैरो खाऊ छूं, सु म्हारो पोतो खिरियो ।'[11] ताहरां सिखरै पोतो काढि अर हाजर कियो । कह्यो–'जी, ओ ठाकुरारो पोतो छै, आरोगो ।'[12] ताहरां सिखरैजी मेळैरै घोड़ै छागळ हुती, तिका आणनै मेळैनू अमल करायो ।[13] ताहरा सिखरै कह्यो–'मेळाजी! आप पोढो, ज्यु हू ठाकुरांनू दाबू ।'[14] ताहरां मेळोजी पोढिया । सिखरोजी दुड़बड़ियां देण लागा, ज्युं मेळोजीनू अमल आयो, घोरांणो ।[15] ताहरां सिखरै मेळैजीनू जगाया । कह्यो–'जी, ठाकुरां ! उठो ।' ताहरा मेळोजी जागिया । सिखरैजी आंख्यां छटाई, हथियार

---

1 तब घोडेसे उतर कर और बिछौना बिछा कर सो गया । 2 सिखरा भी पीछे लगा हुआ आ पहुचा । 3 आ करके देखा । 4-5 सवार तो वही है, परतु सोया क्यो है ? 6 उतर करके निकट आया । 7 आ करके कपडा खीचा । 8 मेलाजी ! चौरासी प्रदेशको छेडा है, जगह-जगह (वाहरके) ढोल वज रहे है, ऊदा जैसे राजपूतको छेडा है और तुम यहा आ कर सोये हुए हो ? क्या जान रखा है तुमने । 9 सिखराजी ! मैं तो अफीमका व्यसनी हू । 10 अफीम लेओ । 11 अफीम तो मैं अपने ही पोतेका खाता हू और मेरा पोता कही गिर गया । 12 तव सिखरेने पोता निकाल कर हाजिर किया और कहा कि यह आपका पोता रहा, अफीम ले लीजिये (खाइये ।) 13 मेलेके घोड़े पर छागल टंगी हुई थी जिसको लाकर सिखरेजीने मेलेको अमल-पानी कराया (अफीम खिलवाया) । (छागल=वकरीके वच्चेकी खालकी वनी हुई छोटी मशक) । 14 मेलाजी ! आप सो जाइये, सो मैं आपको चपी कर दू । 15 तव मेलाजी सो गये, सिखरोजी मुक्की देने (चपी करने) लगे, जैसे ही मेलोजीको अफीमका नशा आ गया और नीदमें घुराने लगा ।

बंधाया।[1] कह्यो–'ऊठो मेळोजी ! किसी भांत जुध करस्यां ?'[2] ताहरां मेळोजी बोलिया–'घोड़ै असवार हुयनै जुध करस्यां।' ताहरां सिखरोजी बोलिया–'मांहरै घोडो अपलांणो छै।[3] पण थे कह्यो तो भलां, असवार हुवो।'[4] ताहरां मेळोजी घोड़ै असवार हुवा। घोड़ो तातो कर ताजणो लगायो नै मेळैजी तो आघा खड़िया।[5] सिखरोजी देखता ही रह्या। 'ऊ जाहि ! ऊ जाहि !'[6] ताहरां मेळैरै वांसै सिखरै खड़िया।[7] लारै घोड़ो लगाय फिटो कियो। घोड़ो सिखरैरो पहुचै नही, मेळैरै घोड़ैनू।[8] सिखरैरै घोड़ै लार वछेरी आई हुती, तिका वछेरी दोड़ती-दोडती मेळैरै घोड़ैसू आगै हुयनै वळे वछेरी पूठी आई।[9] आय अर वळै वछेरी आघी जावै, अर वळे अपूठी आवै।[10] वार दोय वछेरी ईयै जिनस आई।[11] ताहरां सिखरै दीठो–घोड़ो पहुंचै नही। ताहरां सिखरै वछेरी पाकड़ी, घोड़ै कनारै आई।[12] ताहरां लटी पकड़, सिखरो वछेरी असवार हुओ।[13] ताहरा वछेरी दोड़ी। जायनै मेळैरै घोड़ै आगै नीसरी।[14] ताहरां वछेरी अपूठो फिरी। ताहरा सिखरै साम्हां आय बरछो वाहो, सो मेळैरै बरछी दुसार हुई।[15] मेळो घोड़ैसू खिर पड़ियो।[16] सिखरोजी उतरिया। तितरै वासैसूं वाहर पण आई।[17] सिखरोजी ऊदैजीनू वात कही। ताहरां ऊदैजो कह्यो–'मेळैनू दाग द्यो।'[18] ताहरां मेळैनू दाग दियो।

---

1 सिखराजीने आँखें छुँटवाई और शस्त्र बँधवाये। 2 मेलाजी ! उठो। किस प्रकार युद्ध करेंगे ? 3 मेरा घोड़ा बिना जीनका है। 4 परतु तुमने कह दिया है तो अच्छी बात है, सवार हो जाओ। 5 घोडेको ताता करके चाबुक मारा और मेलोजीने तो दूर ही चला दिया। 6 वह जाय ! वह जाय ! सिखरोजी तो देखते ही रह गये। 7 तब सिखराने भी मेलेके पीछे चलाया। 8 घोडा पीछे दे कर खूब जोर मारा, परन्तु सिखरेका घोडा मेलेके घोडेको नहीं पहुच पाता। 9 सिखरेके घोडेके पीछे जो वछेरी आई थी, वह वछेरी दौडती-दौड़ती मेलेके घोडेसे आगे जाकर फिर वछेरी वापिस लौट आई। 10 आकर के फिर वछेरी (मेलेके घोडेसे) आगे निकल जाये और फिर लौट कर आ जाये। 11 इस प्रकार वछेरी दो वार आई और गई। 12 जब वछेरी घोडेके पास आई तो सिखरेने उसे पकड लिया। 13 तब (वछेरीकी) लटिया पकड करके सिखरा वछेरी पर सवार हो गया। 14 जाकरके मेलेके घोडेसे आगे निकल गई। 15 तब सिखरेने सामने आकर वर्छीका प्रहार किया सो मेलेके वर्छी आर-पार हो गई। 16 मेला घोडेसे गिर पड़ा। 17 इतनेमे पीछेसे वाहर भी आ गई। 18 मेलेका अग्नि संस्कार कर दो।

ताहरां सिखरैंजी कह्यो–'हालो ।' ताहरां ऊदो बोलियो–'मेळै सारीखा रजपूतरा समचार रड़वड़ता जावै, ताहरां कासू कोई जाणसी ?[1] हूं जायनै मेळैरी पाघ देय आवीस ।'[2]

ताहरां ऊदो पाघ लेयनै चालियो। जाय, मेळैरै गांम पुहंतो ।[3] आगै मेळैरो बेटो कोटडी मांहै बैठो छै। घूघरियां पलै घातियां छै ।[4] आपरा रजपूत सारा बैठा छै।[5] ताहरां ऊदो जायनै कोटड़ीरै बारणै ऊभो छै ।[6] ताहरां ऊदो बोलियो–'कुण ठाकुररी कोटड़ी छै ?'[7] ताहरां रजपूत बोलिया–'मेळाजी सेपटारी कोटड़ी छै ।' ताहरां ऊदो बोलियो । कह्यो–'ठाकुरां ! आ मेळाजीरी पाघ छै, मेळोजी काम आया ।[8] सिखरैंजीरै हाथरा घावां ठाकुर कांम आयो छै ।[9] साकारिया छै म्हां ।[10] आ पाघ छै ।' ताहरां मेळैरो बेटो बोलियो– 'राज ! वैर म्हां थासू कोई छै नही, वैर सारीखो हुवो छै।[11] मेळो अन्याई हुओ हुतो, मेळै आपरो कियो पायो ।[12] राज पधारो, मांहरै वैर कोई छै नही ।'[13]

ताहरां ऊदै कह्यो–'अै कुण-कुण ठाकुर छै ?'[14] कह्यो–'जी, ओ[15] मेळोजीरो बेटो छै। अै[16] दूसरा भाई छै। बीजा[17] रजपूत छै।' ताहरां ऊदोजी बोलिया–'सिखरैंजीरी बेटी मेळैजीरै बेटैनूं

---

1 मेले जैसे राजपूतका मृत्यु-सदेश इधर-उधर भटकता हुआ (उसके घर पर) पहुचे, तव कोई क्या जानेगा ? 2 मैं जाकरके मेलेकी पघड़ी दे आऊगा। 3 जाकरके मेलेके गांव पहुचा। 4 पल्लेमे घूघरिया डाले हुए हैं। (घूघरिया=उवाले हुए गेहूं और चनो-का एक नाश्ता।) 5 अपने (उसके) सभी राजपूत (भी पासमे) वैठे है। 6 तव ऊदा जाकरके कोटड़ीके द्वार पर खडा है। 7 किस ठाकुरकी यह कोटडी है ? 8 यह मेलाजीकी पाघ है, मेलाजी काम आ गये हैं। 9 सिखरेजीके हाथोके घावोसे ठाकुर काम आया है। 10 हमने अग्नि-सस्कार कर दिया है। 11 श्रीमान् ! तुमारे हमारे अव कोई वैर नहीं है। वैर वरावर हो गया है। 12 मेला अन्यायी हो गया था सो उसने अपने कियेका फल पा लिया। 13 आप पधारे, हमारा आपसे कोई वैर नही है। 14 ये (यहां वैठे हुए) कौन-कौन ठाकुर हैं। 15 यह। 16 ये। 17 दूसरे। 18 सिखरेजीकी वेटी मेलेजीके वेटेको दी (संवध किया।)

दीनो ।[1] देव ऊठियां पछै बांभण मूकां छा ।[2] वेगा पधारजो ज्यु परणावा ।'[3]

वैर वाढ अर ऊदोजी आपरै घरे आया छै ।[4] सखरा दिन हुवा ताहरां बाभण मेल्हनै मेळैजीरै बेटेनू तेड़नै परणायो छै ।[5] वैर भागो छै ।[6]

इति ऊदैजीरी वात सपूर्ण ।

1 सिखरेजीकी वेटी मेलेजीके वेटेको दी (वाग्दान-सबंध कर दिया) (पृ० २६४की टिप्पणी संख्या १८, अंतिम पंक्ति डिलीट समझें) 2 देव उठ जानेके वाद (कार्तिक शु० ११के देवोत्थान पर्वके वाद) ब्राह्मणको भेजते हैं। 3 जल्दी पधारना सो व्याह देंगे। 4 वैर मिटा कर ऊदोजी अपने घर आये हैं। 5 (वर्षा ऋतु मिट कर) अच्छे दिन हो गये तब ब्राह्मणको भेज मेलेजीके बेटेको बुला कर विवाह कर दिया। 6 शत्रुता मिट गई है।

॥ श्री गणशाय नम. ॥

अथ बूंदीरी वारता

बदी राव सुरजन राज करै* । राव सुरजनरै दोय बेटा । एकैरो नाव दूदो, जैसै भैरवदासोत चांपावतरो दोहीतरो । दूसरो भोज, तिको रावळ सहसमलरो दोहीतरो डूगरपुररै धणीरो ।[1a]

यु करता, दोनू भायां आपसमे दूदै अर भोज वडो वेध पड़ियो ।[2] ताहरा राव सुरजन वेटा बेऊं तेडिनै कह्यो—'थे मो ऊपर फिरिया । थे म्हारो कह्यो न मांनो । म्हैं राजसू कोई कांम नही । थे धरती वेंहच ल्यो[3] ।' ताहरां बूंदी तो ३६० गांमांसू दूदैनूं दीनी[4] । अर खडखटरो परगनो गाम ३६०सूं भोजनू दीधो[5] ।

---

*राव सुर्जन हाडा वि स १६११मे बूंदीकी गद्दी पर बैठा था । यह राजनीति-चतुर होते हुए भी उदार और धार्मिक-प्रकृतिका शासक था । इनके समयसे बूंदीका सबध मेवाड़से छूट कर मुगलोसे हो गया था । पर मुगलोकी अधीनता स्वीकार करते समयकी सधिमे बादशाह अकबरसे रावने यह शर्त तै करवा ली थी कि मेवाड़के ऊपर शाही आक्रमणके समय बूंदीकी सेना कोई साथ नही देगी । राव सुर्जनने द्वारकामे श्रीरणछोडरायका मदिर नया बनवाया था जो अभी तक स्थित है । काशीमे भी इन्होने कई घाट और महल बनवाये थे । काशीमे इनके निवासके समय गौड (बगाल) देशके एक कवि चन्द्रशेखरने चौहान वश और राव सुर्जनकी प्रशसामे 'सुर्जन चरित' नामक एक सस्कृत काव्यकी रचना की थी । इनकी मृत्यु वि स १६४२मे काशीमे ही हुई थी जहा इनका और इनके साथ सती होने वाली रानियोके स्मारक बने हुए हैं ।

[1a]स्व श्रीजगदीशसिह गहलोतने अपने 'राजपूतानेका इतिहास' द्वितीय भागमे बूंदी राज्यके राव भोजके वर्णनमे 'बांकीदासकी बात ११२६ के आधार पर (टिप्पणीमे उसका सकेत करते हुए) भोजको बासवाडाके रावल जगमाल उदयसिहोतका दोहिता लिखा है ।

---

1 एकका नाम दूदा जो चापावत जैसे भैरवदासोतका दोहिता और दूसरा भोज जो डूंगरपुरके स्वामी रावल सहसमलका दोहिता । 2 इस प्रकार चलते दूदा और भोज दोनो भाइयोमे परस्पर बड़ी अनबन हो गई (परस्पर बडा विरोध हुआ) । 3 तब राव सुरजनने दोनो बेटोको बुला कर कहा कि तुम मेरे ऊपर फिर गये, मेरी आज्ञाका पालन नही करते । मेरा इस राज्यसे अब कोई वास्ता नही । तुम धरतीका बट कर लो । 4 दूदेको दी । 5 भोजको दिया ।

ताहरां हमीर दहियो तिको भोजनूं कहै—'तोनू मारियो। दूदा आगै टिक सगै नही। दूदो तो काळ। दूदो तोनू गिणिया दिनामे मारसी।'[1] ताहरां भोज कहियो–'तो हमीरजी! हूं कासू करू?'[2] ताहरां हमीर कहियो—'तू अकबर पातसाह आगै जाह।' ताहरां भोज कहियो–'रूडां, थे कहियो सु हू जाईस। पण मोनू खरच जुडै नही।'[3] ताहरां हमीर कह्यो–'हूं लाख रुपिया देईस थांनू।'[4] ताहरा हमीर दहियै लाखेरीरा वोहरा कना लाख रुपिया पटू होयनै देराया।[5]

पछै भोज अकबर पातसाह कनै[6] गयो। सीकरी-फतैहपुर अकबर पातसाह हुतो, तेथ भोज गयो।[7] ताहरां वांसैसू[8] दूदैनू खबर हुई–'जु भोज पातसाह कनै गयो।' ताहरा दूदो डकरियो[9]–'भोजनू मारूं। पातसाहरै दरबार विचै मारू।' ताहरा वांसैसू दूदो ही सीकरी-फतैहपुर गयो। जायनै हेरो करायो।[10] ताहरां हेरै[11] कह्यो–'म्हां हेरियो छै।[12] वागो घोडो हेरियो छै।[13] इसडो वागो ईयै रंग घोड़ो भोजनू चढणनू छै।'[14] कह्यो–'रे! चोकस करै।'[15] कह्यो–'जी, म्है चोकस कियो छै।'[16]

ताहरां भोज दरबारनू वागो पहर तयार हुवो। घोड़ो आंण हाजर कियो।[17] जाहरां भोज घोड़ै असवार हुवण लागो, ताहरां घोड़ो धूजियो।[18] ताहरां जोगो गौड़ बोलियो–'दीवांण ईयै घोड़ै असवार न

---

1 तेरेको मार दिया। दूदाके आगे तू नही टिक सकता। दूदा तो तेरा काल है। दूदा तुझको गिने दिनोंमें मार देगा। 2 हमीरजी! तो मैं क्या करू? 3 तब भोजने कहा—'अच्छी वात है। तुमने कहा तो मैं जाऊगा, परन्तु मेरेको खर्च नही जुडता (खर्च करनेको मेरे पास पैसे नही हैं)। 4 मैं तुमको लाख रुपये दूगा। 5 तब हमीर दहियेने जामिन होकरके लाखेरीके वोहराके पाससे लाख रुपये दिलवाये। 6 पास। 7 अकवर वादशाह फतहपुर-सीकरीमे था वहा भोज गया। 8 पीछे से। 9 (१) भयभीत हुआ। (२) क्रोधित हुआ। (३) गुर्राया। 10 जाकरके गुप्त रूप से खवर कराई। 11 गुप्तचर। 12 हमने जांच कर ली है। 13 वागा और घोड़े का पता लगा लिया है। 14 ऐसा वागा और इस रगका घोडा भोजके चढनेको है। 15 अरे! चौकस पता लगाना। 16 मैंने चौकस (ठीक) पता लगा लिया है। 17 घोडा लाकर हाजिर किया। 18 तव घोडेको कँपनी हुई। (सवारी करते समय घोडेका कापना अपशकुन समझा जाता है और प्रस्थान रोक लिया जाता है)।

हुईजै ।' ताहरा भोज ऊ घोड़ो, ऊ वागो खवासनू वगसिया ।[1] आप बीजो[2] वागो पहरियो । बीजै[3] घोडै असवार हुवा । उवै घोड़ै खवास चढियो ।[4] पातसाहरै मुजरै गयो ।

अठै दूदो पण असवार हुवो । भोज पातसाहसू मुजरो कर पूठो बाहुडियो ।[5] दूदै दरबार मांहै नीसरतां उवै वागै खवास हुतो, सु खवासनू कटारी वाही ।[6] ताहरा खवास करकियो ।[7] ताहरा दूदै अपूठो घोडो वाळ अर कह्यो–'रे ! हेरो खोटो कियो ।'[8] कह्यो–'जी, म्है हेरो खरो कियो हुतो ।'[9] ताहरा कह्यो–'रे ! भोज राव सुरजनरो बेटो, कटारी लागां करकै क्यु ?[10] म्हारो भाई कटारी लागा क्यु करकै ?' ताहरा खबर कराई । ताहरा कह्यो–जी, ऊ वागो, घोड़ो खवासनू दिया ।' ताहरा दूदो अपूठो बूंदी आयो । आयनै कह्यो–'भोजनू पातसाह आगळ कुण मेल्हियो ?'[11] ताहरा कह्यो–'जी, हमीर दहियै मेल्हियो ।' ताहरा दूदो तीन हजार पाखरियासू हमीररै गाव किरवाड जाय उतरियो ।[12] उतरनै हमीरनू कह्यो–'भोजनू लाख रुपिया दीना, मोनू ही लाख रुपिया दै, काय मारिस ।[13] म्हारै वापरो रजपूत छै । छाडू नही, नही तो मारू । तै भोजनू क्यू मूकियो, पातसाह आगै ?'[14] ताहरा हमीर विचारियो–'कासू कीजै ?'[15] ताहरां हमीर छोटै भाई दौलतखाननू तेड़ियो[16] । तेड़नै[17] पूछियो– भाई ! कासू विचार कीजै ? मुसकिल घणी ही आई छै ।[18] जे रुपिया द्या तो जाट-गूजर कहावां । हाडोतीमे भूडा दीसा । न द्या तो मारीजा ।'[19]

---

1 तव भोजने उस घोडे और उस वागेको खवासको वख्शिश कर दिया । 2 दूसरा । 3 दूसरे । 4 उस घोडे पर खवास चढा । 5 भोज वादशाहको मुजरा करके पीछा लौटा । 6 दूदेने दरवारसे निकलते हुए उस वागेको पहने हुए खवास था इसलिये, खवासको कटारी मार दी । 7 तब खवास चिल्लाया । 8 तव दूदेने घोडा अपूठा (उल्टा) लौटा कर कहा कि अरे ! जाच गलत की । 9 मैंने जाच पक्की की थी । 10 राव सुरजनका वेटा होकरके कटारी लगनेसे क्यो करके ? 11 भोजको वादशाहके आगे किसने भेजा ? 12 तब दूदा तीन हजार परवरैत सवारोंके साथ हमीरके गाव किरवाडमे जाकर उतरा । 13 मुझको भी लाख रुपये दे नही तो मारूगा । 14 तूने भोजको वादशाहके आगे क्यो भेजा ? 15 क्या किया जाय ? 16 वुलवाया । 17 वुला करके । 18 वहुत ही मुश्किल आ बनी है । 19 यदि रुपये दें तो जाट-गूजर कहलाएँ, हाडोतीमे वुरे दीखें और नही देते हैं तो मारे जाते है ।

ताहरां दौलतखांन कहै–'हमीरजी ! थे यू करो। दूदैरै कटकमे पचीस अमराव छै आंपांनू मारणवाळा।[1] तिके थे मारो तो दूदो अपूठो जावै।'[2] ताहरां हमीर कह्यो–'रे दोला! सारो हाडोतीरा रजपूत मारणा? सारो सगा-सैण क्यूकर मारीजै?'[3] ताहरां दोलो कहै–'वडा ठाकुर समझ!' ताहरां हमीर कह्यो–'भलां भाई।'[4] ताहरा हमीर दूदैनू परधांन मेल्हिया।[5] कह्यो–जी, लाख रुपिया थांनू ही दईस।[6] भोजनू पटू हुयनै दरवाया छै, थांनू घररा दईस।[7] पण यू करो[8], पचास हजार तो रोकडा दईस नै पचास हजारमे घोड़ा हाथी देईस।' ताहरां दूदै कहियो–'वाह, वाह, भला।'[9] ताहरां परधांनां वात थपाडी।[10] ताहरां दूदै कहियो–'जावो, हमीरनू ल्यावो।' ताहरां हमीररा परधांनां कह्यो–'रावळै अमराव पचीस छै, तियारी मोनू बाह हुवै।[11] आज पछै दूदोजी जे वळै हमीरनू क्यु ही करै तो ईयारी बांह छै।[12] ताहरां दूदै अमरावां साग ही नू तेडिनै[13] कह्यो–'जावो, हमीरनू बांह द्यो अर हाथी घोड़ा ल्यावो।' ताहरा अमराव पचीसां चढ अर आया। हमीर आदमी ४०० जीनसालिया कर तयार एकै ठाम राखिया छै।[14] उवांनू पण भेद न दीनो।[15] कहियो–जी, लाख-लाख रुपियारो भरणो छै। कि-जाणां कासू नीवडै? थे चोकस ऊभा रहिज्यो।[16] जे कोई वात विगड़ै तो थे आय अणी भेळिया।'[17]

आपसमे भाईया ओ आलोच कियो हुंतो कै म्रग घोड़ै ऊपर उपाव करस्यां।[18]

---

1 दूदेके कटकमे अपनेको मारने वाले पच्चीस उमराव हैं। 2 उनको तुम मार दो तो दूदा वापिस लौट जाये। 3 अरे दौला! समस्त हाडोतीके राजपूतोको मारना? सभी सवर्घ। और सज्जनोको कैसे मारा जाय? 4 अच्छी बात है भाई। 5 भेजे। 6 लाख रुपये तुमको भी दूगा। 7 भोज को जामिन होकरके दिलवाये हैं, तुमको घरसे दूगा 8 परन्तु ऐसा करो। 9 वाह-वाह अच्छी बात। 10 तव प्रधानोने यह बात नक्की की। 11/12 आपके जो पच्चीस उमराव है, उनकी साक्षी मेरेको हो जाये। आज पीछे दूदोजी हमीरके विरुद्ध फिर कुछ करे तो इनकी साक्षी है। (बाँह=(१) शपथ। (२) वचन। (३) साक्षी। (४) मत। (५) विश्वास, भरोसा) 13 बुला करके। 14 हमीरने ४०० कवचधारी आदमी एक जगह (गुप्त स्थान) पर तैयार करके रखे हैं। 15 उनको भी भेद नही दिया। 16 क्या जानें क्या हो जाय, तुम सावधान रहना। 17 जो कोई बात विगड जाय तो तुम आकर युद्ध कर लेना। 18 भाइयोने परस्पर यह परामर्श (निश्चय) किया था कि मृग-घोड़ेके (मूल्यके) लिये लडाई करेंगे।

ताहरां वनो गौड और धनो गौड दूदैरे प्रधान छै, तिके आया छै। घोडा हाथियारी कीमत मडै छै।[1] कागळ[2] हाथ मांहै छै। घोडो जिको ४०० सौरो छै, तिकैरा ४० मांडै छै। हजाररो छै तैरो सवहेक माडै छै।[3]

ताहरां हमीररी बेटी सदाकुवर, तिकै वात जांणी।[4] तिका बोली–'म्हारो देवर छै सु उबारो।' कह्यो–'हिवै क्युकर ऊवरै?'[5] ताहरा वा बोली–'न उबारो तो हू कूकू छूं–'चूक छै', का उबारो।'[6] ताहरा दोलै जायनै उवैनू[7] कह्यो–'थांनू[8] बाई भीतर बुलावै छै।' ताहरा कह्यो–'जी, पछै आईस।'[9] ताहरा दोलै कह्यो–'पछै नही, पहली आवो। काई माहरी वात कहसी।'[10] ताहरा आयो। ताहरां माहै तेड़िनै कह्यो–'जी, वात सुणो।' ताहरां वात सुणणनै आघो[11] आयो। ताहरां तरवार कटारी काढि लीधी[12] अर आप वाहिर आई। छोकरी कपाट आडा दिया।[13] ताहरां आफळियो।[14] कह्यो–'भोजाई, कासूं कियो? हू आपच कर मरीस।'[15] ताहरां कह्यो–'चुप करो।'

ताहरां गोविंद कवियो-चारण हुंतो मांहै।[16] ताहरां हमीर कह्यो—'रे दोला! चारण ऊबरै।' कह्यो—'जी, क्युकर ऊबरै?'[17] कह्यो—'ज्युं जांणै त्युं उबार।'[18] ताहरां दोलै कह्यो—'गोयंदजी थे सीरावणी करो?'[19] ताहरां चारण कह्यो—'वाह-वाह।' ताहरां हमीर चारणनूं लेजायनै मिठाई पुरसी[20]। चारण तो जीमण बैठो।

ताहरां मोहण दहियो वरस १५ मांहै छै, तिकै ढाल तरवार ले जायनै आपरी मा आगै नांखी। कह्यो—'मा! म्हे हथियार युंही

1 घोडे और हाथियोंका मूल्य लिखा जा रहा है। 2 कागज। 3 जो घोड़ा चार सौ रुपयोंकी कीमतका है उसकी कीमत चालीस रुपये लिखते है और जो एक हजारकी कीमतका है उसकी कीमत एक सौ रुपये लिखते हैं। 4 उसने वातको जान लिया। 5 अव कैसे वचे? 6 नही वचाते हो तो मैं हल्ला करती हू कि धोखा है, नही तो उसे वचा लो। 7 उसको। 8 तुमको। 9 पीछे आऊगा। 10 हमारे सवधमे कुछ वात कहेगी। 11 आगे। 12 निकाल ली। 13 दासीने किवाड़ जड दिये। 14 तव पछडा (तडफड़ाया) 15 मैं पछाड खा कर (तड़फडा कर) मर जाऊगा। 16 तव कविया-चारण गोविंद भी भीतर था। 17 कैसे वचे? 18 जैसे हो तैसे वचाओ। 19 गोविन्दजी! तुम नाश्ता करो। 20 परोसी, परोस दी।

बांधां ? डंड जाट-गूजरां दाई भरां ?' ताहरां मा वोली—'बेटा ! हथियार नांख ना। हथियार सभाहि ।[1] बाई सदारो देवर हुतो, सु सदा अणायो, सो चूक छै। मृग घोड़ो कोई छै, तीयै ऊपर उपाव हुसी। तू वेगो जाह। बैस ना।'[2] ताहिरा मोहण हथियार सब्राहिनै ऊठियो।[3] तितरै अै सिरदार घोडा मांडता-माडता मृग घोड़ै आया।[4] ताहरां कह्यो—'जी, मृग-घोडो छै, माडो।' ताहरा वनो गौंड बोलियो। कह्यो—'एक हजारमे मांडस्या।' ताहरा कह्यो—'जी, मृग छे।' वनो गौड़ बोलियो—'मृग छै तो कासू करां ?'[5] ताहरां कह्यो—'जी, वाध माडो।'[6] ताहरा वनो गौड कहै—सुण रे दहिया ! का गाडर आंपणै भावसू मूडावै, नही तो पकड अर ऊधी नाखै, गुदी ऊपर पाव दै ऊंधी नांख मूडै, ताहरां मूडावै।[7]' ताहरां दोलो दहियो बोलियो—'सुण रे गौड ! का ? एक सेलो म्हाकै ही हाथको आवै छै।'[8] ताहरा कागळ-लेखण तो वनैरै हाथ माहै ही रह्या।[9] मृग-घोडैरै पछाडचां माहै पूदात्राणो जाय पडियो।[10] तितरै कूकवो हूवो।[11] ताहरां घर माहैसू च्यार सै बगतरिया नीसरिया।[12] लोह वाजियो।[13] सारां ही नू भूड़ नांखिया।[14] दूदैरो सारो ही साथ कूट मारियो।[15] दूदै साभळियो[16]—'मारणहारा मारिया।'

ताहरां हमीर दहियै साथ कर जायनै कह्यो—'म्हारा-म्हारा मारणहारा म्हां मारिया।[17] हिवै दूदा तू परहो जायै, का म्हे तोनू

---

1 शस्त्र डाल मत, शस्त्र धारण कर 2 वाई सदा (सदा कुवरि) का देवर था जिसको सदाने वुला लिया है अत कोई धोखा है। कोइ मृग-घोडा है, जिसके ऊपर झगडा होगा, तू जल्दी जा, वैठ मत। 3 मोहन शस्त्र धारण करके खडा हुआ। 4 इतने मे सरदार भी घोडोका मूल्य लिखते-लिखते मृग-घोडेकी कीमत लिखनेके लिये उसके पास आये। 5 मृग है तो क्या करें ? 6 अधिक (मूल्य) लिखो। 7 भेड़ या तो सीधी तरहसे मुडवा लेती है; नही तो पकड कर औंधी डाल देते है और गर्दन पर पाव देते है, इस प्रकार औधी डाल कर मूडते है तव मुडवाती है। 8 और नही तो ? यह देख, एक भाला हमारे हाथका भी आता है। 9 (ऐसा कह करके उसने भाला मार दिया सो) कागज कलम वनेके हाथ ही मे रह गये। 10 और मृग-घोडेकी पिछाडियोमे चूतडोके वल जा गिरा। (पिछाड़ी=घोडेको पिछले पाँवोसे वाँधनेका रस्सा।) 11 इतनेमे शोर हुआ। 12 तव घरमेसे चार सौ कवचधारी निकले। 13 शस्त्रोके प्रहार हुए। 14 सवको मार डाला। 15 दूदेके सभी साथ वालोको मार कर खतम किया। 16 दूदेने सुना। 17 हमारे-हमारे मारनेके थे उनको हमने मार दिया।

ही मारस्या ।[1] जिसड़ै तू इसडा रजपूत जोडीस, तितरै म्हे परहा नीसर जावस्यां ।[2] हिवै दूदा तू जाह । म्हे तोनू मारां नही । म्हे थारै बापरा रजपूत छां, तैसू काई न करां छा ।'[3]

ताहरां दूदो तो चढनै बूदी गयो । हमीर सुखसौ घरै वैठै राज कियो ।

जाहरा कितरैहेके वरसै दूदो रांमसरण हुवो,[4] ताहरां भोज वूदी आयो । भोजनू पातसाह धरती दीधी । भोज देस मांहै आयो, ताहरा भोज, गौडां नैं दहियारो वैर भागो । गोपाळदास गौड़ दहियै परणायो । वैर भागो ।[5] भोज अमरावांरा वैर दहियांसू भजाया ।[6] देस माहै वडो चैन हुवो ।

॥ इति दूदै भोजरी वात सपूर्ण ॥* शुभ ॥

---

*दूदाके मरनेके वाद उसका भाई भोज वूदीका शासक बना । इसने २२ वर्ष राज्य किया । यह वडा वीर था । अहमदनगरकी प्रसिद्ध वीरागना चादवीवीसे लड कर इसने अहमदनगर पर विजय प्राप्त की थी । इसीलिये वादशाहने एक बुर्जका नाम 'भोज वुर्ज' रखा था । चादवीवी इस युद्धमे अपनी सैकडो सैनिकाओके साथ वीरगतिको प्राप्त हुई । इसकी रूपवती कन्याको वादशाह अकवरने मागा था । तव उसने विना सगाई किये हुए ही सिवानेके वीर राठौड राव कल्ला रायमलोतके साथ सगाई कर दी है, का कह दिया । इस पर वादशाहने कल्लाको सगाई छोड देनेको कहा । कल्लाने भोजके धर्म सकटको अपने ऊपर लेकर सगाई छोड देना स्वीकार नही किया और उसके साथ विवाह कर लिया । अकवर कल्लासे वहुत विगडा और उसने सिवाने पर आक्रमण कर दिया । राव कल्ला वडी वीरतासे लड कर काम आया । भोजने अपनी दोहिती (आमेरके राजा जगतसिंहकी पुत्री) का विवाह जहागीरके साथ करनेके प्रस्तावको भी अटका दिया था । इसलिये जहागीर भी इससे नाराज हो गया था ।

---

1 अव दूदा तू चला जा नही तो तेरेको भी मार देगे । 2 जितनेमे तू ऐसे राजपूतोको जोडनेका प्रयत्न करेगा, इतनेमे तो हम दूर निकल जायँगे । 3 हम तुमारे वापके राजपूत है, इसलिये अव तेरे साथ कुछ नही करते । 4 तव कितनेक वर्षोंके वाद दूदा जव मर गया । 5 दहियोंने गोपालदास गौडको व्याह दिया तव वैर मिट गया । 6 दहियोंसे जो उमरावोंकी शत्रुता चलती थी उसे भोजने मिटा दिया ।

।। श्री रांमजी ।।

अथ क्यांमखांन्यांरी उत्पत नै फतैहपुर जूंझणूं वसायो तैरी वात

दरैरैरा वासी चहुवाण; तिकां ऊपर हंसाररो फोजदार सैद नासर दोड़ियो।[1] तद दरैरैरो मारियो अर लोक सरब भागो।[2] पाछै बाळक २ पालणा माहै रहि गया—एक चहुवाणरो नै एक जाटरो।[3] पछै बाळक २ फोजदाररै नजर गुदराया।[4] ताहरां फोजदार दीठा। हुकम कियो–'जु हाथीरै महावतनू सूपो अर दूध पावो। म्होटा करो।'[5]

ताहरां दूसरै दिन फोजदार हसार आयो। ताहरां फोजदार सैद नासर दोनू बाळकानू आपरी बीबीनू सापिया[6] अर कह्यो–'जु हम दो लडके लाये है, सो इनको तुम पाळो।' ताहरां दोनू बाळकांनू बीबी पाळिया। लड़का वरसै १० तथा १२रा हुवा। ताहरां हांसीरै सेखनू सांपिया।[7] तद कितरैके दिनां सैद नासर फोत हुवो।[8] तद सैद नासररा बेटो अर अै दानू पुतरेला पातसाह लोदी पठांण, नाम बहलोल, तैरी नजर गुदराया।[9] ताहरां सैद नासररा बेटा पातसाहरी नजर उसड़ा न आया अर ओ चहुवाण नजर आयो।[10] तैरो नांम क्यांमखान हुवो, सु ईयैनू सैद नासररो मुनसब हुतो सु दियो।[11] अर जाटरो नांम जेनू हुतो, तैरा जेननदोत कहाया, सो जूंझणूं-फतैहपुर

---

1 दरेरेके निवासी चौहानोके ऊपर हिसारका फौजदार सैयद नासिर चढ कर आया। 2 तब दरेरेको लूटा और वहाके लोग सब भाग गये। 3 उस समय दो बालक पालनेमे रह गये। उनमेसे एक चौहानका था और एक जाटका। 4 फिर उन दोनो बालकोको फौजदारकी नजर पेश कर दिया। 5 हुक्म किया कि हाथीके महावतके सुपुर्द कर दो और दूध पिलाओ। पालन-पोषण करो। 6 तब फौजदार सैयद नासिरने दोनो बालकोको अपनी बीबीके सुपुर्द कर दिया। 7 तब हासीके शेखको सुपुर्द कर दिया। 8 तब कितनेक दिनोंके बाद सैयद फौत हो गया। 9 तब सैयद नासिरके बेटे और इन दोनो पोषित पुत्रोको पठान-बादशाह बहलोल लोदीकी नजर पेश किया। 10 सैयद नासरके बेटे वैसे (योग्य) नजरमे नही आये और यह चौहान नजरमें चढा। 11 उसका नाम क्यामखान दिया गया और सैयद नासिरका जो मनसब था वह इसे दे दिया।

मांहे केहेकि रहै छै ।[1] अर पातसाह थोड़ो बीजांनू पण दियो ।[2] अर क्यांमखांननू हसाररी फोजदारी दीवी ।[3] तद ईयै दीठो–'जु कोइक रहणनू ठिकांणो कीजै तो भलो ।'[4] ताहरां जूझणू आछी दीठी ।[5] ताहरा चोधरीनू तेड़ियो ।[6] कह्यो–चोधरी ! तू कहै तो म्हे ठिकाणो रहणनू करा ।'[7] ताहरां चोधरी बोलियो–'भला, ठोड़ वणावो, पण म्हारो नाम रहै त्यु करीज्यो ।'[8] ताहरां कह्यो–'भलां ।' ताहरां चोधरी-रो नाम जूझो हुतो, सु तिकैरै नांम जूझणू वसायो ।[9] अबै जूझणू मांहिली होज धरती काढनै फतैहपुर वसायो, नै अै भोमिया थका रहै ।[10]

पछै कितरैहेके दिनां अकबर पातसाह माडण कूंपावतनूं जूझणू जांगीरमे दीवी हुती ।[11] अर फतैहपुर इण जूझणूं माहिली हीज हुती सु फतैहपुर गोपाळदास सूजावत कछवाहैनू दीवी हुती सु भोमिया थको रहतो ।[12] मुकातो देतो । सु पछै जहांगीर पातसाहरो चाकर हुवो । सु पहला तो समसखां जूझणू चाकर रह्यो नै पछै अलम[फ]खांरै* रह्यो ।[13]

---

1 और जाटका नाम जेनू था, इसके वशज जेननदोत (जैनदोत) कहाये, सो जूझनू फतहपुरके प्रदेशमे कहीक रहते हैं । 2 और बादशाहने (उसमेका भाग) थोडा दूसरोको भी दिया । 3 और क्यामखानको हिसारकी फौजदारी दी । 4 तब इसने देखा कि कही रहनेके लिये कोई ठिकाना अपने लिये भी किया जाय तो ठीक हो । 5 तब इसको जूझनू अच्छी लगी । 6 तब चौधरीको बुलाया । 7 चौधरी ! तू कहे तो हमारे रहने के लिये कोई ठिकाना यहाँ बनायें । 8 अच्छी बात है, अपने लिये ठौर बना लो, परन्तु उसमे मेरा भी नाम रहे ऐसी बात करना । 9 चौधरीका नाम जूझा था सो उसके नाम पर जूझणू गाव बसाया । 10 अब जूझणू ही की धरतीका कुछ भाग निकाल कर फतहपुर बसाया और उसमे ये भोमियेकी हैसियतमे रह रहे हैं । 11 पीछे कितनेक दिनोके बाद अकबर बादशाहने माडण कूपावतको जूझनूं जागीरमे देदी थी । 12 और फतहपुर इस जूझनूमे से ही था जिसको कछवाहा गोपालदास सूजावतको दे दिया था सो भोमिया बना हुआ रहता था । 13 सो पहले तो जूझणू मे शम्सखाका चाकर रहा और फिर अलफखाके यहाँ रहा ।

---

*यह अलफखा सभवत प्रसिद्ध कवि न्यामतखां उपनाम 'जान कवि'के पिता फतहपुर (शेखावाटी) क्यामखानी नवाब हो । जान कविका 'क्यामखा रासा' क्यामखानियोंके

(शेष टिप्पणी २७५ पर)

दूहा

पहली तो हिंदू हुता, पीछै भये तुरक्क ।
ता पीछै गोलै भये, तातै वडपण तुक्क ।। १
धाये कांम न आवही, क्यांमखांनि गदेह ।
बंदी आद जुगाद के, सैद नासर हदेह ।। २[1]

।। इति क्यांमखांन्यांरी वात सपूर्ण ।।

---

1 दोहोका भावार्थ—पहले तो यह हिंदू थे और पीछे तुर्क हो गये । जिसके पीछे ये गोले हो गये । इसलिये वडप्पन तुक्के जितना ही (थोडा ही) रहा ।।१।। क्यामखानी गदे हैं वे अघाये हुए काम मे नही आते, क्योकि प्रारभसे ही वे सैयद नासिरके वदे (चाकर) रहे है ।

इतिहासका प्रसिद्ध और मूल्यवान ग्रथ है । राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानसे यह सर्व प्रथम प्रकाशित हो चुका है । जान कविके बुद्धि सागर, सतनावा और अलफखाकी पैडी आदि ७५ ग्रथ जाननेमे आये है । फदनखाकी पुत्री ताज बीबी भी इसी वशकी श्री कृष्णकी परम भक्त-कवयित्री थी और गोस्वामी विट्ठलनाथजीकी शिष्या थी । ताज सम्राट अकबरकी पत्नी थी । सम्राट इसकी इस भक्ति-भावनासे आकर्षित था । इसकी कोई दर्जन भरसे अधिक रचनाएँ जाननेमें आई है । दौलतखा आदि कई विद्यारसिक, भक्त और कवि इस वशमे हो गये है ।

॥ श्री रामजी ॥

अथ दौलतावादरा उमरावांरी वात

दौलतावादरा उमराव ईयै तरह[1] आय मिळिया पातसाह जहांगीरसू —

ताहरा पैहली तो जहांगीरसूं उदैराम ब्रांह्मण पच हजारी थो सु आय मिळियो।

पछै जादूराय आय मिळियो।

तठा पछै आकूतखा[2] पच हजारी पातसाहसूं आय मिळियो।

सु यां सारां ही उमरावांनूं पातसाह जहांगीर पच हजारी किया।[3]

ताहरां पछै मलकंबर[4] निजांमसाहनूं कह्यो–'जु म्हारो बेटो फतैसाह छै तैसूं दौलतावाद जासी, सु ईयैनू मारिस।'[5] ताहरां निजांमसाह कह्यो–'ओ म्हारो[6] मामो छै।' ताहरा मलकंबर कह्यो–'थारो[7] मामो पण[8] म्हारो वेटो छै।' पछै मारियो नही अर कैद माहै कर राखियो।[9] अर कह्यो–'जु ईयैनू दीवांनगीरी कदै देणी नही, जो देवो तो सिपाहीपणैरो रिजक दिया।[10] पछै मलकबर सुवो।[11] तद ईयैनूं दीवाण कियो।[12]

पछै कितरैहेके दिनां निजामसाहनूं मोतीमहल माहै मारियो। अर निजामसाहरो बेटो छोटो हुतो तीयैनूं टीको दियो।[13]

पछै इतरा उमरावांनू छडाया–[14]

---

1 इस तरह। 2 याकूतखा। 3 इन सभी उमरावोको बादशाह जहांगीरने पंचहजारी बनाया। 4 मलिक अंबर। 5 सो इसको मार दूगा। 6 मेरा। 7 तेरा। 8 परन्तु। 9 फिर मारा तो नही परतु कैद कर दिया। 10 इसको दीवानगीरी कभी नही देना, यदि देओ तो सिपाहीपनेकी जीविका देना। 11 पीछे मलिक अंबर मर गया। 12 तब इसको दीवान बनाया। 13 जिसको टीका दिया। 14 फिर इतने उमरावोको कैदसे छुड़ाया।

मुकरबखां। सरफराजखां। साहबखां। दिलावरखां। अर अै साहजीसूं मिळिया। सु एक वेळा मिळ नै पाछा जाय बैठा।[1]

पछै जद छोकरो टीकै बैठो, ताहरां पातसाह फेर मुहिम कीवी।[2] सु मोहबतखां चत्रतीरथ दिसा मोरचो लगायो, सु दिन १५में तोड़ियो।[3] अर भीतरलो गढ छठै महीनै लियो[4] अर बीजा[5] उमराव बीजापुर गया। साहजी पछै बीजापुर गयो। सु दौलताबादरा गढांरी ४५ कूंचियां हुती[6], सु साहजहां आयो जद[7] अलावरदीखांनू मेल्हनै[8] गढ १२ साहजीनूं दिया नै बाकीरा गढ लिया।

॥ इति दौलताबादरा उमरावांरी वात संपूर्ण ॥

॥ शुभ भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥

---

1 सो एक वार मिल करके वापिस जा बैठे। 2 तब बादशाहने फिर चढाई की। 3/4 मोहबतखानने चित्र(?) तीर्थकी ओर मोर्चा लगाया जिसको १५ दिनोंमें तोड दिया, परंतु भीतरके महल पर छटे महीने जाते अधिकार हुआ। 5 दूसरे। 6 थी। 7 जब। 8 भेज कर।

आदिदास्त[1]

खांनदोरारो नांम आगै साबर हुतो, सु साहजिहां पातसाहरै त्रिखै माहै नीसरियो हुतो ।[2] सु मालक मलकंबररै तो इतरो ठीक हुतो जु हिंदुस्तांनी कोई गढमें राखतो नही । ढूढ काढतो, सु पैसण न पावै ।[3] ताहरां पछै खांनदोरा एकी तुरकणीनू जायनै मिळियो नै कह्यो[4]–'जु मोनू मलकंबररै जायनै वेच ।'[5] ताहरा तुरकणी जायनै वेचियो । गढ माहै वडियो ।[6] सरब गढरो भेद लियो । लेयनै जद साहजिहां टीकै बैठो, तद जाय मिळियो । सरब हकीकत कही ।[7]

---

1 याददाश्त (स्मरण रखनेके लिये नोट रूपमे लिखी हुई कोई बात) । 2 सो शाहजहा बादशाहके सकटकालमें निकल गया था । 3 मलिक अंबरके यहा इतना ठीक था कि किसी हिन्दुस्तानीको गढमे नही रखता था । ढूंढ करके निकाल देता था जिससे कोई गढमें प्रवेश नहीं करने पाता था । 4/5 तब खानदोरा एक तुर्कनीसे जाकर मिला और उससे कहा कि मुझे मलिक अंबरके यहा वेचदे । 6 गढमे घुस गया । 7 साहजहा जब गद्दी पर बैठा तब जाकर उससे मिला और सब हकीकत कह दी ।

आदिदास्त

जद आकूतखां नै मोहबतखां रीसायो, तद कह्यो–'तू खबर पोंहचावै छै ।'[1] 'आकूतखां पण दीठो–'गढ जावै ।' तद नीसर गयो ।[2] पछै दिन ५।६ हुवा, तद दोपहररो नगारो देयनै चढियो ।[3] राव दूदैसूं लड़ाई कीवी । सु राव दूदो कांम आयो । अर आकूतखां पण कांम आयो, घड़ी ५ तथा ६ दिन वांसलै थकै ।[4]

खेलूजी मालूजी आया तद आकूतखां आयो, तद अठैहीज आयो ।[5]

खांनखांना पछै अकबर पातसाहरै दीवाण सेख फरीद हुवो ।[6]

जहांगीर पातसाहनूं प्रयागसूं बुलायनै पातसाही दीवी, घडी दोय तद दीवांण हुवो ।[7]

पछै वरस दोय खानखाना हुवो ।[8]

वरस २ दोय करनै, सु तोडरमल मरतो कहि गयो थो सु दफतर जोवाड़ियो ।[9]

खेलूजी मालूजी कनड़रा पाहाड मांहै कोळी रहै, त्यांरा चाकर हुता ।[10] तद मलकंबर कह्यो–'जु यां कोळियांनूं मारो तो आ धरती थांनूं देवां ।[11] ताहरां खेलूजी मालूजी कोळियांनूं मारनै वा सारो ही धरती लीवी । पछै आकूतखां तद आइ मिळियो । पछै अै ही आय मिळिया ।[12]

---

1 जब याकूतखां और मोहबतखा परस्पर नाराज हो गये तब कहा कि तू खबर पहुचाता है । 2 याकूतखाने देखा कि गढ जा रहा है, तब वहासे निकल गया । 3 तब दुपहरको नगाडा बजवा कर चढा । 4 पाच-छ. घडी पिछला दिन शेष था तब याकूतखा भी काम आया । 5 खेलूजी और मालूजी आये, तब याकूतखां भी यहा ही आ गया । 6 खानखानाके बाद अकबर बादशाहका दीवान शेख फरीद हुआ । 7 उसके समय केवल २ घडी दीवान रहा । 8 दो वर्ष तक खानखाना रहा । 9 दो वर्षके बाद टोडरमलने मरते समय कहा था, उस दफ्तरको ढुढवाया । 10 खेलूजी मालूजी कनडके पहाडोमे रहने वाले कोलियोके चाकर थे । 11 मलिक अबरने इनसे कहा कि यदि तुम इन कोलियो को मार दो तो इनकी यह धरती तुमको देदू । 12 फिर याकूतखा भी आ मिला और उसके बाद ये भी आ मिले ।

॥ श्री गणेशायनमः ॥

अथ सांगमराव राठोड़री वात लिख्यते

सांगमराव जोपसाहरो ।[1] राजा वीसळदे सोळकी गुजरातरै घणीरो परधांनगी करतो ।[2] ताहरां सांगमराव मांहै क्युंहेक खायकी नीसरी ।[3] ताहरा गोरो वादळ सोनगरा परधांन थापिया वीसळदेजी ।[4] ताहरां गोरो वादळ सागमराव ऊपर साथ करनै आया ।[5] वडो लड़ाई हुई । सागमराव नीसरियो । आपरै देस में जाय महेवै, जाळोर वीच रह्यो ।[6]

यु रहतां थकां, एक दिनरो समाजोग । सावत संढायच चारण थट्टैरै पातसाहरै घोडै दरियाई ऊपर चरवादार हुंतो ।[7] एक दिन सांवत घोड़ो लेनै नीसरियो । दिन ३ तीन सारीखो वूहो, ताहरां यूं करतां थाको हुवो ।[8] तद सागमरावरै गांमरै ताळ मांहै आयनै सूतो ।[9] ताहरां घोड़ैनै घोडियारी वास पडी । घोड़ो हाथसूं ढळ गयो ।[10] ताहरां घोड़ी ताळ माहै हुंती सु घोड़ो हेकण घोड़ीनूं लागो ।[11] सांवत जागियो । देखै तो घोड़ो नही । घोड़ो गयो । दोड़ देखै तो घोड़ो हेके घोडीनूं लागो छै ।[12] ताहरां घोड़ैनूं जायनै पकड़ियो नै सावत हेलो मारियो । कह्यो-'जु भाई ! कोई घोड़ियांमैं हुवै तो

---

1 सागमराव जोपसाहका लडका । (जोपसाह राव आसथानका लड़का था) 2 यह गुजरातके स्वामी वीसलदेव सोलकीके यहा दीवानगी करता था । 3 सागमरावने कुछ गवन कर लिया जिसका पता पड़ गया । 4 तव वीसलदेवने गोरा वादल सोनगरोको प्रधान वनाया । 5 गोरा वादल सांगमरावके ऊपर चढ करके आये । 6 सागमराव वहासे निकल गया और अपने देश मारवाडमे महेवे और जालोरके बीच आकर रहा । 7 इस प्रकार यहा रहते हुए एक दिन यह प्रसग वना । सावत सढायच-चारण जो थट्टेके वादशाहके दरियाई-घोडे का चरवादार था । 8 तीन दिन तक चलता रहा सो थक गया । 9 तव सांगमरावके गांवके नजदीक तालमे आकर सो गया । 10 घोडा छूट गया । 11 तालमे घोडिया खड़ी थी उनमेसे एक घोडीसे वह घोड़ा जा लगा । 12 दौड कर देखता है कि घोडा एक घोडीसे लग गया है ।

पाठान्तर—*'सांगमरावरै गांव रै ताळ' केस्थान 'सागमरावरै गांम रैतळा' पाठ एक प्रति मे लिखा है ।

सांभळीज्यो। घोडी नूं थटैरै पातसाहरो दरियाई घोडो लागो छै।[1] बीज सभाळ लेज्यो।'[2] इतरो कहि चालतो रह्यो।[3] घोड़ी दरयाई हुतो[4] सु सांवत चीत्रोड़[5]रै रांणैंनू लेजायनै[6] निजर कियो। ताहरां राणै सावतसीनू गाम १ सांसण दियो।[7]

अर उण घोड़ीरै पेटरी वछेरी हुई। नाम बोर हुई, सांगमरावरै घरै।[8] नै ते चढियां थकां घणो ही गुजरात देसरो उजाड़ कियो।[9] तिको सांगमराव कुडळ परणियो आचानणनै।[10] अर साळैरो नाम विसनदास। तिकै विसनदास सांगमरावजी पासै वोर घोडी मांगी नै कह्यो–'म्हारै भाटियासूं वैर छै। घोड़ी ईयै चढनै वैर लेवा।'[11] ताहरा सागमरावजी विसनदासनू नीछो दियो।[12] पण आखर घोड़ी विसनदास ले गयो। विसनदास लेजायनै घोड़ी बोरनै घोडो दिखायो।[13] वरस १नू व्याई। वछेरो जायो।[14]

जवै बाध साबती कर वछेरी बोर विसनदास पाछी मेल्ह दीवी।[15] कह्यो–'जी, घोड़ो थांहरी ल्यो। हाजर छै। वैर नीसरियो नहीं।'[16]

ताहरां सागमरावजी अमल कर घोडी ऊपर चढिया, ताहरा खुरी कीवी।[17] घोड़ी हुती सु नही।[18] ताहरा सांगमरावजी विसनदासनू कहायो। कह्यो–'घोड़ी व्याई। कूड कियो? वेम उरहो

1 घोडियोमे कोई आदमी हो तो सुन लेना कि घोडीको थट्टके बादशाहका दरियाई घोडा लगा है। 2 उसके वीज (नस्ल)को सम्हाल लेना। 3 इतना कह कर चलता बना। 4 था। 5 चित्तौड। 6 लेजा कर। 7 तब राणाने सावतसीको एक गाव शासनमे दिया। 8 सागमरावके घर उस घोडीके पेटसे वोर नामकी एक वछेरी उत्पन्न हुई। 9 उस पर चढ कर उसने गुजरात देशका बहुत विगाड़ किया। 10 सागमरावने कुडलमे आचानरणसे विवाह किया। 11 इस घोडी पर चढ करके अपने वैरका वदला लू। 12 तव सागमरावजीने मना कर दिया। 13-14 विमनदासने लेजा कर वोरको घोडा दिखा दिया। एक वर्ष बाद व्या गई। वछेरा उत्पन्न हुआ। 15 खूव जौ खिला कर और पुष्ट वना कर वोरको विसनदासने वापिस भेज दी। 16 तुमारी घोडी लेओ। हाजिर है, वैर तो निकल नही सका है। 17 तव एक दिन अमल-पानी करके (अफीम लेकर के) घोडी पर चढे और उसको फिराया। 18 मालूम हुआ कि घोडी जैसी थी वैसी नही है।

मेल्हो ।'[1] ताहरां विसनदास सांगमरावजीनू कहायो–'थे बेहनेई छो, तीयै कारण आसंगो कियो । वेम देवां नही ।'[2] ताहरां सांगमराव मानी नही नै लडणनू चढियो । ताहरा आचानण सांगमरावजीनू कहियो–'जु राज ! चढीजै नही । घोड़ीरो वेम हू ले आईस ।'[3] ताहरां आचानण पीहर गई । जायनै भाई विसनदास पासा वछेरो मागियो । कह्यो–'भाई ! हूं जांणीस म्हनै दायजै दियो ।'[4] ताहरां विसनदास तो वछेरो देवै नही । ताहरां आचानण भाई विसनदासरै धरणै बैठी ।[5] आचानण दिन २ भूखी रही । पण विसनदास तो मांनै नही । ताहरां आचानण अठैसूं वहीर हुई सो आगलै गांम उतरी ।[6] जीमण करायो ।[7] आपरा लोग हुंता सो सारा बोलाय वात पूछी ।[8] कह्यो–'अबै हूं कासू करूं ?[9] मांटी छै सु तो साळैसूं टळै नहो । घोड़ो छोडै नही । ताहरां हूं मांटीनूं वरज अर हूं पीहर घोड़ो लेवणनूं आई हुती, सु म्हारी वात पीहर भाई पण मांनी नही ।[10] हमै हू कासू करूं ?' ताहरां लोकां कह्यो–'थांहरै दाय आवै सु करो ।'[11] ताहरां भला-भला ठिकांणा रजपूतारा हुता तेथ गई, पण केही झाली नही ।[12]

ताहरां गांम भेळू रामचंद ईंदो रहै, तठै आचानण गई ।[13] ताहरा रामचद ईंदै कह्यो–'तू म्हारै माथै समी छै । तू भलांई नू

---

1 घोडी व्या गई है, हमने वोखा किया, वछडा भेज दो । 2 आप वहनोई है, इस सदधको लेकर उसमे (अपनत्वकी) आसक्तिकी है, इसलिये वेम नही दूगा । 3 घोडीके वछडेको मैं ले आऊगी । 4 मैं जानूगी कि मुझे दहेजमे दिया है । 5 तव आचानण अपने भाई विसनदासके यहाँ धरना देकर वैठ गई । 6 तव आचानण यहासे रवाना होकर अगले गाव ठहरी । 7 वहा भोजन वनवाया । 8 अपने साथमे जो आदमी थे उन सवको अपने पास वुला कर पूछा । 9 अव मैं क्या करूं ? 10 मेरा पति सो तो अपने सालेसे चूकता नही और घोडा छोडता नही । भाईके ऊपर चढ कर आते हुए पतिको रोक कर मैं यहा पीहरमे अपने भाईके पास घोडा लेनेको आई थी, परन्तु पीहरमे मेरी वातको भी भाईने माना नही । 11 तुमारे जँचे सो करो । 12 तव वह राजपूतोके अच्छे-अच्छे ठिकाने थे वहा गई, परन्तु किसीने इसे स्वीकार नहीं किया । 13 तव भेलू गावमे जहा रामचद ईंदा रहता है, उसके यहा आचानण गई ।

आव ।'[1] ताहरां रांमचंद ईंदै राखी । घरवास कियो ।[2] ताहरा आचानण दूहो कहै–

देसी बोर दबूकड़ा, केही* खलां सिरेह ।
कुंडलरै आचानणै, भेलूरै ईंदेह ॥ १[3]

ताहरां ईंदा छै सु सारा ही हथखारै सातरा थका रहै । यु करतां छव मास हुवा ।[4]

ताहरां एक दिन सांगमरावरै गामरो एक जोगी ईंदांरै गाव गयो । जोगी, रामचद ईंदारै घरै भिक्षानूं गयो । ताहरां जोगी अलख जगायो । ताहरां जोगीनूं आचानण ओळखियो ।[5] ताहरा आचानण छोकरीनूं मेल्हनै जोगीनू घर मांहै बुलायो ।[6] ताहरां जोगी कह्यो– 'अरी माई आचानण ! तूं इहां कहां ?' ताहरा आचानण बोली– 'आयसजी ! म्हारी खबर नही ?'[7] ताहरां आयस कह्यो–'जु या खबर है जु घोड़ैकूं गई है पीहर, सो घोडा ले आवेगी ।' ताहरां जोगी नूं रुपियो १), पडलो १ दियो । सोहरो राखियो । जीमायो । रात राख, जोगीनूं सीख दीवी ।[8] अै समंचार कह्या–'ठाकुरांनूं कह्या[9]– म्हारो तो थां मुलायजो न कियो, जो म्हारै भाईनूं मारणनै चढिया ।'[10] ताहरां ठाकुरांनूं राख हूं पीहर आई ।[11] ताहरा पीहर वाळां पण म्हारो कुरब राखियो नही ।[12] ताहरां म्हनै तो सासरै पीहर कठै ही

---

1 तू मेरे सिरके समान है, तू खुशीसे मेरे यहा आ जा । 2 तब रामचन्द ईंदेने रख कर उससे घरवास किया । 3 दोहेका भावार्थ—अब वोर घोडी शत्रुओके सिरो पर (शत्रुओ पर) दौड़े करना शुरू कर देगी । कुडल पर और आचानणके कारण भेलूके ईंदो (रामचद) पर तो निश्चय ही करेगी । 4 अब सभी ई दे (सागमरावके चढ कर आनेकी प्रतीक्षामे) हाथोका खार खाए हुए सज्ज होकर रहते है । इस प्रकार छ महीने वीत गये । 5 आचानणने जोगीको पहचान लिया । 6 आचानणने दासीको भेज कर जोगीको घरमे बुलवाया । 7 क्या मेरे यहाँ आनेकी खवर नही है ? 8 तव जोगीको एक रुपया और एक वस्त्र दिया । अच्छी तरहसे रखा, भोजन कराया और रात भर रख करके (प्रातः) विदा किया । 9-10 ठाकुरको कहना कि मेरा तुमने कुछ भी मुलाहिजा नही रखा और मेरे भाईको मारनेके लिए चढ चले । 11 तव ठाकुरको वरज करके पीहर आई । 12 तव पीहर वालोने भी मेरा कुरव नही रखा ।

---

* पाठांतर – काही ।

ठोड नही ।[1] तद म्हे विचार अर रामचंद ईंदेरै पले आई ।[2] हमैं ठाकुर तो म्हैं दिसिया गई कर जाय ।'[3]

ताहरा जोगी पाछो गयो। जायनै सागमरावनूं कह्यो–'आचानण कहा ?' ताहरां सागमराव कह्यो–"वछेरैनूं गई छै ?'[4] ताहरां जोगी कह्यो–'बाबा ! वछेरा दिया नही । ताहरां आचानण रीस कर रांमचद ईंदेरै घरमे बडी ।'[5]

ताहरा सांगमराव ऊठ अर नगारो करायो ।[6] सागमराव कूंडळ ऊपर चढियो । ताहरां भाईयां कह्यो–'जी, हेकरसूं तो बैररो वैर लेओ ।'[7] ताहरा भेळू ऊपर चढिया ।

आचानण जोगीनू सीख दीवी ताहरां पछै थाळी माहै मूंग घात बाजोट ऊपर राखिया हुंता ।[8] हेक दिन रातरा थाळी मांहिला मूंग कूदण लागा ।[9] ताहरा आचानण रांमचदरै पगै हाथ देअर जगायो । कह्यो–'ठाकुरां ! उठो । कटक आयो ।' ताहरां रामचद कह्यो–'जी, कठे छै कटक ?[10] म्हारा भाईयांनूं कई दिन हुवा, जोनसाळिया थका रहै छै ।[11] कटक कोई नही ।' तद आचानण कह्यो–'मूंगां साम्हां देखो ।'[12] ताहरां रांमचदजी मूंग कूदता दीठा । ताहरां कह्यो–'कासूं छै ?'[13] ताहरां कह्यो–'बोर घोडीरै पौडासूं मूंग कूदै छै । घोड़ी थांरी सीममें आई ।'[14] ताहरा रांमचंदजी कोटड़ी आया नै ढोल दरायो ।[15] लोग भेळो हुवो ।[16] ईंदारै साथ नै सांगमरावरै साथ

---

1 तब मेरे लिये न तो ससुरालमे और न पीहरमे कही भी जगह नही । 2 तब इस दुविधाका विचार कर रामचदके पल्ले आ लगी हू । 3 अब ठाकुर मेरी ओरका ख्याल छोड दें । 4 वछेरा लेनेको गई है । 5 इस पर आचानण रीस कर रामचद ईदेके घरमे घुस गई । 6 तब सागमरावने उठ कर चढाई करने के लिए नगाडा वजवाया । 7 पहले एक बार तो स्त्रीका वैर लेओ । 8 तब थालीमे मूग डाल कर वाजोट (पट्टे) पर रखे थे । 9 एक दिन रातको थालीके अदरके मूग कूदने लगे । 10 कहाँ है कटक ? 11 मेरे भाइयोको कई दिन हुए, कवच धारण ही किये रहते है । 12 मूगोकी ओर देखो । 13 यह क्या बात है ? 14 बोर घोडीकी टापोसे मूग कूद रहे हैं । घोडी तुमारी हदमे आ गई । 15 तब रामचदने कोटडीमे आकरके युद्धका ढोल वजवाया । 16 लोग इकट्ठे हुए ।

लड़ाई हुई। सात-वीस रजपूतांसूं रांमचंद ईंदो खेत रह्यो।[1]

ताहरां आचानण आप सांगमरावजीसूं आय मुजरो कियो[2] नै कह्यो–'राज ! हाथ थांहरो छै।[3] देह ईंदैरो छै।' ताहरां आचानण हाथ जीमणो[4] काट सांगमरावजीनूं दीन्हो अर आप रांमचंद ईंदै साथै सती हुई।

पछै सांगमरावजी कुंडळ ऊपर चढिया अनै[5] कहायो–'जु म्हांरो वछेरो देओ।' ताहरां विसनदास वछेरो टीकै दियो। अर बीजी छोटी वहन हुती सु सांगमरावजीनूं परणाई।[6]

पछै विसनदास वीसळदेजी पासै चाकरीनूं गयो। ताहरां वीसळदेजी विसनदासनूं कह्यो–'लांणत छै थांनै ! सागमराव थांमें घणी कीवी।'[7] ताहरां विसनदास कह्यो–'राज ! पहुच सगा नही।'[8] ताहरां राजा वीसळदेजी कह्यो–'फोज हूं देईस।'[9]

ताहरां विसनदास फोज लेअर वहीर हुवो।[10] सांगमरावजी तो कुडळ मांहै सासरै हीज हुंता।[11] ताहरां कुडळरा लोकां कुडळरा दरवाजा विसनदासरै कहै खोल दीन्हा। ताहरां सांगमरावजीसू लडाई हुई ताहरां सांगमरावजी घोड़ी वाढी अर आप काम आया।[12] विसनदास सागमरावजीनूं कूड़ कर मारिया।[13]

ता पछै सांगमरावजीरै वेटै मूळू वीसळदेजीसूं वैर कियो। हेक पुकार रोज पाटण दोळी वीसळदेजीरै कानै पड़ै।[14] वीसळदेजी फोजा घणी ही मेल्ही[15], पण मूळू हाथ आवै नही।

---

1 एक सौ चालीस राजपूतोके साथ रामचद ईदा खेत रहा (मर गया)। 2 तव आचानणने आकर साँगमरावको मुजरा किया। 3 (पाणिग्रह तुमारे साथ किया था इसलिये) हाथ तुमारा है। 4 दाहिना। 5 और। 6 विसनदासने आचानणकी छोटी वहिन थी जिसे सागमरावके साथ व्याह दी और वछेरा टीकेमे दे दिया। 7 सागमरावने तुमारेमे वहुत विताई, तुम्हे लानत है। 8 श्रीमान् ! मैं उमसे पहुँच नही सकता। 9 सेना मैं दूगा। 10 विसनदास सेना लेकर रवाना हुआ। 11 सागमरावजी तो अपनी ससुराल कुडलमे ही थे। 12 तव सागमरावजीने अपनी घोडीको काट दिया और स्वय काम आ गये। 13 विसनदासने सागमरावजीको धोखेसे मारा। 14 एक न एक पुकार हमेशा पाटणमे वीसळदेजीके कानो सुनाई पडती रहे। 15 वीसलदेजीने अनेक वार फौजें भेजी।

ताहरा चारण विसोढो खीची धारू आनळोतरो निवाजियो राजा वीसळदेजी पासै आयो ।[1] ताहरां वीसळदेजी आदर-सनमांन बहोत कियो । ताहरां हेके दिन चोपडरो रांमत माडी ।[2] रुपिया हजार-हजाररी बाजी मांडी ।[3] जो राजा हारै तो रुपिया हजार एक चारण विसोढैनू देवै । अर जो चारण हारै तो राजा वीसळदेजीनू मूळू आखिया देखाळै ।[4]

आ विध कर बाजी मांडी ।[5] ताहरां विसोढै कह्यो—'राज ! हू तो मूळनू जाणू नही ।' ताहरा राजा कहियो—'मूळू भलो रजपूत छै । थारो बोलायो आसी ।[6] जो नावै तो नही ।[7] तद चोपड़ रमिया । विसोढो हारियो ।

ताहरां विसोढैरै साथै राजा मांणस दिया ।[8] विसोढो मूळूरै गांम गयो । मूळूसू मिळियो । ताहरां मूळू आदर कर खीच कियो, ताहरा विसोढो जीमै नही ।[9] ताहरां मूळू पूछियो-'राज ! जीमो क्यु नहीं ?'[10] ताहरां विसोढै कह्यो—'जु म्हैं तनै राजाजी वीसळदेजी पासै रुपिया हजार मांहै हारियो । जो तू हेकरसू वीसळदेजीनू मुजरो करै तो जीमू ।'[11] ताहरां कह्यो—'भलो कियो । पण तै थोड़ैमे हारियो । वीसळदे तो म्हारा रुपिया लाख खरचै तो दूरा । हू हाथ न आऊं ।[12] पण थारै कहै हालीस ।'[13] ताहरा विसोढो जीमियो । रात उठै रह्यो ।

चारण पाछो वीसळदेजी पासै गयो । जायनै कह्यो—'बाप ! मूळू आवै नहीं । तद मूळूरा राजा विखोड किया ।[14]

---

1 खीची धारू आनलोतका कृपापात्र चारण विसोढा राजा वीसलदेजीके पास आया । 2 तब एक दिन चौपड खेलनी शुरू की । 3 हजार-हजार रुपयेकी शर्तकी बाजी लगाई । 4 यदि राजा हार जाये तो एक हजार रुपये विसोढा चारणको दे और जो चारण हार जाय तो वह सागमरावके बेटे मूलूको राजा वीसलदेको आखोसे दिखादे । 5 इस प्रकार तै करके बाजी शुरू की । 6-7 तेरा बुलवाया आ जायगा और नही आये तो नही सही । 8 तब विसोढाके साथमे राजाने मनुष्य दिये । 9 तब मूलूने (विसोढाका) आदर किया और भोजनके लिये खीच बनवाया । परन्तु विसोढा भोजन नही करता (खीच=बाजरी को ऊखलमें कूट कर पकाया हुआ एक भोजन) । 10 भोजन क्यो नही करते ? 11 तू एक बार वीसलदेजीको मुजरा करना मजूर करदे तो जीम लू । 12 परन्तु तूने मुझे थोडे मे हार दिया । वीसलदे तो लाख रुपये खर्च करे तो भी मैं तो दूर, मैं उसके हाथ नही आऊं । 13 परन्तु तेरे कहनेसे चलूंगा । 14 तब राजाने मूलूकी हँसी (निंदा) की

ताहरां हेक दिन, सोमवाररै दिन राजा वीसळदेजी चौगान खेलणनू चढिया।[1] ताहरां मूळू पण तयार हुवो, फोजां मांहै आय भिळियो[2] अर पूछियो—'जु, विसोढो चारण कठै छै?'[3] लोकां बतायो—'जु, राज! राजा हाथी असवार छै, तठै वात करतो हालै छै।'[4] ताहरां मूळू चलाय घोड़ो अर विसोढैजीसूं आय रांम-रांम कियो।

ताहरां विसोढो दूहो कहै—

वीसोढा! आ वार, वीसलदे कहिजै विगत।
ओ मूळू असवार, सगळा देखै सांगउत॥[5] १

ताहरां विसोढै कह्यो–'महाराज! मूळू हाजर छैं।' तद राजा देखियो। मूळू मुजरो कियो।

फेर दूहो—

जाडी फोजां जेथ, वीसल की चहुंवै वलां।
सेल तुहारो तेथ, सुरतांणै उर सांगउत॥[6] २

कोई सुरतांण वीसळदेरी फोजां मांहै हुतो, तिणनूं मार चालतो हुवो।[7] वांसैसूं फोजां विदा हुई–'जु, जावण न पावै।'[8] आगै जावतां वीचमे हेक खाळ आयो[9], ताहरां मूळूरो घोड़ो तो पार हुवो।

---

1 एक वार सोमवारके दिन राजा वीसलदे मैदानमें खेलनेके लिये चढा। 2 सेनामें आकर शामिल हुआ। 3 विसोढा चारण कहा है? 4 जहा राजा हाथी पर सवार है वहां वह उससे वात करता हुआ चल रहा है। 5 (दोहेकी उक्ति मूलूकी है, विसोढाकी नही होनी चाहिये।) दोहेका भावार्थ मूळूकी उक्तिमे—

हे विसोढा! तू वीसलदेको इसी समय मेरे परिचय सम्वन्धी सव वृत्त कह दे और कह दे कि यह घोडे पर सवार सागमरावका पुत्र मूलू आ गया है और उसे अव सभी देख रहे है।

(भावार्थ, विसोढाकी उक्तिमे—विसोढा कहता है कि हे वीसलदे! अव तुझे उसका परिचय दे रहा हूं। यह घोडे पर सवार सागमरावका पुत्र मूलू तेरे सामने उपस्थित है और उसे अव सभी देख रहे है।)

6 दोहेका भावार्थ विसोढाकी उक्ति—

सागमरावके पुत्र मूलू! वीसलदेने जिस जगह पर वहुत सी फौजें चारो ओर खडी की है, उनमे वह फौजोका सरदार सुरतान खड़ा है, उसका उरस्थल तेरे सेलकी प्रतीक्षा कर रहा है। 7 (विसोढाके सकेतानुसार) वीसलदेकी फौजोंमें कोई एक सुरतान था उसको मार करके मूलू चलता वना। 8 पीछेसे फौजें चढी और उन्हें आज्ञा हुई कि वह जाने न पावे। 9 आगे जाते हुए वीचमे एक नाला आया।

वीसळदेजीरा असवार उलै पार खडा रह्या ।[1] आ खबर राजानू आई–'जु मूळू साबतो गयो ।'[2] ताहरां राजा फुरमायो–'म्हारा घोड़ा-सूं मूळूरो घोड़ो आगै नीसरियो[3] तो म्हारा घोड़ारा कान काटो ।'[4] ताहरा विसोढो दूहो कहै—

तेजालग तोखार, वाला वीसलदेव कै ।
ऊपरला असवार, सांकै भय सांगावतै[5] ॥ ३

राजा घोडारा कांन वाढता मनै किया ।[6]

ताहरां विसोढैनू कह्यो राजा–'विसोढा ! तै म्हानै कह्यो नही जु मूळू आसी ।'[7] ताहरां विसोढै कह्यो–'राज ! यो क्यांकर कहीजै ।[8] मूळू म्हनै कह्यो–'जु, तू म्हनै थोड़ा रुपिया मे हारियो । जो म्हारा तो राजा लाख रुपिया देवै, जो हूं निजर पडूं तो ।'[9]

ताहरा राजा फेर बाजी माडी । राजा कह्यो–'म्हे हारां तो लाख देवा । अर थे हारो तो म्हांनू मूळू पासा कोट माहै मुजरो करावो ।'[10] ताहरा विसोढै कह्यो–'कोट माहै किसी विध आवै ?' तद राजा कह्यो–'आवै तो आवै । नही तो भला । नही आवै ।'

ताहरा विसोढो फेर हारियो । ताहरां विसोढो फेर मूळू पासै गयो नै मूळूनू विसोढै कह्यो–'म्हैं तोनू लाख रुपियां मांहै हारियो, अर कोट माहै आवणो ।'[11] ताहरां मूळू कह्यो–'जु, म्हनै कोटमे आवण कुण देवै ?[12] अर जे आयो जासी तो तलास घणो ही करीसू ।'

---

1 मूलूका घोडा तो पार हो गया परन्तु वीसलदेजीके सवार तो इस पार खडे रह गये । 2 जब यह खबर राजाको मिली कि मूलू सकुशल निकल गया । 3 हमारे घोडोसे मूलूका घोड़ा आगे निकल गया । 4 हमारे घोडोके कान काट लो ।

5 दोहेका भावार्थ—

विसोटाने कहा—हे वीसलदे ! तेरे प्रिय घोडे तो वहुत तेज गति वाले है । किन्तु उनके ऊपरके सवार सगतावत मूलूके आतकसे डर गये हैं । (इसलिए वे आगे नही वढे ।) 6 तब राजाने घोडोके कान काटते हुओको मना कर दिया । 7 तूने हमको कहा नही कि मूलू आ जायगा । 8 राजन् ! यह बात कैसे कही जाय ? 9 मैं यदि नजरमे आ जाऊ तो राजा तो मेरे लिए लाख रुपए भी शर्त पर लगा दे । 10 यदि तुम हार जाओ तो मूलूमे मुझे कोटमे मुजरा कराओ । 11 तुमारे कोट मे आनेकी बात पर लाख रुपयोकी शर्त पर मैंने तुमको हारा है । 12 मुझे कोटमे कौन आने दे ?

ताहरां विसोढो पाछो आयो। आयनै राजानू कह्यो–'बाप! मूळू कोटमें किसी तरह आवै? म्है तो घणो ही कह्यो, पण आवै नही।'[1] ताहरां अठै गोरै वादळ मूळूरा विखोड किया–'जु जाह रे, भला रजपूत! आवणो हुंतो।[2]

ताहरां हेक दिन, भाद्रवैरा दिन हुंता। मूळू घोड़ै चढ पाटण आयो, सो माळीरै घररै पिछोकडै आय ऊभो रह्यो।[3] पाछै परनाळो हुतो अर मेह वरसतो हुतो, तै परनाळा नीचै मूळू माथै ढाल देय ऊभो रह्यो।[4] ताहरां माळीनू मालण कह्यो–'देखो छो, परनाळो किसी विध वाजै छै?'[5] ताहरा माळी ऊठ अर देखै तो हेक असवार घोड़ै चढियो ऊभो छै, ताहरां माळी मालणनू कह्यो–'देख! कोई असवार ऊभो छै। ताहरां मालण कह्यो–'ओ तो म्हारै मूळू सारीखो छै, जु बापरै वैरनू धुखै छै।'[6] माळी ऊठ देखै तो मूळू हीज छै।

ताहरां मूळूनू माळी घर माहै भीतर लियो। घोडो भीतर लियो, बाधो।[7] मूळूनूं जीमायो।[8] रात माळी मूळूनू घर मांहै राखियो। प्रभात हुवो तरां मालण भीतर राजानी सेवाना फूल ले हाली।[9] ताहरा मूळू कह्यो–'हेकर सौ हों पण राजानै देखीस।'[10] ताहरां मूळू पण जनाना कपड़ा पहरिया।[11] फूलांरी छाब माथै लीवी।[12] फूलां-मे कटारी घाती अनै बेहू हजूर गया।[13] राजा भीतर बैठो थो। ताहरा चारण विसोढो पण हजूर मांहै छै। इतरैमे मालण छाब लेय भीतर गई। ताहरा वीच गोरो वादळ बैठा हुंता।[14] ताहरा मूळू

1 मूलू कोटमे किस प्रकार आये? मैंने तो बहुत कहा परतु वह नही आता। 2 तव यहां गोरे और बादलने मूलूकी हसी (निंदा) की कि जारे भला रजपूत! आ जाना चाहिये था। 3 सो मालीके घरके पीछेकी ओर आकर खड़ा रहा। 4 पीछे पनाला था और मेह बरस रहा था। मूलू उस पनालेके नीचे सिर पर ढालको लगा कर खडा रहा। 5 देखते हो! यह पनाला ऐसी आवाज क्यो कर रहा है? 6 यह तो मेरे मूलूके जैसा लगता है जो अपने वापके वैरका वदला लेनेके लिए खीज रहा है। 7 घोडेको अदर लिया और वाध दिया। 8 मूलूको भोजन कराया। 9 प्रभात हुआ तव मालिन भीतरसे राजाकी सेवा-पूजाके लिये फूल ले कर चली। 10 एक वार मैं भी राजाको देखूगा। 11 तव मूलूने भी जनाना कपडे पहिने। 12 फूलोकी छावडी सिर पर ली। 13 फूलोमे कटारी रख दी और दोनो राजाकी हुजूरमे गये। 14 तव वीचमे गोरा और वादल बैठे हुए थे।

गोरै वादळनू दीठा ।[1] ताहरा मूळरा पग ठाहै पड़ै नही । ताहरां गोरै कह्यो–'वादळजी ! देखो छो ! मालणरा पग ठाहै पड़ै न छै ।[2] सु जाणा सागमरावरो बीज छै ।'[3] ताहरां वादळ कहै–'हवै-हवै! माळीरै घरै सागमरावजीरो डेरो हुतो ।'[4] ताहरां इतरो[5] सुणनै मूळ भीतर गयो । हजूर जायनै फूलांरी छाब उतारी । मूळ उठै विसोढैनू देख राम-राम कियो ।[6] ताहरा विसोढो ऊठ ऊभो हुवो। सुभराज कियो ।[7] ताहरां विसोढै कह्यो–'महाराज ! मूळ मुजरो कियो छै ।'[8] इतरै तो मूळ कटारी लेयनै राजा पासै जाय बैठो ।[9] कह्यो–'जो राज ऊठिया तो मारीस ।'[10] ताहरां राजा कह्यो–'किही भात छाडै ही ?'[11] मूळ छाडै नहीं । ताहरां मूळ कह्यो–'थारी बेटी देवो तो छाडू । बिना वेटी दिया छाडै नही ।'[12] ताहरां राजा कह्यो–'बेटी दियां बिना तू म्हनै छाडै नही ?' ताहरा राजा घणा ही जतन किया, पण मूळ मानै नही । ताहरा राजा बेटी कबूली । मूळ राजारी बेटी उठैहीज परणी ।[13] श्री ठाकुरद्वारै माहै परणीज, उवैहीज घडी कुवरीरो हाथ पकड महल माहै जाय सूतो ।[14] ताहरां राजा वीसळदेजीनू वडो धोखो हुवो ।[15] जु मूळ घणी कीवी ।[16]

ताहरां रात आधीरै समै गोरो वादळ हजूर आया । आयनै कह्यो–'म्हासू तो आ वात सही न जाय । 'जु थाहरी बेटी मूळ जोरा-

---

1 तव मूलने गोरा और वादलको देखा । 2 तव गोरेने कहा—वादलजी ! देखते हो ! मालिनके पाव ठिकाने नही पड रहे है । 3 ऐसा मालूम होता है जैसे कोई सागमरावका वीज (सतति) है । 4 तव वादल कहता है कि–हा-हा, मालीके घर सागमरावजीका डेरा था । 5 इतना । 6 मूलने उधर विसोढाको देख करके राम-राम (जुहार) किया । 7 तव विसोढा खडा हुआ और शुभराज किया । (शुभराज=याचकोकी ओरसे कहा जाने वाला एक आशीर्वादात्मक वचन ।) 8 महाराज ! मूलने मुजरा किया है । 9 इतनेमे तो मूलू कटारी लेकर राजाके पास जा वैठा । 10 जो आप खडे हुए तो मार दूगा । 11 किसी भी प्रकार छोडे भी ? 12 तुमारी लडकी मुझे दो (व्याहो) तो छोडू । वेटीको दिए विना छोडू नही । 13 तव राजाने वेटी देना कवूल किया और वही पर राजाकी वेटीको मूलूने व्याहा । 14 (महलोंके) श्रीठाकुरद्वारामें विवाह कर उसी समय कुवरीका हाथ पकड और महलमें लेजाकर सो गया । 15-16 तव राजा वीसलदेजीको वडा पश्चाताप हुआ कि मूलूने खूव की (गजवकी वात कर दी) ।

वरी परणी, सु म्हे तो मूळनू मारसिया ।[1] बेटी किणी बीजैनू परणाविस्या ।'[2] ताहरां राजा वीसळदे कह्यो–'थे जांणो ।'[3] ताहरा अै दोनू ही मूळ ऊपर आया । आयनै कह्यो–'मूळ ! सभाय ।'[4] ताहरा मूळ सोळ कणीनू कह्यो–'जु तैसौ ऊबरू ।'[5] ताहरा सोळकणी कह्यो–'हू हाजर छूं ।' तद मूळ कह्यो–'थांरा कपडा देवो ।' ताहरां मूळ जनाना कपडा पहर ऊभो रह्यो । ताहरां सोळकणी परधांनांनू कह्यो–'जु म्हनै तो नीसरण देवो ।'[6] ताहरां गोरो वादळ दूर हुवा । मूळ नीसर गयो ।[7] सोळकणी भीतर किंवाड कुलफ कर लिया ।[8] गोरो वादळ किंवाड़रै बारै आंण ऊभा रह्या ।[9] मूळ तो जाय घोड़ै चढ चालतो हुवो । इंयां किवाड खोलिया, तो भीतर सोळंकणी बैठी छै ।[10] ताहरा हाथ पीटै ऊभा रह्या ।[11] मूळ घरै गयो !

पछै मास २ दोयरो सोळकणीरै पेट आधान रह्यो मूळरो । ताहरा सोळंकणीनू परणावणी मांडी ।[12] सो जियैनू देवै सु कोई लेवै नही ।[13] ताहरां सांवतसिंघ सोनगरै जाळोररै धणी लोवी । ताहरां परणाय दीवी ।[14] ताहरां मूळ कह्यो–म्हारो वैर सोळकियांसू चूको जु ईंयां वेटी परणाई ।[15] हमै मूळरो वैर सोनगरांसू बाधो ।[16] ताहरा

---

1 हमारेसे तो यह बात सहन नहीं की जाती कि तुमारी बेटीको मूलूने जोरावरीसे व्याह ली । सो हम तो मूलूको मार देंगे । 2 आपकी बेटी किसी दूसरेको व्याहेंगे । 3 तो तुम जानो । 4 तब ये दोनो मूलूके ऊपर आये और कहा कि मूलू सम्हल जाओ । 5 मूलूने सोलकिनीको कहा कि अब तो तेरे बचाये ही बच सकता हू । 6 मुझे तो निकलने दो । 7 मूलू निकल गया । 8 सोलकिनीने भीतरसे किंवाड ताला लगा कर बद कर दिये । 9 गोरा और बादल किंवाडके बाहिरकी ओर आकर खडे रहे । 10 इन्होने किंवाड खोले तो भीतर तो सोलकिनी बैठी है । 11 तब ये हाथ पीट कर खडे रहे । 12 सोलकिनीको जब मूलूका गर्भ दो मासका हो गया था, तब सोलकिनीका विवाह (पुनर्लग्न) करने लगे । 13 सो जिसको देनेका विचार करे वह उसे लेना स्वीकार नही करे । 14 तब जालोरके स्वामी सावतसिह सोनगरेने लेना स्वीकार किया । उसके साथ उसका विवाह (पुनर्लग्न) कर दिया । 15 मूलूने कहा कि सोलकियोसे मेरा वैर चुकता हो गया क्योंकि उन्होने तो अपनी बेटी मुझे व्याह दी । 16 अब मूलूका वैर सोनगरोसे बँधा ।

मूळू रोजीना सोनगरां ऊपर दोड़ै। पण जाळोरसूं पहुंच सगै नही।[1]

हेक दिन सोनगरारै देवीजी श्री आसापुरीजीरी पूजा हुती दसराहैरै दिन। सोनगरारी वडारण पूजण आई हुती।[2] देवीजीरो द्वारो गढसू नीचै हुतो।[3] सु मूळू देवी-द्वारा आगै आय बैठो। ताहरा वडारण पूजा करणनू आई। ताहरा मूळू वडारणनू पकड़ आपरी दोवड़ माहै पोट वांध अर उवैरा कपड़ा पैहरनै कोट ऊपर चढियो।[4] महल मांहै भीतर तुळसीरो थाणो हुंतो तठै जाय बैठो।[5] कटारी हाथ माहै छै। तद पोहर १ एक रात गई। ताहरा सावतसी आपरै महल गयो। ताहरां जीमणनू थाळ आयो।[6] ताहरा सांवतसी आप कह्यो–'मूळूरै वेटैनू उरहो ल्यावो।'[7] सोळकणीरै मूळूरो वेटो हुवो हुतो।[8] ताहरां सोळकणी कह्यो–'ओ तो सोय रह्यो।'[9] ताहरां सांवतसीजी कह्यो–'जगाय ले आवो, ज्यु भेळो जीमावू। भेळो जीमिया ईयैरी ओठ खावू तो म्है मे ही कू ही सत आवै।[10] मूळू वडो सावत छै।[11] हेकरसू मो ऊपर जरूर आसी।'[12] मूळूरो घणोहीज सुंकर सांवतसी बोलियो।[13] ताहरां मूळू जांणियो–ईयैनू मारू नही।'[14] मूळू ऊठ अर आय राम-राम कियो। कह्यो–'न मारू। वैर भागो।'[15] तद सावतसो कह्यो–थांरी वैर ले।'[16] तद मूळू कह्यो–'म्है तनै दीवी।'[17] ताहरां मूळूनू दूजो

---

1 अव मूलू हमेशा सोनगरोके ऊपर दौडता है, परतु जालोरसे पहु च नही सकता। (जालोरके सोनगरे कावूमें नहीं आते।) २ एक दिनका अवसर, दशहरेके दिन सोनगरोकी देवी श्री आशापुरीजीकी पूजा थी सो सोनगरोकी वडारण (दासी) पूजनेको आई थी। 3 देवीजीका मदिर गढके नीचे था। 4 तव मूलूने वडारणको पकड करके अपनी दोवडमें उसकी गठरी वाध दी और उसके कपडे पहिन कर गढ पर चढा। 5 महलके अदर जहा तुलसीका थावला था उसकी ओटमें जा वैठा। 6 भोजनके लिए थाल परोसकर लाया गया। 7 मूलूके वेटोको ले आओ। 8 सोलकिनीको मूलूसे वेटा उत्पन्न हुआ था। 9 वह तो सो गया है। 10 जगा करके ले आओ सो अपने सामिल विठा कर उसको खिलाऊं। सामिल वैठ कर खिलानेमे मैं भी इसकी जूठन खाऊं तो मेरेमें भी कुछ सत आए (सत – १ मनुष्यत्व। २ रजस। ३ पराक्रम, वीरत्व)। 11 मूलू वड़ा सामत है। 12 एक वार मेरे पर जरूर चढ कर आयेगा। 13 सावतसीने मूलूके सवघमें वहुत ही अच्छे भाव व्यक्त किये। 14 तव मूलूने विचार किया कि इसको अव नही मारू। 15 मूलूने वहासे उठ और सावतसीके पास आकर राम-राम (प्रणाम) किया। और कहा कि तुमको मारूंगा नही। वैर था सो मिट गया। 16 तुमारी स्त्रीको लेलो। 17 मूलूने कहा कि मैंने तुमको देदी

वीमाह दियो ।[1] तद मूळू आपरो बेटो मांगियो ।[2] पण सांवतसी दियो नही । कह्यो–ओ थांरो बेटो छै । म्हनै घणी भीड़ पड़सी तद म्हारै वडै कांम आवसी ।'[3] ताहरा मूळू बेटैनूं पण दे गयो ।[4]

बेटैरो नांम कांधळ । तिको कांधळ सांवतसी पासै रहै । जनानै नावै । हथियार कपड़ो और ही वस्तु जनांनै नांवै हुवै सु नही ढाबै ।[5]

यु करता कांधळ रोज सोनैरी थाळी मांहे जीमै । रोज गोळियैस थाळी भाजै ।[6]

हेक दिन कान्हड़देरी मा कह्यो– रोज थाळी भांज ना, भाठै ऊपर ठरकाय ।'[7] ताहरां उवै ऊपर ऊहीज गोळियो वाह्यो । कांनरै लागो, कांन तूटो । धड हुंती ढह पड़ी । रांणी क्यु ही कह्यो नही ।[8]

इसड़ै अलावदीन जाळोर ऊपर आयो । सोनगरांसू लडाई हुई । कांधळ खाडारै मुंहडै हुतो, सु लडतां सात-वीसी खांडा भागा । खांडा खूटा । कटारी पकड अर कांम आयो* ।[10]

---

1 तव मूलूका दूसरा विवाह कर दिया । 2 फिर मूलूने अपने पुत्रको मांगा । 3 कहा कि यह लडका तुम्हारा है, परतु मेरेमे अति संकट पडेगा तव यह मेरे वडा काम आयेगा । 4 तव मूलू अपने वेटेको भी दे गया । 5 वेटेका नाम कांधल जो सांवतसीके पास ही रहता है । जनानामे नही आता है । शस्त्र, वस्त्र आदि कोई वस्तु स्त्री नामपरक होती है, उसे ग्रहण नही करता । 6 इस प्रकार रहते हुए कांधल नित्य सोनेकी थालीमें भोजन करता है और (स्त्रीलिंग वस्तु होनेके कारण) नित्य गुलेलसे तोड देता है । 7 एक दिन कान्हड़देकी मा ने कहा कि इस प्रकार पत्थरसे ठरका कर नित्य थालीको मत तोड । 8 तव उसके ऊपर ही गुलेल मार दी । कानके लगा सो कान टूट गया और धड़ सहित गिर पडी, परतु रानीने कुछ भी नही कहा । 9 उन्ही दिनो अलाउद्दीन जालोर पर चढ कर आया । 10 कांधल खांडो (शस्त्रो) के सम्मुख था, सो कांधलके लडते हुए १४० खांडे टूट गये, तव कटारी (स्त्रीलिंग शस्त्र) पकड कर काम आ गया ।

---

*डाह्याभाई पीताम्वरदास देरासरी द्वारा गुजरातीमे रूपान्तरित 'कान्हडदे प्रवन्ध' मे भी काधलके सम्वन्धमें कवि पद्मनाभने यही वात कही है—

सहु पहेला राये मोकल्यो, धिंगाणे काधल भडभडायो । २०६
कटक तुरक नु सूडयु भलु, आठ पहोर धिंगाणुं थयु । (२०७-१)

× × ×

वाळे हुमला हल्ला करतो, काधल लड़तो दीठो । २०९

तद मा कह्यो–'बेटा कांधळ ! जो इम जांणती तो खांडांसू घर भरावू ।'[1] ताहरां कांधळ कहै–माजी ! न जांणो वीरमरी मा अर कान्हडदेरो महळ तैरै गोळियैरी दूं हू° ? म्है तो तैंहीज दिन कही हुती ।[2]

इति वात सागमराव राठोड़री सपूर्ण ।

॥ शुभ भवतु । कल्यांणमस्तु ॥

---

1 तब मा ने कहा बेटा काधल ! ऐसा जानती तो खांडोसे घर भरवा देती । 2 तब काधल कहता है कि माजी ! वीरमकी माता और कान्हडदेकी पत्नी इन्हे गुलेलकी मैं मारूं ? (यह कैसे हो सकता है ? मेरी प्रतिज्ञाको खडित होती हुई देख कर क्रोधावेशमें इस आश्चर्यपूर्ण अघटित कामको करके) मैंने तो उसी दिन आपसे कह दिया था । फिर भी आपने नही जाना ।

[शेष पृ० २६३ का]

राय कहे आगळ अम काधल, जोधो आम न जाण्यो
कागरे कोठो भरी ज नाखे, अेवु कही वखाण्यो । २१०
चढी रसे वीर कावल वोले, रायजी जाण न जाण
प्रथम थी अमे सहु दिन अेवा, आ वेळा न वखाण । २११

मुहता नैणसीरी ख्यात (हमारे द्वारा सम्पादित) भाग १, पृ० २१६-से २२६ तकमे अलाउद्दीन द्वारा सोमइया महादेव (सोमनाथ महादेव)को गाड़ेमे डाल कर ले जाते हुए कान्हडदेसे जालोरमे जो युद्ध हुआ है, वहाँ भी कांधलकी वीरताका उल्लेख पठनीय है ।

°कई प्रतियोमे 'छू' पाठ है जो वर्तमानकालिक उत्तमपुरुषकी क्रियाका सूचक है। भूतकालिक घटनाका उल्लेख होनेसे 'हू' पाठ ठीक जँचता है, जो सर्वनाम उत्तमपुरुषके कर्त्ता-का रूप है ।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक–पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

++++++++++

राजस्थानी और हिन्दी ग्रन्थ

प्रकाशित

१ कान्हडदेप्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभविरचित, सम्पा०–प्रो० के.बी. व्यास, एम. ए. । मूल्य–१२.२५

२. क्यामखां-रासा, कविवर जान-रचित, सम्पा०–डॉ दशरथ शर्मा और श्रीअगरचन्द नाहटा । मूल्य–४ ७५

३ लावा-रासा, चारण कविया गोपालदानविरचित, सम्पा०–श्रीमहताबचन्द खारैड । मूल्य–३.७५

४. बांकीदासरी ख्यात, कविराजा बांकीदासरचित, सम्पा०–श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम ए., विद्यामहोदधि । मूल्य–५.५०

५ राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग १, सम्पा०–श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम ए. । मूल्य–२.२५

६. राजस्थानी साहित्यसग्रह, भाग २, सम्पा०–श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम. ए, साहित्यरत्न । मूल्य–२ ७५

७. कवीन्द्र कल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वतीविरचित, सम्पा०–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत । मूल्य–२ ००

८. जुगलविलास, महाराज पृथ्वीसिंहकृत, सम्पा०–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत । मूल्य–१.७५

९. भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारण कृत, सम्पा०–श्री उदैराजजी उज्ज्वल । मूल्य–१ ७५

१०. राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची, भाग १ । मूल्य–७ ५०

११. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग २ । मूल्य–१२.००

१२ मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, सम्पा०–श्रीबद्रीप्रसाद साकरिया । मूल्य–८.५०

१३ ,, ,, ,, ,, २, ,, ,, मूल्य–९ ५०

१४. ,, ,, ,, ,, ३, ,, ,, मूल्य–८ ००

१५ रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढाकृत, सम्पा०–श्री सीताराम लाळस । मूल्य–८.२५

१६. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग १, सम्पा० पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय । मूल्य–४.५०

१७ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग २—सम्पा०–श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया एम ए, साहित्यरत्न । मूल्य–२ ७५

१८ वीरवांण, ढाढी बादरकृत, सम्पा०–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत मूल्य–४ ५०

१९ स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण-ग्रन्थ-संग्रह-सूची, सम्पा०–श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए. और श्रीलक्ष्मीनारायणगोस्वामी दीक्षित । मूल्य–६.२५

२०. सूरजप्रकास, भाग १–कविया करणीदानजी कृत, सम्पा०–श्री सीताराम लाळस मूल्य–८.००

२१. ,, ,, २ ,, ,, ,, ,, मूल्य–६.५०

२२ ,, ,, ३ ,, ,, ,, ,, मूल्य–६.७५

२३. नेहतरंग, रावराजा बुधसिंहकृत—सम्पा०–श्रीरामप्रसाद दाधीच, एम.ए. मूल्य–४.००

२४. मत्स्यप्रदेश की हिन्दी-साहित्य को देन, डॉ० मोतीलाल गुप्त, एम.ए., पी-एच डी. मूल्य–७ ००

२५. वसन्तविलास फागु, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०–श्री एम. सी. मोदी। मूल्य–५.५०

२६ राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज–एस आर. भाण्डारकर, हिन्दी-अनुवादक श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी, एम ए, साहित्याचार्य, काव्यतीर्थ मूल्य–३ ००

२७ समदर्शी आचार्य हरिभद्र, श्रीसुखलालजी सिंघवी, मूल्य–३.००

प्रेसों में छप रहे ग्रन्थ

१ गोरा बादल पदमिणी चऊपई, कवि हेमरतनकृत सम्पा०–श्रीउदयसिंह भटनागर, एम ए।

२ राठौड़ांरी वंशावली, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।

३ सचित्र राजस्थानी भाषासाहित्यग्रन्थसूची, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।

४. मीरां-बृहत्-पदावली, स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण द्वारा संकलित, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।

५ राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग ३, संपादक–श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी।

६ रुक्मिणी-हरण, सायाजी भूला कृत, सम्पा० श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम.ए., सा.रत्न

७ सन्त कवि रज्जब : सम्प्रदाय और साहित्य, डॉ० व्रजलाल वर्मा।

८. पश्चिमी भारत की यात्रा, कर्नल जेम्स टॉड, हिन्दी अनु० और सम्पा० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम ए।

९ स्थूलिभद्र प्रबन्धादि, डॉ० आत्माराम जाजोदिया।

१० बुद्धिविलास, बखतराम शाहकृत, सम्पा०–श्रीपद्मधर पाठक, एम. ए.।

११ प्रतापरासो, जाचीक जीवण कृत, सम्पा०–डॉ० मोतीलाल गुप्त, एम. ए, पीएच. डी.।

१२ भक्तमाल, राघवदासकृत, चतुरदासकृत टीका सहित, सम्पा० श्री अगरचन्द नाहटा।

पुस्तक-विक्रेताओं को २५% कमीशन दिया जाता है।